

www.KitaboSunnat.com



شيخ اللهم الحافظ شمس الدين الذبي النابي النابي النابي النابي



أبؤانس المستحد سروركؤهر





# معدث النبريري

اب ومنت کی روشنی میں لکھی جانے والی ارد واسلا می کتب کا سب سے بڑا مفت مرکز

# معزز قارئين توجه فرمائين

- کتاب وسنت ڈاٹ کام پردستیابتمام الیکٹرانک تب...عام قاری کے مطالعے کیلئے ہیں۔
- 💂 بجُجُلِیمُرالیجُقینُونُ الْمِیْنِیْ کے علمائے کرام کی با قاعد<mark>ہ تصدیق واجازت کے بعد (Upload) کی جاتی ہی</mark>ں۔
  - معوتی مقاصد کیلئان کتب کو ڈاؤن لوژ (Download) کرنے کی اجازت ہے۔

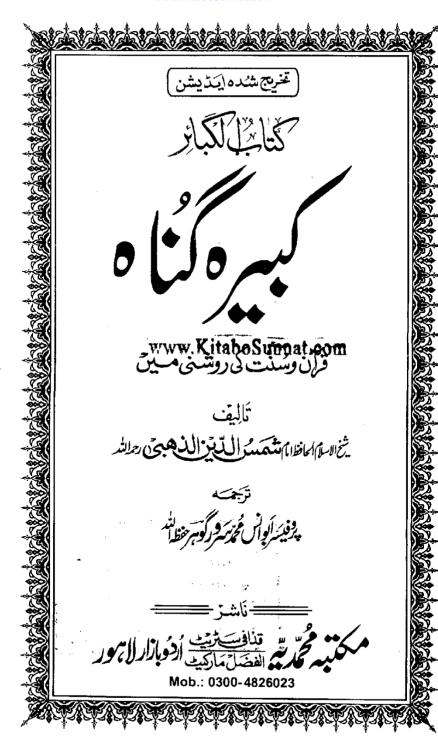
#### تنبيه

ان کتب کو تجارتی یا دیگر مادی مقاصد کیلئے استعال کرنے کی ممانعت ہے کے محانعت ہے کے محانعت ہے کے محانعت ہے کے م

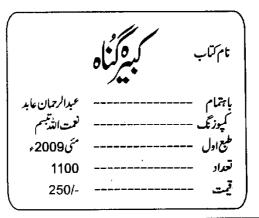
اسلامی تعلیمات میشتل کتب متعلقه ناشربن سے خرید کرتبلیغ دین کی کاوشول میں بھر پورشر کت اختیار کریں

PDF کتب کی ڈاؤن لوڈنگ، آن لائن مطالعہ اور دیگر شکایات کے لیے درج ذیل ای میل ایڈریس پر رابطہ فرمائیں۔

- ▼ KitaboSunnat@gmail.com
- www.KitaboSunnat.com



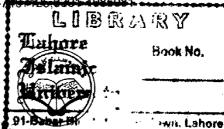
### جمله حقوق تجق ناشر محفوظ ہیں



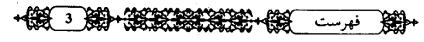
#### اسٹاکسٹ

مكتبه الل حديث امين بور بازار فيصل آباد 041-2629292,2624007

اسلامي كتب خانه ذاك خانه بازار چياوطني ضلع ساميوال



E:mail;maktabah\_muhammadia@yahoo.com & m a k t a b a h \_ m @ h o t m a i l . c o m



### فهرست مضامين

| صخيبر | عنوانات   | نمبرشار     |
|-------|---|-------------|
| 9     | مؤلف اور كماب كانعارف                                   |             |
| 11    | الكبائر   | ***         |
| 13    | الله كے ساتھ شرك كرنا                                   | -1          |
| 19    | عمل نفس   | -2          |
| 24    | ۵۰ مارو   | -3          |
| 27    | <b>ت</b> كناز   | -4          |
| 34    | بچ کوکس عمر میں نماز کا حکم دیا جائے<br>فصل             |             |
| 36    | فصل   |             |
| 38    | ركايت.  |             |
| 38    | دوسری حکایت   |             |
| 40    | دوسری حکایت<br>فصل<br>فصل<br>www.KitaboSunnat.com       |             |
| 45    | فصل المارية ١٠٠٧ المارية ١٠٠٧ المارية ١٠٠٧ المارية ١٠٠٧ | <del></del> |
| 49    | نصل   |             |
| 49    | کایت  |             |
| 50    | ز کا ة اداند کرنا                                       | -5          |
| 54    | الفيحت  |             |
| 56    | <i>کایت</i>   |             |
| 58    | بلاعذر رمضان كاروزه نه ركهنا                            | -6          |
| 59    | استطاعت قدرت ہونے کے باوجود عج نہ کرنا                  | -7          |
| 61    | والدين كى نافر مانى                                     | -8          |
| 68    | الفيحت  |             |

| * <b>(*)</b> | فهرست کی د کی کی کی کی کی کی داری ا   |     |
|--------------|---|-----|
| 73           | رشته داروں نے طع تعلق ہونا  | -9  |
| 78           | زناكارى   | -10 |
| 85           | اغلام بازی/لواطت  | -11 |
| 91           | فصل   |     |
| 92           | فصل   | :   |
| 94           | سود کھا تا  | -12 |
| 98           | فصل •   |     |
| 99           | مال ينتيم كوكها نا اوراس برظلم كرنا   | -13 |
| 106          | اللَّه عز وجل اوراس كے رسول مَّا اللَّهُ عِلَيْرِ جِمُوبُ بِولْنَا            | -14 |
| 108          | میدان جهاد سے فرارا ختیار کرنا  | -15 |
| 109          | حكمران كارعايا سے دغابازى اورظلم كرنا   | -16 |
| 116          | فخروتكبراورخود ببندى  | -17 |
| 120          | جھوٹی گواہی دینا  | -18 |
| 122          | شراب نوشی   | -19 |
| 128          | شراب سے علاج کرنا جائز نہیں<br>شراب کے بارے میں احادیث                        |     |
| 128          |   | ,   |
| 129          | شراب کے بارے میں سلف ہے مروی آ ٹارکا بیان                                     |     |
| 130          | نصل   |     |
| 133          | <i>کایت</i>   |     |
| 135          | جوابازی .   | -20 |
| 136          | نصل   |     |
| 140          | پاک دامن عورتوں پر زنا کی تہمت لگانا<br>مال غنیمت میں خیانت کرنا<br>چوری کرنا | -21 |
| 143          | مال غنيمت مين خيانت كرنا  | -22 |
| 147          | چوری کرنا   | -23 |

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

| + <b>(1)</b> | 5 www.KitahoSunnat.com                       | فهر   |     |
|--------------|--|-------|-----|
| 149          | ڈا کہ زنی کرنا                               |       | -24 |
| 152          | حبمونی قشم کھا نا                            |       | -25 |
| 154          |  | فصل   |     |
| 156          | ظلم وستم كرنا                                |       | -26 |
| 163          |  | فصل   |     |
| 165          |  | فصل   |     |
| 168          |  | فص    | **  |
| 173          |  | نفيح  |     |
| 175          | فیکس وصول کرنا                               |       | -27 |
| 177          | نت .   | نفيح  |     |
| 179          |  | لفيء  |     |
| 180          | حرام کھانا اوراہے حاصل کرنا                  |       | -28 |
| 184          |  | فصل   |     |
| 185          | يت   | لفيح  |     |
| 187          | خودکشی کرنا                                  |       | -29 |
| . 189        | ت  | نفيء  |     |
| 191          | ا كثر حجعوث بولنا                            |       | -30 |
| 196          | نت .   | تقييح |     |
| 197          | برا قاضی                                     |       | -31 |
| 200          | ئت   | نصيح  |     |
| 201          | فیصا کرنے پررشوت لینا                        |       | -32 |
| 202          |  | فص    |     |
| 203          | ئت   | نفي   | *   |
| 205          | عورتول اورمر دول كابانهمي مشابهت اختيار كرنا |       | -33 |

|     | www.KitaboSunnat.com  | ~~~ |
|-----|---|-----|
|     | فهرست المنابع |     |
| 208 | لفيحت   |     |
| 210 | د يوث اور بے غيرت   | -34 |
| 211 | هيحت  |     |
| 212 | حلاله كرانا اور كروانا  | -35 |
| 215 | نقيحت   |     |
| 216 | پیثاب ہے احتیاط ندکرنا  | -36 |
| 217 | نفيحت   |     |
| 220 | رياكاري   | -37 |
| 224 | لفيحت   |     |
| 226 | د نیا کے لیے علم حاصل کرنا اور علم چھیا نا  | -38 |
| 229 | نفيحت   |     |
| 230 | خیانت کرنا  | -39 |
| 23Ž | لفيحت   |     |
| 234 | احبان جثلانا  | -40 |
| 236 | لفيحت   |     |
| 237 | تقدير كوجبطلانا   | -41 |
| 242 | نصل   |     |
| 242 | الايمان   |     |
| 244 | الميحت  |     |
| 247 | لوگوں کی وہ ہاتیں چیکے سے سننا جسے وہ چھپاتے ہیں  | -42 |
| 248 | فيحت  |     |
| 249 | چغل خوري كرنا   | -43 |
| 252 | نگایت<br>هیمت   | •   |
| 253 | هيحت  |     |
|     |   |     |

www.KitaboSunnat.com

| <b>****</b> |   | هرست               | غ ف      |
|-------------|---|--------------------|----------|
| 256         | لعن وطعن كرنا   | **                 | -44      |
| 257         |   | ىل                 | 23       |
| 260         |   | س                  | افر      |
| 260         |   | <del>ن</del><br>مل | ف        |
| 262         |   | <u>ں</u><br>میحت   | •        |
| 263         | عهد فحتنی اور بدعهدی کرنا                                   |                    | -45      |
| 266         | عهد فکنی اور بدعهدی کرنا<br>کا بمن اور نجوی کی تصدیق کرنا   |                    | -46      |
| 269         | •   | هيوت               | +        |
| 271         | خاوند کی اطاعت نه کرنا                                      |                    | -47      |
| 276         |   | فصل                |          |
| 280         |   | فصل<br>فصل         |          |
| 284         | تصوير بنانا   |                    | -48      |
| 287         | تصویر بنانا<br>مصیبت کے وقت نوحہ کرنا کپڑے پھاڑنا وغیرہ     |                    | -49      |
| 290         |   | فصل                |          |
| 293         | تعزیت کے بارے میں فصل                                       |                    |          |
| 306         |   | دكايت              |          |
| 309         | ظلم وزیادتی<br>ضعیف ٔ لونڈی ٔ بیوی اور چو پائے پرظلم کرنا   |                    | -50      |
| 312         | ضعیف کویڈی بیوی اور چو پائے برظلم کرنا                      |                    | -51      |
| 317         |   | فصل                |          |
| 320         |   | نصل                | <u>_</u> |
| 322         | <i>ېروې کو</i> اذيت دينا                                    |                    | -52      |
| 325         | رپژوی کواذیت دینا<br>مسلمانو س کواذیت پینجیا نااورگالی دینا |                    | -53      |
| 327         |   | فصل                |          |

| +   | نهرست که کام    |       |
|-----|---|-------|
| 328 | <i>نص</i> ل   |       |
| 331 | اللہ کے بندوں کواذیت پہنچا تا اور دست درازی کرنا    | -54   |
| 322 | نصل   |       |
| 335 | فخروغروراور گخنوں سے بنچے کپڑے پہننا                | -55   |
| 337 | مرددن کاسونا اوررکیثمی ملبوسات استعال کرنا          | -56   |
| 339 | غلام کا پنے مالک کے پاس سے بھاگ جانا                | -57   |
| 340 | فیراللہ کے لیے ذرج کرنا                             | -58   |
| 343 | اینے باپ کےعلاوہ کسی اور کی طرف منسوب کرنا          | -59   |
| 345 | ناحق جھگڑنا   | -60   |
| 347 | فصل   |       |
| 348 | نصل   |       |
| 350 | ضرورت ہے زائد پانی روکنا                            | -61   |
| 351 | ناپ ټول مين کي بيشي کرنا                            | -62   |
| 354 | الله کی متر بیرے بے خوف ہوجانا                      | -63   |
| 360 | مسى عذركے بغير جماعت حچھوڑ كرا كيلے نماز پڑھنا      | -64   |
| 361 | کی عذر کے بغیر نماز جمعہ ترک کرنا                   | -65   |
| 364 | فصل .   |       |
| 366 | وصیت میں ایڈ ارسانی                                 | -66   |
| 368 | بری متد بیراور دهو که د بی                          | -67   |
| 369 | مسلمانوں کی جاسوی کرنا                              | -68   |
| 370 | صحابه رضوان التعليهم الجمعين                        | 70-69 |
|     | اوراولیاءاللہ حمہم اللہ علیم میں ہے کی کو گالی دینا |       |

# + € 2 • كتاب الكبائر

### المؤلف.....اوركتاب كاتعارف

سٹس الدین محمد بن عثان بن قایماز تر کمانی، فاروقی ، دشقی، شافعی، جوالذہبی ہے مشہور ہوئے۔

ان کا اصل خاندان' میا فارقین' سے تعلق رکھتا ہے۔ آپ ۱۷۳ ھ بمطابق ۱۲۵ ہو کو کمشق میں پیدا ہوئے۔ آپ نے اس محقصد میں پیدا ہوئے۔ آپ نے شام ، مصرا ور حجاز کے شیوخ سے علم حاصل کیا۔ آپ نے اس محقصد کے لیے بہت سے شہروں اور ملکوں کا سفر کیا۔ آپ نے بہت سے علوم میں کمال حاصل کیا۔ ان میں سے قراءات قرآن اور حدیث خاص طور پر قابل ذکر ہیں ، اللہ نے آپ کو بلا کا حافظ عطا کیا تفاد آپ حافظ ، جرح و تعدیل اور ہر طرح کے علم وفن کے امام سے مشہور ہوئے۔ آپ کی شہرت پوری دنیا میں تھانے کے لیے آپ کے لیے آپ کے یا سے اپنی علمی پیاس بجھانے کے لیے آپ کے یا سے اپنی علمی پیاس بجھانے کے لیے آپ کے یا سے اپنی علمی پیاس بجھانے کے لیے آپ کے یا سے اپنی علمی پیاس بجھانے کے لیے آپ کے یا سے آپ آپ آپ ان آنا شروع ہوگئے۔

آپ نے دمثق میں گا ایک علمی ذمد داریاں قبول کی ہوئی تھیں اور بڑے احسن انداز میں انہیں ادا کررہے تھے۔ جب اسم کے میں آپ کی بینائی جاتی رہی تو آپ کا سلسلہ تالیف منقطع ہوگیا اور آپ نے سن ذکی قعدہ ۲۸۸ کے بمطابق ۱۳۲۸ء، اپنی وفات تک عمل تدریس جاری رکھا اور پھراسی پراکتفا کیا۔ آپ کو دمشق میں باب صغیر کے قبرستان میں فن کیا گیا۔ امام الذہبی نے بہت ضخیم علمی سرمایہ چھوڑا، جے نوے کے قریب صدیث تاریخ اور تراجم کی صورت میں تالیفات مفیدہ کی صورت میں محفوظ کرلیا گیا۔ ان میں سے آپ کی تاریخ الکیر (تاریخ الاسلام)، سیرالدبلاء، میزان الاعتدال، المشتبہ فی اساء الرجال اور تج پدالاً صول فی احادیث الرسول وغیرہ سیرالدبلاء، میزان الاعتدال، المشتبہ فی اساء الرجال اور تج پدالاً صول فی احادیث الرسول وغیرہ بہت ہم ہیں۔

امام ذہبی کی مؤلفات کے متعلق بہت سے قدیم وجدید مؤلفین نے تبرہ کیا ہے۔ان کے بارے میں عربی اور غیرع بی رسائل ومجلّات میں مضامین کھے گئے ہیں۔سب نے ان کے علم و فضل کی تعریف کی ہے اور انہوں نے جو علمی سر مایہ چھوڑ ا ہے اس نے انہیں بہت شہرت دی۔ان کے دور کے لوگوں نے اس علمی سر مایہ سے استفادہ کیا اور تب سے لے کرآج تک لوگ اس سے

امام ذہبی نے اپنی کتاب' الکبائز' (زیرترجمہ) خاص طور پرعام سطح کے قاریوں کے معیار کے مطابق تالیف کی ہے۔ انہوں نے اس میں ایسے موضوعات کاحل پیش کیا ہے، جوان کے

کے مطابق تالیف کی ہے۔ امہوں کے اس میں ایسے موضوعات کا س پیل کیا ہے ، جوان کے ہاں بہت اہم اوران کے دین و دنیا کے لیے مفید تھے۔ انہوں نے ایکی اشیاء کوان کے ذہنوں کے قریب کردیا ہے جن کاعلمی کتب میں سمجھنا' جو کہ خاص طور پر علاء اور طلباء کے لیے تیار کی گئ تھیں ،ان کے لیے مشکل تھا۔

یس اس کتاب الکبائر میں ایک واعظ و مرشد کا سا اسلوب اختیار کیا گیا ہے جولوگوں کی اصلاح کا بیڑ اٹھا تا ہے۔ جوان کے عقا کداور سیرت و کردار کو درست کرنا چا ہتا ہے۔ انہوں نے عام فہم آسان زبان اور جاذب وواضح اسلوب اختیار کیا ہے۔ اور وہ پیچیدگی ، ابہام اور تصنع سے دور رہے ہیں۔ پس ان کی یہ کتاب خطباء اور واعظین کے لیے نافع ، غفلت اور تر دو کے شکار لوگوں کے لیے خاص اور آگاہ کنندہ ، نافر مانوں اور انحراف کرنے والوں کو ڈانٹے اور دھمکانے والی اور تی وصواب نیز اللہ کے طریق پر چلنے کا شوق ورغبت رکھنے والوں کے لیے راہما ہے۔



#### بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين، ولا عدوان الاعلى الظالمين، والصلاة و، السلام على سيدنا محمد سيد المرسلين و امام المتقين وعلى آله وصحبه أجمعين-

(امابعد) یہ کتاب کہائز محر مات اور منہیات کے ذکر پر مشتل ہے۔

#### الكيائر:

کبیرہ گناہ اسے کہتے ہیں، جس سے اللہ تعالی اور اس کے رسول سلی اللہ علیہ وسلم نے کتاب وسنت میں منع کیا ہے اور سلف صالحین نے بھی اس کا ذکر کیا ہے۔ اللہ تعالی نے اپنی کتاب عزیز میں کبیرہ گنا ہوں اور محر مات سے اجتناب کرنے والوں کو بیضانت دی ہے کہ وہ ان کے صغیرہ گناہ معاف فر مادے گا۔ اور اللہ تعالی نے فرمایا:

﴿إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبِيرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرُ عَنْكُمْ سَيِّالِكُمْ وَنُدُخِلْكُمْ مُّذُخَّلًا كَرِيْمًا٥﴾ (النسآء ٢١/٤)

''اوراگرتم ان بوے بوے گناہوں سے ،جن سے تہمیں منع کیا گیا ہے، باز رہوتو ہم ضرور تہارے چھوٹے چھوٹے گناہ معاف کردیں گے اور تہمیں ایک باعزت جگہ میں داخل کریں گے''۔

الله تعالی نے اس آیت کے ذریعے کبیرہ گناہوں سے بیخے والوں کو ضانت دی ہے کہ وہ انہیں جنت میں داخل کرے گا۔اور الله تعالی نے فرمایا:

﴿ وَالَّذِيْنَ يَبِحُتَنِبُونَ كَبْشِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِسْ وَإِذَا مَا غَضِبُواْهُمْ يَغُفِرُونَ ٥٠ (الشورى ٣٧/٤٢)

''اور ان لوگوں کے لیے جو بڑے بڑے گناہوں اور بے حیائی کے کاموں سے اجتناب کرتے ہیں۔'' اجتناب کرتے ہیں اور جب خصہ میں آجائیں تو معاف کردیتے ہیں۔'' اور فرمایا: ﴿ وَالَّذِيْنَ يَحْتَنِبُونَ كَبِّسَرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ط إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمُغْفِرَةِ. ﴾ (النحم: ٣٢/٥٣)

''لیعنی ان لوگوں کو جو بڑے بڑے گنا ہوں اور بے حیائی کے کاموں سے بچتے ہیں، سوائے چھوٹی چھوٹی لغزشوں کے آپ کا رب بے شک بڑی مغفرت والا ہے''۔ اور رسول اللّه صلی اللّه علیہ وسلم نے فر مایا:

۔ '' پانچول نمازیں ، جمعہ دوسرے جمع تک اور رمضان دوسرے رمضان تک اپنے درمیانی تو میں میں نہ اوراگرہ میں سرک نام ہو اثاثا کا کی گئی میں میں مار سر ''دی

وقفہ میں ہونے والے گنا ہوں کا کفارہ ہیں ،بشرطیکہ کبیرہ گنا ہوں ہے بچاجائے۔'' ① پس کبیرہ گنا ہوں کے متعلق تحقیق کرنا ضروری ہے کہان کا تعین ہوسکے تا کہ مسلمان ان ۔

سے پی سکیں۔ پس ہم نے دیکھا کہ علاء نے اس بارے میں اختلاف کیا ہے۔ بعض نے کہا ہے کہوہ سات ہیں۔انہوں نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے اس فر مان سے دلیل لی ہے۔

کہ دہ سات ہیں۔امہوں نے بی سمی القدعلیہ وسم کے اس فر مان سے دیمل کی ہے۔ '' سات مہلک چیز وں سے اجتناب کر د'' اور ان کا ذکر کیا' اللہ کے ساتھ شرک کرنا، جاد د،

سات مبلک چیزول سے اجتناب کرو اوران کا ذکر کیا اللہ لے ساتھ شرک کرنا، جادو، سسی جان کو، جس کاقبل کرنا اللہ نے حرام قرار دیا ہے۔ ناحق قتل کرنا، ینتیم کے مال کو کھانا ،سود

کھانا، میدان جہاہے فرار ہونا اور پاک دامن بے خبر سومنات پر بہتان لگانا۔'' 🏵

ابن عباس رضی الله عنهمانے فرمایا ''وہ ستر تک ہیں ،اوران میں سے زیادہ قریب سات تک ہیں ۔ ۞ اوراللّٰہ کی قتم!ابن عباسؓ نے سیج فرمایا۔

جہاں تک حدیث کا تعلق ہے تو اس میں بھی کبیر ہ گنا ہوں کوصرف سات تک محصور ومحدود ہیں کیا۔

کبیرہ گناہ وہ ہے جس پر دلیل قائم ہو کہ جو تخص ان بڑے بڑے گناہوں میں ہے کسی ایسے گناہ کا ارتکاب کرے، جس پر دنیا میں حد نافذ کی جائے، جیسے قتل ، زنا اور چوری ہے۔ یا جس کے ارتکاب پر آخرت میں عذاب یا خضب یا تہدید و ڈراوے کی وعید سنائی گئی ہے یا اس گناہ کے

<sup>🛈</sup> مسلم (۲۳۳) 🕐 بخاری (۲۷۶۱) و مسلم (۸۹)

عبدالرزاق نے اے روایت کیا ہاوراورامام طبری نے ((ان تحتنبوا کبائر ماتنہون)) کے تحت اپنی تغییر میں نقل کیا ہے۔

الكبائر كتاب الكبائر كالمجائر كالمجائز كالمجائر كالمجائز كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائز كالمجائز كالمجائز كالمجائز كالمجائر كالمجائز كالمجائز

مرتکب پر، ہمارے نبی محمطُ النیظیم کربان پرلعنت کی گئی ہو، تو ایسا گناہ کبیرہ گناہ ہے۔ ۞

اسے تسلیم کیے بغیر چارہ نہیں کہ بعض کبیرہ گناہ ، بعض سے بڑے ہوتے ہیں۔ کیا آپ نہیں
دیکھتے کہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے اللہ کے ساتھ شرک کرنے کو کبیرہ گناہ شاد کیا ہے۔ باوجود بیکہ
اس کا ارتکاب کرنے والا ہمیشہ جہنم میں رہے گا اور اسے بھی بھی معاف نہیں کیا جائے گا۔ اللہ
تعالیٰ نے فرمایا

ُ ﴿ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغُفِرُ اَنُ يُّشُرَكَ بِهِ وَ يَغُفِرُ مَا دُوْنَ ذَلِكَ لِمَنْ يَّشَاءً. ﴾ (النساء /٤: ٤٨)

'' بے شک اللہ بی (جرم) نہیں بخشے گا کہ اس کے ساتھ کسی کوشریک تھہرایا جائے اور اس کے سواجو گناہ' وہ جس کو چاہے بخش دےگا۔''

کبیره گناهون کی تفصیل: <sup>•</sup>

(۱) الله کے ساتھ شرک کرنا:

سب سے بڑا کبیرہ گناہ اللہ تعالیٰ کے ساتھ شرک کرنا ہے اوراس کی دوشمیں ہیں:

(الف)اللہ کے ساتھ کسی کوشریک بنایا جائے اوراس کے سوااس کی پوجا کی جائے ، جیسے حجر یا شجر ( درخت ) یا سورج یا جاندیا نبی یا پیربزرگ یا ستارہ یا فرشتہ یا اس کے علاوہ کوئی اور چیز

① ہروہ گناہ جس کے بارے میں دنیا میں حد ہے یا آخرت میں وعید ہے، آسے کبیرہ گناہ کہتے ہیں۔ شخ الاسلام نے بیاضافیقل کیا ہے: یااس بارے میں نفی ایمان کی وعید یا لعنت یاان دونوں جیسی کوئی چیز وارد ہوئی ہو۔ اور درست بات ہے ہے کہ گناہوں کی تقسیم دوطرح کی ہے۔ کبیرہ ادرصغیرہ جبکہ کبیرہ گناہ بھی بعض، بعض ہے بڑے ہیں۔ ابن عبدالسلام شافعی نے کہا: کبیرہ گناہ کی تحریف کے بارے میں کوئی بھی ضابطہ اصول اعتراض ہے سالم نہیں، لیکن شخ الاسلام وغیرہ نے جو ضابطہ بیان کیا ہے کہ جس کے بارے میں حد یا وعید یا لعنت یا لا تعلقی یا وہ ہم میں ہے نہیں یا تفی ایمان جیسے الفاظ وارد ہوں، سب سے سالم ضابطہ ہے۔ سعید بن جبیر بُرِیسَدُ بیان کرتے ہیں، کسی آ دمی نے ابن عباس ڈاٹھ کی ہیں۔ اس کے علاوہ بید کہ استعفار کے ہوتے ہوئے کہا: وہ سات سو ہیں ، ان میں سے زیادہ قریب سات تک ہیں۔ اس کے علاوہ بید کہ استعفار کے ہوتے ہوئے کوئی ہمیں اور اصرار کے ہوتے ہوئے کوئی گناہ صغیرہ نہیں۔ اس کے علاوہ بید کہ استعفار کے ہوتے ہوئے کوئی

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

حراث كتاب الكبائر كي المجائر كي المجائر كي المجائر كي المجائر كي المجائر كي المجائر 14 كي المجائر 14 كي المجائر

اوربیشرک اکبرہے،جس کااللہ عزوجل نے ذکر کرتے ہوئے فرمایا:

﴿ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُتُشْرَكَ بِهِ وَ يَغْفِرُ مَادُوْنَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ. ﴾ (٤: ٤٨) "بِ شك الله بي (جرم ) نہيں بخشے گا كه اس كے ساتھ كسى كوشر يك تفهرايا جائے اور اس کے سوا جو گناہ وہ جس کو حیاہے بخش دے گا۔''

اورالله تعالیٰ نے فر مایا:

﴿إِنَّ الشِّرُكَ لَظُلُمْ عَظِيْمٌ ٥﴾ (لقمان : ١٣/٣١)

"ب شك شرك بهت برواظلم بي "-

اورالله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿إِنَّهُ مَنْ يُّشُوكُ بِاللَّهِ فَقَدُ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَ مَاوالهُ النَّارُ وَمَا لِلظُّلِمِيْنَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴾ (المائدة: ٧٢/٥)

''یقین جانو کہ جواللہ کے ساتھ شریک گھبرائے اللہ اس پر جنت قطعی حرام کرچکا ہے اوراس کا ٹھکا ناجہنم ہے'۔اس کے متعلق بہت ہی آیات ہیں۔''

پس جس شخص نے اللہ کےساتھ شریک تھہرایا اور پھروہ حالت شرک میں فوت ہوجائے تو وہ قطعی طور پرجہنمی ہے، جیسے کوئی محض اللہ پر ایمان لائے اور حالت ایمان پر ہی فوت ہوجائے تو وہ جنتیوں میں سے ہے،خواہ (اس کے گناہوں کی دجہ سے کچھ دیر) اسے جہنم میں عذاب دیا حائے میچے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا:

'' کیا میں تہمیں کبیرہ گناہوں کے متعلق نہ بتاؤں؟'' آپ نے تین بار فرمایا: انہوں نے عرض كيا، كيون نبيس! الله كرسول ضرور بتائيس، آب فرمايا:

''اللہ کے ساتھ شریک تھہرانا اور والدین کی نافر مانی کرنا''۔آپ ٹیک لگائے ہوئے تھے کہ اٹھ کر ہیٹھ گئے ،تو فرمایا:'' سن لو! اور جھوٹی بات کرنا،سن لو!اور جھوٹی گواہی دینا۔'' پس آ پ میہ بات د ہراتے رہے جی کہ ہم نے کہا: کاش کہ آپ خاموش ہوجا کیں۔ 🛈 اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''سات مہلک چیزوں سے اجتناب کرو''۔

اورآپ نے ان میں اللہ کے ساتھ شرک کرنے کا بھی ذکر فرمایا: اورآپ نے فرمایا:

'' جو مخص ابنادین بدل لے تواسے مل کردو''۔ 🛈

(ب)شرک کی دوسری قتم" ریا کاری"۔

جییا کہاللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ فَمَنْ كَانَ يَرْجُو الِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلُ عَمَدٌ صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكُ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ

أَحَدًا ﴾ (الكهفِ: ١١٠/١٨)

''پس جو شخص اپنے رب سے ملاقات کی امید رکھتا ہے، اسے حاہیے کہ وہ نیک عمل کرےاورا پنے رب کی عبادت میں کسی کوبھی شریک نہ کرئے'۔

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''شرک اصغرہے بچو''انہوں نے عرض کیا، اللہ کے رسول! شرک اصغر کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: ''ریاء'' اللہ تعالی جس روز بندوں کو ان کے اعمال کی جزا دے گا تو وہ فرمائے گا:ان کے پاس جاؤجن کوتم ونیا میں اپنے اعمال دکھایا کرتے تھے۔ پس ذرا

د کیموکیاتم ان کے پاس جزایاتے ہو؟" 🏵

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''الله فرما تا ہے: جس نے کوئی عمل کیا ،اوراس میں میرے ساتھ کسی اور کوشریک کیا تو وہ عمل اس کے لیے ہے جس کواس نے شریک کیا ،اور میں اس سے بیزار ولا تعلق ہوں۔'' ®

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا

''جس شخص نے سنانے کے لیے نیک کام کیا تو اللہ( قیامت کے دن) اس کی بدنیتی سب کو

ئادے گااور جس نے دکھلا وے کے لیے کام کیا تو اللہ اس کا دکھلا وا ظاہر کردے گا''۔ ©

ابخاری و مسلم

<sup>🛈</sup> بخاری (۱۹۲۲) 🕑 مسند احمد

مسلم نكين اس ميس (أنا منه برى)) كالفاظنين بين بيالفاظ ابن ماجيمين بير -

+ الكبائر ال

اورابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: '' کتنے ہی روزہ دار ہیں ،جنہیں اپنے روزے سے محض بھوک اور پیاس ہی ملتی ہے، اور کتنے ہی تہجد گزار ہیں جنہیں اپنی شب بیداری (تہجد) سے صرف جاگتے رہنے کے سوا کچھنیں ملتا''۔ ①

لینی جب روزہ اور نماز اللہ تعالیٰ کی رضائے لیے نہ ہوتو اس پر تو اب نہیں ملتا، جسیا کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا جاتا ہے کہ آپ نے فر مایا: '' جوشخص ریا اور شہرت کے لیے ممل کرتا ہے، وہ اس مخض کی طرح ہے جو کنگریوں سے اپنی تھیلی بھر لیتا ہے، پھر ان سے خرید اری

کرنے کے لیے بازارکارخ کرتا ہے، پس جب وہ فروخت کرنے والے کے سامنے اسے کھولتا ہے، تو وہ کنگریاں ہوتی ہیں، اور وہ آئہیں اس کے چہرے پردے مارتا ہے۔ اسے لوگوں کی باتوں کے سواا پی تھیلی سے کوئی فائدہ حاصل نہیں ہوتا کہ دیکھوا پی تھیلی کیسے بھرے پھرتا ہے، جبکہ اسے اس کے بدلے ہیں پچھٹیں دیا جاتا۔ پس اس طرح وہ شخص ہے جوریا اور شہرت کی خاطرعمل کرتا

ہے۔اسے اپنے عمل سے لوگوں کی باتوں کے سوا کچھ حاصل نہیں ہوتا اور اس کے لیے آخرت میں بھی کوئی ثواب نہیں ہوگا''۔ ﴿

الله تعالى نے قرمایا:

﴿ وَقَدِ مِنْ آ اِلَّى مَا عَمِلُواْ مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلُنْهُ هَبَآءً مَّنْتُورًا ﴾ (الفرقان: ٧٣/٢٥)

''ہم نے ان کے اعمال کی طرف توجہ کی تو ان کواڑتی ہوئی خاک کی مانند کردیا۔'' لیعنی انہوں نے اللہ تعالیٰ کی رضا کے بغیر جوعمل کیے تھے، ہم نے ان کا ثو اب ضائع کردیا اور انہیں اڑتی ہوئی خاک کی مانند کردیا اور بیروہ چیز ہے جوسورج کی شعاع میں نظر آتی ہے۔ عدی بن حاتم طائی رضی اللہ عنہ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا۔

آپ سلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

ابن ماجه ٔ مسند احمد

<sup>🛈</sup> ابن حجرنے فرمایا یہ بعض حکماء کا قول ہے، حدیث نبوی نہیں۔

+ كتاب الكبائر كالمستخدمة المستخدمة المستخدم '' قیامت کے دن لوگوں کی بچھ جماعتوں کو جنت کی طرف جانے کا حکم دیا جائے گاحتیٰ کہ جب وہ اس کے قریب پہنچ جائمیں گے اور اس کی خوشبو پالیں گے اور اللہ نے اس میں جنتیوں کے لیے جو کل تیار کیے ہیں، انہیں بھی و کھے لیں گے، تو آواز دی جائے گی کہ انہیں بہیں سے واپس کردو، کیونکہان کااس میں کوئی حصنہیں ۔ پس وہ حسرت وندامت کے ساتھ ایسے لوٹیس گے کہ بہلوں اور بعد والوں میں ہے کوئی بھی ایسے نہیں لوٹا ہوگا۔ وہ عرض کریں گے: ہمارے پروردگار! اگرتو ہمیں، جو پچھتونے اپنے دوستوں کے لیے جزا کےطور پر تیار کر رکھا ہے،اس کا نظارہ کرانے ہے پہلے ہی ،جہنم میں داخل کردیتا' تو وہ ہمارے لیے بیسب پچھ دیکھ لینے کے بغیرزیادہ آسان ہوتا، تو اللہ تعالی فرمائے گا: میں نے تمہارے متعلق یہی ارادہ کیا تھا۔ کیونکہ جب تم خلوت میں ہوتے تھے توعظائم کے ساتھ میرے مقابلے پرآتے تھے۔اور جب تم لوگوں سے ملتے تھے تو تم انہیں بڑی عاجزی سے اور جھک کر ملتے تھے۔تم لوگوں کوتو اپنے انکمال دکھاتے تھے،کیکن وہ اس چیز (اخلاص) سے خالی ہوتے تھے جوتم مجھے اپنے دلوں سے دیتے تھے۔تم لوگوں سے ڈرتے رہے، کیکن مجھ ہے نہیں ڈرے ہتم لوگوں کی شان وشوکت کا خیال رکھتے رہے کیکن میری شان و شوکت کا ذرا بھی خیال نہ رکھا۔تم نے لوگوں کی خاطر ( گناہ) چھوڑ ا ،کیکن میری خاطر نہیں چھوڑا۔ میں آج تہمہیں اپنے بہت بڑے اجر د ثواب ہےمحروم رکھنے کے ساتھ ساتھ تہمہیں اپنے انتهائی در دناک عذاب کا مزابھی چکھاؤں گا۔' 🛈

ا کی آ دمی نے رسول الله علی الله علیه وسلم ہے دریافت کیا ، نجات کس چیز میں ہے؟ تو آپ نے فر مایا:''تم اللہ کو دھو کہ نہ دو''۔اس نے عرض کیا:اللہ کو کیسے دھو کہ دیا جاسکتا ہے؟ آپ صلی اللہ عليه وسلم نے فرمایا: ''تم كوئى الياعمل كرو، جس كے متعلق الله اور اس كے رسول صلى الله عليه وسلم نے فرمایا " تم کوئی ایساعمل کرو،جس کے متعلق الله اوراس کے رسول صلی الله علیه وسلم نے تنہیں تھم دیا ہواورتم اس کے ذریعے اللہ کی رضا مندی نہ جا ہو۔ نیز ریاء سے بچو، کیونکہ وہ شرک اصغر ہے اور روز قیامت ریا کارکو، تمام انسانوں کے سامنے چارناموں سے بگارا جائے گا۔اے ریا کار!اے دھوکہ باز!اے فاجر!اوراے ناکام ونامراد! تیراعمل رائیگاں گیا اور تیراا جرضا کتے ہوگیا،

ابن الى الدنيانے اسے حبلة المبحصي كى روايت نقل كيا ہے۔ اس كى سند ضعيف ہے۔ (عراقى)

تیرے لیے ہمارے ماس کوئی اجز نہیں ، دھو کے باز! جن کے لیے توعمل کیا کرتا تھا، انہی کے یاس حااوران ہے ایناا جرحاصل کڑ'۔

بعض حكماءٌ سے يو چھا گيا مخلص كون ہے؟ تو انہوں نے بتايا بخلص وہ مخص ہے جوا بنی نیکیاں بھی ویسے ہی چھیاتا ہے، جیسے وہ اپنی برائیاں چھیاتا ہے۔ان میں سے کس سے یوچھا گیا۔اخلاص کی غایت کیا ہے؟ انہوں نے کہا: یہ کہتم اپنے بارے میں لوگوں کی تعریف کو پسند نہ

نیل بن عیاض نے فرمایا: لوگوں کی خاطرعمل ترک کرنا ریا جبکہ لوگوں کی خاطرعمل کرنا شرک ہےاوراخلاص بیہ ہے کہاللہ تمہیں ان دونوں چیز دں سے بچالے۔اےاللہ! ہمیں بھی ان دونوں چیزوں سے بچانااور ہم سے درگز رفر ما۔

☆☆☆

# (۲)قتل نفس

الله تعالیٰ نے فر مایا:

﴿ وَمَنْ يَقْتُلُ مُوْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيْهَا وَ غَضِبَ اللهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَاعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيْمًا ٥ ﴾ (النساء: ٩٣/٤)

''جوخص کسی مومن مخص کو جان بو جھ کر مارڈ الے تو اس کی سزاجہنم ہے جہاں وہ ہمیشہ رہے گا ادر اس پر اللّٰہ کا غضب ہوا ادر اس نے اس پرلعنت کی ادر اس کے لیے بڑا عذاب تیار کر رکھا ہے''۔

#### اورفر مایا:

﴿ وَاللَّذِيْنَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللّهِ إِلهًا الْحَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّذِي حَرَّمَ اللّهُ إِلّهَ الْحَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّذِي حَرَّمَ اللّهُ إِلّهَ بِالْحَقِّ وَلَا يَزُنُونَ وَمَنْ يَقْعَلُ ذَلِكَ يَلُقَ آثَامًا ٥ يُّطْعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْحَالَ الْحَالَ عَمَلًا صَالِحًا الْقَيْنَمَةِ وَ يَخُلُدُ فِيْهِ مُهَانًا ٥ إِلَّا مَنْ تَابَ وَ امَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا الْقَيْنَمَةِ وَ يَخُلُدُ فِيْهِ مُهَانًا ٥ إِلَّا مَنْ تَابَ وَ امَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَا وَلَيْنَ اللّهُ عَفُورًا رَّحِيْمًا . ﴾ فَاولَ لَيْنَ اللّهُ عَفُورًا رَّحِيْمًا . ﴾ (الفرقان: ١٥/ ٨٦ - ٧٠)

''اوروہ لوگ جو بیں جواللہ کے ساتھ اور معبودوں کونہیں پکارتے اور جس کے آل کواللہ نے حرام قرار دیا ہے۔ اس کوآل نہیں کرتے ، مگر حق پراوروہ نہ ، می زنا کے مرتکب ہوتے بیں اور جو گناہ ارتکاب کرے گا وہ اس کی سزا پائے گا، قیامت کے دن اسے دگنا عذاب ہوگا اوروہ وہاں بمیشہ رسوائی کے ساتھ رہے گا مگر جس خص نے تو بہ کرلی اور ایمان لے آیا اور نیک عمل کیا''۔

اورالله تعالی نے فرمایا:

﴿ مِنْ اَجُلِ ذَٰلِكَ كَتَبُنَا عَلَى بَنِى اِسُرَآءِ يُلَ اَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفُسًا مِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْفَسَادٍ فِي الْآرْضِ فَكَانَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِعْيًّا وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَانَّمَا اَحْيًا النَّاسَ جَمِعْيًّا وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَانَّمَا اَحْيًا النَّاسَ جَمِعْيًّا وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَانَّمَا اَحْيًا النَّاسَ جَمِعْيًّا . ﴾ (المائدة: ٥/ ٣٢)

الكبائر كاب الكبائر كالمجاهدة المجاهدة ''اسی بنا پرہم نے بنی اسرائیل کو تھم دیا کہ جو کسی شخص کو بغیر قصاص کے اور بغیر ملک

میں نسادیھیلانے کے مارڈالے،تو گویااس نے تمام انسانوں کو مارڈ الا اور جوکسی شخص

كوبچالے تو گوياس نے تمام انسانوں كوبچاليا"\_

﴿ وَإِذَا الْمَوْءُ دَةُ سُهِلَتُ ٥ بِاَيِّ ذَانُهٍ قُتِلَتُ ٥ ﴾ (التكوير: ٨/٨١ -٩) ''اورجس ونت اس لڑکی ہے، جوزندہ در گورکی گئتھی، پوچھا جائے گا کہ دہ کس گناہ کی یا داش میں ماری گئی''۔

ادرنی اکرم صلی الله علیه وسلم نے قرمایا:

" سات مهلکات ہے بچو" آپ نے ان میں کسی جان کو جس کا اللہ نے قبل کرنا حرام قرار دیا ہے، ناحق قتل کرنے کا بھی ذکر فرمایا۔ اور ایک آ دمی نے نبی صلی الله علیه وسلم سے عرض کیا: الله تعالیٰ کے ہال کون ساگناہ سب سے بڑا ہے؟ آپ نے فرمایا: یہ کہتو اللہ کے لیے کوئی شریک مقرر کرے ٔ حالانکہ ای نے تھتے ہیدا کیا ہے''۔ پھراس نے کہا: اس کے بعد کون سا؟ آپ نے فرمایا '' بیر کہ تو اپنی اولا د کواس اندیشے ہے قتل کرے کہ وہ تیرے ساتھ کھائے گی'۔اس نے

عرض کیا، پھرکون سا؟ آپ نے فرمایا: "پیرکہ تواپنے پڑوی کی بیوی سے زنا کر ہے'۔ 🛈

الله تعالى في اس كى تقيد يق مين به آيت نازل فرمائي:

﴿ وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ اللَّهِ الْهَا اخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزُنُونَ وَمَنْ يَتَّفَعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ آثَامًاه﴾ (الفرقان: ٦٨) ''اوروہ لوگ ہیں جواللہ کے ساتھ اور معبودوں کونہیں بکارتے ، اور جس کے قبل کواللہ نے حرام قرار دیا ہے، اس کوقل نہیں کرتے گرحق کے ساتھ اور وہ زنا بھی نہیں

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''جب دومسلمان اپنی مکواریں سونت کرید مقابل آجاتے ہیں تو قاتل اور مقتول دونوں جہنمی

<sup>🛈</sup> بخاری (٤٤٧٧) مسلم (٨٦)

+ ( کتاب الکبائر کی ) + ( کی کتاب الکبائر کی ) + ( کی کتاب الکبائر کی ) + ( کی کتاب الله کے رسول! یہ تو قاتل ہے، تو مقول کا کیا حال ہے؟ آپ نے فرمایا: "اس لیے کہ وہ بھی اپنے ساتھی کو تل کرنا چاہتا تھا"۔ ( )

امام ابوسلیمان رحمہ اللہ نے فرمایا: بیتو تب ہے جب وہ دونوں کسی تاویل و وضاحت اور د فاع کے لیے نہاڑتے ہوں، بلکہ وہ تو باہمی عداوت، عصبیت یا طلب دنیا یا حصول اقتدار یا غلبہ حاصل کرنے کے لیے لڑتے ہیں۔وہ اس وعید میں داخل ہیں۔

جہاں تک اس شخص کا تعلق ہے جو باغیوں سر کشوں سے اس وجہ سے لڑتا ہے جس وجہ سے ان سے لڑتا واجب ہوجاتا ہے یا وہ اپنی جان یا اپنی قابل احترام اور قابل تقدس چیز کا دفاع کرتے ہوئے لڑتا واجب ہوجاتا ہے یا وہ اپنی جان کا اپنی جان کا دفاع کرنے کے قصد کے بغیر ہوئے لڑتا ہے تو وہ اس وعید میں داخل نہیں۔ کیونکہ وہ اپنے ساتھی کو آل کرنے پر امور ہے۔ البتہ وہ اپنے ساتھی کے آل کرنے ہو کہ اور وہ سے میں داہر ن سے قبال کرے ، اور وہ اس کے قبل کرنے پر کیص نہ ہو بلکہ وہ تو اسے اپنے سے دور ہٹا رہا ہواور اگر اس کا ساتھی باز آجائے اور بیاس سے ہتھ دوک کے اور اس کا بیچھا نہ کرے تو بیصدیث (وعید) الیے لوگوں کے لیے وار دئیس ہوئی۔ البتہ جو شخص اس نہ کورہ صورت حال سے بر عکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ صورت حال سے برعکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ صورت حال سے برعکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ صورت حال سے برعکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ صورت عال سے برعکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ صورت عال سے برعکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ صورت عال سے برعکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ صورت عال سے برعکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ صورت عال سے برعکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ صورت عال سے برعکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ میں میں داخل ہے۔ اللہ اعلیم اس نہ کورہ صورت عال سے برعکس ہوتو وہ ہماری اس نہ کورہ میں میں داخل ہے۔ اللہ اعلیم ا

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم نفر مايا:

''میرے بعدایک دوسرے کوتل کر کے کا فرنہ بن جانا''۔ ⊙

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في قرمايا:

'' بندہ اپنے دین کے بارے میں وسعت وکشادگی میں رہتا ہے، جب تک وہ کسی

حرام خون (قتل) کاارتکاب نه کرلے'۔ 🛈

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

<sup>🛈</sup> بخاری (۳۱) مسلم (۲۸۸۸)

<sup>(</sup>۱۲۱) مسلم (۱۳۵) بخاری (۱۲۱) مسلم (۱۳۵)

احمد (۱۵۲٬۱٤۸/٤) ابن ماجه (۲٦/۸)

كتاب الكبائر

"روز قیامت لوگوں کے درمیان سب سے پہلے خونوں کے بارے میں فیصلہ کیا

جائے گا'۔ 🛈

اورحديث ميس ب كرسول اللصلى الله عليه وسلم في فرمايا:

' دکسی مومن کاقتل اللہ کے ہاں زوال دنیا سے بھی بڑھ کر ہے''۔ 🏵

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''الله كے ساتھ شرك كريّا، جان كولّ كرنا اور جھو ٹي قتم كبيره گناه ہيں'۔ 🕀

جھوٹی قتم کو'' نمین غموس'' کا نام اس لیے دیا گیا ہے کہ وہ الی قتم اٹھانے والے کوجہنم میں ڈبود ہے گی اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر ماما:

ودے کی اورا پ کی الکد علیہ و سے حرماہا. ''جو بھی ناحق جان قل کی جاتی ہے تو اس کا گناہ آ دم علیہ السلام کے پہلے بیٹے پر ہوتا ہے اور

وہ اس کے خون کا ذمہ دارہے، کیونکہ وہی پہلا شخص ہے جس نے قب کا طریقہ ایجاد کیا''۔ ﴿

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

و جس نے کسی ذمی شخص کوتل کیا ، تو وہ جنت کی خوشبو بھی نہیں پائے گا ، حالا نکہ اس کی

خوشبوتو چالیس سال کی مسافت ہےمحسوس ہوجاتی ہے'۔ @

اگر ذمی کے قبل کے بارے میں بیتھم ہے تو پھر کسی مسلمان کو کیسے قبل کیا جا سکتا ہے۔ ذمی بہود ونصاری میں سے وہ شخص ہے جو اسلامی مملکت میں رہنے کا عہد و پیاں کرے۔ تو اس کی جان کی حفاظت کرنا اسلامی حکومت کی ذمہ داری ہے۔

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

"جس نے کسی ذمی خص کوتل کیا ، حالا نکہ وہ اللہ اوراس کے رسول کی پناہ میں ہوتا ہے،

<sup>🛈</sup> بخاری (۱۸۷۶)\_ مسلم (۱۸۷۸)

<sup>©</sup> نسائی (۷/ ۸۳) اس کی سندهن سے۔

<sup>🗇</sup> بخاری (۱۱۷۵)

۳۲۲۵) بخاری (۳۳۲۵) مسلم (۱۹۷۷)

<sup>🕲</sup> بخاری (۳۱۹۳)

+ (23 عاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كالمنائر ك

تواس نے اللہ کی پناہ کوتوڑ ڈالا، وہ جنت کی خوشبو بھی نہیں پائے گا، حالانکہ اس کی خشبو بھی نہیں پائے گا، حالانکہ اس کی خشبہ بیرہ اق

خوشبو پیاس سال کی مسافت سے محسوس ہوجاتی ہے'۔ آ اور آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

'' '' بھی معاونت کی تو وہ اللہ سے اس حال ''' جس نے کسی مسلمان کے قل میں ، ہات کی صد تک بھی معاونت کی تو وہ اللہ سے اس حال میں ملاقات کرے گا کہ اس کی آٹھوں کے درمیان (پیشانی پر) اللہ تعالیٰ کی رحمت سے مایوس

لكھا ہوا ہوگا''۔ 🛈

ممکن ہے کہ اللہ ہر گناہ معاف کردے،البتہ وہ اس شخص کومعاف نہیں کرے گا جوحالت کفر پرفوت ہو، یاوہ آ دمی جوکسی موکن کو جان بو جھے گرقل کرڈا لے۔ ۞ ہم اللہ سے عافیت طلب کرتے ہیں۔

☆☆☆

<sup>🛈</sup> ترمذی (۱٤۰۳) ـ این ماجه (۲۹۸۷)

ابن ماجه (۲۶۲۰) اس کی سند ضعیف ہے۔

<sup>🕑</sup> نسائي (۸۱/۷) ـ ابوداؤد ٤٢٧٠)

## حتاب الكبائر كالمستخدمة المستخدمة المستخدم المستخدمة المستخدمة المستخدمة المستخدمة المستخدمة المستخدمة المستخدم المستخدمة المستخدمة المستخدمة المستخدمة المستخدمة المستخدم الم

### (۳)جادو

کیونکہ جادوگر جو ہے، وہ لا زمی طور پر کفر کا ارتکاب کرتا ہے۔ اللہ تعالی نے فرمایا: ﴿ وَلَلْهِ كِنَّ الشَّيطِيْنَ كَفَرُوْ الْعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْوَ. ﴾ (البقرة: ٢/ ٢٠٢) '' بلکہ شیاطین ہی نے کفر کا ارتکاب کیا، جولوگوں کو جادو سکھایا کرتے تھے''

شیطان ملعون جوانسان کو جادوسکھا تا ہے۔اس کی محض غرض یہی ہے کہاس کے ساتھ شرک کیا جائے اللہ تعالیٰ نے ہاروت و ماروت کے بارے میں خبر دیتے ہوئے فر مایا:

﴿ وَمَا يُعَلِّمُنِ مِنُ آحَدٍ حَتَّى يَقُولُآ إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكُفُرُ طَفَيَتَعَلَّمُونَ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا مِانَّةٍ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا مِانَّةٍ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا مِانَّةٍ مِنْ أَحَدٍ اللَّهِ مَا يُضُرُّهُمُ وَلَا يَنْفَعُهُمُ طَ وَلَقَدُ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرانهُ مَا يُضُرُّهُمُ وَلَا يَنْفَعُهُمُ طَ وَلَقَدُ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرانهُ مَا لَكُ فِي اللَّهِ عِلَى اللَّهُ عِيلَا مِنْ خَلَقٍ . ﴾ (البقرة / ٢: ٢ / ١)

''اور وہ کسی کونہیں سکھاتے تھے جب تک ان سے کہدنہ دیتے کہ ہم تو ایک ذریعہ آزمائش ہیں۔پستم کا فرنہ بنو، (اس کے باوجود) لوگ ان سے وہ با تیں سکھتے ، جن سے زن وشو میں جدائی ہواور وہ اللہ کے حکم کے سواکسی کو بھی ضرر نہیں پہنچا سکتے اور لوگوں نے وہ باتیں سیکھیں جوخودان کے لیے ضرر کا موجب ہوں اور وہ انہیں کوئی نفع نہ پہنچا کیں ، اور یقینا آنہیں معلوم تھا کہ جن لوگوں نے اس چیز کوخریدا ، ان کے لیے تخرت میں کوئی حصہ نہ ہوگا۔''

پس ہم بہت ی مخلوق کو د مکھتے ہیں کہ وہ گراہی کے باعث جادو میں بتلا ہوتی ہے اور وہ اسے حض حرام تصور کرتے ہیں، اور انہیں بیشعور نہیں کہ وہ کفر ہے۔ پس وہ علامات کاعلم سکھنے اور اس بڑمل کا آغاز کرتے ہیں اور بیحض جادو ہے۔ وہ جادو کے ذریعے میاں ہوی کے درمیان عقد و تعلق قائم کرتے ہیں اور بیحض جادو ہے۔ مردکی عورت سے محبت اور اس سے بغض و عداوت کو پیدا کرتے ہیں اور اس طرح کے مجھول کلمات کے ذریعے عمل کرتے ہیں۔ ان میں عداوت کو پیدا کرتے ہیں اور اس طرح کے مجھول کلمات کے ذریعے عمل کرتے ہیں۔ ان میں سے اکثر شرک و گراہی پر منی ہوتے ہیں۔ اور جادو گرکی حدومز اقتل ہے۔ کیونکہ اس نے اللہ کے محکمہ دلائل وہر اہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

### + كتاب الكبائر كالمجائر كالم كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر ك

ساتھ کفریا کفر کے مشابہ فعل کا ارتکاب کیا۔

نبي صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''سات مهلکات سے اجتناب کرؤ'۔ آپ نے ان میں جادو کا بھی ذکر کیا ہے۔ ①۔ پس بندے کواپنے رب سے ڈرتے رہنا چاہیے، اسے دنیا اور آخرت کے خسارے والے کام میں نہیں پڑتا چاہے۔ نبی صلی اللہ علیہ دسلم سے ثابت ہے کہ آپ نے فرمایا:

''جادوگر کی سزاات قتل کرناہے''۔ 🛈

اور بجالہ بن عبدۃ سے روایت ہے کہ انہوں نے کہا: عمر رضی اللہ عنہ کی طرف ہے آپ کی وفات سے ایک اللہ عنہ کی طرف سے آپ کی وفات سے ایک سال پہلے ،ہمیں ایک خط موصول ہوا کہ ہر جادوگر اور جادوگر نی کوقل کردؤ'۔ ﴿ وَہِبِ بَنَ مَنْ بِدِ بِيانَ کُر نَے ہِيں ، ہیں نے بعض کتب ہیں پڑھا کہ اللہ عزوج ل فرما تا ہے:

''میر ہے سواکوئی معبود نہیں ،جس نے جادو کیا اور جس کے لیے جادو کیا گیا ،جس نے کا بمن جیسی بات کہی گئی اور جس نے پرندوں کے ذریعے کا بمن جیسی بات کہی گئی اور جس نے پرندوں کے ذریعے برشگونی لیا جس کے لیے بدشگونی لی گئی وہ جھ میں ہے نہیں ۔''

علی بن ابی طالب رضی الله عنه بیان کرتے ہیں ،رسول الله صلی الله علیہ نے فر مایا: \* تین قتم کے لوگ جنت میں داخل نہیں ہوں گے، عادی شراب نوش، قطع رحی کرنے والا

اورجادو کی تصدیق کرنے والا"۔ ©

ابن مسعود رضی الله عنه مرفوعار وایت کرتے ہیں، آپ نے فرمایا:

"دم جهاز ، تمائم اور" توله "شرك بين\_"

''تمائم'' تمیمہ کی جمع ہے، یہ گھونگے اور منکے ہیں، جو جاہل لوگ،نظر بدسے بچنے کے خیال سے اپنے ،اپنی اولا داوراپنے جو پاؤں کے گلے میں لٹکاتے ہیں۔ یہ نعل جاہمیت ہے اور جو ایسا

<sup>🛈</sup> بخاری (۲۷۶۹)\_ مسلم (۸۹)

کین سیح یہ ہے کہ یہ جندب رضی اللہ عنہ کا قول ہے۔ تر مذی (۱۳۲۰)

ا احمد (۱/ ۱۹۰ یا ۱۹۱) \_ ابوداؤد (۳.٤۳)

احمد (٤/ ٢٩٩) اس كى سند مين ضعف ہے۔ ليكن اپنے شواہد كى دجہ سے صحيح ہے۔

عقيده رکھ تواس نے شرک کیا۔

''التولة'' تاء کے ینچے زیراور واؤپر زیریہ جادو کی قتم ہے،اس کے ذریعے عورت کی اپنے خاوندے محبت پیدا کی جاتی ہے۔

امام خطابی رحمہ اللہ ① نے فرمایا جہاں تک قرآن مجیدیا اللہ تعالیٰ کے اساء حنی کے ذریعے دم کرنے کا تعلق ہے تو بیمباح ہے، کیونکہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم حسن اور حسین رضی اللہ عنہما کوان کلمات کے ساتھ دم کیا کرتے تھے۔

''میں تم دونوں کو، ہرشیطان، ہرز ہر لیے جانور اور ہرنظر بڈسے اللہ کے کلمات کی پناہ میں بتاہوں''۔

اورالله بی سے مدوطلب کی جاتی ہے اورای پر جروسہ ہے۔

اوراللہ بی سے مدوطلب کی جاتی ہے اورای پر جروسہ ہے۔

امام احمد بن محمد بن ابراہیم بن خطاب ابوسلیمان خطابی، بہت ی مفید کتابوں کے مصنف ہیں، جیسے شرح سنن الی واؤد وغیرہ آپ نے ۳۸۸ ھکوبست میں وفات پائی۔

### 

### (۴)ترکنماز

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ فَخَلَفَ مِنْ مَ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلُوةَ وَ النَّبَعُوا الشَّهُواتِ فَسَوُفَ يَلُقُونَ غَيَّاهِ إِلَّا مَنْ تَابَ وَامَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ﴾ (مريم ١٩/٥٥-٢٠) "لُقُونَ غَيًّاه إلَّا مَنْ تَابَ وَامَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ﴾ (مريم ١٩/٥٥-٢٠) "كران كے بعد چندنا ظف آئے جنہوں نے نماز کوضائع كيا اور خواہشات نفسانى كي يون الله على من الله على الله على

ابن عباس رضی الله عنهمانے فرمایا ''انہوں نے نماز کو ضائع کیا'' اس سے مرادیہ بیس کہ انہوں نے کلی طور پرنماز ترک کردی تھی، بلکہ اس سے مرادیہ کہ انہوں نے نمازوں کو ان کے ادقات سے مؤخر کردیا تھا۔

امام التابعین سعید بن المسیب رحمة الله علیه نے فرمایا: اس سے مراد وہ مخص ہے جوظہر کی عصر کا وقت ہوجانے پر عصر کا وقت ہوجانے پر عصر کا وقت ہوجانے پر پڑھتا ہے، جبکہ نماز فجر ، طلوع آفاب کے قریب پڑھتا ہے۔ پس جو مخص اس حالت پراصرار کرتے ہوئے اور تو بہ کیے بغیر فوت ہوجائے تو اللہ نے اس سے 'دغیی'' کا وعدہ کیا ہے اور بیجہم کی ایک بہت گہری وادی ہے جس کا ذا نقہ بہت برا ہے۔ اور اللہ تعالی نے ایک دوسری آیت میں فرمایا:

﴿ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ٥ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلُوتِهِمْ سَاهُوْنَ ٥ ﴾ (الماعوذ/١٠٧:

(o - £

''پېان نمازيوں كے ليے خرابی ہے، جواپی نمازوں ہے بے خبر ہيں''۔

یعنی جوان نمباز وس سے غافل ہیں اور انہیں زیادہ اہمیت نہیں دیتے ،سعد بن الی وقاص رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں، میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے ان لوگوں کے متعلق دریافت کیا جواپی نماز دس سے غافل ہیں تو آپ نے فرمایا:

### مراكبائر <u>كتاب الكبائر كي الكبائر كي المرائر كي المرائر كي المرائر كي المرائر كي المرائر كي المرائر كي المرائر</u>

"اس سے مرادوقت سے مؤخر کرنا ہے"۔ ①

یعنی نماز کواس کے وقت سے مؤخر کرنا، انہیں نمازیوں کے نام سے موسوم کیا ،کیکن جب
انہوں نے انہیں اہمیت نددی اور انہیں ان کے وقت سے مؤخر کیا تو ان سے 'ویل'' کا وعدہ کیا۔
''ویل'' سے مراد' شدید عذاب' ہے۔ بعض نے کہا ہے کہ'' ویل'' جہنم میں ایک وادی ہے، اگر
دنیا کے پہاڑ اس میں ڈال دیئے جائیں تو اس کی شدت حرارت کی وجہ سے وہ بھی پگھل جائیں۔
''ویل'' ایسے لوگوں کامسکن ہے جونماز کو اہمیت نہیں دیتے اور ان کے وقت سے مؤخر کرتے
ہیں۔ البتہ جوخص اللہ کے حضور تو بہر لے اور اپنے کیے پرنا دم ہوتو اس کا معاملہ الگ ہے۔

الله تعالى نے ایک دوسری آیت میں فر مایا:

﴿ لِنَ يُنْهَا الَّذِيْنَ امَنُوا لَاتُلْهِكُمْ اَمُوالُكُمْ وَلَا اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ط وَمَنْ يَتَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولِنِّكَ هُمُ الْخُسِرُونَ٥﴾ (المنافقون ٦٣/: ٩)

''اے ایمان والو! تمہارے مال اور تمہاری اولا دسم ہیں اللہ کی یاد سے عافل نہ کرنے یائے ،اور جوکوئی ایما کرے گا،ایسے لوگ ہی خسارہ اٹھانے والے ہیں''۔

مفسرین نے بیان کیا ہے کہ اس آیت میں''اللہ کے ذکر'' سے مراد'' پانچوں نمازیں ہیں'' پس جو خص اپنے مال کے ذریعے اپنی خرید وفروخت'اپنی معیشت ، اپنی صنعت و تجارت اور اپنی اولا دکی وجہ سے مصروف ہوکر نماز کو اس کے وقت سے مؤخر کردے ، تو ایسا شخص نقصان اٹھانے

والول میں سے ہے۔ اس طرح نبی اکرم صلی الله عليه وسلم في فرمايا:

''روز قیامت بندے سے اس کے اعمال میں سب سے پہلے نماز کا حساب لیا جائے گا،اگروہ درست ہوئی تو وہ شخص کا میاب و کا مران ہوگا، اور اگر اس میں نقص رہا تو وہ نا کام و نامراد ہوگا۔''

الله تعالی نے جہنمیوں کے بارے میں خبردیے ہوئے فرمایا:

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

بزار نے عکر مد بن ابراہیم کی روایت سے اسے اپنی مند میں موقوف روایت کیا ہے۔ مرنوع کئیں ،منذری اور عکر مدین ابرائی ہے کہ بیسعد
 بن ابی وقاص رضی اللہ عند کا قول ہے۔ پس بیموقوف ہے۔

المُ اسلَكَكُمْ فِي سَقَرَه قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ٥ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ
الْمِسْكِيْنَ٥ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ٥ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ اللِّيْنِ٥
الْمِسْكِيْنَ٥ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ٥ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ اللِّيْنِ٥

الْمِسْكِينَ٥ وَكُنَّا نَحُوضُ مَعَ الْخَآنِضِينَ٥ وَكُنَّا نَكَدِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ٥ كَنَّا نَكَدِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ٥ حَتَّى اَتَنَا الْيَقِينُ٥﴾ (المدثر ٢٤/: ٢٢-

ζ٤Λ

اور نبی صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''ہمارے اور ان کے درمیان جوعہد ہے وہ نماز کا عہد ہے' پس جس نے اسے ترک کیا تو اس نے کفر کیا''۔ ①

''بندے اور کفر کے درمیان جوحد فاصل ہے وہ ترک نماز ہے'۔ 🏵

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم نے فر مايا:

''جِسْ خُصْ كَى نماز عصر فوت ہُو تئی تو اس كے ممل صائع ہو گئے''۔ ۞

نیزرسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

'' جو خص جان بو جھ کرنماز جھوڑ دے تو اس سے اللّٰد کا ذمہ ختم ہو جاتا ہے۔'' ﴿

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

- مسند احمد (۵/ ۳٤٦) ترمذی (۲.۲۲۳)
  - ۵ مسلم (۸۲)
  - ) ابن ماحه (۲۹٤)\_ بخاری (۵۵۳)
- 🛈 اپنے شواہد کے ساتھ سیجے ہے۔ دیکھئے الارواء (۲۰۲۶)

حق اسلام کے علاوہ اپنی جانیں اور اپنا اموال جھ سے بچالیے۔ اور ان کا حساب اللہ کے فرے ہے'۔ 0

اورآ بِ مَنَا لَيْنَا لِمُ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللللَّمِي الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّالللَّهِ الللَّهِ الللللَّمِلْمِ الللَّهِ الللَّهِ الللللَّمِي ا

''جس شخص نے اس (نماز) کی حفاظت کی تواس کے لیےروز قیامت نوروبر ہان اور نجات ہوگی اور جس شخص نے اس کی حفاظت نه کی تو اس کے لیے روز قیامت نوروبر ہان نه ہوگی نه نجات اوروہ قیامت کے دن فرعون ، قارون ، ہامان اور الی بن خلف کے ساتھ ہوگا''۔ ①

عمر رضی الله عند نے فرمایا: ''سن لو! جس نے نماز کوضائع کیا، اس کا اسلام میں کوئی حصہ نہیں''۔ ⊕

بعض علماء نے بیان کیا: تارک نماز کاان چاروں کے ساتھ حشر ہوگا،اس کی وجہ سے ہے کہ وہ
اپنے مال یا اپنی بادشاہت یا اپنی وزارت یا اپنی تجارت کی وجہ سے نماز سے عافل رہا۔اگر تو وہ
اپنے مال کی وجہ سے عافل رہا تو اس کا حشر قارون کے ساتھ ہوگا۔اگرا پنی بادشاہت کی وجہ سے
عافل رہا تو پھر فرعون کے ساتھ حشر ہوگا۔اگر وجہ غفلت اس کی وزارت بی تو پھراس کا حشر ہامان
کے ساتھ ہوگا۔اوراگر وہ اپنی تجارت کی وجہ سے غافل رہا تو پھراس کا حشر کفار مکہ کے تا جرائی بن
خلف کے ساتھ ہوگا۔

معاذین جبل رضی الله عند سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فر مایا: ''جس هخص نے جان بوجھ کر فرض نماز ترک کر دی تواس سے الله عز وجل کا ذمه اور امان ختم ہوئی''۔ @

عمر بن خطاب رضی الله عنه بیان کرتے ہیں: ایک آ دمی رسول الله صلی الله علیه وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا تو اس نے عرض کیا۔اللہ کے رسول!الله تعالیٰ کو اسلام میں کون ساعمل زیادہ محبوب

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

<sup>(</sup>۲۲) مسلم (۲۲) بخاری (۲۵)

احمد (۲/ ۱۹۹) ابن حبان (۱٤٦٧) اس کی سند سنے -

<sup>🕏</sup> ابن ابی شیبه فی ((الایمان)) (۱۰۳)

احمد عن معاذ بن جبل رضى الله عنه

ہے؟ آپ نے فرمایا:

''نمازکواس کے وقت پرادا کرنا،جس نے نمازترک کی تواس کا دین نہیں،اورنماز دین

کاستون ہے'۔ 🛈

جب عمر بن خطاب رضی الله عنه کو نیزه مارا گیا تو کسی نے کہا: امیر المونین ! نماز انہوں نے فرمایا: ہاں، کیوں کہ جس نے نماز ضا کع کی تو اس کا اسلام میں کوئی حصہ نہیں اور آپ رضی الله عنه نے نماز اوا کی جبکہ آپ کا خون بہدر ہاتھا۔

عبداللہ بن شفق تا بھی بیان کرتے ہیں۔رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابہ،نماز کے علاوہ کسی اورعمل کے ترک کرنے کو کفر خیال نہیں کرتے تھے۔علی رضی اللہ عنہ سے ایک بے نمازعورت

کے متعلق پوچھا گیا توانہوں نے فر مایا: ''جونماز نہ پڑھے تو وہ کا فر ہے''۔ €

ابن مسعود رضى الله عنه فرمايا:

''جونماز نه پڑھے تواس کا کوئی دین نہیں''۔ 🏵

ابن عباس رضی اللّه عندنے فر مایا:

''جس شخص نے جان بوجھ کرا کیک نماز جھوڑ دی تو وہ اللہ تعالیٰ ہے اس حالِ میں ملاقات کرےگا کہ وہ اس پر ناراض ہوگا''۔

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

'' جو خض اس حال میں اللہ ہے ملاقات کرے گا کہ وہ نماز ضائع کرتا ہوگا،تو اللہ اس کی نیکیوں کی ذرا بھر پروانہیں کرے گا۔جبکہ وہ نماز ضائع کرتا ہوگا۔'' ۞

ابن حزم نے فرمایا:

<sup>🛈</sup> بیهقی می شعب الایمان ـ اس کی سندضعیف ہے ۔ امام حاکم نے فرمایا: عمر مدنے عمرٌ سے نہیں سنا ـ

ترمذی\_حاکم

<sup>)</sup> محمر بن نفرنے اسے موقوف روایت کیاہے۔

طبراني في الاوسط

ابراجيم تخفى رحمه اللدنے فر مايا:

''جس نے نماز ترک کی تواس نے کفر کیا''۔

الوب ختیانی رحمه الله نے بھی اس طرح کہائے:

عون بن عبداللدر حمد اللدن فرمايا:

جب بندے کواس کی قبر میں داخل کیا جاتا ہے تو اس سے سب سے پہلے نماز کے بارے میں پوچھا جاتا ہے، اگر وہ درست ہوئی تو پھر اس کے باقی اعمال کو دیکھا جاتا ہے اور اگر وہ درست نہ ہوئی تو پھراس کے بعداس کے کمٹی کونہیں دیکھا جائے گا۔

اور آپ سلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''جب بندہ اول وقت میں نماز اوا کرتا ہے تو وہ آسان کی طرف بلندہ وتی ہے اور اس کے لیے نور ہوتا ہے ، حتی کہ وہ عرش تک پہنچ جاتی ہے اور وہ روز قیامت تک اپنے پڑھے والے کے لیے مغفرت طلب کرتی رہتی ہے۔ اور وہ کہتی ہے' اللہ تمہاری حفاظت فی اور جب بندہ نماز اس کے وقت سے ہٹ کرادا کرتا ہے تو وہ آسان کی طرف بلندہ وتی ہے، اس کی تاریکی ہوتی ہے۔ جب وہ آسان تک پہنچتی ہے تو اسے بوسیدہ کپڑے کی طرح لیپ دیا جاتا ہے اور اس پڑھنے والے کے منہ پر مار دیا جاتا ہے اور وہ کہتی ہے: اللہ تمہیں ضائع کر سے جسے تم پر عمنہ پر مار دیا جاتا ہے اور وہ کہتی ہے: اللہ تمہیں ضائع کر سے جسے تم

عبداللہ بن عمر و بن عاص رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں ، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: '' تین قتم کے لوگوں کی نماز قبول نہیں ہوتی۔ جولوگوں کی امامت کرائے جبکہ وہ اسے ناپسند کرتے ہوں ، جوکسی آزاد کردہ مخض کوغلام بنا لے اور وہ شخص جونماز کواس کا وقت ختم ہوجانے کے

بعد پڑھے'۔ 🛈

<sup>🛈</sup> الطبراني في الاوسط\_ اسكي سندضعيف ٢- 🕲 ابوداؤد

الكبائر كتاب الكبائر كالمناز كالمناز

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

'' جس شخص نے کسی عذر کے بغیر دونمازیں جمع کیس تو اس نے کمیرہ گناہوں کے

ابواب میں سے ایک عظیم باب پردستک دی۔ "

پس ہم اللہ سے تو قبق واعانت طلب کرتے ہیں ، کیونکہ وہ بروائن وا تا اور بہت ہی رحم کرنے

والاہے۔

\*\*\*

٠ مستدرك حاكم

الكبائر كتاب الكبائر كالمنافر كالمنافر

# بچے کوئس عمر میں نماز کا حکم دیا جائے

رسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

'' جب بچیسات برس کا ہوجائے تو اسے نماز کا حکم دواور جب وہ دس برس کا ہوجائے تو نماز نہ پڑھنے پراس کی بٹائی کرو''۔ ①

اورایک روایت میں ہے:

''اپنی اولا دکونماز کا حکم دو جب کہ وہ سات برس کے ہوں اور جب وہ دس برس کے ہوں اور جب وہ دس برس کے ہوجا کیں تو آئیسی نمازنہ پڑھنے پر سزادو،اور (ای عمر میں)ان کے بستر الگ کردؤ'۔

امام ابوسلیمان خطابی میکنید نے فرمایا بیر مدیث تارک نماز کو تحت سر ادینے پر دلالت کرتی ہے۔
امام شافعی میکنید کے بعض ساتھی اس مدیث سے ، بالغ شخص کو جان بو جھ کر نماز ترک کرنے
پر ، واجب القتل ہونے کی دلیل لیتے ہیں۔ اور وہ کہتے ہیں : جب نا بالغ شخص ترک نماز پر پٹائی کا
مستحق ہے تو یہ چیز اس پر دلالت کرتی ہے کہ وہی (تارک نماز) شخص بلوغت کے بعد ایسی سزا کا

مستحق قرار پاتا ہے جو پٹائی سے زیادہ بلیغ ہواور پٹائی کے بعد قل سے زیادہ کوئی چیز شدید نہیں۔ علاء نے تارک نماز کے حکم کے بارے میں اختلاف کیا ہے:

امام مالك، امام شافعي اورامام احمد بينظير في فرمايا:

تارک نمازکوتلوار کے واری قرآ کیا جائے پھرانہوں نے اس کے کفر کے بارے میں اختلاق کیا ہے کہ جب وہ بلا عذرا سے ترک کرد ہے تی کہ اس کا وقت جاتا رہے۔ پس ابراہیم خنی ، ﴿ اللهِ اللهِ عَنْدَاللّٰهِ بن مبارک، احمد بن صنبل ﴿ اور اسحاق بن راہوریہ ﴿ حمم اللهُ

- 🛈 ابو داؤ د 🔻 ابن بزید ابو عمران کوفی مخفی ، کتب سته کر جال میں ہے ہیں۔ ۹۲ ھے کو وفات پائی۔
- کتبستے کے رجال کے امام ہیں۔ ۱۳۱ھ میں وفات پائی۔ ﴿ علم کے امام ، شُخ الحد ثین فقیہ اور امام بخاری ، امام سلم اور امام ابوداؤور حمیم اللہ کے استاد ہیں۔ ۲۳۱ھ میں وفات پائی۔
- اسحاق بن ابراہیم بن محمد خطلی ابومحمد، ابن راہویہ کے نام سے شہرت پائی۔ آمام سلم ، ابوداؤد ، امام نسائی
   کے استاد ، امام فقید اور الحافظ میں ۔ ۲۳۸ ہویں وفات یائی۔

نے فرمایا وہ کا فر ہے اور انہوں نے نبی سلی اللہ علیہ وسلم کے اس فرمان سے استدلال کیا ہے:

''جمارے اور ان کے مابین جوعبد ہے، وہ نماز ہے، پس جس خفس نے اسے ترک کیا تو اس نے کفر کیا''۔

اور آپ سلی اللہ علیہ وسلم کا فرمان ہے:

''آدی اور کفر کے درمیان حدفاصل نماز ہے''۔

\$\$\$

# فصل

حدیث ( میں وارد ہے:

''جوش فرض نمازوں کی حفاظت کر ہے واللہ تعالیٰ اسے پانچے اعزازات والعامات عطا فرمائے گا۔ اس سے رزق کی تنگی اور عذاب دور کردے گا۔ اس کا نامہ اعمال اس کے دائیں ہاتھ میں عطا کرے گا، وہ تیز بجلی کی طرح پل صراط سے گزر جائے گا اور وہ بلاحساب جنت میں داخل ہوجائے گا اور جوشنی اسے معمولی سمجھ گا تو اللہ اسے پندرہ قسم کی سزائیں دے گا۔ ان میں سے پانچ دنیا میں ، تین موت کے وقت ، تین قبر میں اور تین قبر سے نکلنے پر۔ پس جہاں تک دنیا کی سزاؤں کا تعلق ہوتو ان میں سے پہلی ہے کہ اس کی عمر سے برکت اٹھالی جائے گی۔ دوسری سے کہ اس کی عمر سے برکت اٹھالی جائے گی۔ دوسری سے کہ اس کی علامت منادی جائے گی۔ تیسری سزا ہے کہ وہ جو بھی عمل کہ اس کی حربے سے کہ اس کی دعاء آسمان کی طرف کرے گا، اللہ تعالیٰ اس پر اجرنہیں دے گا۔ اور چوشی سزایہ ہے کہ اس کی دعاء آسمان کی طرف بلند نہیں ہوگا۔

جہاں تک موت کے وقت بینچنے والی سزا کیں ہیں ، تو ان میں سے یہ ہے کہ وہ شخص ذلت کی ۔ موت مرے گا۔ دوسری یہ ہے کہ وہ بھوکا مرے گا اور تیسری بیہ ہے کہ وہ پیاسا مرے گا۔اگراسے دنیا کے تمام سمندروں کا یانی پلادیا جائے تو اس کی پیاس نہیں بجھے گی۔

اور جوسزا کیں اسے قبر میں ملیں گی، ان میں سے پہلی یہ ہے کہ اس کی قبراس پر تنگ کردی جائے گی جتی کہ اس میں اس کی پسلیاں ایک دوسری میں داخل ہوجا کیں گی۔ اس پر قبر میں آگ جلائی جائے گی، وہ انگاروں پردن رات کروٹیں بدلتا رہےگا۔ اور تیسری سزایہ ہے کہ اس پر شجاع اقرع (گنجا اثر دہا) نامی سانپ مسلط کردیا جائے گا، اس کی آئھیں آگ کی اور اس کے ناخن لوہ ہوں گے، اور ہر ناخن کی لمبائی ایک دن کی مسافت کے برابر ہوگی۔ وہ میت سے کلام کرے گا اور کہےگا: میں شجاع اقرع ہوں۔ اس کی آواز زور دارگرج کی طرح ہوگی۔ دہ کہے میں شہری نمازضج ضائع کرنے پر طلوع آفتاب تک ماروں اور میرے در برے در بارے کے میں شہری نمازضج ضائع کرنے پر طلوع آفتاب تک ماروں اور

① پیصدیث نبی سلی الله علیه وسلم ہے سیج ٹابت نہیں ،امام انسیوطی نے اسے باطل قرار دیا ہے۔''المیز ان''

من تمهیں نماز ظهر ضائع کرنے پر عصر تک ماروں - نماز عصر ضائع کرنے پر ، مغرب تک ماورں - نماز مغرب ضائع کرنے پر ، مغرب تک ماورں اور نماز عشاء ضائع کرنے پر منح تک تمہیں ماروں اور نماز عشاء ضائع کرنے پر ضبح تک تمہیں ماروں ۔ پس وہ جب بھی ایک بارا سے مارے گا تو وہ ستر ہاتھ زمین میں دھنس جائے گا اور وہ روز قیامت تک مسلسل زمین میں سزا پاتا رہے گا۔ اور جو سزائیں اسے قبر سے نکلنے پر ملیں گی، وہ قیامت کے شہرے میں حساب کی تحق ، رب کی ناراضی اور جہنم میں داخلہ ہے۔''

اورایک روایت میں ہے:

"وہ قیامت کے روزاس حال میں آئے گا کہ اس کے چہرے پر تین سطری لکھی ہول گی۔ پہلی سطر ہوگی، اللہ کے گی۔ پہلی سطر ہوگی، اللہ کے خضب کے خصوص شخص! تیسری سطر ہوگی، جس طرح تم نے دنیا میں اللہ کاحق ضائع کیا، پس آج تم اللہ کی رحمت سے ٹاامید ہوجاؤ۔"

ابن عباس رضى الله عنهما بيان كرتے ميں:

'' جب قیامت کا دن ہوگا، تو ایک آ دمی کو لایا جائے گا اوراسے اللہ عز وجل کے سامنے کھڑا کیا جائے گا، تو وہ اس کے متعلق جہنم کا تھم فرمائے گا۔ تو وہ شخص عرض کرے گا۔ رب جی! میہ کیوں؟ تو اللہ تعالیٰ فرمائے گا:

"نماز کواس کے وقت ہے مؤخر کرنے اور میری جھوٹی قتم کھانے کی وجہ ہے"

رسول الله صلى الله عليه وسلم سے مروى ہے كه آپ نے ايك دن اپنے صحابہ كے ليے دعا

فرمائی:

''اے اللہ! ہم میں سے کسی کوشقی اور محروم نہ چھوڑنا''۔ پھر آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:'' کیا تمہیں معلوم ہے کہ شقی اور محروم کون ہے؟''انہوں نے عرض کیا، اللہ کے رسول! وہ کون شخص ہے؟ آپ نے فر مایا:

"تارك نماز"\_

اور مروی ہے کہ روز قیامت سب سے پہلے تارک نماز کے چہرے کو سیاہ کیا جائے گا۔ اور محکمہ دلائل وہراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

 + (38)
 كتاب الكبائر
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38)
 ♦ (38

جہنم میں''اللح'' نامی ایک وادی ہے،جس میں سانپ ہیں اور ہرسانپ اونٹ کی گردن جتنا موٹا ہے،اس کی لمبائی مبینے کی مسافت کے برابر ہے۔وہ تارک نماز کوڈسے گا تو اس کا زہر،اس کے جسم میں ستر برس تک جوش مارتار ہے گا، پھراس کا گوشت گل جائے گا''۔

### حکایت:

مروی ہے کہ بی اسرائیل کی ایک عورت موئی علیہ السلام کے پاس آئی تو اس نے عرض کیا:
اللہ کے رسول! میں نے ایک بہت بڑے گناہ کا ارتکاب کیا ہے اور میں نے اس کے بارے میں
اللہ تعالیٰ کے حضور تو ہی ہے، پس آپ اللہ سے دعا کریں کہ وہ میرا گناہ معاف فرباد سے اور
میری تو بہ قبول فرما لے نو موئی علیہ السلام نے اسے فربایا: تیرا گناہ کیا ہے؟ اس نے عرض کیا:
اللہ کے نی آئیس نے زنا کیا، اور ایک بچے کوجنم دیا اور پھر میں نے اسے قبل کردیا۔ موئی علیہ
السلام نے اسے فربایا: فاجرہ عورت نکل جا، کہیں تیری توست کی وجہ سے آسان سے آگ نہ نازل
ہوجائے اور وہ ہمیں بھی جلا دے۔ پس وہ شکتہ دل کے ساتھ ان کے پاس سے چلی آئی۔ تو
جر بل علیہ السلام تشریف، لائے اور فربایا: موئی! رب تعالیٰ تم سے پوچھتا ہے کہ موئی! تم نے ایک
جر بل علیہ السلام تشریف، لائے اور فربایا: موئی! رب تعالیٰ تم سے پوچھتا ہے کہ موئی! تم نے ایک
نائب عورت کو کیوں لوٹا دیا؟ کیا تم نے اس سے بھی بر سے خص کوئیس پایا؟ موئی علیہ السلام نے
تائب عورت کو کیوں لوٹا دیا؟ کیا تم نے اس سے بھی بر سے خص کوئیس پایا؟ موئی علیہ السلام نے
پوچھا: جریل! اس سے زیادہ برا شخص کون ہے؟ اس نے کہا: جان ہو جھ کرنماز چھوڑنے والا۔

### دوسری حکایت:

بعض سلف سے روایت ہے کہ وہ اپنی بہن کی فوجیدگی پر آیا، دفن کرتے وقت اس کے مال کی تھیلی اس کی قبر سے آگیا۔ پھراسے یا د آیا تو وہ اس کی قبر سے آگیا۔ پھراسے یا د آیا تو وہ اس کی قبر پر دو بارہ آیا اور لوگوں کے چلے جانے کے بعد اس نے قبر کو کھود اتو دیکھا کہ اس کی قبر سے آگ کے شعلے بلند ہور ہے ہیں۔ پس اس نے دوبارہ مٹی ڈال دی اور روتا ہوا ٹمگین صور سے میں اپنی والدہ کے پاس آیا تو کہا: امال جان! مجھے بتا کیں کہ میری بہن کیا کمل کیا کرتی تھی؟ اس نے کہا:

موريخ كتاب الكبائر كياب الكبا

تم اس کے متعلق گیوں سوال کررہے ہو؟ اس نے بتایا: ای جان! میں نے اس کی قبر میں آگر میں اس کے متعلق گیوں سوال کررہے ہو؟ اس نے بتایا: ای جان! میں اور ان شروع کردیا آگ کے شعلے بلند ہوتے ہوئے دیکھے ہیں۔ وہ بیان کرتے ہیں، والدہ نے رونا شروع کردیا اور کہا: میر سے بیٹے! تیری بہن نماز کو معمولی سمجھا کرتی تھی اور اسے اس کے وقت سے مؤخر کیا حال کرتی تھی۔ بیس یہ نماز کو مؤخر کرنے والے کا کیا حال ہے۔ تو پھر نماز نہ پڑھنے والے کا کیا حال ہوگا؟ پس ہم اللہ تعالیٰ سے درخواست کرتے ہیں کہ وہ ہمیں نماز کواس کے اوقات میں پڑھنے اور اس کی حفاظت کرنے کی توفیق واعانت فرمائے۔ کوئکہ وہی تخی داتا ہے۔



# + (£ کتاب الکبانر کیاب الکبانر کیاب الکبانر کیاب فصل فصل فصل فصل کتاب الکبانر کیاب الکبانر کیاب الکبانر کیاب ا

یفصل اس شخص کے بارے میں ہے جونماز میں ٹھونگے مارتا ہے اور رکوع ویجود پور نے ہیں کرتا۔اللہ تعالیٰ کےاس فرمان :

﴿ فَوَيُلٌ لِلْمُصَلِّيُنَ٥ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلُوتِهِمْ سَاهُوْنَ ﴾ (الماعون ١٠٠/ ٤-٥)

''پس نمازیوں کے لیے ویل ہے، جواپی نمازوں سے عافل ہیں''۔

کی تفسیر کے بارے میں مروی ہے کہ اس سے مرادوہ خض ہے جوجلدی جلدی تھو نگے مارکر نماز پڑھتا ہے۔اس کے رکوع اور بچود پورٹ نہیں کرتا۔

ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ ایک آ دی نے نماز پڑھی ، پھر آیا تو نبی سکی اللہ علیہ وسلم کوسلام کیا۔ آپ نے سلام کا جواب دیا ، پھراسے فر مایا:

" جاؤنماز پڑھو کیونکہتم نے نماز نہیں پڑھی"

پس وہ آ دمی واپس گیا اور جیسے پہلے نماز پڑھی تھی ، ویسے ہی نماز پڑھی ، بھر آیا تو نبی سلی اللہ علیہ وسلم کوسلام کیا، آپ نے اسے سلام کا جواب دیا ، بھر فر مایا :

''وایس جاؤ،نماز پڑھو کیونکہتم نے نماز نہیں پڑھی''

و چھن پھر گیااور حسب سابق نماز پڑھی ، پھر آپ کی خدمت میں آیا تو نبی سلی اللہ علیہ وسلم کو سلام کیا۔ پس آپ نے اسے سلام کا جواب دیا اور فر مایا:

''واپس جاؤ،نماز پڑھو، کیونکہتم نے نمازنہیں پڑھی، تین مرتبہ فر مایا''

پس اس نے تیسری مرتبہ عرض کیا: اللہ کے رسول!اس ذات کی قتم! جس نے آپ کوتل کے ساتھ مبعوث کیا ہے۔ جواس سے بہتر ہووہ آپ مجھے سکھا دیں، تو آپ صلی اللہ علیہ دسلم نے فرمایا:

''جبتم نماز کے لیے کھڑے ہوتو اللہ اکبر کہو، پھر جوتر آن تجھے یا د ہواں میں سے پڑھ، پھر رکوع کر ،حتی کہ تو اطمینان سے رکوع کرے، پھر کھڑے ہوجا ؤ،حتی کہتم صحح طرح کھڑے

محکمہ دلائل وبراہین سُے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

+ كتاب الكبائر كياب الكبائر كيا

ہوجاؤ، پھرسجدہ کروجتی کہتم اطمینان سے بجدہ کرو، پھر بیٹھ جاؤحتی کہتم اطمینان سے بیٹھ جاؤ۔ پھر

سجدہ کروحتی کہتم اطمینان سے بعدہ کرواور پھراپی پوری نماز میں ای طرح کرو''۔ 🛈

البدري رضى الله عنه بيان كرتے ہيں، رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمایا

''وہ نماز کفایت نہیں کرتی جس میں آ دمی رکوع و جود کے دوران ، اپنی کمر سیدھی نہیں

(t)

اورایک دوسری روایت میں ہے:

''حتی کہوہ رکوع و بجود میں اپنی کمرسیدھی رکھے''۔

اور یہ بی صلی اللہ علیہ وسلم سے ثابت ہے کہ آپ نے اس مخص کو، جس نے نماز پڑھی اور اس نے رکوع وجود کے بعد کمرکوسیدھانہ کیا جیسا کہ وہ تھی ، فر مایا: اس کی نماز باطل ہے اور یہ فرض نماز

میں ہے۔اوراس طرح اطمینان میہ کہ ہرعضوا پی جگہ پر آ جائے اور قرار پکڑے۔

اورآپ سے ثابت ہے کہآپ نے فرمایا:

''چوری کرنے کے لحاظ ہے وہ مخف سب سے زیادہ شدید ہے جوا پی نماز کی چوری کرتا ہے''۔

عرض کیا گیا، وہ اپنی نماز کی کیسے چوری کرتا ہے؟ آپ نے فر مایا:

''وہ اس کارکوع بورا کرتا ہے نہاس کے جوداور نہی اس میں قراءت کمل کرتا ہے''۔ ﴿ اللهِ بِرِيهِ وَصَلَى اللهُ عندے روایت ہے کہ رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمایا:

''جو خص اپنے رکوع و جووثیں اپنی کمرسیدھی نہیں رکھتا تو اللہ اس کی طرف ( نظر رحمت سے ) نہیں دیکھے گا''۔ ؓ ۞

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

'' بیر منافق کی نماز ہے جو بیٹھا رہتا ہے اور سورج کا انتظار کرتا رہتا ہے، حتی کہ جب وہ شیطان کے دوسینگوں کے قرمیان ہوتا ہے، تو کھڑا ہوجا تا ہے چارٹھونگیس مارتا ہے، اور ان میں

<sup>🛈</sup> بنحاري و مسلم 🔻 مستداجسد

+ ط2 کتاب الکبائر کیا۔ اللہ کاذکر بہت کم کرتا ہے'۔ ①

ابومویٰ رضی الله عنه بیان کرتے ہیں: رسول الله صلی الله علیه وسلم نے ایک روز اپنے صحابہ کو نماز پڑھائی، پھر بیٹھ گئے۔اتنے میں ایک آ دمی آیا اور کھڑا ہوکر نماز پڑھنے لگا تو وہ جلدی جلدی رکوع وجود کرنے لگا،تورسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''تم اے دیکھر ہے ہو،اگریفوت ہوجاتا تو یہ مصلی اللہ علیہ وسلم کے دین کے علاوہ کسی اور دین کے علاوہ کسی اور دین پر فوت ہوتا ہے، جس طرح کواخون میں تھونگ مارتا ہے، جس طرح کواخون میں تھونگ مارتا ہے، جس طرح کواخون میں تھونگ مارتا ہے، ۔ ﴿

عمر بن خطاب رضی الله عنه سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فر مایا: '' ہر نمازی کے دائیں اور بائیں ایک ایک فرشتہ ہوتا ہے، اگر وہ اسے کممل کرتا ہے تو وہ اسے لے کر الله تعالیٰ کی طرف بلند ہوجاتے ہیں اور اگر وہ اسے کممل نہ کرے تو پھر وہ اسے اس کے چہرے پر مارتے ہیں'۔ ⊕

عبادہ بن صامت رضی اللہ عنہ ہے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: '' جو شخص وضو کر ہے اورا چھی طرح وضو کر ہے، پھر نماز کے لیے کھڑ اہوتو اس کے رکوع و بجود اور اس میں قراءت کو کمل کرے ، تو نماز کہتی ہے :

اللہ تمہاری حفاظت فرمائے ، جیسے تم نے میری حفاظت فرمائی ، پھراسے آسان کی طرف لے جایا جاتا ہے اور اس کی چیک اور نور ہوتا ہے۔ اس کے لیے آسان کے ورواز سے کھول دیے جاتے ہیں ، حتی کہ وہ اللہ تعالی کے حضور بہنچ کراپنے پڑھنے والے کے لیے سفارش کرتی ہے اور جب وہ اس کے رکوع و بچود کھمل کرتا ہے نہ اس میں قراءت کا خیال رکھتا ہے تو نماز کہتی ہے : اللہ مجھے ضائع کیا ، پھراسے آسان کی طرف لے جایا جاتا ہے اور تاریکی نے اسے ڈھانپ رکھا ہوتا ہے۔ پس اس کے لیے آسان کے ورواز سے بند کردیے جاتے ہیں۔ پھراسے بوسیدہ کپڑے میں لہیٹ کرنمازی کے چہرے پر ماردیا جاتا ہے ''۔ ©

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

بیهقی فی شعب الایمان ای کی سندین احوس بن کیم راوی ضعیف ہے۔

 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)
 + (13)

سلمان فاری رضی الله عند بیان کرتے ہیں، رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''نمازایک پیانداورناپ ہے، پس جس نے پوراپورادیا، تواہے بھی پوراپورادیا جائے گااور جس نے کم دیا، تو تتہمیں معلوم ہی ہے کہ اللہ نے ناپ تول میں کی کرنے والوں کے متعلق کیا فرمایا ہے، اللہ تعالی نے فرمایا:

﴿ وَيُلُّ لِّلْمُطَفِّفِينَ ﴾ (المطففين ٨٣/١)

''ناپ تول میں کمی کرنے والوں کے لیے ویل (ہلاکت وتباہی) ہے''۔

''المطفف'' اس سے مراد ، ایسا شخص ہے جو ناپ یا وزن یا پیائش یا نماز میں کی کرتا ہے۔ اللہ نے ایسے لوگوں سے''ویل'' کا وعدہ کیا ہے ، جو کہ جہنم میں ایک وادی ہے ، جس کی حرارت سے جہنم بھی پناہ مائلتی ہے ، ① ہم اس سے اللہ کی پناہ جا ہتے ہیں۔

ابن عباس رضى الله عن عنهما تروايت كدرسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''جبتم میں سے کوئی تجدہ کرے تو وہ اپنا چہرہ ، اپنی ناک اور اپنے ہاتھ زمین پر رکھے ،
کیونکہ اللہ تعالی نے میری طرف وحی کی ہے کہ میں سات اعضاء پر تجدہ کروں۔ پیشانی ، ناک
دونوں ہتھیایاں ، دونوں گھٹنے اور دونوں پاؤں کے سروں (انگلیوں) پر نیزیہ کہ میں بالوں اور
کیڑے کو نہ تمیٹوں ، پس جوشخص نماز پڑھے اور ہرعضو کواس کا حق نہ دے تو وہ عضواس کے لیے
لیٹرے کو نہ تمیٹوں ، پس جوشخص نماز پڑھے اور ہرعضو کواس کا حق نہ دے تو وہ عضواس کے لیے
لعت کرتار ہتا ہے جتی کہ وہ اپنی نماز سے فارغ ہوجا تا ہے''۔ ①

حذیفہ بن بمان رضی اللہ عنہ ہے روایت ہے کہ انہوں نے ایک آ دی کونماز پڑھتے ہوئے دیکھا جونماز کا رکوع اور بجود پورانہیں کرر ہاتھا۔ تو حذیفہ رضی اللہ عنہ نے اسے کہا:

''تم نے جونماز پڑھی ہے،اوراگرتم الی نماز پڑھتے پڑھتے فوت ہوجاتے تو تم محرصلی اللہ علیہ وسلم کے دین کے سواکسی اور دین پرفوت ہوتے''۔ ©

اورابوداؤد کی روایت میں ہے کہ انہول نے فرمایا تم ینماز کتنی مدت سے پڑھ رہے ہو؟اس

① مسند احمد اس كى سنديين سالم اورسليمان كورميان انقطاع بـ

<sup>🕑</sup> سات اعضاء پر بجدہ کرنے کی روایت بخاری وسلم میں بھی ہے۔

۳ بخاری۔

+ ﴿ كِنَابِ الكِبَائِرِ ﴾ ﴿ ﴿ كَنَابِ الكِبَائِرِ ﴾ ﴿ كَنَابِ الكِبَائِرِ ﴾ ﴿ فَيْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْ

نے کہا: جالیس سال سے انہوں نے جواب دیا جم نے جالیس سال سے پچھ بھی نہیں پڑھا، اگرتم اسی حالت میں فوت ہوجاتے تو تم محمر صلی اللہ علیہ وسلم کے دین کے سواکسی اور دین پر فوت

حسن بصری کہا کرتے تھے: آدم کے بیٹے! تیرے دین کی کون ی چیز تحقے عزیز ہے جبکہ تیری نماز تجھے عزیز نہیں ، حالا ککہ روز قیامت تم ہے سب سے پہلے اس کے متعلق سوال کیا جائے گا، جیسا که نبی صلی الله علیه وسلم کا فرمان بیان ہوچکا ہے:

''بندے ہےروز قیامت ،اس کے اعمال میں ہےسب سے پہلے اس کی نماز کے متعلق حساب لیا جائے گا،اگروہ درست ہوئی تو وہخض کا میاب و کامران ہوااورا گروہ درست نہ ہوئی تو پھروہ نا کام و نامراد ہوا۔ پس اگر فرائض میں ہے کچھ کی ہوگئ تو اللہ تعالیٰ فرمائے گا: دیکھو، کیا میرے بندے کے پچھنوافل ہیں ،تو پھر فرائض کی کی کوان نوافل کے ذریعے پورا کیا جائے گا۔ پھراس طرح اس کے باقی اعمال میں بھی ہوگا۔' 🛈

یں بندے کو چاہیے کہ وہ کثرت ہے نوافل ادا کرے تا کہ اس کے فرائض کی کمی کوان نوافل ہے بورا کیا جاسکے۔وباللہ التوفیق۔

ជជជ

# فصل

قدرت وطاقت ہونے کے باوجود باجماعت نمازند پڑھنے کی سزا۔ اللہ تعالی نے فرمایا: ﴿ يَوْمَ يُكُشَفُ عَنُ سَاقٍ وَّ يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُونَ ٥ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمُ تَرْهَقُهُمْ ذِلَةٌ طوَ أَفُد كَانُوْ ا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سَلِمُوْنَ ٥ ﴾ (القلم ٦٨/ ٤٢ - ٤٣)

''جس دن پنڈلی سے پردہ اٹھادیا جائے گا اورلوگوں کو سجدہ کی طرف بلایا جائے گا،تو پہلوگ (سجدہ) نہ کرسکیں گے۔ ان کی آنکھیں جھکی ہوں گی اور ان پر ذات چھائی ہوگی،اوراس سے پہلے ان کو سجدہ کی طرف بلایا جاتا تھا حالانکہوہ اس وقت سجے سالم تھے۔''

اوریہ قیامت کے دن ہوگا کہ ندامت کی ذلت انہیں ڈھانپ لے گی ، جب کہ وہ دنیا میں سجدوں کی طرف بلائے جاتے تھے۔

ابراہیم انتیمی بیان کرتے ہیں، یعنی اذان آورا قامت کے ذریعے فرض نماز کی طرف۔ اور سعید بن میتب نے فرمایا: وہ'' جی علی الصلوٰۃ''''حی علی الفلاح'' سنا کرتے تھے اور وہ

صیح سالم بھی ہوتے تھے لیکن وہ اس کا جواب دیتے تھے نہ اسے تبول کرتے تھے۔

کعب الاحبار نے فرمایا: اللہ کی قتم! یہ آیت تو با جماعت نماز سے پیچھے رہ جانے والوں کے بارے میں نازل ہوئی ہے۔ پس با جماعت نماز ادا کرنے کی طاقت وقدرت ہونے کے باوجود اگر کوئی شخص با جماعت نماز ادانہیں کرتا تو پھراس کے لیے اس سے بڑھ کرزیادہ شدید وعید کیا ہوسکتی ہے؟

اسی طرح سنت سے بھی ثابت ہے ، سیحین میں روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''میں نے ارادہ کرلیا کہ میں نماز قائم کرنے کا تھم دوں، پھر کسی آ دمی کو تھم دوں کہ وہ لوگوں کی امامت کرائے، پھر میں پچھ لوگوں کو، جن کے پاس لکڑیوں کے گٹھے ہوں، اپنے ساتھ لے کر ان کوان کے گھر ول سمیت آگ ہے جلانے کی دھمکی ترک واجب کی وجہ ہے ، باوجود کیکہ گھر دل میں بچے اور مال ومتاع بھی ہے۔

صیح مسلم میں ہے کہ ایک نابینا شخص نبی سلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا، تواس نے عرض کیا: اللہ کے رسول! میرا کوئی نہیں جو مجھے مسجد کی طرف لے آئے اور اس نے نبی سلی اللہ علیہ وسلم سے درخواست کی کہ آپ اسے گھر ہی میں نماز پڑھنے کی اجازت دے دیں، پس آپ نے اسے اجازت دے دی، جب وہ واپس جانے لگا تو آپ نے اسے بلایا اور پوچھا: کیا تم نماز کے لیے اذان سنتے ہو؟ اس نے کہا: جی ہاں، آپ نے فرمایا:

"تو پھر قبول کرواور جواب دؤ'۔

ابن ام مکتوم رضی الله عنه سے روایت ہے کہ وہ نبی صلی الله علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے تو عرض کیا: الله کے رسول! مدینه میں زہر لیے جانوراور ورند ہے بہت زیادہ ہیں۔ میں نابینا شخص ہوں اور گھر بھی دور ہے اور میرا ایک قائد ہے، کیکن وہ میری راہنمائی نہیں کرتا، کیا میرے لیے رخصت ہے کہ میں گھر میں نماز پڑھ لیا کروں؟ آپ نے فرمایا:

"كياتم اذان سنتے ہو؟"

انہوں نے کہا: جی ہاں ،آپ نے فر مایا:

'' پھر جواب دواور قبول کرو، کیونکہ میں تمہارے لیے کوئی رخصت نہیں پاتا''۔ ①

پس اس نابینا شخص نے جو کہ معجد میں آنے کی شکایت کرتا ہے کہ اس کا کوئی قائد نہیں جو
اسے معجد تک بہنچا سکے، لیکن اس کے باوجود نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے اسے اپنے گھر میں نماز
پڑھنے کی اجازت اور رخصت عنایت نہیں فر مائی، تو پھرا پیے شخص کے لیے، گھر میں نماز پڑھنے کی
رخصت کیسے ہو سکتی ہے، جو کہ بینا وضیح سالم ہے اور اس کے پاس کوئی عذر بھی نہیں؟ اسی لیے
جب ابن عباس رضی اللہ عنہما سے ایسے شخص کے بارے میں دریافت کیا گیا، جو دن کے وقت

<sup>🛈</sup> ابوداؤد

روز ہ رکھتا ہے اور رات کو تہجد پڑھتا ہے، لیکن وہ باجماعت نماز پڑھتا ہے نہ جمعہ؟ تو انہوں نے فر مایا:اگروہ ای حالت میں فوت ہوگیا تو وہ جہنی ہے۔' ①

ابو ہر رہ وضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں:

''اگرابن آدم کے کانوں میں بچھلا ہوا سیسہ بھر دیا جاتا تو بیاس کے لیے بہتر ہے کہ وہ اذان نے اور پھرنماز نہ پڑھے''۔

ابن عباس رضی الله عنه سے مروی ہے، انہوں نے کہا: رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:
''جو شخص نماز کے لیے اذان سنے، پھروہ بلاعذر نماز پڑھنے نہ آئے''۔عرض کیا گیا، الله کے
رسول! عذر سے کیا مراد ہے؟ آپ نے فر مایا: ''خوف یا مرض، تو اس کی نماز جواس نے (اپنے
گھر میں) پڑھی ہے، قبول نہیں ہوتی''۔ ﴿

ا بن عباس رضی الله عنه بی بیان کرتے ہیں ، رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

'' تین قتم کے لوگوں پر اللہ لعنت فرماتا ہے : وہ خض جولوگوں کا امام و پیشوا بنرآ ہے، جبکہ وہ اسے ناپند کرتے ہوں۔ وہ عورت جو پوری رات اس حال میں گزارے کہ اس کا خاونداس سے نارض ہواوروہ آ دی جو''جی علی الصلوٰۃ' جی علی الفلاح'' سنے اور پھرنماز نہ پڑھے۔'' ا

علی بن ابی طالب رضی الله عنه بیان کرتے ہیں ''معجد کے پڑوی کی نماز صرف معجد ہی میں ہوتی ہے۔'' یو چھا گیا،معجد کا پڑوی کون ہے؟ فر مایا:'' جواذ ان سنتا ہے''۔ ﴿

عبدالله بن مسعود رضى الله عنه بيان كرتے ہيں ، فرمايا:

''جس تخص کو یہ پہند ہو کہ وہ کل یعنی روز قیامت اللہ ہے اس حال میں ملاقات کرے کہ وہ مسلمان ہو، تو اسے چاہیے کہ وہ ان پانچ نمازوں کی ، جہاں سے ان کی اذان دی جائے ، حفاظت کرے ، کیونکہ اللہ نے تمہارے نبی کے لیے ہدایت کے طریقے مقرر کیے اور یہ ہدایت کے طریقوں میں سے ہے۔ اگر تم نے اپنے گھروں میں نمازیں پڑھیں ، جس طرح نمازے پیچھے رہ طریقوں میں نماز سے گھروں میں نمازیں چھے رہ جانے والاشخص اپنے گھر میں نماز پڑھتا ہے، تو پھرتم نے اپنے نبی کی سنت کوچھوڑ دیا اور اگر تم نے جانے والاشخص اپنے گھر میں نماز پڑھتا ہے، تو پھرتم نے اپنے نبی کی سنت کوچھوڑ دیا اور اگر تم نے

<sup>🛈</sup> امام ترندی نے اسے موقوف روایت کیا ہے۔

ا ابوداؤد ابن حبان ۞ مستدرك حاكم ۞ مسند احمد

اپ نبی کی سنت کوچھوڑ دیاتو تم گراہ ہوگئے'۔اور ہم نے دیکھا کہ نماز سے صرف وہی شخص پیچھے رہتا تھا جس کا نفاق معلوم ہوتایا وہ مریض ہوتا اورا سے بھی ہوتا کہ آدمی کو دوآ دمیوں کے سہارے لایا جاتا اور اسے صف میں کھڑا کر دیا جاتا یا حتی کہ اسے جماعت کے ساتھ نماز پڑھنے کے لیے مسجد میں لایا جاتا۔ ①

رئیج بن خیٹم کا فالج کی وجہ ہے ایک پہلومفلوج ہوگیا تو وہ دوآ دمیوں کے سہارے نماز پڑھنے کے لیے مسجد میں آتے تھے، ان سے کہا گیا: ابو تحمہ! آپ کو تو گھر میں نماز پڑھنے کی رخصت ہے، کیونکہ آپ معذور ہیں۔ تو وہ کہتے: مسئلہ تو ایسے بی جیسے تم کہتے ہو کیکن میں مؤذن کو جی علی الصلوق، جی علی الفلاح کہتے ہوئے سنتا ہوں، پس جو شخص سرین یا گھٹنوں کے بل بھی نماز پڑھنے آسکے تو اسے آنا چاہیے۔

حاتم الاصم بیان کرتے ہیں: ایک مرتبہ میری جماعت کی نماز فوت ہوگئ تو صرف ابواسحاق بخاری اکیلے نے مجھ سے تعزیت کی اور اگر میر اکوئی بچیفوت ہوجا تا تو دس ہزار سے زاکد افراد مجھ سے تعزیت کرتے۔ کیونکہ دین کی مصیبت اور نقصان کی ، لوگوں کے ہاں ، دنیا کے نقصان کی نسبت کچھاہمیت نہیں۔

بعض سلف کہا کرتے تھے:اگر کسی کی جماعت کی نماز فوت ہوجاتی ہے تو وہ اس کے کسی گناہ کے ارتکاب کی وجہ سے فوت ہوتی ہے۔

ابن عمر رضى الله عنه نے فرمایا:

ایک روز عمر رضی اللہ عنہ اپنے مجموروں کے باغ کی طرف تشریف لے گئے ، پس جب واپس آئے تو لوگ نماز عصر پڑھ چکے تھے ، تو عمر رضی اللہ عنہ نے کہا: ''اناللہ وانا الیہ راجعون' ۔ میری نماز عصر کی جماعت فوت ہوگئ ۔ میں تمہیں گواہ بنا تا ہوں کہ میرا سے باغ مساکین پرصدقہ ہے ، تا کہ عمر نے جوکیا ہے ، بیاس کا کفارہ بن سکے۔

لیکن ترغیب و تربیب بین بیروایت مسلم اور ابود او دی طرف منسوب ہے۔ اور ای طرح مصنف کتاب (امام ذہبی) نے اسے "الے صغری" بین ذکر کیا ہے۔ یہاں صحیح بخاری کا حوالہ سبقت قلم یا پھر کسی کا تب کی غلطی ہے ہوا ہے۔
 ہوا ہے۔

# فصل

نمازعشاءاورنماز فجر کی حاضری کازیادہ خیال رکھنا چاہیے۔ کیونکہ نبی کالفیخ آنے فرمایا: ''یہ دونوں نمازیں منافقوں پر بہت بھاری ہیں'' یعنی نمازعشاءاور نماز فجر ،اگرانہیں ان کے اجر کے بارے میں پیتہ چل جاتا تو وہ ان میں ضرور حاضر ہوتے خواہ نہیں سرین کے بل آٹا پڑتا''۔ ①

ابن عمر بیان کرتے ہیں: جب ہم میں ہے کوئی انسان نماز عشاءاور نماز فجر کی جماعت سے پیچےرہ جاتا تو ہم اس کے متعلق برا گمان کر لیتے کہ وہ تو منافق ہوگیا۔ ا

حکایت: عبیداللہ بن عمر القواریری (امام بخاری، امام سلم اور امام ابوداؤدر حمیم اللہ کے استاد) بیان کرتے ہیں: میری نمازع شاء کی جماعت بھی بھی فوت نہیں ہوئی تھی۔ ایک رات میرے پاس ایک مہمان آگیا، جبکی وجہ سے میں مشغول ہوگیا اور اس طرح میری نمازع شاء کی جماعت فوت ہوگئی، پس میں نماز با جماعت کی تلاش میں بھرہ کی مساجد میں گیا، لیکن میں نے ہمام لوگوں کود یکھا کہ وہ نماز پڑھ بھے ہیں اور مساجد بند کردی گئی ہیں۔ پس میں اپنے گھروا پس آگیا اور کہا: حدیث میں ہے کہ باجماعت نماز، اکیلے نماز پڑھنے سے ستائیس در جے زیادہ فضیلت رکھتی ہے۔ اسلئے میں نے نمازع شاء ستائیس مرتبہ پڑھی، پھر میں سوگیا، تو میں نے خواب میں دیکھا کہ میں بچھوگوں کیساتھ ہوں، جو گھوڑوں پر سوار ہیں، اور میں بھی ایک گھوڑے پر سوار ہوں اور ہم ایک دوسرے سے آگے نگلنے کی کوشش کررہے ہیں، میں اپنے گھوڑے کو تیز دوڑا تا ہوں کیل میں ان سے ل نہیں سکتا، پس ان میں سے ایک آدمی نے میری طرف متوجہ ہو کر مجھے کہا:

''اپنے گھوڑے کومت تھکا وہتم ہمارے ساتھ نہیں مل سکتے ، میں نے کہا: کیوں؟اس نے کہا: ہم نے نماز عشاء با جماعت اداکی ہے جبکہ تم نے اسکیلے پڑھی ہے۔ پس میں بیدار ہواتو میں اس وجہ ہے مغموم اور رنجیدہ تھا۔

بس ہم اللہ تعالیٰ ہے مدواور تو فق کی درخواست کرتے ہیں، کیونکہ وہ تخی دا تا ہے۔

<sup>🛈</sup> بخاری و مسلم 🛡 بزار ٔ طبرانی ٔ ابن حزیمه

### + (£ كتاب الكبائر (£ الكلل (£ الكلل (£ الكلل (£ الكلل (£ الكلل (£

### (۵)ز کا ة ادانه کرنا

الله تعالیٰ نے فر مایا:

﴿ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْحَلُوْنَ بِمَا اللهُ مِنْ فَصْلِهِ هُوَ حَيْرًا لَهُمْ بَلُ هُو سَبَطُو قُونَ مَا بَحِلُوْا بِهِ يَوْمَ الْقِيلَةِ فَى وَالله عمران: ٣/ ١٨٠) هُو شَرَّ لَهُمْ سَيُطُو قُونَ مَا بَحِلُوْا بِهِ يَوْمَ الْقِيلَةِ فَى (ال عمران: ٣/ ١٨٠) ''اوروه لوگ جواس چيز ڪ خرچ کرنے ميں بخل کرتے ہيں، جواللہ نے اپنيس دے رکھی ہے۔ يہ خيال نہ کريں کہوہ ان کے ليے بہتر ہے۔ بلکہ وہ ان کے ليے بہت بری چیز ہے، جس میں وہ بخل کررہے ہیں۔ یقیناً قیامت کے دن انہیں اس کے طوق ڈالے جا کیں گے۔''

اورالله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَوَيْلٌ لِلْمُشْرِكِيْنَ ٥ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكُوةَ ﴾ (فصلت: ٦/٤١) \* ( مُشركين كي ليوني الله المرابي عنه المرابي المراب

الله تعالى نے زكوة ادانه كرنے والول كومشركين سے موسوم كيا ہے۔ نيز فرمايا:

﴿ وَالَّذِيْنَ يَكُنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللهِ فَبَشِّرُهُمُ بِعَذَابِ اللهِ فَبَشِرُهُمُ بِعَذَابِ اللهِ فَاكُولَى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُولُهُمْ فَتُكُولَى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُولُهُمْ فَذُولُولُولَ مِهَا جَبَاهُهُمْ وَجُنُولُهُمْ فَذُولُولُولَ مَا كُنتُمُ لِانْفُسِكُمْ فَذُولُولُوا مَا كُنتُمُ تَكْنِزُونُونَ ﴾ (التوبة: ٩/ ٣٤ - ٣٥)

''اوروہ لوگ جوسونا چاندی جمع کر کے رکھتے ہیں ،اوراس کواللہ کی راہ میں خرج نہیں کرتے ،ان کو در دناک عذاب کی خوشخری سنا دیجئے۔ جس روز ان ((خزانوں) کو جہنم کی آگ میں رکھ کر گرم کیا جائے گا، پھران کی پیشانیاں ، کروٹیس اور پشتی ان سے داغ دی جائیس گی ادر کہا جائے گا کہ یہ ہے وہ جو پچھتم نے اپنے لیے جمع کر رکھا تھا۔ پس جو پچھجمع کیا کرتے تھے اس کا مزہ چکھو''۔

رسول الشملي الشعليه وللم سي ثابت بي كرآب فرمايا:

كتاب الكبائر كالمجائر كالمجائر

''سونے چاندی کا مالک جواس میں سے اس کاحق (زکوۃ) ادائمیں کرتا تو جب
قیامت کا دن ہوگا اس کے لیے آگ کی تختیاں، پلیٹیں بنائی جائیں گی، آئمیں جہنم کی
آگ نے تپایا جائے گا۔ پھران سے اس کی پیشانی ، اس کے پہلواوراس کی پشت کو
داغ دیا جائے گا، جب وہ ٹھنڈی ہونے لگیں گی، تو آئمیں دوبارہ گرم کیا جائے گا اور سے
عمل اس دن ، جس کی مقدار پچاس ہزارسال کے برابرہوگی ، جاری رہے گاحتی کہ اللہ
لوگوں کے مابین فیصلہ فرمادے گا، پھروہ اپنی راہ دیکھے گا۔ جنت کی طرف یا پھرجہنم کی

# طرف '۔ آ بند کے رسول! تو اونٹوں کا کیا تھم ہے؟ آپ نے فرمایا:

''اسی طرح اونوْں کا مالک جوان کاخق اوانبیں کرتا تو جب قیامت کادن ہوگا، تواسے ایک صاف میدان میں منہ کے بل لٹایا جائے گا۔ اور اس کے اونٹ بہت زیادہ ہوں گے اور وہ کسی ایک بیچ کو بھی کم نہیں پائے گا۔ وہ اپنے کھر وں سے اسے روندیں گے اور اپنے مونہوں سے اسے نوچیں گے۔ جب ان میں سے پہلاگر رجائے گا تو اس کے آخر کو پھر لوٹا دیا جائے گا اور سے عمل اس دن جاری رہے گا جس کی مقدار بچاس ہزار سال ہوگی، جتی کہ اللہ لوگوں کے درمیان فیصلہ فر مادے گا، پھر دو شخص اپنی راہ دیکھے گا، جنت کی طرف یا جہنم کی طرف'۔

عرض کیا گیا،اللہ کے رسول! گائے اور بکری کے بارے میں کیا تھم ہے؟ آپ نے فرمایا:

"ای طرح گائے اور بکری کا مالک جوان کی زکوۃ ادانہیں کرتا تو جب قیامت کا دن

ہوگا تو اس کو ہموار زمین پرمنہ کے بل گرادیا جائے گا۔ان میں سے کوئی بھی الی نہیں

ہوگی جس کے سینگ مڑے ہوئے ہوں یا اس کے سینگ نہ ہوں یا اس کے سینگ

نوٹے ہوئے ہوں۔وہ اسے اپنے سینگوں سے اسے ماریں گی اور اپنے کھروں سے

اسے روندیں گی ، جب ان میں سے پہلی گزرجائے گی تو اس پر آخری کو پھر سے لوٹا یا

جائے گا اور یم کل اس دن ، جس کی مقدار پچاس ہزار سال کے برابر ہوگی، جاری

رہے گا،حتی کہ اللہ لوگوں کے مامین فیصلہ فرمادے گا۔ پھروہ اپنی راہ دیکھے گا جنت کی

<sup>🛈</sup> يخاري و مسل

→ <u>52</u> كتاب الكبائر <u>152</u> → <u>152</u> كتاب الكبائر <u>152</u> → <u>152</u> كتاب الكبائر ا

طرف یاجہم کی طرف'۔ اور آیہ صلی ہاڈ علی سلمی زفر ا

اورآپ ملی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''سب سے پہلے تین قتم کے لوگ جہنم میں داخل ہوں گے: مسلط بادشاہ، صاحب ثروت اور مال دار شخص جو مال میں سے اللہ تعالیٰ کاحق ادانہیں کرتا ادر فخر و تکبر کرنے والانقیر''۔ ①

🛈 مسند احمد: (٤/ ٢٥٥ ، ٤٧٩) ابن خزيمه (٢٢٤٩)

ابن عباس رضی الله عنهما بیان کرتے ہیں : جس شخص کے پاس اس قدر مال ہوکہ وہ اس کے ذریعے جج بیت الله تعالیٰ کا فریضہ اوا کرسکتا ہو، لیکن وہ شخص جج نہ کرے یا اس کے پاس اس قدر مال ہو کہ اس پرز کا قواجب ہوتی ہواور وہ اس کی زکا قادانہ کرے تو وہ موت کے وقت دوبارہ دنیا کی طرف جانے کی ورخواست کرے گا۔ اس پرایک آ دمی نے ان سے کہا: ابن عباس! الله تعالیٰ سے ڈرو، دنیا میں دوبارہ جانے کی درخواست تو صرف کفار ہی کریں گے۔ ابن عباس رضی الله عنہ نے فرمایا: میں اس بارے میں تمہیں قرآن سنا تا ہوں۔ الله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَٱنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَفُنْكُمْ مِّنْ قَبْلِ آنْ يَّاتِى آحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا آخَّرُتَنِى اللَّى آجَلٍ قَرِيْبٍ فَاصَّدَّقَ وَٱكُنْ مِّنَ الصَّلِحِيْنَ ٥ ﴾ (المنافقون: ٦٣/ ١٠)

''اور ہم نے جو پچھتم کودے رکھاہے،اس سے پہلے کہتم میں سے کسی پرموت آئے اسے خرچ کرد، در نہ دہ کہے گا:اے میرے رب تو نے مجھے تھوڑی می موت تک ڈھیل کیوں نہ دی، تو میں خیرات کرتا اور نیک بندوں میں سے ہوتا' میں صالحین میں سے ہوتا''۔

یعن میں زکا قادا کرتایا مج کرتا،آپ سے پوچھا گیا: زکا قائتی مقدار میں داجب ہوتی ہے؟ فرمایا: جب مال دوسو درہم تک پینچ جائے تو زکا قاداجب ہوجاتی ہے۔ پوچھا گیا کہ جج کب داجب ہوتا ہے، تو فرمایا:

جب زادِراه اورسواری ہو\_ 🛈

امام ابن کثیر نے اپنی تغییر میں اسے ترندی کی طرف منسوب کیا ہے۔

مباح زیورات جب استعال کے لیے بنائے جائیں توان پرز کو قانہیں ایکن اگر وہ تجارت
یا کرائے اور اجرت کے لیے تیار کیے جائیں توان پرز کو ہواجب ہے اور سامان تجارت کی قیمت
پرز کو ہ واجب ہے۔ ابو ہر برہ ورضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

''جس شخص کو اللہ مال عطا کرے اور وہ اس کی زکا ہ ادا نہ کرے تو قیامت کے دن اس
(مال) کو اس کے لیے گنجا سانپ بنا دیا جائے گا۔ اس کی آئکھوں پر دو سیاہ نقطے ہوں گے۔
قیامت کے دن وہ اس کے گلے ہیں ڈال دیا جائے گا۔ وہ اس کے دو جبڑوں سے پکڑ کر کہے گا،
میں تیرا مال ہوں، میں تیرا خزانہ ہوں، ''پھر ہیآ یت تلاوت فرمائی:

﴿ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَهُ خَلُونَ بِمَا اللهُ مِنْ فَضْلِهِ هُو خَيْرًا لَهُمْ بَلُ هُو اللهُ مِنْ فَضْلِهِ هُو خَيْرًا لَهُمْ بَلُ هُو اللهُ مِنْ فَضْلِهِ هُو خَيْرًا لَهُمْ بَلُ هُو اللهُ مِن فَضْلِهِ هُو خَيْرًا لَهُمْ بَلُ هُو اللهِ عَمِوان: ١٨٠/٢)

مُو اللهُ عَواسَ جِيزَ مَحْرَحَ كُر فِي مِن جَلُ كُر تِي بِين بِوالله فِي عَايت عالى الله على وه بَلْ كرر من الله على وه بَلْ كرر من بين الله عن وه بَلْ كرر من الله عن والله عن والله

ا بن مسعود رضی الله عندنے الله تعالی کے مانعین زکو ہ کے بارے میں فرمان: ﴿ يَوْمَ يُسْحُدُ مَلَى عَلَيْهَا فِنَى نَادِ جَهَنَّمَ فَتُكُولَى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُوْدُهُمْ. ﴾ (التوبة: ٩/ ٣٠)

''جس دن ان (خزانوں) کوجہنم کی آگ میں رکھ کر گرم کیا جائے گا، پھران کی پیٹانیاں،ان کے پہلواوران کی پشتی ان سےداغ دی جائیں گی''۔

ک تفیریں فرمایا ایے نہیں ہوگا کہ دینار کودینار پراور درہم کودرہم پر کھا جائے گا بلکداس کی جلدکواس قدروسیج کردیا جائے گا کہ ہردیناراور ہردرہم الگ الگ اس پر کھا جائے گا۔ اگریہ کہا جائے کہ داغ دینے کے لے بیٹانی، پہلواور پشت کو کیوں خاص کیا گیا ہے؟ تو

اس کا جواب میرے کہ جب بخیل مالدار فقیر کوڈیکھا ہے تو اپنے چیرے پر تیوری چڑھالیتا ہے،

<sup>🛈</sup> بخاري

پیشانی پربل ڈال لیتا ہے اور اپنا پہلو بدل لیتا ہے اور جب وہ اس کے قریب آتا ہے تو یہ اپنار خ دوسری طرف کر لیتا ہے۔ پس ان اعضا کو داغ دیا جائے گا، تا کہ جز اجنس عمل ہے ہو۔

اور آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: '' پانچ کے بدلے پانچ'' صحابہ نے عرض کیا' پانچ کے بدلے یانچ کیا ہیں؟ آپ نے فرمایا:

''جب کوئی قوم عہد شکنی کرتی ہے تواللہ ان کے دیمن کوان پر مسلط کر دیتا ہے۔ جب وہ
اللہ کی نازل کر دہ شریعت کے مطابق فیصلے نہیں کرتے تو ان میں فقر عام ہوجاتا ہے۔
جب ان میں بے حیائی عام ہوجاتی ہے تو پھر ان میں موت بھی عام ہوجاتی ہے۔
جب وہ ناپ تول میں کمی کرتے ہیں تو پھر وہاں نباتات واناج کا اگنا روک دیا جاتا
ہے اور انہیں قبط میں مبتلا کر دیا جاتا ہے اور جب وہ زکا قاد انہیں کرتے تو ان سے
بارش کا قطرہ تک روک دیا جاتا ہے'۔ ①

### نفیحت:

ان لوگول سے کہددیں، جن کے غرور وفریب نے ان کو دنیا میں مشغول اور عافل رکھا، ان کا انجام ہلاکت ہے۔ انہوں نے جو کھی جمع کیا، تو وہ ان کے پچھکام نہ آیا۔ جب وہ آجائے گا جس سے انہیں ڈرایا جاتا تھا۔ اس دن اس (مال) کو جہنم کی آگ میں گرم کیا جائے گا تو اس سے ان کی بیٹوانیوں، ان کے پہلوؤں اور ان کی پشتوں کو داغ دیا جائے گا۔ تو وہ ان کے قلوب وعقول سے کیسے غائب ہوگئی ہے۔ جس دن اس کو جہنم کی آگ میں گرم کیا جائے گا اور اس سے ان کی بیٹوانیوں ان کے پہلوؤں اور ان کی پشتوں کو داغ دیا جائے گا۔ مال کوعقوبت خانے کی طرف بیٹانیوں ان کے پہلوؤں اور ان کی پشتوں کو داغ دیا جائے گا۔ مال کوعقوبت خانے کی طرف لیے جایا جائے گا اور اسے بھٹی میں ڈال دیا جائے گا تا کہ اسے گرم کیا جائے اور عذاب کو بخت کیا جائے ۔ پس تختیوں اور پلیٹوں کو چوڑ اکیا جائے گا تا کہ داغ دینے کاعمل پوری جلد پر ہو، پھرا سے جائے ۔ پس تختیوں اور پلیٹوں کو چوڑ اکیا جائے گا تا کہ داغ دینے کاعمل پوری جلد پر ہو، پھرا سے جائے ۔ پس تختیوں اور پلیٹوں کو چوڑ اکیا جائے گا تا کہ داغ دینے کاعمل پوری جلد پر ہو، پھرا سے جائے ۔ پس تختیوں اور پلیٹوں کو چوڑ اکیا جائے گا تا کہ داغ دینے کاعمل پوری جلد پر ہو، پھرا سے جائے ۔ پس تختیوں اور بلیٹوں کو چوڑ اکیا جائے گا تا کہ داغ دوڑ نے گا تی دوڑ نے گا اور اس کے ساتھ نہیں ہوگا جن کا نور دوڑ رہا ہوگا۔ پھراس مال کو جہنم کی آگ میں گرم کیا جائے گا اور اس کے ساتھ نہیں ہوگا جن کا نور دوڑ رہا ہوگا۔ پھراس مال کو جہنم کی آگ میں گرم کیا جائے گا اور اس کا

<sup>🛈</sup> الطبراني - اس كى سند حسن كقريب براوراس كي شوام بهي بير -

ماب الكيائر ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ( 55 ) ساتھ ان کی بیٹانیوں ،ان کے پہلوؤں اور ان کی پشتوں کو داغ دیا جائے گا۔ان (مال داروں) کی کیفیت پیھی کہ جب فقیران سے ملتا تو وہ اذبت اٹھا تا۔ جب وہ ان سے کوئی چیز طلب کرتا تو چنگار ہوں کی طرح ان سے غضب کے شعلے بلند ہوتے ۔اگر وہ اس پر کوئی مہر بانی اور عنایت کرتے تو وہ کہتے:اس نے تمہیں تنگ کیا اور اس کا سوال اس لیے ہے،اگر تیرارب حابہتا تو وہ مختاج کوغنی و بے نیاز بنادیتا اور اس کومفلس بنادیتا۔ ہائے تعجب اور افسوس ہے کہ جب ان کی قبریں ان کو ملادیں گی تو انہیں کس قدرغم ہے دو حیار ہونا پڑے گا۔ جس دن اس کوجہنم کی آگ میں گرم کیا جائے گا تو ان کی پیشانیوں' ان کے پہلوؤں اور ان کی پشتوں کو داغ دیا جائے گا اور وارث ان سے کسی تکلیف کے بغیر ہی لے لے گا۔ اور اس (مال) کوجمع کرنے والے سے بوجھا جائے گا کہ کہاں سے کمایا اور کیا کمایا۔ البته ترونا زہ مجورتو وارث کول جائیں گی اور کا نے اس (مال جمع کرنے والے) کے حصے میں آ جا کیں گے۔تو پھراس مالک کوجمع کرنے والوں کی حرص کہاں گئی؟ان کی عقلیں کہا ہیں جس روز اس (مال ) کوجہنم کی آگ میں گرم کیا جائے گا،اور پھر ان کی پیشانیوں، ان کے پہلوؤں اور ان کی پشتوں کو داغ دیا جائے گا۔ اگرتم ان ( مال جمع کرنے والوں) کوجہنم کےطبقات میں دیکھ لیتا ، جب انہیں درہم و دینار کے انگاروں پرالٹ لیٹ کیا جائے گا۔اورخوشحالی ہونے کے باوجود بخیلی کرنے کی وجہ سے دائیں کو بائیں کے ساتھ باندھ دیا جائے گا، کاش کہتم انہیں جہنم میں دیکھ لیتے ، جب انہیں کھولتا ہوا پانی بلایا جائے گا اور ان کے صابرلوگ بھی مشقت و تکلیف کی وجہ ہے جیخ و پکار کریں گے اور جس دن اس مال کوجہنم کی آگ ہے گرم کیا جائے گا اور پھراس ہے ان کے چہروں ،ان کے پہلوؤں اوران کی پشتوں کو داغ دیا جائے گا۔ان کو دنیا میں کسی قدر دعظ ونصیحت کی جاتی تھی الیکن اس وقت ان میں کوئی بھی ابیا شخص نہیں تھا جوسنتا،اورانہیں اللہ کےعذاب دعقاب ہے کس قدرڈ راما گیا کمین ان میں کوئی بھی اییانہیں تھا جوڈرتا،ان کوز کو ۃ نہ دینے کی وجہ ہے کس قدر متنبہ اور آگاہ کیا گیا،لیکن (اس کے باوجود )ان میں سے کوئی بھی ایساشخص نہیں جوز کو ۃ ادا کر سکے پہل گویا کہان کے مال سمنج سانپ کی شکل اختیار کرلیں گے۔ پس بیمویٰ کا عصا (لاٹھی) ہے نہ ان کا طور ، جس دن اس (مال) کوجہنم کی آگ میں گرم کیا جائے گا اور پھر اس کے ساتھ ان کے چہروں ، ان کے

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

پېلوۇل اوران كى پشتول كوداغ ديا جائے گا''\_

### حكايت:

محمہ بن یوسف فریا بی سے مروی ہے، وہ بیان کرتے ہیں، میں اپنے چند ساتھوں کے ساتھ ابوسنان کی زیارت کرنے کے لیے گیا، پس جب ہم اس کے پاس گئے اور وہاں بیٹھ گئے تو انہوں نے کہا: اٹھو، ہمارے ساتھ ہمارے ایک پڑوی کی ملاقات کے لیے چلو، اس کا بھائی فوت ہو گیا ہے تا کہ ہم اس سے تعزیت کرآ میں۔ پس ہم ان کے ساتھ اٹھے اور اس آدمی کے پاس چلے ہے تا کہ ہم اس سے تعزیت کرآ میں۔ پس ہم ان کے ساتھ اٹھے اور اس آدمی کے پاس چلے گئے۔ ہم نے اسے اپنے بھائی کی وفات پر بہت زیادہ روتے ہوئے اور جزع کرتے ہوئے پایا۔ پس ہم اس سے اظہار ہمدردی و تعزیت کرنے اور اسے سلی دینے کے لیے بیٹھ گئے، کین اس نے کوئی تیلی تبول کی نہ تعزیت تو ہم نے کہا۔

کیا تہیں معلوم نہیں کہ موت ایس سبیل ہے جس سے بچنا نامکن ہے۔اس نے کہا: کیوں نہیں ٹھیک ہے۔ بلکہ میں تو اس عذاب پر روتا ہوں جس نے صبح وشام میر ابھائی دو جارہے۔ہم نے اسے کہا: کیااللہ نے تہمیں غیب پرمطلع کردیا ہے؟ اس نے کہا نہیں ،لیکن بات کچھاس طرح ہے کہ جب میں نے اسے دفن کر دیا اور اس پرمٹی برابر کر دی اور لوگ واپس آ گئے تو میں اس کی قبر کے پاس بیٹھ گیا۔ تواتنے میں قبرے آواز آنے گئی: ہائے! تم نے عذاب کی تختیوں کے لیے مجھے ا کیلے ہی چھوڑ دیا ہے۔ میں تو نماز پڑھا کرتا تھا، روز ہے رکھا کرتا تھا، وہ کہنے لگا: اس کی باتوں نے مجھے رلادیا۔ پس میں نے اس کا حال جانے کے لیے اس سے مٹی ہٹائی تو دیکھا کہ قبر میں آگ بھڑک رہی ہے اور اس کی گردن میں آ گ کا طوق ہے۔ پس شفقت اخوت نے مجھے برا پیختہ کیا اور میں نے اس کی گردن ہے طوق اتار نے کے لیے اپنا ہاتھ دراز کیا تو میری انگلیاں اور ہاتھ جل گیا پھراس نے اپناہاتھ نکال کرہمیں دکھایا' نووہ جل کرسیاہ ہو چکا تھا۔وہ بیان کرتے ہیں کہ میں نے دوبارہ اس پرمٹی ڈال دی اور واپس چلا آیا۔ (اب بتا ؤ) میں اس کے حال پر کیسے نەردۇل اوراس پرغم نەكرول؟ بىم نے پوچھا:تمہارا بھائى دنياميس كياممل كياكرتا تھا؟ اس نے بتایا: وہ اپنے مال کی زکوۃ ادانہیں کیا کرتا تھا۔راوی بیان کرتے ہیں: ہم نے کہا:

بالله تعالى كفرمان كى تقديق ب:

﴿ وَ لَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَهُ خَلُوْنَ بِمَ اللهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَهُمْ بَلُ هُوَ شَرِّ لَهُمْ سَيُطُوّقُوْنَ مَا بَخِلُوْ ابِهِ يَوْمَ الْقِيلَمَةِ. ﴾ (ال عمران: ١٨٠/٣) هُوَ شَرَّ لَهُمْ سَيُطُوّقُوْنَ مَا بَخِلُوْ ابِهِ يَوْمَ الْقِيلَمَةِ. ﴾ (ال عمران: ١٨٠/٣) ' اوروه لوگ جواس چیز کرچ کرچ کرنے میں بخل کرتے ہیں، جواللہ نے اپنی عنایت سے آئیس دے رکھا ہے، یہ خیال کرتے ہیں کہ وہ ان کے لیے بہتر ہے، بلکہ وہ ان کے لیے بہتر ہے، بلکہ وہ ان کے لیے بہتر ہے، بلکہ وہ ان کے لیے بہت بری چیز ہے، جس مال میں وہ بخل کررہے ہیں۔ یقینا قیامت کے دن اس کے طوق آئیس ڈالے جا کیں گئے'۔

اور تیرے بھائی کوروز قیامت تک اس کی قبر ہی میں جلد عذاب میں ہتلا کردیا گیا ہے۔
راوی بیان کرتے ہیں: پھر ہم وہاں سے نکل کررسول الله صلی الله علیہ وسلم کے صحابی ابوذ ررضی الله
عند ① کے پاس آئے اور ہم نے ان سے اس آ دمی کا قصہ بیان کیا اور ہم نے آئہیں کہا: یہودی
اور نصرانی بھی تو فوت ہوتے ہیں، لیکن ہم ان میں ایسی چیزیں اور واقعات نہیں و یکھتے! انہوں
نے فرمایا: ان کے بارے میں تو کوئی شک ہی نہیں کہ وہ جہنمی ہیں۔ لیکن اللہ ایسے واقعات اہل
ایمان میں سے تہمیں دکھا تا ہے، تا کہتم عبرت حاصل کروہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ فَمَنُ آَبُصَرَ فَلِنَفْسِهِ جِ وَمَنُ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ﴾ (الانعام: ٢٠٤/١)

''پس جو خض (روش دلائل) دیکھ لےگا،اس کا اپنا فائدہ ہے اور جو خض اندھارہے گا،اس کا اپنا نقصان ہے''۔

﴿ وَمَا رَبُّكَ بِطَلَّامٍ لِّلْعَبِيُدِهِ ﴾ (حم السحدة: ١١/٤٦)

''ادر تیرارب بنده پرظلم نبین کرتا''۔

پس ہم اللہ سے درگز راور عافیت کا سوال کرتے ہیں ، کیونکہ وہ تخی وا تا فیاض ہے۔

 $\triangle \triangle \triangle$ 

### (۲) بلاعذررمضان کاروز ه نهرکهنا

الله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ لَكَ اَيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنُ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ٥ آيّامًا مَّعْدُوداتٍ ط فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا أَوْ عَلَى

سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ آيَّامٍ أُخَرَطَ﴾ (البقرة: ٢/ ١٨٣ – ١٨٤)

''اے ایمان والو! تم پرروزے ای طرح فرض کیے گئے ہیں جس طرح کہتم سے پہلے لوگوں پر فرض کیے گئے تھے، تا کہتم متق بن جاؤ (روزے) گنتی کے چندروز ہیں، پھر تم میں سے جو بیار ہویاسفر میں ہو، تو وہ اس گنتی کو بعد میں پورا کردے''۔

نی صلی الله علیه وسلم سے روایت ہے کہ آپ نے فر مایا:

''اسلام کی بنیاد پانچ چیزوں پر ہے، گواہی دینا کہاللہ کےسوا کوئی معبودنہیں ،اور بہ کہ محمد (صلی اللہ علیہ وسلم )اللہ کے رسول ہیں۔نماز قائم کرنا، زکو ۃ ادا کرنا، بیت اللہ کا

مج کرنااوررمضان کےروزےرکھنا''<sub>۔</sub> 🛈

اورآ پ سلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

'' جو خص رمضان کاایک روز ه بلاعذر چیوژ دی تو پھرو ہ اگر زندگی بھربھی روزے رکھتا

رہے تو وہ اس کی قضانہیں دے سکتا''۔ ﴿

ابن عباس رضی الله عنه نے فر مایا: اسلام کے کنڈ ہے اور دین کی بنیادیں تین چیزوں پر ہیں، گواہی دینا کہ اللہ کے سواکوئی معبود نہیں، نماز اور روزہ، پس جس شخص نے ان میں سے کسی ایک کوچھوڑ دیا تو وہ کا فرہے۔

نعوذ بالله من ذلك.

<sup>)</sup> بخاري (۸) و مسلم (۱٦)

<sup>🗗</sup> ترمذی'نسائی' ابن ماجه

# (۷) قدرت ہونے کے باوجود حج نہ کرنا

الله تعالیٰ نے فرمایا

﴿ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِبُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلْيَهِ سَبِيْلًا. ﴾ (ال عمران: ٣/

''اللّٰد کی طرف سے لوگوں پر فرض ہے کہ جواس تک پہنچنے کی طاقت رکھے وہ خانہ کعبہ کا حج کرے''۔

اور نبی صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''جو خص زادراہ اور سواری رکھتا ہو جواہے بیت اللہ الحرام کا حج کرنے تک پہنچا دے اور وہ پھر بھی حج نہ کرے تو پھراس پراس بات کا کوئی حرج نہیں کہ وہ یہودی فوت ہویا عیسائی''۔ ①

اوربداس کیے ہے کہ اللہ تعالی فرما تا ہے:

﴿ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَّهِ سَبِيْلًا. ﴾ (ال عمران: ٣/ ٩٧)

''اللّٰہ کی طرف ہے لوگوں پر فرض ہے کہ جواس تک پہنچنے کی طاقت رکھے وہ خانہ کعبہ کا حج کرے'' یہ

عمر بن خطاب رضی الله عنه نے فر مایا:

''میں نے ارادہ کیا کہ میں انشہروں کی طرف آ دی جھیجوں تا کہ وہ اس چیز کا جائزہ لیں کہ جولوگ طاقت ہونے کے باوجود حج نہیں کرتے ، تو وہ ایسے لوگوں پر جزید لگادیں، کیونکہ وہ میل نہیں جمہ ''ج

مسلمان نہیں ہیں۔'°

ابن عباس رضی الله عنهمانے فرمایا:

① تر مذی اور بیبی نے اعور کی سند سے علی رضی اللہ عنہ سے روایت کیا ہے۔ اور بیبی میں ابوا مامہ رضی اللہ عنہ سے مروی روایت اس کا شاہد ہے۔

<sup>🕑</sup> سعید بن منصور نے حسن بھری سے اپنی سنن میں روایت کیا ہے۔

+ ﴿ كَتَابِ الْكِبَائِرِ ﴾ ﴿ ﴿ لَنَهُ اللَّهِ اللَّهِ ﴾ ﴿ وَهُ مُوتَ لَكُونَتُ وَبَارِهِ '''جُوخُصْ نه هج كرتا ہے نه اپنے مال كى زكاۃ ادا كرتا ہے تو وہ موت كے وقت دوبارہ دنیا كى زندگى كاسوال كرتا ہے، ان ہے كہا گیا: اس طرح كاسوال تو كافركرتے ہیں'

انہوں نے کہا یہ چیز اللہ تعالی کی کتاب میں ہے:

﴿ وَانْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقُنكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَاْتِي اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا اَخَّرْتَنِي إِلَى اَجَلٍ قَرِيبٍ فَاصَّدَّقَ وَاكُنْ مِّنَ الصَّلِحِينَ ٥ ﴾ (المنافقون: ٦٣/ ١٠)

''اور ہم نے جو پھیم کودے رکھاہے ،اس میں سے ،اس سے پہلے کہتم میں سے کسی کو موت آئے (ہماری راہ میں ) خرچ کرو، ورنہ وہ کیے گا۔اے میرے رب! تو نے مجھے تھوڑی مدت تک ڈھیل کیوں نہ دی ،تو میں خیرات کرتا اور نیک بندوں میں سے ہوتا''۔

"فأصدق" يَعَىٰ مِس زكاة اداكرتا ـ ادر "اكن من الصالحين" يَعَىٰ مِس جَ كرتا ـ ﴿ وَلَنْ يُوَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَآءَ اَجَلُهَا وَاللَّهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ٥ ﴾ (المنافقون: ١/٦٢)

''اور جب کسی کی موت آجائے تو اللہ اے قطعا کوئی ڈھیل نہیں دیتا اور جو پھھتم کرتے ہو،اللہ اس سے پوری طرح واقف ہے'۔

ان سے پوچھا گیا، زکاۃ کتنے (مال) پرواجب ہوتی ہے؟ انہوں نے فرمایا: دوسودرہم اور اس کی قیمت کے سونے پر، پھر پوچھا گیا: حج کن حالات میں واجب ہوتا ہے؟ انہوں نے کہا: زادِراہ اورسواری پاس ہونے کی صورت میں حج واجب ہوجا تا ہے۔

سعيد بن جبير رحمه الله فرمايا:

میراایک مال داراورخوشحال پڑوی فوت ہوگیا: اس نے ججنہیں کیا تھا۔ پس میں نے اس کی نماز جناز ہنیں پڑھائی۔

**ተ** 

### + (61 ) + (12 ) + (13 ) + (14 ) + (15

# (٨) والدين كى نافرمانى

الله تعالیٰ نے فر مایا:

﴿ وَقَصٰى رَبُّكَ الَّا تَعُبُدُوْ آ إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا. ﴾ (الاسراء: ٢٣/١٧)

''اورتمہارے رب نے فیصلہ کردیا ہے، کہتم اس کے سواکسی کی عبادت نہ کرواور اللہ بن کے ساتھ حسن سلوک سے پیش آؤ''۔

﴿ إِمَّا يَبُلُغَنَّ عِنُدَكَ الْكِبَرَ آحَدُهُمَ آ أَوْكِللْهُمَا فَلَا تَقُلُ لَهُمَا أُكِّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا . ﴾ (الاسراء: ٧٧/٢٧)

''اگرتمہاری موجودگی میں ان میں سے ایک یا دونوں بڑھاپے کو پینچیں تو تم ان کو اُف تک نہ کہواور نہ ہی ان کو جھڑ کؤ'۔

لینی جب ده دونوں بوڑھے اور عمر رسیدہ ہوجائیں تو ان سے بات کرتے وقت اکتاب اور شغلی کا سا انداز اختیار نہ کرو اور جس طرح ان دونوں نے تیری خدمت کو اپنے ذمہ لیا تھا ، اسی طرح مناسب یہی ہے کہتم ان دونوں کی خدمت کو اپنے ذمے لے لو۔ حالا نکہ فضیلت تو پیش قدمی اور سبقت کرنے والوں کو حاصل ہوتی ہے۔ یہ برابری کیسے ہو علی ہے، جب کہ وہ تو تمہاری قدمی اور سبقت کرنے والوں کو حاصل ہوتی ہے۔ یہ برابری کیسے ہو علی ہے کہ اگر تم نے ان زندگی کی امید پر تمہاری تعلیف برداشت بھی کی تو تم ان دونوں کی موت کی امید کرتے ہو۔ پھر اللہ تعالیٰ نے دونوں کی موت کی امید کرتے ہو۔ پھر اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ٥ وَالْحِفِضُ لَهُمَا جَنَاحَ اللَّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ قُلْ رَبِّ الرَّحْمَةِ وَ قُلْ رَبِّ الرَّحْمَةِ وَ اللَّهِ مَا اللَّهِ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ قُلْ رَبِّ الرَّحْمَةُ مَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيْرًا . ﴾ (بني اسرائيل/ ١٧: ٣٦ – ٢٤) ''اوران سے زی سے بات کرو، شفقت و عاجزی کا پہلوان کے آگے جھکا وَاوران کے حَقَ مِن دعا کرو۔اے رب! جس طرح ان دونوں نے بجین میں مجھے پالا ہے، ای طرح تو بھی ان پردم فرما''۔

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

# 

اورالله تعالیٰ نے قرمایا:

﴿أَنِ اشْكُرْلِي وَلِوَ الِدَيْكَ اِلَىَّ الْمَصِيْرُ. ﴾ (لقمان: ١٤ / ١٤)

'' پیرکتم میری اوراینے والدین کی شکر گز اری کرو،میری ہی طرف تم کولوٹ کرآنا ہے''۔ الله تم بررحم فرمائے ، ذراد کیھو کہ اللہ نے ان دونوں کی شکر گزاری کو کس طرح اپنی شکر گزاری

کےساتھ بیان فرمایا ہے۔

ابن عباس رضی الله عنهما نے فرمایا: تین آیات، تین چیزوں کے ساتھ ملی ہوئی نازل ہوئی ہیں۔ان ہےایک دوسری کے بغیر قبول نہیں کی جاتی۔

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ اَطِيْعُوا اللَّهُ وَاَطِيْعُوا الرَّسُولَ. ﴾

''الله اوررسول کی اطاعت کرؤ'۔

پس جس شخص نے اللہ کی اطاعت کی لیکن رسول کی اطاعت نہ کی تو وہ بھی اس سے قبول نہیں کی جائے گی۔

ب - ﴿ واقيموا الصلوة و آتواالزكاة ﴾ .... " نماز قائم كرواورز كوة اواكرو" -

پس جو خض نمازیز ھےاورز کو ۃادانہ کرے تواس کی نماز بھی قبول نہیں۔

ج ـ الله تعالى نے فرمایا:

﴿ أَنِ الشُّكُورُ لِنِي وَلِوَ الِلدِّيْكَ ﴾ " يه كميري اوراين والدين كى شكر رَّز ارى كروْ " كبس جو جخص الله کاشکر ادا کرے الیکن این والدین کاشکر ادانہ کرے ، تو اس سے اللہ کی شکر گزاری بھی قبول نہیں کی جائے گی۔

اسی لیے نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

''الله کی رضا مندی ، والدین کی رضا مندی میں ہے اور الله کی ناراضی والدین کی

ناراضی میں ہے'۔ ①

امام ترندی نے اسے عبداللہ بن عمرة سے روایت کیا ہے اور اس کے موقوف ہونے کو ترجیح دی ہے اور امام حاکم نے فرایا ہی مسلم کی شرط پہنچے ہے۔ محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

♦ 63 63 + 15 ( )

ابن عمر ورضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں: ایک آ دمی ، نبی صلی اللہ علیہ وسلم ہے 'آپ کی معیت میں جہاد پر جانے کی اجازت طلب کرنے کے لیے حاضر ہوا،تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

"كياتمهار إوالدين زنده بين"؟

اس نے عرض کیا، جی ہاں آپ نے فر مایا:

''پس ان دونول کی خدمت میں جہاد کرو''۔ 🛈

ذرا دیکھیں کہ والدین ہے حسن سلوک اور ان کی خدمت کوئس طرح جہاد پر فضیلت دی گئی

-4

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم نے فر مايا:

'' کیا میں تمہیں کمیرہ گناہوں کے متعلق نہ بتاؤں؟'' ۔۔۔۔''اللہ کے ساتھ شریک تھبرانا اور والدین کی نافر مانی کرنا''۔ ﴿

آپ ذراغور فرما کیں کہان دونوں کے ساتھ برےسلوک اوران سے نیکی اوراحسان نہ کرنے کاکس طرح شریک تھبرانے کے ساتھ ذکر کیا گیا ہے۔

ایک اور روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا:

''والدین کا نافرمان، احسان جنگانے والا اور عادی شراب نوش جنت میں نہیں جا کمیں

O \_'L

اورآپ صلی اللہ علیہ وسلم سے مروی ہے:

اگراللہ کے علم میں (اللہ کاعلم یقیناً کامل وکمل ہے) اُف سے بھی ادنی کوئی لفظ ہوتا تو وہ اس سے بھی منع فر مادیتا۔ پس والدین کا نافر مان جو جا ہے عمل کرتا رہے، وہ جنت میں واخل نہیں ہوگا اور والدین سے حسن سلوک کرنے والا جو جاہے عمل کرتا رہے وہ جہنم میں نہیں جائے گا''۔ اور آ ہے تَکَافِیْزُ آنے فر مایا:

''اللہ نے اپنے والدین کی نافر مانی کرنے والے پرلعنت فر مائی ہے۔'' ﴿

- 🛈 بخاری (۲۰۰۶) مسلم (۳۵۶۹) 🛈 بخاری (۲۹۲۰)

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

اورآ پِ مَلَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّالِي اللَّهُ اللَّهُ اللَّاللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا

''الله الشخص پرلعنت فرمائے جواپنے والد کو گالی دیتا ہے اور الله اس شخص پرلعنت فرمائے جواپی والدہ کو گالی دیتا ہے۔'' ①

ا۔ دیلمی نے احرم بن حوشب کی حدیث ہے بسند ہ الی حسین بن علی، روایت کیا ہے۔ جبکہ احرم کذاب ہے۔ السیوطی نے اسے زیل الملائی میں ذکر کیا ہے۔ ''اللہ تمام گنا ہوں میں ہے جو چاہتا ہے روز قیامت تک موخر رکھتا ہے بجز والدین کی نافر مانی کے کیونکہ وہ ایسے خص کوجلد بی دنیا میں سزا دیتا ہے۔ ' () کعب احبار نے فر مایا: یقینا اللہ بندے کوجلد ہلاک کر دیتا ہے جب وہ اپنے والدین کا نافر مان ہو، تا کہ وہ اسے جلد عذاب سے دو چار کر دے اور اللہ بندے کی عمر دراز فر ماتا ہے، جب وہ اپنی اور خیر و بھلائی میں فر ماتا ہے، جب وہ اور ان سے حسن سلوک کرتا ہو، تا کہ وہ اس کو نیکی اور خیر و بھلائی میں مزید بڑھادے اور ان سے حسن سلوک کا ایک پہلویہ جس ہے کہ جب انہیں ضرورت ہوتو ان پر خرج کیا جائے۔

ایک آدمی نبی صلی الله علیه وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا تو اس نے عرض کیا ، الله کے رسول! میرے والد جا ہتے ہیں کہ وہ میرے مال کواپی کسی ضرورت پوری کرنے میں صرف کریں ، تو آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا: ''تم اور تمہارا مال تمہارے باپ کا ہے''۔

کعب احبار سے والدین کی نافر مانی کے متعلق پوچھا گیا کہ اس سے کیا مراد ہے؟ انہوں نے فر مایا: جب اس کا والدیااس کی والدہ اس پرقتم کھالے تو وہ ان کی قتم کو پورانہ کرے۔ جب وہ اس سے کوئی چیز مائکیں تو وہ انہیں نہ دے اور جب وہ اس کے پاس کوئی امانت رکھیں تو وہ ان سے خیانت کرے۔

ابن عباس رضی الله عنهما ہے اصحاب اعراف کے متعلق پوچھا گیا کہ وہ کون ہیں اور اعراف کیا ہے؟ انہوں نے فرمایا جہاں تک اعراف کاتعلق ہے تو وہ جنت اور جہنم کے درمیان ایک پہاڑ ہے۔اس کا نام اعراف اس لے ہے کہ وہ جنت اور جہنم سے بلند ہے۔اس پر درخت، پھل ،نہریں اور چشمے ہیں اور رہے وہ آ دمی جواس پر ہوں گے، یہ وہ لوگ ہوں گے جواپخ

🛈 ابن حبان 🕈 مستدرك حاكم

والدین کی رضامندی کے بغیر جہاد کے لیے گئے اور وہ جہاد میں شہید کردیے گئے۔اللّٰہ کی راہ میں شہید ہونے کئے اللّٰہ کی راہ میں شہید ہونے کے ملل نے انہیں جہنم میں جانے سے روک رکھا اور والدین کی نافر مانی نے انہیں جنت میں جانے سے روک رکھا۔ پس جب تک اللّٰہ ان کے بارے میں فیصلہ نہیں فر مائے گاوہ اعراف پر ہی رہیں گے۔ ①

ایک آدی رسول الله سلی الله علیه وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا تو اس نے عرض کیا، الله کے رسول! لوگوں میں سے، میرے حسن سلوک کا سب سے زیادہ جن دارکون ہے؟ آپ نے فر مایا: "تیری والدہ"۔ اس نے عرض کیا: پھر کون؟ آپ نے فر مایا: "تیری والدہ"۔ اس نے عرض کیا: پھر کون؟ آپ نے فر مایا: "تیری والدہ" تیری والدہ" تیری والدہ" تیری والدہ" سے قر میں تر اور پھر اس سے قریب تر اور پھر اس سے قریب تر"۔ ﴿

پس آپ نے والدہ سے حسن سلوک کے بارے میں تین مرتبہ اور والدسے حسن سلوک کے بارے میں آپ نے دالد سے حسن سلوک کے بارے میں آپ ایک مرتبہ ترغیب فرمائی اور بیٹھن اس لیے ہے کہ اس نے تکلیف و مشقت زیادہ برداشت کرنے ہے۔ اس کے علاوہ وہ حمل ، در دزہ ، ولا دت ، رضاعت اور را توں کو جاگنے کی تکالیف برداشت کرتی ہے۔

ابن عمر رضی اللہ عنہ نے ایک آ دمی کو دیکھا کہ اس نے اپنی والدہ کو اپنے کندھوں پر اٹھایا ہوا ہوا ہوا ہوا کہ اس کے بیارا کیا خیال ہے کہ میں نے اسے بدلہ دے دیا ہے؟ انہوں نے فرمایا نہیں، اس نے در دزہ کی جو تکلیفیں بر داشت کی ہیں، ابھی تو اس ایک در دکا بدلہ نہیں ہوا، لیکن تم نے بہت اچھا کیا اور اللہ تعالی تمہیں تھوڑ کے مل پر بہت زیادہ اجروثو اب عطافر مائے گا۔

ابو ہریرہ رضی الله عندیان کرتے ہیں، رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

'' حیار آ دمیوں کا اللہ پرحق ہے کہ وہ انہیں جنت میں داخل کرے نہ انہیں اس کی نعمتیں چکھائے: عادی شراب نوش، سود خور، ناحق طور پریتیم کا مال کھانے والا اور اپنے والدین کا نافر مان ،الا بیکہ وہ تو بہ کرلیں۔ ④ نافر مان ،الا بیکہ وہ تو بہ کرلیں۔ ④

🛈 سعیدبن منصور نے اپنی سنن میں اے روایت کیا ہے۔ 🏵 بحاری 🏵 مستدرك حاکم

+ کتاب الکبائر ایک آدمی ابودرداءرضی الله عنه کے پاس آیا تو اس نے کہا: ابودرداء! میں نے ایک عورت سے شادی کی ہے، جبکہ میری والدہ مجھے اسے طلاق دینے کا حکم دیتی ہے۔ابودرداءرضی الله عنه نے کہا: میں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم کوفر ماتے ہوئے سنا:

''والد،ابواب جنت کا درمیا نه در داز ه ہے،اگرتم چا ہوتو اس در دازے کوضائع کر دویا اس کو ایس کا ''

محفوظ کرلؤ'۔ 🛈

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

'' تین دعا کیں ایسی ہیں، جن کے قبول ہونے میں کوئی شک نہیں ،مظلوم کی دعا، مسافر ک دعا اور والد کی اپنے بیچے کے لیے بددعا''۔ ۞

ادرآ پے صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

'' خالہ، ماں کے مقام ومنزلت پر ہے، یعنی حسن سلوک ، اکرام صلدرحی اور احسان کرنے کے لحاظ ہے''۔ ©

وہب بن منبہ بیان کرتے ہیں:

''اللہ تعالیٰ نے موسیٰ علیہ السلام کو وتی کی: موسی! اپنے والدین کی عزت وتو قیر کر، کیونکہ جو شخص اپنے والدین کی عزت وتو قیر کرتا ہے تو میں اس کی عمر وراز کر دیتا ہوں اور اسے ایسا بچہ عطا کرتا ہوں جو اس کی عزت وتو قیر کرتا ہے اور جو مخض اپنے والدین کی تا فرمانی کرتا ہے، تو میں اس کی عمر کم کر دیتا ہوں اور اسے ایسا بچہ عطا کرتا ہوں جو اس کی نا فرمانی کرتا ہے۔

ابوبکر بن ابی مریم بیان کرتے ہیں: میں نے تورات میں پڑھا ہے کہ جو خض اپنے والد کو مارنا ہےائے آل کیا جائے گا۔اور وہب نے فرمایا: میں نے تورات میں پڑھا ہے: جو محض والد کو مارے تو اے رجم کیا جائے گا۔

عمر و بن مرہ جہنی بیان کرتے ہیں ، ایک آ دمی رسول الله صلی الله علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا تو اس نے عرض کیا اللہ کے رسول! مجھے بتا ئیں کہ جب میں پانچوں نمازیں پڑھوں،

⑦ ترمذی (۱۹۰٤)

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

ابن ماجه ا ترمذی
 منذری نے اسے ترخدی کی طرف منوب کیا ہے۔

حراث کتاب الکبائر کو قادا کروں اور بیت اللّٰد کا ج کروں تو جھے کیا ملے گا؟ رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا ؟

"جوفض بيا عمال بجالائ تووه انبياعليهم السلام، صديقين بشهداء اورصالحين كساتهه موكا

بشرطیکه وه این والدین کا نافر مان ندمو''۔ 🛈

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

"الله نے والدین کے نافر مان پرلعنت فرمائی ہے۔" اللہ

رسول الله صلى الله عليه وسكم نے فر مايا:

''جب مجھے معراج کرائی گئی تو میں نے اس رات کچھلوگوں کو آگ کے تنوں کے ساتھ لکھے ہوئے جہنے میں دیکھا تو میں نے کہا: ''جریل! یکون لوگ ہیں؟''انہوں نے کہا: جود نیا میں اپنے والدین کو گالی دیا کرتے تھے۔

مروی ہے کہ جو محض اپنے والدین کوگالی دیتا ہے، تو آسان سے، زمین پراتر نے والی بارش کے ہر قطرے کے عوض، اس کی قبر میں آگ کا ایک انگارا اتر تا ہے۔ روایت کیا جاتا ہے کہ جب اپنے والدین کے کسی نافر مان شخص کو ذمن کیا جاتا ہے، تو اس کی قبراسے خوب دباتی ہے تو اس میں اس کی پسلیاں ایک دوسری میں داخل ہوجاتی ہیں، اور روز قیامت تین قسم کے لوگوں کو رب سے سخت عذاب دیا جائے گا۔ مشرک، زانی اور اپنے والدین کا نافر مان شخص۔

بشرنے کہا: جو مخض اپنی والدہ کے اس قدر قریب رہتا ہے، جہاں سے اس کی بات س سکے، تو بیاں شخص سے افضل و بہتر ہے جواپنی تلوار سے اللہ کی راہ میں قبال کرتا ہے۔اوراس ( والدہ ) کی طرف د کیھے لینا ہرچیز سے افضل ہے۔

ایک آدی اور ایک عورت اپنے ایک بچے کے بارے میں جھگڑتے ہوئے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آدمی نے کہا: اللہ کے رسول! میرا بچہ (نطفے کی صورت میں) میری پشت سے نکلا ہے،عورت نے کہا، اللہ کے رسول! اس نے خفیف انداز میں اس کو

مسند احمد' طبرانی

<sup>🛈</sup> امام ذہبی نے اے 'الصغری' میں روایت کیا ہے۔

۔ کتاب الکبائر کے کہ نہیں کے کہ اسکون کے کہ اسکون کا کہ اسکون کے کہ اسکون کا اسکون کا اسکون کا اسکون کا اسکون کے کہ اسکون کا اسکون کا اسکون کے کہ اسکون کا اسکون کی مال کمل اسے دودھ پایا، پس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کا فیصلہ اسکون میں کیا۔ (بیج) کی ماں کے ق میں کیا۔ (بیج) کی ماں کے ق میں کیا۔ (بیج)

نفيحت:

پختہ اور تا کیدی حقوق کو ضائع کرنے والے! والدین ہے حسن سلوک کے عوض ان کی نافرمانی کرنے والے! اینے واجبات کے بھول جانے والے! اینے انجام سے غافل ہونے والے! والدین ہے حسن سلوک ہے پیش آناتم پر ایک قرض ہے۔ جبکہ تو اس کی طرف برے انداز میں پیش قدمی کرتا ہے ہتم اینے زعم میں جنت کے طلب گار ہو، حالانکہ وہ تمہاری مال کے قدموں تلے ہے۔اس نے تنہیں نو ماہ اینے پیٹ میں اٹھارکھا گویا کہ وہنوسال تھے،اور پیدائش کے وقت خون ول کچھلا دینے والی تکلیفیں برداشت کیں۔اس نے اپنے پہتانوں سے تجھے دودھ بلایا، تیری خاطر اپنی رات کی نیندیں حرام کیں۔ اپنے دائمیں ہاتھ سے تیری غلاظت صاف کی اور غذا کے معاملے میں اپنی نسبت منہیں ترجیح دی۔ اس کی گود تیرے لیے گہوارہ بنی ر ہی۔ تجھے احسان اور اعانت فراہم کی۔اگر تجھے کوئی پیاری یا تکلیف پیپنچی تو وہ انتہائی غم اور یریشانی کا شکار ہوجاتی اور اس کا حزن وغم اور سسکیاں دراز ہوجا تیں اور وہ اپنا مال طبیب کے لیے حاضر کرویتی۔اگراہے تیری زندگی اورایٹی موت میں سے کسی ایک انتخاب کا اختیار دیا گیا تو اس نے با آواز بلند تیری زندگی طلب کی۔اس کے باوجود تونے کتنی باراس سے بداخلاقی کی، لیکن اس نے ہمیشہ تیرے لیے کامیا بی و کامرانی کی پوشیدہ ( آہتہ ) اور علانیہ دعائیں کیس ہمیکن جب بروهایے میں وہ تیری محتاج ہو کی تو تونے اسے اینے لیے تمام چیزوں سے معمولی سمجھا۔ تو خودتو سیر ہوکر کھا تا اور وہ بھوکی رہتی ۔ تو خوب سیراب ہوتا اور وہ کسی چیز کا مطالبہ کیے بغیر مطمئن رہتی۔تو نے احسان کرنے میں اپنے اہل وعیال کواس پرتر جیح دی۔تو نے اس کے احسانات کو فراموش کردیا۔اس کامعاملہ تیرے ہاں مشکل ہو گیا حالا نکہ وہ آ سان ہے۔اس کی عمر مجھ پر دراز

<sup>🛈</sup> احمد' ابوداؤد

ہوگئی حالانکہ و ہختصر ہے۔تو نے اس کا اور اس کے حقوق کا خیال نہ رکھا حالانکہ تیرے سواس کا کوئی مددگار نہیں۔جبکہ تیرے مالک نے تختبے اُف کہنے سے بھی منع فرمایا ہے۔اوراس کے حقوق کا خیال ندر کھنے براس نے تہمیں ہلکی می سزادی ہے۔ دنیا میں تمہمیں اس طرح سزادی جائے گی کہ تیری اولا دتیری نافر مانی کرے گی اور آخرت میں تجھے رب العالمین کا قرب نصیب نہیں ہوگا اور ڈانٹ کے انداز میں اسے آواز دی جائے گی۔

﴿ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتُ يَدَكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِطَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴾ (الحج /٢٠:٢١) '' یہان اعمال کی سزا ہے جو تونے آ گے بھیجے تھے، اللہ اپنے بندوں پر ہر گرظلم نہیں

كثيرك يسا هلذا لديسه يسيسر لها من جواها أنة و زفير فمن غصص منها الفؤاد يطير ومساح جرهسا إلاللديك سريس ومن ثديها شرب لديك نميس حنبانًا رَ اشفاقًا و أنت صغير وآهًا لأعمى القلب وهو بصير فأنت لماتدعو إليه فقير

لأمك حيق ليوعب لمست كثيسر فكم ليلة باتت بثقلك تشتكى وفى الوضع لو تدرى عليها مشقة وكم غسلت عنك الأذى بيمينها وتفديك مماتشتكيه بنفسها وكم مسرة جاعت و أعطتك قوتها فآهًا لذي عقل و يتبع الهوي فدونك فارغب في عميم دعائها "اگرتو جانے تو تیری مال کا بہت حق ہے۔اسے فلال تیرا بہت بھی اس کے ہال

معمولی ہے۔'' '' تیرے قُلْ کی وجہ ہے اس نے کتنی را تیں تکلیف میں گزاریں۔اس تکلیف کی وجہ

ہے وہ کراہتی اور لیے لیے سانس کیتی رہی۔

''اگر تو جان لے کہ پیدائش کے وقت اس پر کیا گزری ،اس کی بعض تکلیف سے دل ارْنِ لَكَتابُ '۔

"وہ تیری تکلیف پراپی جان قربان کرنے تک جاتی اوراس کے بہتانوں سے تیرے

معن الكبائر كتاب الكبائر كتاب

''اور کتنی مرتبه اس نے خود بھوکارہ کر تجھے خوراک دی اور تجھ پر شفقت ومہر بانی کی

جبكه تو حجوثا تھا''۔

اس عقل مند پر افسوس ہے جوخواہشات کی انباع کرتا ہے۔اس آنکھوں والے پر افسوس ہے جودل کا اندھاہے۔

. ''تم اس کی عمومی دعاؤں میں رغبت رکھو۔ پس تم بھی دعا کرو۔تم تو اس کی طرف مختاج ہے''۔

حکایت ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے دور میں علقمہ نامی ایک نوجوان تھا، وہ نماز روزے اور صدقے کے بارے میں اللہ تعالی کی بہت اطاعت کرتا تھا۔ پس وہ بیار ہوگیا اور اس کا مرض شدت اختیار کر گیا ، تو اس کی عورت نے رسول الله صلی الله علیه وسلم کی طرف پیغام بھیجا کہ میرا خاوندعلقمہ نزع کے عالم میں ہے۔اس لیے اللہ کے رسول! میں نے اس کے متعلق آپ کو بتانے كااراده كيا\_پس نبي صلى الله عليه وسلم نے عمار ,صهيب اور بلال رضى الله عنهم كو بھيجااورفر مايا: ''اس کے پاس جا دَاورا سے کلمہ شہادت پڑھنے کی تلقین کرو۔ پس وہ اس کی طرف چل دیے،اس کے یاس مہنچتو اس کونزع کے عالم میں پایا تو وہ اس کو' لا الہ الا اللہٰ' کی تلقین کرنے گئے، کیکن اس کی زبان سے بدالفاظ ادائبیں ہور ہے تھے۔ پس انہوں نے رسول الله صلى الله عليه وسلم كوبتانے كے لیے کہاس کی زبان سے لا الہالا اللہ کےالفاظ جاری نہیں ہور ہے،آ دی بھیجا،تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ' کیا اس کے والدین میں سے کوئی زندہ ہے؟ ' عرض کیا گیا اللہ کے رسول! بوڑھی والدہ ہے'' رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے اس کی طرف پیغام بھیجا اور قاصد سے فر مایا: ''اسے کہنا کہا گروہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف جانے کی قدرت رکھتی ہے تو ٹھیک ور نہ وہ گھر میں رہے حتی کہ وہ خود آپ کے پاس تشریف لے آتے ہیں''۔روای بیان کرتے ہیں : قاصداس کے پاس آیا اور رسول الله صلی الله علیہ وسلم کا فرمان اسے بتایا تو اس نے کہا: میری جان ان پر قربان پیو۔ان کی خدمت میں جانا میرا زیادہ حق ہے۔پس وہ لاٹھی کے سہارے رسول اللہ صلی الله علیه وسلم کی خدمت میں حا نمر ہوئی سلام کیا تو آپ سلی الله علیه وسلم نے سلام کا جواب دیا

اورا سے فرمایا: ''ام علقمہ! مجھ سے تی بات کرنا! اگرتم نے جھوٹ بولاتو اللہ تعالیٰ کی طرف سے مجھے وجی آجائے گی۔ تیرے بیٹے علقمہ کا کیا حال تھا؟ اس نے عرض کیا: اللہ کے رسول! بہت زیادہ نمازیں پڑھنے والا ، بہت زیادہ روز سر کھنے والا اور بہت زیادہ صدقہ کرنے والا ۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ''تمہارا کیا حال ہے؟ ''اس نے عرض کیا، اللہ کے رسول! میں اس سے ناراض ہوں' آپ نے پوچھا: کیوں؟ اس نے عرض کیا اللہ کے رسول! وہ اپنی ہوی کو ترجیح ویتا تھا اور میری نا فرمانی کیا کرتا تھا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ''اگر علقمہ کی مال ناراض ہے تو پھر علقمہ کی زبان سے کلمہ شہادت جاری نہیں ہوسکتا' کے پھر فرمایا: ''بلال! جا وَ اور بہت کی کڑیاں لے کرآؤ' ۔ اس (ماں) نے کہا: اللہ کے رسول! آپ کیا کریں گے؟ آپ نے فرمایا: ''میں اے تمہارے سامنے آگ سے جلاؤں گا۔'' اس نے عرض کیا: اللہ کے رسول! میرا بیٹا، میرادل برواشت نہیں کرسکتا، کہ آپ اسے میر سامنے آگ سے جلادیں۔

آپ نے فرمایا: "ام علقمہ!الله كاعذاب زياده شديداور باقى رہنے والا ہے۔اگرتم جا ہتى ہو کہ اللہ اسے معاف کرد ہے تو پھراس سے راضی ہوجاؤ۔اس ذات کی تھم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! جب تک تم اس سے ناراض ہو،علقمہ کی نماز ، روز ہ اوراس کا صدقہ کرنا ، اس کے پچھ كامنبيں آئے گا''\_اس نے عرض كيا: اللہ كے رسول! ميں اللہ تعالی ، اس كے فرشتوں اور جو مسلمان موجود ہیں ان سب کو گواہ بنا کر کہتی ہوں کہ میں اپنے بیٹے علقمہ سے راضی ہوچکی ہوں۔ رسول الله صلى الله عليه وسلم فرمايا: ''بلال!اس كے پاس جا وَاور ديكھوكيا وہ''لا اله الا الله'' كا اقرار کرنے کی استطاعت رکھتاہے یانہیں؟ ممکن ہےام علقمہ نے مجھ سے حیاء کرتے ہوئے منہ سے تو كهدديا ہوجبكه اس كى دلى كيفيت بيرند ہو''۔ پس ملال گئے اور انہوں نے گھر كے اندر سے علقمہ كو ''لا الدالا الله'' كہتے ہوئے سنا\_پس بلال آئے اور كہا، لوگو! سن لوعلقمہ كى مال كى نا راضى نے اس کی زبان کوکلمپیشهادت کہنے سے روک رکھا تھا اور اس کی رضا مندی نے اس کی زبان کو اس ر کاوٹ سے آزاد کردیا۔ پھر علقمہ اس روز وفات یا گئے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم تشریف لائے، آپ نے اس کے شسل اور کفن کا تھم فر مایا۔ پھراس کی نماز جنازہ پڑھی اور اس کی تدفین کے وقت موجود رہے۔ پھر آپ اس کی قبر کے تنارے کھڑے ہوئے اور فرمایا ''مہاجرین اور

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

مور کتاب الکبائر کی اور تمام الفار کی این بال پر نصلیت و ترج و برات الله، فرشتوں اور تمام انسانوں کی لعنت ہو۔ جب تک وہ اللہ عزوج لی کے حضور تو بہ نہ کرے اور اس (ماں) کے ساتھ حسن سلوک نہ کرے اور اس کی رضامندی حاصل نہ کرے تو اللہ اس کا نہ کوئی فرض قبول کرتا ہے نفل (سن لو) اللہ کی رضا میں ہے اور اللہ کی تاراضی اس کی تاریخ میں ہے۔ "

پس ہم اللہ تعالی سے اس کی رضا کے حصول اور اس کی ناراضی سے نیچنے کی ورخواست کی یک ہم اللہ تعالی سے اس کی رضا کے حصول اور اس کی ناراضی سے نیچنے کی ورخواست کرتے ہیں، کیونکہ وہ تی وہ تا تا اور شفیق مہر بان ہے۔

☆☆☆

ابن الجوزی نے اس حکایت کوموضوعات میں ذکر کیا ہے اور نو جوان (علقمہ) کا نام نہیں لیا اور کہا کہ فائد
 لینی ابن عبدالرحمٰن العطار متروک ہے۔عقیلی نے بتایا کہ اس کی متابعت نہیں کی گئی اور داؤد لیخی ابن ابر اہیم قاضی
 قذوین کذاب ہے۔

## (۹)رشتەدارو<u>ں سے طع</u>تعلق ہوجانا

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَ لُوْنَ بِهِ وَالْآرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا . ﴾

(النساء: ٤/١)

"اور الله سے ڈروجس کے نام پرتم ایک دوسرے سے سوال کرتے ہواور قرابت داری (کے تعلقات منقطع کرنے) سے ڈرو''۔

اورفرمایا:

﴿ فَهَلُ عَسَتُهُمُ إِنْ تَوَلَّيْتُمُ اَنْ تَفْسِدُوا فِي الْآرْضِ وَ تُقَطِّعُوْ آ اَرْحَامَكُمُ ٥ اُوْفَهَلُ عَسَتُهُمُ اللهُ فَاصَمَّهُمُ وَ اَعْمَى اَبْصَارَهُمُ. ﴾ (محمد:

'' پھرتم سے رہیمی تو قع ہے کہا گرتم کو حاکم بنادیا جائے تو تم ملک میں فساو ہریا کر دواور اپنے رشتے ناتے تو ڑ ڈالو۔ بیدہ الوگ ہیں جن پراللہ نے لعنت کی ، پس اس نے ان کو بہرہ اور ان کی آٹھوں کو اندھا کر دیا''۔اور فرمایا :

﴿ اَلَّذِيْنَ يُوْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيْنَاقَ ٥ وَالَّذِيْنَ يَصِلُونَ مَا آمَرَ اللّهِ إِللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيْنَاقَ ٥ وَالَّذِيْنَ يَصِلُونَ مَا آمَرَ اللّهُ بِهِ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشُونَ رَبَّهُمْ وَ يَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ٥ ﴾ (الرعد:

(11-7./14

''جو الله كے عہد كو پورا كرتے ہيں، اور ميثاق كونہيں تو ڑتے اور جو ان رشتوں كو جوڑتے ہيں جن كو جوڑنے كا اللہ نے تكم ديا ہے، اپنے رب سے ڈرتے ہيں اور برے حساب سے خوف ركھتے ہيں۔''

نيز فرمايا:

﴿ وَمَا يُصِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِيْنَ ٥ الَّذِيْنَ يَنْقُصُونَ عَهْدَاللهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهِ وَيَقُطَعُونَ مَا آمَر اللهُ بِهِ أَنْ يُتُوْصَلَ. ﴾ (البقرة: ٢٦/٢ - ٢٧) → التحال الكبائر الكبائر التحال التحال

تو ڑ دیتے ہیں اور جن رشتوں کو اللہ نے جوڑنے کا حکم دیا ہے۔ان کوقطع کردیتے ہیں اور ملک میں فساد پھیلاتے ہیں، یہی لوگ خسارہ یانے والے ہیں''۔

سب سے بڑا عہدوہ ہے جواللہ اور ہندے کے درمیان ہے، جواللہ نے بندے پر لا زم کیا ہے۔رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

" وقطع رحى كرنے والا جنت ميں داخل نہيں ہوگا"۔ آ

پس جوشخص اپنے ضعیف و نا تو ا، رشتہ داروں سے قطع تعلق کرلے، ان کوچھوڑ دے، ان پر بردا پن ظاہر کرے اور وہ مال دار ہونے کے باوجو دان پر نیکی اور احسان نہ کرے، جبکہ وہ محتاج ہوں، تو ایسافخص اس وعید میں داخل ہے۔ وہ جنت میں جانے سے محروم ہے۔ الا بیہ کہ اللہ عز وجل کے حضور تو بہ کرلے اور ان کے ساتھ حسن سلوک سے پیش آئے۔

حديث مين رسول الله صلى الله عليه وسلم سے ثابت ہے كرآب فرمايا:

کے حالات معلوم کر کے تعلق جوڑنے کی کوشش کرے'۔ 🛈

نبی سلی اللہ علیہ وسلم کا فرمان ہے: دور نام شدہ میں میں تعلق حرم میں کرون میں میں ایسان العدم '

''اپنے رشتہ داروں سے تعلق جوڑے رکھوخواہ سلام کے ذریعے ہو''۔

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''تم میں سے جو شخص اللہ اور ہوم آخرت پرایمان رکھتا ہووہ اپنے رشتہ داروں سے تعلق قائم رکھ''۔ ﴿

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

🛈 بخاری (۹۸۶) مسلم (۲۵۵۱) 🕜 طبرانی 🕈 بخاری (۲۱۳۸)

→ الكبائر الكبائ

من قام سرنے والا وہ بین بو بدھے یں جن کا است جند جن کا است میں ہے۔ شخص ہے جب اس سے تعلق تو ڑا جائے تو وہ اسے جوڑئے''۔

اور آپ سُکالِیُوْانِ فرمایا ''اللہ تعالی فرماتا ہے: میں رحمان ہوں اور وہ (رشتہ داری) رحم ہے،
پی جس نے اسے ملایا میں اسے ملاؤں گا اور جس نے اسے قطع کیا، میں اس سے قطع کروں گا۔'' ①
علی بن حسین رضی اللّہ عنہ سے روایت ہے کہ انہوں نے اپنے بیٹے سے کہا: میرے بیٹے قطع
تعلق کرنے والے فیض کا ہم نشین نہ بنتا، کیونکہ میں نے اللّٰہ کی کتاب میں تین مقامات پراسے
ملعون یا یا ہے۔

ابو ہریرہ فائونے سے مردی ہے ﴿ کہ دہ ہیشے رسول اللّٰدُ فَائْتُونِہُ سے حدیث بیان کررہے ہے ، تو انہوں نے کہا: میں ہرقاطع رحم پرتنگی کروں گا ورنہ وہ ہمارے پاس سے کھڑا ہو جائے۔ پس حلقے کے آخر سے صرف ایک نوجوان کھڑا ہوا، پس وہ اپنی پھوپھی کے پاس گیا جس سے اس نے کئی برسوں سے قطع تعلق کررکھا تھا اور اس نے اس سے سلح کر لی۔ اس کی پھوپھی نے اسے کہا: ہینتیج! کون می چرتہ ہیں یہاں لے آئی؟ اس نے کہا: میں رسول اللّٰه مَا اللّٰه عَلَیْ کے صحافی ابو ہریرہ کے پاس بیشا ہوا تھا انہوں نے کہا: میں ہرقاطع رحم پرتنگی کروں گا، ورنہ وہ ہمارے پاس سے جلا جائے۔ اس کی پھوپھی نے اسے کہا: ابو ہریرہ کے پاس جا واور ان سے پوچھو: کہا ہے کیوں؟ پس وہ ان اس کی پھوپھی نے اسے کہا: ابو ہریرہ کے پاس جا واور ان سے پوچھو: کہا ہے کیوں؟ پس وہ ان قاطع رحم آپ کے پاس گیا اور اس کا اپنی پھوپھی کے ساتھ جو مکا لمہ ومعاملہ ہوا، آنہیں بتایا اور ان سے پوچھا، قاطع رحم آپ کے پاس کیون نہیں بیٹھ سکتا؟ تو ابو ہریرہ رضی اللّٰد عنہ نے فر مایا: میں نے رسول اللّٰہ عنہ نے فر مایا: میں نے رسول اللّٰہ عنہ نے فر مایا: میں نے رسول اللّٰہ عنہ نے فر مایا: میں نے وہول اللّٰہ عنہ نے فر مایا: میں نے رسول اللّٰہ عنہ نے فر مایا: میں نے رسول اللّٰہ عنہ نے فر مایا: میں موری مارہ نے ہوئے سنا ہے:

‹‹جس قوم میں قاطع رحم ہو، وہاں رحت ناز لنہیں ہوتی''۔

ایک حکایت بیان کی جاتی ہے کہ کسی مال دار محض نے بیت اللہ الحرام کا حج کیا، پس جبوہ مکہ پہنچا تو اس نے اپنے مال میں سے ایک ہزار دینارا یے مخص کے پاس امانت رکھ دیے، جو

المستدرك حاكم (١٥٧/٤)

<sup>﴿</sup> ترغیب وتربیب میں عبداللہ بن الی اوٹی کی روایت ہے اصبانی کی طرف منسوب ہے اور انہوں نے اس کے ضعیف ہونے کی طرف اشارہ کیا ہے اور عبداللہ بن الی اوٹی کی روایت ہے الا دب المفروللم خاری میں ہے۔ وہاں بھی اسے ضعیف قرار دیا گیا ہے۔

+ (16 ) الكبائر امانت وصلاح کے نام سےموسوم تھا اور بیا مانت وقوف عرفات تک تھی۔ پس جب اس نے عرفات میں وتوف کیااور مکہ واپس آیا تو پتہ چلا کہ وہ آ دمی تو فوت ہو گیا ہے۔اس نے اس کے گھر والول ہےا ہے مال کے بارے میں پوچھا تو پتہ چلا کہ انہیں اس کے تعلق کچھ پیتے ہیں۔ پس وہ علماء مکہ کے پاس آیا اوراپنے حال و مال کے متعلق انہیں بتایا تو انہوں نے اسے کہا: جب آ دھی رات ہوجائے تو زم زم کے کنویں کے پاس جا کراس میں دیکھنااوراس کا نام کیکر بلانا،اگروہ جنتی ہوا تو وہ پہلی مرتبہ بی تمہیں جواب دے گا۔ پس وہ آ دمی گیا اور زم زم میں آ واز دی اکین کسی نے اسے جواب نہ دیا۔ وہ ان (علاء) کے پاس آیا اور انہیں بتایا تو انہوں نے کہا:'' انا للہ وانا الیہ راجعون''ہمیں تیرے ساتھی کے جہنمی ہونے کا اندیشہ ہے۔ابتم ملک یمن جاؤ ،وہاں برہوت نا می کنواں ہے بمشہور ہے کہ وہ جہنم کے دھانے پر ہے۔ رات کے دفت وہاں دیکھنا اور اس کا نام لے کرآ واز دینا، اگر وہ جہنمی ہوا تو وہاں ہے تہہیں جواب دے گا۔ پس وہ خض یمن گیا اور کنویں کے متعلق پوچھا۔اسے بتادیا گیا' تو وہ رات کے وقت وہاں گیا،اس میں دیکھااوراس کا نام لے كرآ واز دى۔اس نے جواب ديا تواس نے كہا: ميراسونا كہاں ہے؟ اس نے كہا: ميں نے اسے اینے گھر کی فلاں جگہ پر دفن کیا ہے۔ میں نے اپنے بیٹے کواس کے متعلق نہیں بتایا ہتم وہاں جا وَاور اں جگہ سے کھودو، تہمیں وہ سونامل جائے گا۔ میں نے اسے کہا: کس چیز نے تہمیں یہاں پہنچا دیا؟ ہم تو تمہارے بارے میں اچھا گمان کرتے تھے۔اس نے کہا:میری ایک غریب بہن تھی، میں نے اسے چھوڑ رکھا تھا۔ میں اس پرشفقت ومہر بانی نہیں کیا کرتا تھا۔ پس اللہ سجانہ و تعالیٰ نے اس وجہ سے مجھے بیمزادی اور اللہ نے مجھے اس جگہ اتارا ( سیح حدیث میں اس کی تقیدیق ہوتی ہے۔

ا امام ابن قیم رحمہ اللہ نے اپنی کتاب 'الروح' میں بیان کیا ہے کہ جس کا یہ قول ہے کہ 'مومنوں کی روحیں زمزم کے کنویں میں جمع ہوتی ہیں' قرآن وسنت ہے اس پر کوئی دلیل نہیں' قرآن سنت کی بات کوشلیم کرنا ہی واجب ہے اور بیقول قابل اعتاد اور سیح نہیں ۔ کیونکہ تمام مومنوں کی روحیں اس کنویں میں نہیں آسکتیں، نیز بید سنت صریحہ سے قابت مسئلہ کے بھی خلاف ہے۔ صبح ٹابت ہے کہ ''مومن کی روح ایک پرندے کی شکل میں جنت کے پھل کے ساتھ معلق ہے۔'' محضر آبیہ باطل ترین قول ہے۔ انہوں نے اس بات کا مناقشہ کیا: ''مومنوں کی روحیں حضر موت ( یمن ) میں برہوت نامی کنویں میں ہیں''۔ اس کے کہ روحیں حضر موت ( یمن ) میں برہوت نامی کنویں میں ہیں''۔ اس کے آئل نے بیہ بات اہل کتاب سے لی ہو۔

+ <del>77 كتاب الكبائر</del> كتاب الكبائر

آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

"قاطع (رحم) جنت مین ہیں جائے گا"۔

یعنی بہن ، خاکہ ، پھو پھی ، بھانجی اور اس طرح کے دیگر رشتہ داروں سے قطع تعلق کرنے والا

جنت میں نہیں جائے گا۔

پس ہم اللہ تعالیٰ ہے اس کی اطاعت کرنے کی توفیق طلب کرتے ہیں، کیونکہ وہ تی وا تا ہوا فیاض ہے۔

\*\*\*

#### + £ كتاب الكبائر كيا + £ كتاب الكبائر كيا + € ك

#### (۱۰)زنا

بعض بعض بے زیادہ بڑے ہوتے ہیں ، اللہ تعالی نے فرمایا: ﴿ وَلَا تَقُورَ بُوا الزِّنِی اِنَّهٔ کَانَ فَاحِشَهٔ وَسَآءَ سَبِیْلًا. ﴾ (الاسراء: ٢٧/٣٧) ''اورزنا کے قریب تک نہ جاؤ، کیونکہ وہ بے حیائی کافعل اور براطریقہ ہے'۔ اوراللہ تعالی نے فرمایا:

﴿ وَالَّذِيْنَ لَا يَدُعُونَ مَعَ اللّٰهِ إِللْهَا اخَرَ وَلَا يَفْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللّٰهُ إِلاّ بِالْحَقِيّ وَلَا يَنْ يُونُمَ اللّٰهِ عَلَىٰ يَلْقَ اَثَامًا ٥ يُصْلَعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ اللّٰهِ بِالْحَقِيّ وَلَا يَزُنُونَ وَمَنُ يَتَفْعَلُ ذَلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ٥ يُصْلَعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ اللّٰهِ عَلَىٰ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ الْعَلَىٰ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَىٰ اللّٰهُ الْمُعْلِىٰ اللّٰهُ الْعَلَىٰ اللّٰهُ اللّٰهُ الْمُلْمُ اللّٰهُ الْمُلْمُ اللّٰهُ الْمُلّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ الْمُلْمُ اللّٰهُ الْمُلْمُ اللّٰهُ الللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الْمُلْمُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللللّٰهُ الللللّٰ الللّٰهُ الللّٰهُ اللللّٰهُ الللّٰهُ اللللّٰهُ اللللّٰهُ الل

﴿الزَّانِيَةُ وَالزَّانِيُ فَاجُلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذُكُمُ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِي دِيْنِ اللَّهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْأَخِرِ وَلْيَشْهَدُ عَذَابَهُمَا طَآبِفَةٌ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ٥﴾ (النور: ٢/٢٤)

'' زنا کرنے والی عورت اور زنا کرنے والا مرد ہرا کیک کوسوسو کوڑے مارواور اللہ کے دین کے معاملے میں تہہیں ہرگز رحم نہ آئے ،اگرتم اللہ اور یوم آخرت پر ایمان رکھتے ہواور دونوں کی سزاکے وقت مومنوں کی ایک جماعت کوموجود رہنا چاہیے''۔

علماء نے فرمانیا: پیزانی عورت اور زانی مرد کی دنیا میں سزا ہے بشرطیکہ وہ دونوں کنوارے غیر شادی شدہ ہوں ، پس اگر شادی شدہ ہوں یا انہوں نے عمر میں خواہ ایک مرتبہ ہی نکاح کیا ہوتو پھر انہیں بیقروں سے رجم کیا جائے گاحق کہ وہ دونوں ہلاک ہوجا کیں۔ نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی سنت ہوجا ئیں تو پھرانہیں جہنم میں آگ کے کوڑوں کے ساتھ عذاب دیا جائے گا۔ جبیبا کہ دارد ہے کہ زبور میں لکھا ہوا ہے کہ زنا کاروں کوان کی شرم گا ہوں کے ساتھ جہنم میں

جیسیا کہ وارد ہے کہ ربوریس میں ہواہے کہ رنا ہاروں وال برم با ہوں میں مار اسے فریاد رسی کی افکا دیا جائے گا۔ اس جب وہ مار سے فریاد رسی کی درخواست کریں گے تو جہنم کے دارو نے کہیں گے: یہ آ واز کہاں تھی جب کہ تم ہنتے خوش ہوتے

اور تکبر کیا کرتے تھے اورتم اللہ تعالیٰ ہے ڈرتے تھے نہ حیا کیا کرتے تھے؟ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہے ثابت ہے کہ آپ نے فر مایا:

''جب زانی زنا کرتا ہے تو وہ اس وقت مومن نہیں ہوتا ، جب چور چوری کرتا ہے ، تو وہ اس وقت مومن نہیں ہوتا۔ شراب نوش اور جس وقت شراب بیتا ہے تو وہ مومن نہیں ہوتا ، جب کوئی

ونت و جن میں ہونا ہے اور ہوں اور سن کو رہبے بیا ہے دروہ موسی میں ایون میں اور ہوں ہیں۔ ڈاکو کسی صاحب شرف کولوشا ہے ، جس کی طرف لوگوں کی نگامیں اٹھتی میں۔ جس وقت لوشا ہے تو وہ مومن نہیں ہوتا۔'' ①

اورآ پ صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''جب بندہ زنا کرتا ہے تو ایمان اس سے نکل کراس کے سر پرسائبان کی طرح ہوجا تا ہے، پھر جب وہ اس سے فارغ ہوتا ہے تو ایمان اس کی طرف لوٹ آتا ہے۔'' ۞

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''جو محض زنا کرتا ہے یا شراب پیتا ہے تو اللہ اس سے ایمان کو اس طرح تھینج لیتا ہے جس طرح انسان اپنے سرمے میض اتار لیتا ہے''۔ ۞

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

'' تین قتم کے لوگ ہیں،اللہ جن سے روز قیامت نہ کلام کرے گا نہ ان کی طرف دیکھے گا اور نہ ہی انہیں پاک صاف کرے گا،اور ان کے لیے در دناک عذاب ہوگا۔ بوڑ ھازانی،جھوٹا باوشاہ اور متکبر فقیز''۔ ©

<sup>🛈</sup> بخاری (۵۷۸ه) مسلم (۵۷) 🛡 ابوداؤد (٤٦٩٠)

شمستدرك حاكم (۲۲/۱)
 مستدرك حاكم (۲۲/۱)

← کتاب الکبائر
 ابن مسعود رضی الله عنه بیان کرتے ہیں میں نے عرض کیا: الله کے رسول! الله تعالیٰ کے ہاں سب سے بڑا گناہ کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: '' یہ کہ تو اللہ کا شریک قرار دے جب کہ اس نے کھے پیدا کیا ہے''۔ میں نے عرض کیا یہ تو بڑا ہوا پھرکون سا؟ آپ نے فرمایا:

'' یہ کہتم اپنی اولا دکواس خدشے کے پیش نظر قبل کر دو کہ وہ تنہارے ساتھ کھائے گی۔'' میں نے عرض کیا ، پھرکون سا؟ آپ نے فرمایا :

"بیکة م این پڑوی کی بیوی سے زنا کرؤ"۔ آ

پس اللہ تم پر رحم فرمائے! دیکھوکس طرح پڑوی کی بیوی کے ساتھ زنا کو اللہ کے ساتھ شرک کرنے اور کسی جان کو ، جس کو اللہ عز وجل نے حرام قر ار دیا ہے ، ناحق قتل کرنے کے ساتھ ملاویا

نی صلی اللہ علیہ وسلم کے خواب کی حدیث جے سمرہ بن جندب رضی اللہ عنہ نے روایت کیا ہے، اس میں ہے کہ جریل اور میکائیل علیہاالسلام آپ کے پاس آئے ، فر مایا: ''پس ہم چلے اور ہما کیک تندور جیسی چیز کے پاس بہنچ جس کا اوپر والاحصہ تنگ اور نیچے والا کھلاتھا۔ اس میں شوراور ہما ایک تندور جیسی ، فر مایا: ہم نے اس میں جھا نک کر دیکھا تو اس میں مرد اور عور تیں ننگے تھے اور شعلوں نے ان کوان کے نیچے سے اپنی لپیٹ میں لے رکھا تھا۔ پس جب وہ شعلہ ان کی طرف

لربي"\_

<sup>🛈</sup> بخاری (٤٤٧٧)\_ مسلم (٨١)

لیکتا تو وہ اس کی شدت حرارت کی وجہ سے چیختے چلاتے ، میں بے پوچھا ، جبریل بیکون لوگ ہیں؟ انہوں نے بتایا: بیزانی مرواور زانیہ عور تیں ہیں۔ پس بیان کا عذاب قیامت تک جاری رہے گا''۔ ① ہم اللہ تعالیٰ سے درگز راور عافیت کا سوال کرتے ہیں۔

عطاء بن ابی رباح یا عطابن بیارالله عزوجل کے فرمان: "لها سبعة ابواب" "اس کے سات دروازے میں 'کے قفیر میں بیان کرتے ہیں: ان دروازوں میں نے م ہرارت ، کرب و تکلیف اور سب سے بری ہو کے لحاظ سے سب سے برا اور شدید دروازہ وہ ہوگا جوالیے زائنوں کے لیے ہوگا، جنہوں نے (اس کی حرمت کا) علم ہونے کے بعد زنا کا ارتکاب کیا۔

کول دشقی بیان کرتے ہیں جہنمی انتہائی تعفن والی بد بومسوں کریں محے تو وہ کہیں مے ہم نے اس سے زیادہ تعفن والی بد بو پہلے بھی محسوں نہیں کی تو انہیں بتایا جائے گا کہ بیزانعوں کی شرم گاہوں کی بد بوہے۔

ابن زید (عبدالرحمٰن بن زید بن اسلم) تغییر کے امام بیان کرتے ہیں جہنمی زائنوں کی شرم گاہوں سے اٹھنے والی بد ہوسے تکلیف محسوس کریں گے ، اور دس آیات میں جنہیں اللہ نے موئ علیہ السلام کے لیے تکھا: چوری نہ کرنا' نہ زنا کرنا ور نہ میں ابنا چرہ تجھ سے جھپالوں گا۔ (دیداراللی سے محروی)۔ جب یہ خطاب اپنے نبی موئ علیہ السلام کے لیے ہو اس کے علاوہ جو ہاں کے لیے کسے ہوگا؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے مروی ہے: ابلیس اپنے تشکر زمین میں پھیلا دیتا ہے تو انہیں کہتا ہے: تم میں سے جو کسی مسلمان کو گمراہ کرے گا تو میں اس کے مر برتاج سجاؤں گا۔

ر) بخاري

کتاب الکبائر
 کتاب الکبائر
 کسی الکبائر
 کسی

ہم شیطان اوراس کی فوج سے اللہ کی بناہ میں آتے ہیں۔ ائس رضی اللہ عند بیان کرتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

''ایمان ایک لباس ہے ، اللہ جھے چاہتا ہے اسے بیرلباس پہنا دیتا ہے، پس جب بندہ زنا کرتا ہے تو اللہ اس کا لباس ایمان چھین لیتا ہے، اگر وہ خض تو بہ کرلے تو وہ اسے واپس کر دیتا ہے۔'' ①

نی صلی الله علیه و کلم سے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا:

''مسلمانوں کی جماعت! زنا ہے بچو، کیونکہ اس میں چیخصلتیں ہیں۔ تین کاتعلق دنیا ہے ہاور تین کاتعلق آخرت ہے ، پس جن کاتعلق دنیا ہے ہوہ یہ ہیں : چیرے کی رونق جاتی رہتی ہے۔ عمر کم ہوجاتی ہے اور دائی محتاجی اور جن کاتعلق آخرت سے ہے: وہ اللہ تبارک وتعالیٰ کی ناراضی ، براحیاب اور آگ کاعذاب' ﴿

اور نی صلی الله علیه وسلم سے روایت ہے کہ آپ نے فر مایا:

'' جو شخص شراب نوشی پرمصرر ہتے ہوئے وفات پاجائے تو اللہ تعالی ایسے'' نہرغوط'' سے

پلائے گا ،اور وہ ایک نہر ہے جوجہنم میں زانیہ عورتوں کی شرم گا ہوں ہے بہتی ہوگا۔'' ا

لیعنی وہ ان کی شرم گا ہوں سے پیپ اور کچھلہو کی صورت میں جہنم میں بہتا ہوگا ، پھریہ شراب نوشی پرمصرر ہتے ہوئے وفات پانے والے شخص کو بلائی جائے گی۔

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم نے فر مايا:

<sup>🛈</sup> بيهقى

این جوزی نے اسے موضوعات میں روایت کیا ہے۔ ابونیم نے الحلیہ میں مسلمہ بن علی عن ابی عبدالرحمٰن الکوفی عبدالرحمٰن الکوفی عن الکوفی عن الاعمش عن شفیق عن حذیفہ کی سند سے روایت کیا ہے۔ مسلمہ متر وک اور ابوعبدالرحمٰن الکوفی مجبول ہے۔

<sup>🕏</sup> مسند احمد\_ مسند ابو يعلى\_ ابن حبان

''الله کے ساتھ شرک کرنے کے بعد ،اللہ کے ہاں اس سے بڑا گناہ کوئی نہیں کہ کوئی آدمی ایسی شرم گاہ میں نطفہ ٹپکائے (زنا کرے) جواس کے لیے حلال نہیں'۔ ①

اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہی فرمایا: ''جہنم میں ایک وادی ہے ،اس میں سانپ ہیں، ہر سانپ اونٹ کی گردن سے زیاوہ موثا

''جہنم میں ایک وادی ہے، اس میں سانپ ہیں، ہرسانپ اونٹ کی کردن سے زیاوہ موٹا ہے۔ وہ تارک نماز کو ڈسے گا تو اس کی زہر، اس مخص کے جسم میں ستر سال جوش مارتی (اہلتی) رہے گی۔ پھر اس کا گوشت گل جائے گا۔ اور جہنم میں ایک وادی ہے، اس کا نام'' جب الحزن'' ہے۔ اس میں سانپ اور پچھو ہیں اور ہر پچھو ٹچر کے برابر ہے۔ اس کے ستر ڈ تک ہیں اور ہر ڈ تک زہر سے پر ہے۔ پھروہ زانی کو ڈ تک مارے گا اور اپنی زہر اس کے جسم میں اعثریل دے گا۔ جس کی تکلیف وہ ہزار برس محسوس کرتا رہے گا۔ پھر اس کا گوشت گل جائے گا، اور اس کی شرم گاہ سے کی تکلیف وہ ہزار برس محسوس کرتا رہے گا۔ پھر اس کا گوشت گل جائے گا، اور اس کی شرم گاہ سے

اور یہ بھی وارد ہے: جس تخص نے کسی شادی شدہ عورت سے زنا کیا تو اس زانیہ اور اس زائی پر قبر میں اس امت کا نصف عذاب ہوگا۔ پس جب قیامت کا دن ہوگا تو الله سبحانہ وتعالی اس آدی (زانی) کی تمام نیکیوں کا فیصلہ اس عورت کے خاوند کے قل میں فرمادے گابشر طیکہ اسے اس کا علم نہ ہو (کہ اس کی ہوی زانیہ ہے) لیکن اگر اس نے علم ہونے کے باوجود خاموثی اختیار کی تو اللہ نے اس پر جنت حرام کردی ہے۔ کیونکہ اللہ تعالی نے جنت کے وروازے پر لکھے دیا ہے: تو ویوٹ پر حرام ہے۔

د پوٹ اس مخص کو کہتے ہیں، جسے اپنی اہلیہ کے فاحشہ ہونے کاعلم ہواور وہ خاموثی اختیار کرلے اور اسے غیرت نہآئے۔

اور یہ بھی وارد ہے: جس نے کسی ایسی عورت پر اپنا ہاتھ رکھا، جو شہوت کے حوالے سے اس کے لیے حال کے سے اس کے لیے حال نہیں، تو وہ روز قیامت اس حال میں آئے گا کہ اس کا ہاتھ اس کی گرون کی طرف بندھا ہوا ہوگا۔ اگر اس نے اس کے ساتھ زنا کیا ہوگا تو اس کی ران بولے گی اور روز قیامت اس کے خلاف گواہی دے گی اور کہے گی، میں حرام پر سوار ہوئی ۔ پس اللہ تعالیٰ نگاہ غضب سے اس کی

پیپ اور کچھاہو بہتا ہوگا''۔

احمد\_طبرانی

الکہائر کتاب الکہائر کے جرے کا گوشت گرجائے گا اور بڑا ہوجائے گا، اور وہ کہے گا: میں نے نہیں کیا، تو اس کی زبان اس کے خلاف گواہی دے گی، تو وہ کہے گا: میں نے الیی گفتگو کی تھی جو طلال نہیں تھی۔ اس کے ہاتھ کہیں گے: میں فنے حرام چیز کو پکڑا تھا۔ اس کی آئھیں کہیں گا: میں فنے حرام چیز کو پکڑا تھا۔ اس کی آئھیں کہیں گا: میں فنے حرام چیز کو دیکوا تھا۔ اس کی آئھیں کہیں گا: میں نے حرام چیز کو دیکوا تھا۔ اس کے پاول کہیں گے: میں ایسی چیز کی طرف چل کر گیا جو طلال نہیں تقی ۔ اس کی شرم گاہ کہے گا: میں نے کیا اور محافظ فرشتہ کہے گا: میں نے سنا، اور دو سرا کہ گا: میں نے کیا اور میں نے پر دہ پوشی کی، پھر اللہ تعالی فرمائے گا: میں نے د کھ لیا اور میں نے پر دہ پوشی کی، پھر اللہ تعالی فرمائے گا: میں میرے فرشتو! اسے پکڑلوا ور میر اعذاب اسے چکھاؤ، جو تجھ سے حیا کرنے میں کمی کرتا ہے تو اس پر میراغضب بخت ہوجا تا ہے۔ اللہ عزوج لی کہ کتاب میں اس کی تھد بق ہے:

﴿ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمُ الْسِنَتُهُمُ وَ آيْدِيْهِمْ وَ آرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴾ (النور: ٢٤/٢)

''جس دن ان کی زبانیں ان کے ہاتھ اور ان کے پاؤں ان کے خلاف ان کے اعمال کی گواہی دیں گئ'۔

( گناہ کے اعتبار سے )سب سے بڑازنا، مال، بہن، سوتیلی مال اور محارم کے ساتھ زنا کرنا ہے۔ایک روایت میں ہے، امام حاکم نے جھے تح قرار دیا ہے کہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ''جو محض کسی محرم سے زنا کر بے تواس کوئل کرد د''۔

براءرضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کے ماموں کوایک آ دمی کی طرف بھیجا، جس نے اپنے باپ کی بیوی (سوتیلی ماں) سے شادی کر لی تھی ، کہ اس کوتل کردواوراس سے مال میں سے یا نچواں حصہ لےلو۔

یں ہم احسان کرنے والے اللہ سے اس کے فضل سے سوال کرتے ہیں کہ وہ ہارے گناہ معاف کردے ، کیونکہ وہ کئی وا تا فیاض ہے۔

☆☆☆

### (۱۱) اغلام بازی (لواطت

الله عزوجل نے اپنی کتاب عزیز میں کئ مواقع رقوم لوط کا قصد بیان کیا ہے۔ اس میں سے

الله تعالى كافرمان ہے: ﴿ فَلَمَّا جَآءَ ٱمُرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَٱمْطَرُنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِيْلٍ

مَّنْضُوْدٍ ﴾ (هود: ۱۱/ ۸۲)

'' پھر جب ہمارا تھم آپنچا ،ہم نے اس بستی کوالٹ کر ،اوپر تلے کرویا اوراس پرلگا تار پھر کے کھنگر برسائے''۔

"مسومة" "لينى نشان زده تھے،ان سے معلوم ہوتا تھا كده دنيا كے پھرنہيں ہيں۔
"عندر بك" لينى اس كے خزانوں ميں،اس كى اجازت كے بغيراس ميں كى تشم كاكوئى تشرف
نہيں كيا جاسكتا۔ "و ماهى من المظالمين ببعيد"اس امت كے ظالم لوگ بھى جب انہى جيسا فعل كريں گے توان پر بھى دہى عذاب نازل ہوگا،اور بيان سے كوئى دورنہيں۔

اس ليے نبي سلى الله عليه وسلم في فرمايا:

'' مجھے تہارے بارے جس چیز کاسب سے زیادہ اندیشہ ہوہ قوم لوط کامل ہے'۔ ① آپ نے ان جیسے فعل کے مرتکب کے لیے تین بارلعنت کرتے ہوئے فرمایا:

''اللّٰدَ قوم لوط کا ساعمل کرنے والے مخص پرلعنت فرمائے اوراس مخص پرلعنت فرمائے جوقوم لوط کا سانعل کرتا ہے۔اوراس مخص پرلعنت فرمائے جوقوم لوط کا ساعمل کرتا ہے''۔

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

‹ ، تم جس خض کو تو م لوط کا ساعمل کرتے و مکھوٹو فاعل اور مفعول دونوں گوتل کردو'۔ ⊕ منسلہ منسلہ نافی ال

ابن عباس رضی الله عند نے فرمایا: استار کی اللہ عند نے مدالیا

بستی کی سب سے او نچی عمارت دیکھی جائے اور اس (لواطت کرئے والے) کواس سے گرا

<sup>🛈</sup> ابن ماجَّهُ ترمَّدَى

ا ابوداؤد (٤٤٦٢)\_ ترمذي (١٤٥٦)\_ ابن ماجه (٢٥٦٣)

ویا جائے اور پھراو پر سے پھر برسائے جائیں جیسا کہ توم اوط کے ساتھ کیا گیا۔

ب مسلمانوں کا اس پر اجماع ہے کہ لواطت کبیرہ گناہوں میں سے ہے، جے اللہ تعالیٰ نے

حرام قراردیا ہے۔اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ آتَاتُونَ الذُّكُوانَ مِنَ الْعَلَمِيْنَ ٥ وَ تَذَرُونَ مَاخَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنُ اَزُواجِكُمْ بَلُ إَنْتُمْ فَوْمٌ عَلَوُنَ ﴾ (الشعراء: ٢٦/٢٦ م ١٦٦٠)

ارور بردسی بسم عوم محدول رساستران الم المراد الم المراد ا

لیعن حلال سے حرام کی طرف تجاوز کر جاتے ہو،اور اللہ تعالیٰ نے دوسری آیت میں اپنے نبی لوط علیہ السلام کے بارے میں فر مایا:

طَعْلِيهُ السَّلَامَ لَـ بَارَكَ مِنَ مَايا: ﴿ وَلَوْ مَنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتُ تَعْمَلُ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتُ تَعْمَلُ الْفَرْيَةِ الَّتِي كَانَتُ تَعْمَلُ الْفَرْيَةِ الَّتِي كَانَتُ تَعْمَلُ الْفَرْيَةِ الَّتِي كَانَتُ تَعْمَلُ الْفَرْيَةِ الْتِي كَانَتُ تَعْمَلُ الْفَرْيَةِ الْتِي كَانَتُ تَعْمَلُ الْفَرْيَةِ الْتِي كَانَتُ تَعْمَلُ الْفَرْيَةِ الْتِي كَانَتُ الْعُمَلُ الْفَرْيَةِ الْتِي الْفَائِدِ الْفَائِدِ اللَّهُ الْفَائِدِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّالَةُ اللَّهُ اللَّالَ

الْحَبَيْتُ إِنَّهُمْ كَانُوا قُوْمَ سُوءٍ فَسِقِينَ ﴾ (الانبياء: ٧٤/٢١)

''اورہم نے اس کواس بستی سے نجات دی، جس کے رہنے والے گندے کاموں کے عادی تھے، بے شک وہ بری اور بدکار تو متھی''۔

ان کی بستی کا نام سدوم تھا،اس کے باشندے گندے کام کرتے تھے جن کا اللہ سجانہ وتعالیٰ نے اپنی کتاب میں ذکر کیا ہے۔ وہ سارے جہاں میں سے صرف وہی ایسے تھے جومردوں سے ان کی پیٹھ میں جماع کیا کرتے تھے اور وہ دیگر برے کا موں کے ساتھ ساتھ اپنی مجلسوں میں گوز

ابن عباس رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ انہوں نے فرمایا: دس تصلتیں قوم لوط کے اعمال میں سے بیں۔ مانگ نکالنا، بٹن کھولے رکھنا علیلہ چینکنا، کنگری چینکنا، کبوتر بازی، انگلیوں سے سیٹی بجانا، ایڑیاں چیخنا، از ارائ کانا، بڑی جا دریں اوڑ ھنا۔

. شراب نوشی کاعادی ہونا اور مردوں سے بدکاری کرنا اور بیامت اس میں بیاضا فہ کرے گی عورتیں عورتوں سے اپنی شرم گاہ ملا کر بدکاری کریں گی۔

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

**4 € كتاب الكبائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائر 87** 

اور نبی صلی الله علیہ وسلم سے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا:

''عورتوں کا آپس میں شرم گاہ ملانا ،رگڑ نا زنا ہے''۔ ①

ابو ہر ریرہ رضی اللہ عند بیان کرتے ہیں: رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

'' چارقتم کے لوگ اللہ کے غضب میں صبح کرتے ہیں اور اللہ تعالیٰ کی ناراضی میں شام کرتے ہیں''۔عرض کیا گیا ، اللہ کے رسول! وہ کون لوگ ہیں؟ فرمایا:''مردوں میں سے عورتوں سے مشابہت کرنے والی، چو پاؤں اور مروک ساتھ لواطت کرنے والی، چو پاؤں اور مروک ساتھ لواطت کرنے والی'۔ ©

مروی ہے ﴿ کہ جب مرد، مرد کے ساتھ لواطت کرتا ہے تو اللہ تعالیٰ کے خوف سے عرش رحمان کانپ جاتا ہے۔ قریب ہے کہ آسان زمین پر گر پڑے، پس فرشتے اسے کناروں سے پکڑ لیتے ہیں اور وہ سور ہُ اخلاص کی تلاوت شروع کردیتے ہیں ، حتی کہ اللہ عزوجل کا غضب تھم جاتا

نی صلی الله علیه وسلم سے روایت ہے کہ آپ نے فر مایا: "سات قتم کے لوگ جن پر الله تعالی العنت فرما تا ہے اور وہ روز قیامت (نظر رحمت سے) ان کی طرف نہیں و کھے گا اور فرمائے گا: جہنم میں جانے والوں کے ساتھ تم بھی داخل ہوجا و، قوم لوط کاعمل کرنے والا لیمی فاعل اور مفعول، چو پائے کے ساتھ برافعل کرنے والا ، ماں اور اس کی بیٹی سے جماع کرنے والا اور مشت زنی کرنے والا ، الا بیکہ وہ تو برکرلیں "۔

اور مروی ہے کہ پچھ لوگ قیامت کے دن آئیں گے کہ ان کے ہاتھ (مشت زنی کی وجہ ہے) حاملہ ہوں گے۔ وہ دنیا میں اپنی شرم گاہوں کے ساتھ عبث کام کیا کرتے تھے۔ یہ بھی مروی ہے کہ چوسر کھیانا، کبوتر وں کا مقابلہ کرانا، کتوں کو گرانا، مینڈھوں کو بھڑانا، مرغ لڑانا، ننگے نہانا اور ناپ تول میں کی کرنا قوم لوط کے اعمال میں سے ہے۔ ایسا کرنے والے کے لیے ویل

طبراني البيقهي

م سیوطی نے اسے ذکر کیا ہے۔

ا الدورى (۷۸) - الآجرى (۲۲) الى كى سنديس ايك متروك راوى ہے -

(ہلاکت، تباہی) ہے این عباس رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں: لواطت کرنے والا اگر تو بہ کیے بغیر فوت ہوجائے تواسے اس کی قبر میں خزیر کی صورت میں سنخ کر دیا جاتا ہے۔ ①

ادرآپ صلى الله عليه وسلم نے فرمایا:

" جو خص کسی مردیا عورت کی پشت میں جماع کر ہے واللہ اس کی طرف نہیں دیھے گا"۔ آ ابوسعید صعلو کی نے بیان کیا: اس امت میں پھھا سے لوگ ہوں گے جنہیں لوطی کہا جائے گا۔ ان کی تین قسمیں ہوں گی۔ ایک قسم ہوگی جو صرف دیکھیں گے۔ دوسری قسم کے لوگ مصافحہ کریں گے اور تیسری قسم کے لوگ یہ گندا عمل کریں گے۔ کسی عورت اور بے دیش لڑے کونظر شہوت ہے دیکھنا زنا ہے۔ نی صلی اللہ علیہ وسلم سے صبح ثابت ہے کہ آپ نے فرمایا:

'' آنکھ کا زنا' دیکھنا ہے' زبان کا زنا بولنا ہے'ہاتھ کا زنا بکڑنا ہے'یا دس کا زنا چلنا ہے۔ کان کا زناسننا ہے۔نفس تمنا اور رغبت رکھتا ہے' جبکہ شرم گاہ اس کی تصدیق کرتی ہے یا اس کی تکذیب کرتی ہے''۔ ⊕

ای لیےصالحین نے بےرلیش اڑکوں کی طرف دیکھنے،ان سے میل جول رکھنے اور ان کی ہم نشینی سے مبالغے کی حد تک اعراض کیا ہے۔

بعض تابعین نے کہا: میں عبادت گزار نوجوان کے بارے میں نقصان پنچانے والے درندے سے اتنا خوف زوہ نہیں جتنا اس بیٹھتا ہے درندے سے اتنا خوف زوہ نہیں جتنا اس بیٹھتا ہے اور پیشنہور تھا کہ کوئی آ دمی کس بےرلیش لڑکے کے ساتھ کسی ایک جگدرات بسرند کرے اور ابعض

علاء نے بےریش اڑکے کے ساتھ گھر یا دکان یا حمام میں ،عورت پر قیاس کرتے ہوئے ،خلوت نشینی کوحرام قرار دیا ہے۔ کیونکہ نبی صلی افلاعلیہ وسلم نے فرمایا:

این جوزی نے اسے موضوعات میں مرفوعاً ذکر کیا ہے اور فرمایا: مروان بن محد منکر روایات روایت کرتا
 ہے، جبکہ اساعیل بن ام ورہم قابل جست نہیں۔

<sup>🕏</sup> ترمذی نسالی ابن حبان 🕝 بخاری مسلم ابوداؤد نسائی

''جوآ دمی عورت کے ساتھ خلوت اختیار کرتا ہے تو ان کے ساتھ تیسرا شیطان ہوتا

بےریش لڑکوں میں ایسے بھی ہوتے ہیں جوعورتوں سے بھی زیادہ حسین ہوتے ہیں،اس لیےان سے بڑے فتنے کا اندیشہ ہےاورجس قدراس کے متعلق شرکا امکان ہےا تناعورت کے بارے میں امکان نہیں ہوتا اور شک وشرکے ذریعے جس قدراس کے حق میں رسائی آسان ہے اتنی آسان رسائی عورت کے حق میں نہیں۔اس لیے وہ بدرجہ اولی حرام ہے۔ان بےریش اوکوں یے فرار حاصل کرنے اور ان کو دیکھنے ہے بیچنے کے متعلق علاء سلف کے بے شارا توال ہیں اور انہوں نے انہیں'' اُنتان''' دونایاک چیزوں' کانام دیاہے کیونکہ دہشرعا اس کونایاک سمجھتے اور نفرت کرتے ہیں۔ہم نے جوذ کر کیا ہے بیس کے لیے برابر ہے،خواہ کوئی اصلاح کی غرض یے دیکھتا ہے یا ویسے دیکھتا ہے۔ یعنی بےریش اڑکوں کونہیں دیکھنا جاہیے۔سفیان ثوریٌ حمام میں داخل ہوئے تو ایک حسین لڑکا وہاں پہنچے گیا تو انہوں نے کہا: اسے میرے پاس سے لے جاؤ، انے نکالو، میں سجھتا ہوں کہ ہر عورت کے ساتھ ایک شیطان ہوتا ہے اور میں سجھتا ہوں کہ ہر خوبصورت الر کے ساتھ کچھوس کے قریب شیطان ہوتے ہیں۔

ایک آدمی امام احد کے پاس آیا، اس کے ساتھ ایک خوبصورت لڑکا تھا۔ امام نے بوچھا: یہ تمہارا کیا لگتا ہے؟ اس نے کہا: میرا بھانجا ہے۔انہوں نے کہا: آئندہ اسے جارے یاس نہ لانا اوراس کے ساتھ راہتے میں نہ چلنا تا کہ جو خص تنہیں اور اسے نہیں جانتا وہ تمہارے متعلق بدگمانی كاشكارنه بو\_

مروی ہے کہ جب عبدالقیس کا وفد نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا تو ان میں ا یک خوبصورت بے ریش لڑ کا بھی تھا۔ تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے اے اپنے پیچھے بٹھایا اور فر مایا: "داؤدعليه السلام كافتنه نظرے تھا" - 🛈

ترزی طبرانی نے ای طرح کی حدیث ابوامات ہے روایت کی ہے اور امام منذری نے اس کے ضعیف ہونے کی طرف اشارہ کیا ہے۔

کیلی نے اسے روایت کیا ہے۔

حال الكبائر كالمجائر كالمجائز كالمجائر كالمجائر

ابن الصلاح في ثالث كي صورت ميس فرمايا:

''اس حدیث کی کوئی اصل نہیں''۔ ذرکتی نے الشرح الکبیر کی احادیث کی تخریج میں فر مایا یہ حدیث منکر ہے اس کے راویوں میں ضعیف ، مجبول راوی ہیں اور سند میں انقطاع بھی ہے اور انہوں نے اس کے بطلان کے لیے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے اس فر مان سے استدلال کیا ہے: ''میں اپنی پشت کے پیچھے ہے بھی تمہیں ویکھا ہوں''۔

#### اشعار:

کل الحوادث مبدؤها من النظر و معظم النار من مستصغر الشور "مام حادثات کی ابتدانظر ہے ہوتی ہے۔ چھوٹی می چنگاری بہت بری آگ کا پیش خیمہ ہوتی ہے'۔

و السمرء مسادام ذا عين يقلبها في أعين الغير موقوف على الخطر " دى جب آئسي پهيرتار بتا ج توغير كي آئه ين پرخطر شهرتا ہے "۔

کے نظرۃ فعلت فی قلب صاحبہا فعل السہام بہلا قبوس و لا و تسر 'دکتنی مرتبہاس و کیھنے نے دیکھنے والے کے دل میں کمان کے بغیر تیرکا ساکام کیا ہے'۔

یسے نساظیہ مساضیر حساطیرہ لا مسرحبًا بسسرور عباد ببالمصور ''دیکھنے والے کو یہ بھلامعلوم ہوتا ہے جبکہ وہ اس کے دل کے لیے نقصان دہ ہے۔'' ایسے سرور کا استقبالی نہ کروجس کا انجام نقصان ہو''۔

مشہور ہے کہ نظر، زنا کا قاصد ہاور حدیث میں ہے:

'' نظر اہلیس کے تیروں میں سے ایک زہر آلود تیر ہے، پس جو مخص اللہ کی رضا کی خاطر اسے جھوڑ دیتا ہے تو اللہ اس کے دل میں عبادت کی حلاوت پیدا کر دیتا ہے، جسے وہ روز قیامت تک محسوس کرتار ہتا ہے''۔ + (£ 21) الكبائر كي + (£ 21)

مصل چھ خشہ میں ہتری ایک ایک

جوشخص خوشی سے اپنے آپ کو برائی کے لیے پیش کرتا ہے، اس کی سزا کے بارے میں ہے۔ خالد بن ولید رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ انہوں نے ابو بکر الصدیق رضی اللہ عنہ کو خطا کھھا کہ انہوں نے کسی علاقے میں ایک آ دمی پایا ہے جواپی پیٹے میں جماع کراتا ہے۔ تو ابو بکر رضی اللہ عنہ نے اس معاملے میں صحابہ سے مشورہ طلب کیا تو علی بن افی طالب رضی اللہ عنہ نے فر مایا: یہ ایسا گناہ ہے، جس کا ارتکاب صرف تو م لوط نے کمیا اور اللہ نے ان کے ساتھ جوسلوک کیا، اس بارے میں اس نے ہمیں بتا دیا۔ میرامشورہ ہے کہ اسے آگ سے جلادیا جائے۔ پس ابو بکر رضی اللہ عنہ نے انہیں جواب لکھا کہ اس مختص کو آگ سے جلادیا جائے، تو خالد رضی اللہ عنہ نے اس کو

آگ ہے جلادیا۔ ① علی رضی اللّٰدعنہ نے فر مایا: جو شخص اپنی مرضی ہے اپنے سے برائی کرنے کا اختیار دی تو اللّٰہ

اس پرعورتوں کی می شہرت وال دیتا ہے اور اس کوروز قیامت تک اس کی قبر میں شیطان مردود بنا اس برعورتوں کی میشہرت وال دیتا ہے اور اس کوروز قیامت تک اس کی قبر میں شیطان مردود بنا

امت کا اس پراجماع ہے کہ جو محض اپنے مملوک سے ایسانعل کرے تو وہ لوطی مجرم ہے۔
مروی ہے کہ بیسیٰ بن مریم علیہ السلام اپنی سیاحت کے دوران ایک آگ کے پاس سے گزرے
جوایک آ دمی پر جلائی گئی تھی، پس عیسیٰ علیہ السلام نے اس سے آگ بجھانے کے لیے پانی لیا تو
آگ ایک لڑکا بن گئی اور وہ آ دمی آگ میں تبدیل ہوگیا۔ عیسیٰ علیہ السلام کو اس سے بہت تبجب ہوا
اور دعا کی، پروردگار! ان کو ان کی دنیا والی حالت میں لوٹادے تا کہ میں ان سے ان کے حالات
کے بارے میں سوال کرسکوں۔ پس اللہ تعالیٰ نے ان دونون کو زندہ کیا تو وہ دونوں ایک آ دمی اور ایک لڑکا تھے۔ عیسیٰ علیہ السلام نے ان دونوں سے فرمایا:

تمہارا کیا معاملہ ہے؟ آدمی نے عرض کیا: روح اللہ: میں دنیا میں اس الر کے کی محبت میں گرفتار تھا۔ شہوت مجھ پر غالب آئی اس نے مجھے اس کے ساتھ برائی کرنے پر آمادہ کیا۔ پس

<sup>🛈</sup> ابن الى الدنيائے جيد سندے اے روايت كيا ہے۔

حوالی کتاب الکبائر کی بھی ہوت ہوگیا تو ایک مرتبہ یہ آگ بن کر مجھے جلاتا ہے اور ایک مرتبہ جب میں فوت ہوا اور لڑکا بھی فوت ہوگیا تو ایک مرتبہ یہ آگ بن کر مجھے جلاتا ہے اور ایک مرتبہ میں آگ بن کراہے جلاتا ہوں اور روز قیامت تک ہماراعذاب جاری رہےگا۔

ہم اللہ کے عذاب سے اس کی بناہ طلب کرتے ہیں اور ہم اس سے درگز روعافیت اورا لیے امور کی تو فیق کی درخواست کرتے ہیں جواسے پیند ہیں اور وہ جن سے راضی ہوتا ہے۔

### قصل

عورت سے اس کی پیٹے میں جماع کرنا بھی لواطت کے زمرے میں آتا ہے، جے اللہ تعالیٰ اوراس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم نے حرام قرار دیا ہے۔اللہ عزوجل نے فرمایا:

﴿ نِسَآ وَ كُمْ حَرْثُ لَكُمْ فَاتُوْا حَرْفَكُمْ انَّى شِنْتُمْ. ﴾ (البقرة: ۲۲۳/۲) ''تههاری بیویاں ،تنهارے لیے تھیتیاں ہیں ،پس جس طرح چا ہوا پی کھیتی میں آؤ'' نعنہ حساط ہوتے میں منہ منہ البیجہ میں مانتہ الساس میں کئیں آٹاک ما

لینی جس طرحتم چاہو، سامنے سے یا پیچھے سے، بیا فقیار حاصل ہے، کیکن آنا ایک ہی جگہ پر ہے۔اور وہ عورت کی شرم گاہے۔

اس آیت کا سبب نزول میہ ہے کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم کے زمانے میں یہود کہا کرتے تھے: ''جب آ دمی عورت سے اس کی پچپلی طرف سے اس کی اگلی شرم گاہ میں جماع کرے تو پیدا ہونے والا بچہ بھینگا ہوتا ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابہ نے اس بارے پوچھا تو اللہ تعالیٰ نے ان کے اس خیال کی تکذیب میں بی آیت نازل فرمائی:

﴿ نِسَاۤ وَ كُمْ حَرْثُ لَكُمْ فَاتُواْ حَرْفَكُمْ اللَّى شِنْتُمْ. ﴾ (البقرة: ٢٢٣/٢)
"تمہاری بیویاں تمہارے لیے تھیتیاں ہیں، پس جس طرح چاہوا پی تھیتی میں آؤ"۔
جس طرح چاہوآ وکیکن شرط بیہ کہ آنا ایک ہی جگہ ہاوروہ ہے شرم گاہ۔

ایک روایت میں ہے:

'' پیٹھاور حیض سے بچو''۔

''صمام واحد'' یعنی ایک جگداور وہ شرم گاہ ہے۔ کیونکہ بھیتی کاموضع وہی ہے۔ یعنی بیچے کی کھیتی کی جگہ جہاں بچہ تیار ہونا ہے۔ رہی پیٹیے، وہ تو پیٹ سے خارج ہونے والی ریح یا غلاظت کی

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

حراث کتاب الکبائر کی اللہ عنہ نے رسول اللہ صلی اللہ عنہ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا ہے کہ آپ نے فرمایا:

''جو خص حائصہ سے یا اس کی بیٹے میں جماع کرتا ہے یا وہ کسی کا بن کے پاس جاتا ہے تو اس نے محمصلی اللہ علیہ وسلم پر نازل ہونے والی شریعت کا انکار کر دیا''۔ ①

پس جو خص عورت سے اس کے ایا م چیض میں جماع کرے یا اس کی پیٹے میں جماع کرے تو وہ معنتی ہے اور وہ اس شدید وعید میں داخل ہے۔ اور اس طرح جو شخص کا بمن کے پاس جاتا ہے تو

وہ بھی اسی زمرے میں آتا ہے، کا بمن وہ نجوی ہے جو گم شدہ اور سامان سروقہ کے متعلق جانے کا دعویٰ کرتا ہے اور نیبی امور کے متعلق بات کرتا ہے۔ پس جو مخص اس سے سوال کرے اور اسے سیا

، بن بن جانے تو وہ بھی ملعون ہے۔

بہت سے جہال ان معاصی میں مبتلا ہیں اور بیان کے علم ومعرفت کی قلت کے باعث ہے۔ اس لیے ابودرواءرضی اللہ عنہ نے فرمایا: عالم بن یا متعلم یاعلم کی ساعت کرنے والا بن یاعلم سے مجت کرنے والا ۔ ان کے علاوہ پانچواں نہ بن ، ورنہ تو ہلاک ہوجائے گا۔ اور اس سے مرادوہ شخص ہے جوعلم رکھتا ہے نہ سیکھتا اور نہ ہی سنتا ہے اور نہ ہی علم سے تعلق رکھنے والوں سے محبت کرتا ہے۔ بندے پرواجب ہے کہ وہ تمام گنا ہوں اور خطاؤں سے اللہ کے حضور تو بہ کرے اور جہالت کی بنا پر جو پچھ ہو چکا ہے اس پر اللہ سے عفو ودرگزر کی درخواست کرے اور جو باقی زندگی رہ گئی ہے اس میں عافیت طلب کرے۔

اےاللہ! ہم آپ ہے دین و دنیا اور آخرت کے حوالے سے عفو و درگز راور عافیت کا سوال کرتے ہیں، یقیناً تو سب رحم کرنے والوں سے زیادہ رحم کرنے والا ہے۔ ☆☆☆

#### (۱۲)سود

الله تعالی نے فرمایا:

﴿ يَنَانَيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَوا اَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمُ تُفْلِحُوْنَ٥﴾ (آل عمران /٣٠ : ١٣٠)

''اے ایمان والو!تم سود نہ کھا وَ ( کہ اصل میں ال کر ) دگنا ، چوگنا (ہوجائے ) اور اللہ سے ڈر دتا کہتم کامیاب رہو۔''

اورالله تعالى نے فرمایا:

﴿ اللَّذِيْنَ يَا كُلُوْنَ الرِّبلوا لَا يَقُوْمُوْنَ إِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطُنُ مِنَ الْمَسِّ ذَلِكَ بِالنَّهُمْ قَالُوْآ إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبلوا ﴾ (البقره: ٢/ ٢٧٥) "وه لوگ جوسود كھاتے ہيں وہ (قيامت كے دن) اس خص كى طرح (اپنے پاؤں بر) كھڑے نہ ہوكيں گے جے شيطان نے چھوكر ديواند كرديا ہو، يہ انہيں اس بات كى سزاہے كہ انہوں نے كہا: خريد وفروخت بھى توسود ہى كى طرح ہے۔"

لعنی سود بھی حلال ہے۔ پس اللہ کی حرام کردہ چیز کوانہوں نے حلال قرار دے لیا۔ جب اللہ تعالیٰ روز قیامت لوگوں کو اٹھائے گا تو سودخور دل کے سواباتی لوگ بڑی تیزی سے اپنی قبروں سے نکلیں گے، وہ کھڑے ہوں گے، گر پڑیں گے، جیسے وہ خض کھڑا ہوتا ہے جسے مرگی کا دورہ پڑتا ہو، جب بھی وہ کھڑا ہوتا ہے تھے، اللہ نے اسے ان کے پیٹ میں بڑھا دیا حتی کہ ان کوروز قیامت نقل کردیا۔ پس جب بھی وہ کھڑا ہونے کا ارادہ کریں گے اور وہ لوگوں کے ساتھ جلدی کرنے کی کوشش وارادہ کریں گے لیکن وہ قدرت نہیں پائیں گے۔ قادہ رحمہ اللہ نے بیان کیا: سودخور روز قیامت دیوانے کی صورت میں کھڑا ہوگا، یہ سودخور کی علامت و نشانی ہوگی۔ حشر کے میدان میں لوگ ان کی اس کو نشانی سے نہیں بچیان لیں گے۔

ابوسعید خدری رضی الله عنه سے روایت ہے که رسول الله صلی الله علیه وسلم في فرمایا:

کی گزرگاہ پر مسلسل جھکے ہوئے ہوں گے اور آل فرعون میج وشام آگ پر پیش کیے جاتے ہیں۔ وہ (سودخور) فکست خوردہ اونٹ کی طرح آئیں گے۔ وہ سنتے ہوں گے نہ سجھتے ۔ ایس جب بیٹوں والے ان (آل فرعون) کو آتے ہوئے محسوس کریں گے تو وہ کھڑے ہوکر اپنے بیٹ ہٹانے کی کوشش کریں گے لیکن وہ وہاں سے ہٹ نہیں سکیں گے تی کہ آل فرعون ان کو ڈھانپ ہٹانے کی کوشش کریں گے لیکن وہ وہاں سے ہٹ اور ان کا یہ عذاب دنیا وآخرت کے درمیان عالم لیس گے۔ اور وہ آتے جاتے انہیں روندیں گے اور ان کا یہ عذاب دنیا وآخرت کے درمیان عالم

لیں گے۔اوروہ آتے جاتے انہیں روندیں گے اوران کا بیعذاب دنیا و آخرت کے درمیان عالم برزخ میں ہوگا''۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:''جبریل! بیکون لوگ ہیں؟ انہوں نے کہا: بیہ

وہ لوگ ہیں جوسودخور تھے۔ یہ اس محض کی طرح (اپنے پاؤں پر ) کھڑے نہ ہوتکیں گے جسے شیطان نے چھوکر دیوانہ کر دیا ہو''۔ ①

اور ایک روایت میں ہے: آپ نے فرمایا: جب مجھے معراج کرائی گئی تو میں نے ساتویں آسان میں اپنے سرکے اوپرکڑک اور گرج سی اور میں نے پچھ آ دمی دیکھے ان کے پیٹ مکانوں کی طرح آگے نکلے ہوئے تھے جن میں سانپ اور بچھو تھے اور وہ ان کے پیٹ کے باہر سے نظر

آرہے تھے۔ میں نے کہا: جبریل! بیکون لوگ ہیں؟ انہوں نے کہا:'' بیسودخور ہیں'' ﴿
عبدالرحمٰن بن عبداللّٰہ بن مسعودا پنے والد سے روایت کرتے ہیں: جب کسی بستی میں زنا اور

سودعام ہوجا تا ہے تواللہ اس کی ہلاکت کا تھم فرمادیتا ہے۔ ۞

عمر رضی اللہ عنہ سے مرفوعا مروی ہے:'' جب لوگ درہم و دینار میں مصروف ہو جا کیں ، بیچ عینہ کرنے لگیس، بیلوں کی دمیں پکڑ لیس اور اللہ کی راہ میں جہاد کرنا ترک کردیں گے تو اللہ ان پر

① بدابو ہارون العبدی عن ابی سعید کی سند سے مروی ہے۔ ابو ہارون کا نام عمارہ بن جوین ہے، بدائمہ کے نزد کی ضعیف ہے۔

امام احمد اورا بن ماجد نے علی بن زید عن افی الصلت عن افی ہریرہ کی سند سے روایت کیا ہے علی بن زید جو
 کدا بن جدعان ہے اس کی تضعیف میں بہت کلام کیا گیا ہے۔

<sup>🕑</sup> ابویعلی نے اسے جید سند کے ساتھ روایت کیا ہے۔

حق کتاب الکبائر علی الکبائر عذاب ان سے عذاب نازل فرمائے گا اور جب تک وہ اپنے دین کی طرف لوٹ ند آئیں ، وہ عذاب ان سے نہیں اٹھایا جائے گا''۔ ⊕

اورآ پ سلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''جس قوم میں سود عام ہوجائے تو ان میں دیوائل عام ہوجاتی ہے، جس قوم میں زنا عام ہوجاتا ہے تو ان میں موت عام ہوجاتی ہے اور جوقوم ناپ تول میں کی کرتی ہے تو اللہ ان سے بارش روک لیتا ہے''۔ (۴)

اورایک طویل صدیث میں ہے:

' سودخورکواس کی موت سے لے کرروز قیامت تک سرخ نہر میں تیرنے کی صورت میں عذاب دیا جائے گا، جو کہ خون کی مثل ہوگی۔ وہ پھر نظے گا اور بیروہ حرام مال ہے جواس نے دنیا میں جمع کیا تھا، وہ اس میں مشقت برداشت کرے گا۔ وہ آگ کے پھر نظے گا جیسے اس نے حرام نظا تھا، اور وہ مال حرام ہوگا جیسے اس نے دنیا میں جمع کیا تھا، یہ قیا مت کے دن سے پہلے اس کے لیے برزخی عذاب ہے اور اس کے ساتھ ساتھ اس کے لیے اللہ کی لعنت ہے۔'' یہ

جييا كدرسول الله على الله عليه وسلم تصحيح ثابت بكرآب فرمايا:

'' چارتسم کے لوگ ہیں جن کے بارے میں اللہ پر حق ہے کہ وہ انہیں جنت میں داخل کرے ' گلنہ انہیں اس کی نعمتوں کا مزہ چکھائے گا: عادی شراب نوش، سودخور، مال یتیم کو ناحق کھانے والا اوراپنے والدین کا نافر مان ،گرنیہ کہ وہ تو بہ کرلیں''۔

یہ بھی وارد ہے کہ سودخور، سود کھانے کے لیے حیلہ سازی کرنے کی وجہ ہے ، کوں اور خزیروں کی صورت میں اُٹھائے جا کیں گے۔ جیسا کہ اصحاب سبت (ہفتہ کے دن والوں) کی شکلوں کو سنح کردیا گیا تھا، جب انہوں نے محصلیاں پکڑنے کے بارے میں حیلہ سازی کی جب اللّٰہ نے انہیں ہفتہ کے دن ان کے شکار کرنے ہے منع فرمایا تھا۔ انہوں نے محصلیوں کے لیے تالاب بنا لیے، ہفتہ کے روز محصلیاں ان میں آجا تیں اور وہ اتوار کے روز انہیں پکڑ لیتے۔ پس

<sup>🛈</sup> ابوداؤد۔ 🛡 ابن ماحه' بزار۔ 🛡 بخاری۔

جب انہوں نے بیکیا تو اللہ نے انہیں بندر اور خزیر بنادیا۔

اس طرح جولوگ سود کے بارے میں مختلف حیلوں کے ذریعے حیلہ سازی کرتے ہیں۔ یقیناً اللہ پران حیلہ سازوں کا کوئی حیلہ مخفی نہیں۔ ایوب ختیانی نے کہا: وہ اللہ کو دھوکہ دینے کی کوشش کرتے ہیں، جس طرح وہ کسی بچے کو دھوکہ دیتے ہیں اور اگروہ ظاہر آاس کا ارتکاب کرتے تو ان کے لیے آسان ہوتا اور آی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''مود کے سر باب ہیں ،ان میں سے سب سے ہلکا یہ ہے کہ آ دمی اپنی مال سے نکاح کرے اور سب سے بڑا سودی باب یہ ہے کہ آ دمی اپنے مسلمان بھائی کی عزت پر حمل رہے کہ آ

انس رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں: رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے ہمیں خطبہ ارشا وفر مایا تو سود کا ذکر کیا اور اس کی شکینی کے بارے میں بتایا تو فر مایا:

'' آ دی جو در ہم سود کے ذریعے حاصل کرتا ہے وہ اسلام میں چھتیں مرتبہ زنا کرنے ہے بھی زیادہ تنگین ہے''۔ ①

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے قرمایا:

''سود کے سر گناہ ہیں ان میں سے کم تر گناہ یہ ہے کہ آ دمی اپنی ماں سے جماع کرئے'۔ © اور ایک روایت میں ہے:

"ان میں ہے کم تر گناہ یہ ہے کہ کوئی شخص اپنی ماں سے نکاح کرے"۔

ابو بكرصد يق رضى الله عنه نے فرمایا:

''زائددينے والا اورزائد لينے والاجہنى ہيں''۔

ہم اللہ سے عافیت مانگتے ہیں۔

<sup>🛈</sup> طبراني في الاوسط

ابن ابی الدنیا، بیمی منذری نے اس کے ضعیف ہونے کی طرف اشارہ کیا ہے۔

ابن ماجه بيهقي

مورک کتاب الکبائر کیا ہے۔ فصل فصل ا

ابن مسعود رضی الله عند نے فرمایا: ''جبتم نے کسی شخص سے قرض لینا ہواور وہ تہہیں کوئی تحفہ پیش کر بے تو اسے قبول نہ کرو، کیونکہ وہ سود ہے۔ حسن بصری نے فرمایا: ''جبتم نے کسی شخص سے قرض لینا ہوتو تم اس کے گھر سے جو کھاؤ گے دہ حرام ہوگا۔''

> اور بیآ پ سلی الله علیہ وسلم کے فر مان سے ہے: ''ہروہ قرض جونفع تھینج لائے وہ سود ہے''۔

> > ابن مسعودرضی الله عنه بی نے فر مایا:

رسول الله سلی الله علیہ وسلم کے فرمان سے اس کی تقسدیق ہوتی ہے: ''جس شخص نے کسی کے حق میں سفارش کی اور اس نے اسے تحفہ پیش کیا اور اس نے اسے قبول کرلیا تو وہ سود کے درواز وں میں سے ایک بڑے دروازے پر آیا۔' ① پس ہم اللہ سے دین ودنیا اور آخرت میں عنوو درگز راور عافیت کا سوال کرتے ہیں۔

#### ተ ተ

<sup>()</sup> الصغرى بين بياضافه فضل كيا: "سات مبلكات بيج" بود كھانے كوان بين ذكركيا (متفق عليه) اور آپ سلى الله عليه وسلى في الله سود كھانے والے اور كھانے والے پرلعنت فرمائے" - (مسلم ، ترفى ) اور بياضاف نقل كيا يه "اس كے دونوں كواہوں اور اس كے لكھنے والے پر" اور آپ سلى الله عليه وسلم نے فرمايا: "سود كھانے والا ، كلانے والا اور اس كا كھنے والا ، جب أنبيس اس كے متعلق معلوم ہوتو وہ روز قيامت ، محم صلى الله عليه وسلم كى زبان بيلعتى بيں -"

## (۱۳) مال ينتيم كوكھا نااوراس برطلم كرنا

الله تعالیٰ نے فر مایا:

﴿ إِنَّ الَّذِيْنَ يَاكُلُونَ آمُوالَ الْيَتَالَى ظُلُمًا إِنَّمَا يَاكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ فَارًا وَسَيَصُلُونَ سَعِيْرًا ٥ ﴾ (النسآء: ٤/ ١٠)

''یقیناً وہ لوگ جوظلم سے بتیموں کا مال کھاتے ہیں ، وہ اپنے پیٹ میں انگارے بھرتے ہیں اور وہ عنقریب بھر کتے ہیں اور وہ عنقریب بھڑ کتی ہوئی آگ میں داخل ہوں گئ'۔

اورالله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَلَا تَفُرَبُوا مَالَ الْيَتِيْمِ إِلَّا بِالَّتِي هِي آخْسَنُ حَتَّى يَبُلُغَ اَشُدَّهُ. ﴾ (الانعام: ٢/٦٥١)

''اوریتیم کے مال کے نزدیک نہ جاؤ، گرمتحسن طریقے سے پہاں تک وہ اپنے من بلوغ کو پہنچ جائے''۔

ابوسعید خدری رضی الله عند سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے معراج کے موقع پر فرمایا:

''میں نے اچا کک کچھ آدی دیکھے کہ کچھ لوگ ان پر مامور ہیں جوان کے جبڑوں کو کھولتے ہیں اور انہیں ان کے مجبڑوں کو کھولتے ہیں اور دوسر بے لوگ آئے پھر لے کر آتے ہیں اور انہیں ان کے مونہوں میں چھیئتے ہیں اور وہ ان کی پیٹے سے نکل جاتے ہیں۔ تو (بیمنظرد کھیکر) ہیں نے کہا: جبریل! یہ کون لوگ ہیں؟ انہوں نے کہا: یہ وہ لوگ ہیں جوظلم سے قیموں کا مال کھاتے ہیں۔ وہ اپنے پیٹ ہیں انگار بے بھرتے ہیں''۔ ①

ابو ہریرہ رضی اللہ عندے روایت ہے کدرسول الله صلی اللہ علیہ وسلم في فرمايا:

''اللهُ عزوجل ایک توم کوان کی قبروں سے اٹھائے گا، ان کے پیٹ سے آگ نگل رہی ہوگی۔ان کے مونہوں سے آگ بھڑک رہی ہوگی۔انہوں نے عرض کیا۔اللہ کے رسول!وہ کون

۰ مسلم

 حال کتاب الکبائر

 اگرید ۵۳

لوگ ہیں؟ آپ نے فر مایا: کیاتم اللہ تعالیٰ کو یہ فرماتے ہوئے نہیں سنا:

﴿إِنَّ الَّذِيْنَ يَاكُلُونَ آمُوالَ الْيَتْمَى ظُلُمًّا إِنَّمَا يَاكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا. ﴾

(النساء: ٤/١٠)

''یقیناً وہ لوگ جوظم سے تیموں کا مال کھاتے ہیں، وہ اپنے پیٹ میں انگارے بھرتے میں''

السدى رحمه الله نے فرمایا: "ظلم سے بیتیم كا مال كھانے والا ، روز قیامت اس حال میں میدان حشر میں آئے گا كہ اس كے منه، اس كے كانوں، اس كى ناك اور اس كى آئكھوں سے آگ فكل رہى ہوگى۔ اسے ديكھنے والا ہر خص يہ بچپان لے گا كہ وہ بیتیم كا مال كھانے والا ہے "۔

علاء نے فرمایا:

'' یتیم کی کفالت کرنے والا ہر مخف اگر تو وہ فقیر ہے اور اس نے بھلے طریقے ہے اس کے مال ہے اس قدر کھالیا، جو اس کے مصالح اور اس کے مال کی افز اکش کے لیے ضروری ہوتو اس میں کوئی حرج نہیں اور بھلے طریقے سے جوز ائد ہوا تو وہ حرام ہے۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفُ وَمِنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاكُلُ بِالْمَعْرُوفِ. ﴾ (النساء: 3/٤)

''اور جو دولت مند ہو،اے چاہیے کہ وہ پر ہیز کرے اور جوغریب ہواہے چاہیے کہ وہ بفتر رضر ورت کھائے''۔

بططريق ع كهانے كمتعلق جاراتوال بين:

ا۔وہ بطور قرض لے۔

۲۔ ضرورت کے مطابق کھائے اسراف نہ کرے۔

سو۔جس قدریتیم کا کام کرے اس قدراس کے مال سے لے لے۔

۳ \_ ضرورت کے تحت لے لے ،اگر ہو سکے تو اس کی قضا کرے اورا گرادا کیگی کر ناممکن نہ ہو سرایا ہا

تو پھروہ اس کے لیے حلال ہے۔

ابن جوزی نے بیرچاروں اقوال اپنی تغییر میں نقل کیے ہیں۔ میں میں میں میں اس میں اس میں میں اس می

رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فر مايا: ''ميں اوريتيم كى كفالت كرنے والا جنت ميں اس طرح ہوں گئے''۔ ①

آپ نے انگشت شہادت اور درمیانی انگل سے اشارہ کیا اور پھر آپ نے دونوں انگلیوں کے مامین فرق کیا:

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

'' یتیم کی کفالت کرنے والا ، وہ (یتیم ) اس کا اپنارشتہ دار ہو یا کوئی اور تو میں اور وہ جنت میں اس طرح ہوں گے''۔آپ نے انگشت شہادت اور درمیانی انگل سے اشارہ کیا''۔

یتیم کی کفالت میہ ہے کہ اس کے معاملات کو درست رکھا جائے ،اس کے طعام ولباس اور اگر اس کا مال ہوتو اس کی افز اکش کے مصالح کے لیے کوشش کی جائے اور اگر اس کے پاس مال نہ ہوتو اللہ تعالیٰ کی رضامندی حاصل کرنے کے لیے اس پرخرچ کیا جائے ،اسے لباس فراہم کیا جائز

حدیث میں ہے''لے اُولیغیہ و ''یعن'' وہ بیتیم اس کا کوئی قریبی ہویا کوئی غیر' بیسب برابر ہے،قرابت مثلاً بیتیم کا دادایا اس کا بھائی یا اس کی ماں یا اس کا جچایا اس کی ماں کا خاوندیا اس کا ماموں یا کوئی بھی قریبی رشتہ داراس کی کفالت کرے اوراجنبی سے مرادوہ ہے جس کی اس کفالت کرنے والے کے ساتھ کوئی قرابت نہ ہو۔

اوررسول التدصلي التدعليه وسلم في فرمايا:

''جو خض کسی مسلمان یتیم بچ کواپنے کھانے پینے میں ساتھ ملالے جتی کہ اللہ اسے بے نیاز کردے تواگر وہ کوئی ایسا نا قابل معانی جرم نہ کرے تواللہ اس کے لیے جنت کو واجب قرار دے 'دیتا ہے''۔ ①

ادرآپ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''جو خض الله کی رضا مندی کے لیے کسی یتیم کے سر پر دست شفقت چھیرتا ہے تو اس

1 بحاری ای ترمذی

کے ہاتھ کے بیچے آنے والے ہر بال کے بدلے میں اس کے لیے ایک نیکی ہے اور جو شخص اپنے زیر کفالت بیٹیم لڑکے یا بیٹیم لڑکی سے حسن سلوک کرے تو میں اور وہ

جنت میں اس طرح ہوں گے''۔ ①

ا یک آ دمی نے ابودرداءرضی اللہ عنہ سے کہا: مجھے کوئی وصیت کریں ،انہوں نے کہا:

'' يتيم پررتم كر،ا سے اپنے قريب كراورا پنے كھانے سے اسے كھلا، كونكه بيس نے رسول الله صلى الله عليه وسلم كوسنا۔ ايك آ دى آپ كى خدمت ميں حاضر ہوا تو اس نے اپنے دل كى تحق كے متعلق شكايت كى تو رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فربايا: ''اگر تم چاہتے ہوكہ تمہارا دل نرم ہوجائے تو پھر يتيم كوا پنے قريب كرو،اس كے سر پر دست شفقت پھيرو،اپنے كھانے سے اسے كھلاؤ۔

پس یہ چیز تمہارے دل کونرم کردے گی اورتم اپنی حاجت برآ وری پر قادر ہوجاؤ گے۔ 🏵 بعض سلف سے حکایت بیان کی گئی ہے وہ بیان کرتے ہیں: میں شروع شروع میں معاصی اور شراب نوشی کا رسیا تھا، پس ایک روز میں نے بیتیم ومخاج بیچے کو حاصل کیا۔اس سے اچھا سلوک كياءات كھانا كھلايا،لباس بہنايا،اسے نہلايا اوراس كى ميل كچيل دوركى -اس كے بالوں كو سنوارا،جس طرح آدمی این بیچی کی تکریم کرتا ہے اس کی تکریم کی ، بلک اس سے بھی زیادہ اس کے بعد میں رات کوسویا تو خواب میں و یکھا کہ قیامت قائم ہو چکی ہے اور مجھے حساب کے لیے بلایا گیا ہے۔میرے گناہوں اور برے کر داروں کی وجہ سے مجھے جہنم رسید کرنے کا فیصلہ سنادیا گیا ہے۔ جہنم کے داروغے مجھے گھییٹ رہے ہیں تا کہ وہ مجھے جہنم کی طرف لے جائیں ، میں حقیروز لیل کی حیثیت سے ان کے ہاتھوں میں ہوں اور وہ مجھے گھیٹ کرجہنم کی طرف لے جارہے ہیں کہ اجا تک وہ یتیم راستے میں آ جا تا ہے اور کہتا ہے: میرے رب کے فرشتو! اس کوچھوڑ دوحتی کہ میں اس کے بارے میں اپنے رب سے سفارش کرلوں ، کیونکہ اس نے میرے ساتھ احسان کیا تھا اور میری تحریم کی تھی۔ فرشتے کہیں ہے، ہمیں اس کا حکم نہیں دیا گیا، استے میں اللہ تعالیٰ کی طرف سے آ واز آئے گی۔اسے چھوڑ دواس نے پتیم کے ساتھ جواحسان کیا تھا،اس کے بدلے میں پتیم نے

€ احداد الشاء

اس کی سفارش کی تو میں نے اسے قبول کرلیا۔ وہ بیان کرتے ہیں: میں بیدار ہواتو میں نے اللہ عز وجل کے حضور توبہ کی اور میں نے اپنے آپ کو تیبموں پر رحم کرنے کے لیے وقف کرلیا۔ رسول التدسلي الله عليه وسلم كے خادم، انس بن مالك رضى الله عندنے فرمايا:

" جس گھر میں بیتیم ہواوراس سے اچھاسلوک ہوتا ہوتو وہ گھرسب سے بہتر ہے اورسب ہے برا گھروہ ہے جس میں بتیم ہواوراس سے براسلوک کیا جاتا ہواوراللہ تعالیٰ کو وہخض انتہا کی پند ہے جو کسی میتم یا ہوہ خاتون کے ساتھ بھلائی کرتا ہے'۔

مروی ہے کہ اللہ تعالی نے داؤدعلیہ السلام کی طرف وحی کی: داؤد! ینتیم کے لیے رحیم باپ کی طرح اور بیوہ کے لیے تفیق خاوند کی طرح ہوجا۔ جان لے، جبیا بوؤ کے ویبا کا ٹو گے، اس کامعنی ے کہ جیاتم کرو گے ویبا ہی تمہارے ساتھ کیا جائے گا، یعنی بیتو ضروری ہے کیتم نے فوت ہونا ہے اور اپنے پیچھے بیتیم بچیہ یا بیوہ عورت چھوڑ کر جانا ہے۔ داودعلیہ السلام نے اپنی مناجات میں عرض کیا:میرےمعبود! جوخص تیری رضا کی خاطریتیم اور بیوہ کی مدد کرتا ہے،اس کی جزا کیا ہے؟ الله نے فرمایا:"اس کی جزامیہ ہے کہ میں اس کو اس روز اپنے سائے میں جگہ عطا کروں گا، جب میرے سائے کے سواکوئی سامینہیں ہوگا،اس سے مراد ہے کہ قیامت کے دن اپنے عرش کے

سائے میں جگدووں گا۔ - www.KitaboSunnat.com

بعض علاء تيبوں ادر بيوه عورتوں كے ساتھ احسان كرنے كى فضيلت كے بارے ميں بيان ہوا ہے کہ ایک شخص نے بلاد مجم میں سے بلخ شہر میں قیام کیا، اس کی بیوی علو بھی اور اس سے بیٹیاں بھی تھیں، وہ خاندان بہت خوشحال زندگی بسر کرر ہاتھا۔ پس خاوندفوت ہوگیا تو اس کے بعد عورت اوراس کی بیٹیاں فقر وقلت سے دو حار ہوگئیں ، تو وہ دشمنوں کے خوش ہونے کے اندیشے ے اپنی بیٹیوں کے ساتھ کسی دوسرے ملک کے لیے روانہ ہوئی۔ اس نے اپنے سفر کا آغاز سخت سردی میں کیا، جب وہ اس شہر میں پینچی تو اس نے اپنی بیٹیوں کوایک ویران مبجد میں بٹھایا اورخود ان کے لیے خوراک کا انظام کرنے کے لیے چلی گئی۔ دہ دوگر دہوں کے پاس سے گزری، ایک گروہ ایک مسلمان مخص کے پاس جمع تھااور وہ مخص شہر کا بڑا تھااور دوسرا گروہ ایک مجوی مخص کے یاں جمع تھا، جوشہر کا ضامن اور ذمہ دارتھا۔اس عورت نے مسلمان مخص سے ابتدا کی اور اسے

اینے حالات ہے آگاہ کیا اور بتایا کہ میں ایک علوی عورت ہوں،میرے ساتھ ینتیم بیٹیاں ہیں، میں نے انہیں ایک غیرآ بادمسجد میں بھایا ہے اور میں ان کے لیے رات کا کھانا جا ہتی ہوں۔اس نے کہا: مجھے ثبوت پیش کروکہ تم ایک علوی شریف زادی ہو، اس نے کہا: میں تو ایک پردلیی خاتون ہوں،شہر میں تو کوئی بھی ایسانہیں جو مجھے جانتا پہچانتا ہو۔ پس اس شخص نے اس خاتون ے مند موڑ لیا۔ تو وہ شکتہ دل ہوکراس ہے چل پڑی۔ پھروہ اس مجوی شخص کے پاس گئی اور اسے اینے حالات بتائے اور اسے بتایا کہ اس کے ساتھ بنتیم بیٹیاں بھی ہیں اور وہ ایک شریف زادی پردیسی عورت ہے۔اس نے مسلمان بڑے کے ساتھ جو کچھ ہواوہ بھی اسے بیان کیا۔پس وہ کھڑا ہوااورا پنی بعض خوا نین کو بھیجا، وہ اُس خاتون اوراس کی بیٹیوں کواس کے گھرلے آئمیں۔اس نے انہیں بہترین کھانا کھلایا اور فاخرانہ لباس پہنایا۔ انہوں نے نعمت وعزت کے ساتھ اس کے ہاں دات بسر کی۔ بیان کرتے ہیں کہ جب آوھی رات ہوئی تو اس مسلمان شخ نے خواب میں دیکھا کہ قیامت قائم ہوچکی ہے، نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے سر کے پاس جھنڈا لگادیا گیا ہے۔ سنرزمرد کامحل ہے،جس کے تنگرے موتیوں اور یا قوت کے ہیں،اس کے گنبد موتیوں اور مرجان کے ہیں۔اس نے عرض کیا،اللہ کے رسول! میکل کس کا ہے؟ آپ نے فرمایا:''موحد مسلمان مجھ کے لیے ہے''۔اس نے عرض کیا ،اللہ کے رسول! میں موحد مسلمان مجھ ہوں تو رسول اللہ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا '' مجھے ثبوت فراہم کرو کہتم موحد مسلمان ہو''۔ اس پر وہ حیران بریثان ہوگیا۔ آپ صلی الله علیہ وسلم نے اسے فرمایا جب علومیہ خاتون تیرے پاس آتی تھی تو تونے کہا تھا: مجھے ثبوت فراہم کرو کہتم علویہ ہو، اس طرح تم بھی بھی مجھے ثبوت مہیا کرو کہتم مسلمان ہو۔پس وہ مخص اس خاتون کو خالی ہاتھ لوٹانے برغم زدہ ہو گیا۔پھروہ اس کا سراغ لگانے کے لیے شہر کے چکرلگانے لگا جتی کہ اسے بتایا گیا کہ وہ مجوی کے پاس ہے۔اس نے اسے پیغام بھیجا،وواس کے پاس آیا تواس نے اسے کہا: میں تم سے شریف زادی علویہ اوراس کی بیٹیاں لینا عا ہتا ہوں۔اس نے کہا: میں پنہیں کرسکتا ، مجھے تو ان سے بہت ی برکات حاصل ہوئی ہیں۔اس نے کہا: مجھ سے ہزار دینار لے لواور انہیں میرے حوالے کر دو۔ اس نے جواب دیا۔ میں ایسے نہیں کروں گا۔الشیخ نے کہا: وہ مجھے ضرور جا ہئیں،اس پراس شخص نے کہا: جو چیزتم جاہتے ہو،

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

حراب الكبائر كان ياده حق دار بول ، تم نے جوكل خواب ميں ديكھا ہے ، ده ميرے ليے بنايا گيا ہے -كيا تم مجھ اسلام كم متعلق بتاتے ہو؟ الله كی قتم ! ميں نے اور ميرے الل وعيال نے رات سونے سے پہلے ہى اس علومية خاتون كے ہاتھ پر اسلام قبول كرايا تھا اور جو بجھتم نے خواب ميں ديكھا ہے، وہى بچھ ميں نے خواب ميں ديكھا ہے، وہى بچھ ميں نے خواب ميں ديكھا ہے اور رسول الله صلى الله عليه وسلم نے مجھے فرمايا:

''علویہ خاتون اور اس کی بیٹیاں تیرے پاس ہیں؟ میں نے عرض کیا: تی ہاں اللہ کے رسول!
آپ نے فر مایا: ''وہ محل تیرے اور تیرے اہل وعیال کے لیے ہے، نیزتم اور تمہارے اہل خانہ جنتی ہو۔ اللہ نے ازل ہی سے تمہیں مومن پیدا کیا تھا''۔ بیان کرتے ہیں کہ وہ مسلمان اس قدر رنج وغم کے ساتھ والیں ہوا کہ اس کیفیت کوبس اللہ ہی جانتا ہے۔ اللہ تم پر رحم کرے! بیوہ اور بیتیم بچوں کے ساتھ حسن سلوک کی برکت اور اس حسن سلوک کرنے والے کو جو و نیا ہیں عزت ملی اس کا مشاہدہ کرو۔ اس لیے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے ثابت ہے کہ آپ نے فرمایا:

''بیوہ اور مساکین کی ضرورتوں کا خیال رکھنے والا اوران کے لیے تک و دو کرنے والا

الله كى راه يس جهادكرنے والے كى طرح ہے"۔ 1

رادی بیان کرتے ہیں،میراخیال ہے کہ آپ نے فر مایا:

"و و اس قیام کرنے والے کی طرح ہے جوستی اور کمزوری نہیں دکھا تا اور اس روز ہ

داری طرح ہے جوافطار نہیں کرتا''۔

الله تعالیٰ اپنے فضل وکرم سے ہمیں بھی ان کاموں کی تو فیق عنایت فرمائے، کیونکہ وہ تخی

، داتا، فیاض، بخشے والاشفیق ومہر بان ہے۔

\*\*\*

<sup>🛈</sup> بخاری مسل

# + كتاب الكبائر كالم

(۱۴) اللّه عز وجل اوراس کے رسول مَثَالِثَهُ عَلَيْهِمْ برجھوٹ بولنا

اللُّدعز وجل نے فرمایا:

﴿ وَيَوْمَ الْقِيلُمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسُوَدَّةٌ ﴾ (الزمر:

''اور قیامت کے دن آپ ان لوگوں کو دیکھیں گے جنہوں نے اللہ پر جھوٹ باندھا ہوگا، کہان کے چبرےسیاہ ہول گے'۔

حسن بصری نے فر مایا کہان سے مرادوہ لوگ ہیں جو کہتے ہیں ''اگر ہم نے حیاہا تو ہم نے کیااوراگرہم نے چاہاتو ہم نے نہ کیا''۔

ابن جوزی نے اپنی تفسیر میں کہا: علاء کی ایک جماعت کا خیال ہے کہ اللہ اوراس کے رسول صلی الله علیه وسلم برجموث با ندهنا کفر ہے، جو کہ ملت اسلامیہ سے خارج کر دیتا ہے، دوسری ملت ( کفر) کی طرف منتقل کردیتا ہے اور اس میں کوئی شک نہیں کہ اللہ اور اس کے رسول پر ،حلال کو حرام کرنے اور حرام کوحلال کرنے کے بارے میں جھوٹ بولنا،خالص کفرہے،جبکہ اس کےعلاوہ حبوث بو لنے کی الگ حیثیت ہے۔

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

'' جو مخص نے مجھ پر جھوٹ باندھا'اس کے لیے جہنم میں گھر بنادیا جاتا ہے''۔ 🛈

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

'' بِحِرِّحْصَ عِمداً مِحِهِ برِحِموٹ بولے تو وہ اپناٹھ کا ناجبہم میں بنا لے''۔

'' جس مخف عمد اُمجھ ہے کو کی حدیث روایت کر ہے،اورا سے پیتہ ہو کہ وہ جھوٹ ہے،تو

وہ بھی ایک جھوٹا مخص ہے'۔ 🕀

اورآ پ سلی اللّٰدعلیه وسلم نے فر مایا:

''یقیناً مجھ پر جھوٹ بولنا،میرے علاوہ کسی اور پر جھوٹ بولنے کی طرح نہیں، جو شخص

کتاب الکبائر کیا ہے۔ الکبائر

مجھ پر جھوٹ بولے تو وہ اپناٹھ کا ناجہنم میں بنالے'۔ 🛈

نیز آپ سلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

"جو خص میری طرف (نببت) سے کوئی بات بیان کرے، جومیں نے نہ کی ہوتووہ

اپناٹھکاناجہم میں بنالے'۔ 🏵

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''مومن خیانت اور جھوٹ کاار تکاب ہیں کرسکتا''۔ 🏵

 $^{2}$ 

نخاری (۱۲۹۱)مسلم (۱)

( Y9V/0- Lack ( )

🗗 بزار'ابو يعلى

# من کتاب الکبائر کا میدان جهاد سے فرار (۱۵) میدان جهاد سے فرار

جب دیمن کی تعداد مسلمان سے دگئی نہ ہوتو میدان جہاد سے فرافر ہونا کبیرا گناہ ہے گر قال کے لیے پینتر ابد لنے والا یاا پی جماعت کی طرف پلٹ کرآنے والا ہواگر چدہ و دور ہوتو پھر پیخص جہاد سے فرار ہونے کے زمرے میں نہیں آتا۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَ مَنْ يُولِهِمْ يَوْمَنِهِ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَى فِنَةٍ فَقَدُ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللهِ وَمَاُوانَهُ جَهَنَّمُ وَبِنُسَ الْمَصِيْرُ ٥﴾ (الانفال: ١٦/٨) "اور جواس دن ان سے پیٹے پھیرے گا ماسوااس بات کے کہ وہ اڑائی کی خاطر پہلو بدل رہا ہو یا اپنے ہی کسی دوسرے گروہ سے جاملتا ہے، تو بے شک اس نے اللہ کا غضب اپنے سر پر لے لیا اور اس کا ٹھکا ناجہنم ہے اور وہ بہت بری جگہ ہے'۔ ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''سات مہلکات ہے اجتناب کرو۔''صحابہ نے عرض کیا،اللہ کے رسول!وہ کیا ہیں؟ فرمایا: ''اللہ کے ساتھ شرک کرنا، جاوو کرنا،جس جان کولل کرنا اللہ نے حرام قرار دیا ہوا سے ناحق قل کرنا، سود کھانا، مال بیتیم کو کھانا، جہا د سے فرار ہونا اور یاک وامن بے خبر مومنات پرالزام لگانا''۔ ①

ابن عباس رضی الله عنه بیان کرتے ہیں ، جب بیآیت نازل ہو گی:

﴿ ٱلْنَانَ حَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمُ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمُ ضَعْفًا فَاِنْ يَكُنْ مِّنْكُمْ مِّالَةٌ صَابِرَةٌ يَّغُلِبُوْا مِانَيَتُنِ وَإِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمُ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْآ اَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبرِيْنَ٥﴾ (الانفال: ٢٦/٨)

"اب الله نے تم پر سے بوجھ (اور بھی) ہلکا کردیا ہے، کیونکہ وہ جانتا ہے کہ تم میں کمزور و نا تواں بھی ہیں۔ کہن میں سے ایک سوٹا بت قدم رہنے والے ہوں گے تو وہ دوسو پر غالب آئیں گے اور اگر تم میں سے ایک ہزار ہوں گے تو وہ اللہ کے تکم سے دو ہزار پر غالب آئیں گے اور اللہ صبر کرنے والوں کے ساتھ ہے "۔
پی ان پر فرض کردیا کہ سو، دوسو سے فرار نہ ہو۔

🛈 بخاری (۲۷۲٦) مسلم (۸۹)

## (۱۲) حکمران کارعیت سے دغابازی اورظلم کرنا:

الله تعالىٰ نے فرمایا

﴿ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظُلِمُونَ النَّاسَ وَيَهُغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ الْحَقّ أُولَٰنِكَ لَهُمْ عَذَابٌ الْيُمْ٥﴾ (الشورى: ٢/٤٢)

''الزام توان پر ہے جولوگوں پڑظلم کرتے ہیں،اور ملک میں ناحق فساد پھیلاتے ہیں،

ان لوگوں کے لیے در دناک عذاب ہے''۔

اورفر مايا: ﴿ وَ لَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعُمَلُ الظَّلِمُوْنَ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمُ لِيَوْم تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ٥ مُهُطِعِيْنَ مُقْنِعِي رُءُ وُسِهِمُ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمُ طَرْفُهُمُّ وَ اَفْهِدَتُهُمْ هَوَ آءٌ٥ ﴾ (ابراهيم: ٢/١٤ ٤-٤٢)

''اوراللہ کوان کاموں سے بے خبر خیال نہ سیجئے جوظلم کررہے ہیں، وہ تو ان کواس دن تک مہلت دے در ہاہے، جس دن آئکھیں کھلی کی کھلی رہ جائمیں گی۔سراو پر کواٹھائے ہیبت کے مارے جلدی جلدی آئکھیں جھپک رہے ہوں گے، ان کی آئکھیں ان کی طرف پھر نہائیں گی، اور ان کے دل پریشان ہوں گے''۔

اورالله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَ سَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْ آ أَى مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِمُوْنَ ٥ ﴾ (الشعرا: ٢٦ /٢٦) ''اور جن لوگوں نے ظلم کیا ہے، ان کوجلد معلوم ہوجائے گا کہ وہ کس جگہ لوٹ کرجاتے میں''

اوزاللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوُنَ عَنْ مُّنْكُم فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَاكَانُوْا يَفْعَلُونَ ٥﴾ (المائدة: ٥/٧٠-٧٩)

''وہ جو برے کام کر بیٹھتے تھے،ان ہے ایک دوسرے کورد کتے نہ تھے،واقعی ہی ان کا :

ب<sup>قع</sup>ل بہت براتھا''۔

→ الكبائر الكبائر الكبائر

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''جر شخص نے ہم سے دغابازی کی وہ ہم میں سے نہیں''۔ 🛈

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فر مايا:

''ظلم،روز قیامت بظلمات ( کاسبب) ہوگا''۔ 🛈

اوررسول التُصلّى التُدعليه وسلم نے فر مايا:

''تم میں سے مرفخص نگہبان و ذمہ دار ہے، اور تم میں سے ہرایک اپنی رعیت کے بارے میں جواب دو ہے'۔ ®

اوررسول التُصلَّى التُدعليه وسلَّم نے فر مایا:

''جس ذمہ دار مخص نے اپنی رعیت سے دِغابازی کی تووہ جہنمی ہے''۔ ©

اوررسول التصلى الله عليه وسلم في مايا:

''الله جس محض کوکسی رعیت کا ذ مه دار بنادے پھروہ ان سے خیرخوا ہی نہ کرے تو الله

نے اس پر جنت حرام کردی ہے'۔ @

اورفر مایا:

''اور وہ جس دن اس حال میں فوت ہوجائے کہ وہ اپنی رعیت کے متعلق دغاباز ہوتو

الله نے اس پر جنت کوحرام قرار دیا ہے''۔ ①

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''جوحا کم لوگوں کے مامین فیصلہ کرتا ہے،تو قیامت کے روزاے روک لیا جائے گا اور فرشتے نے اے اس کی گدی ہے بکڑ رکھا ہوگا ،اگر اس (اللہ ) نے فرما دیا کہا ہے ڈال دو،تو وہ اے ڈال دے گا تو وہ جہنم میں چالیس برس تک رہے گا''۔ ©

- 🛈 مسلم (۱۰۱) 💮 بخاری (۲٤٤٧) مسلم (۲۵۷۹)
  - (۲۰/۵) مسلم (۱۸۲۹) ش مسند احمد (۲۰/۵)
  - @ بخاری (۷۱۵۱) تعاری (۷۱۵۱) مسلم (۱٤۲)
- ابن ماجه اور ہزار نے ای طرح حدیث ابن مسعود سے روایت کیا ہے۔ دونوں کی سند میں مجالد بن سعید ،

مختلف فیہ ہے۔

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

'' حکمرانوں، ذمہ داران اور امانت داروں کے لیے ویل ہے۔ روز قیامت لوگ آرز وکریں گے کہ کاش ان کے کیسوٹریا کے ساتھ معلق ہوتے اور وہ عذاب میں مبتلا رہےلیکن بیامارت وغیرہ کے کام اختیار نہ کرتے۔'' ①

اور رسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''روز قیامت عدل کرنے والے قاضی پرایک ایس گھڑی آئے گی کہوہ خواہش کرے گا کہ اس نے دوآ دمیوں کے درمیان ایک تھجور کے بارے میں بھی بھی فیصلہ نہ کیا ہوتا''۔۔(۴)

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم نے فر مایا:

'' دس آ دمیوں کے امیر وحکمران کو قیامت کے دن لایا جائے گا کہ اس کا ہاتھ اس کی گردن کے ساتھ بندھا ہوا ہوگا۔اب یا تو اس کا عدل اسے چھڑا دے گایا اس کاظلم اسے ہلاک کردے گا''۔ ©

رسول الله صلى الله عليه وسلم كى دعاب كه آب في فرمايا:

''اے اللہ! جس شخص کو اس امت کے کسی معالمے کا ذمہ دار بنادیا جائے اور وہ ان کے ساتھ زمی کرے، تو تو بھی اس کے ساتھ زی ومہر یانی فر مانا اور جو شخص ان پر تختی کرے تو تو بھی اس بیختی فر مانا''۔ ۞

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''الله جس شخص کومسلمانوں کے امور میں سے کسی چیز کا ذمہ دار بناد ہے اور وہ ان کی حاجات وضرور مات اوران کے فقر کے متعلق کار برآ ری نہ کرے، چھپار ہے تو اللہ بھی اس کی حاجت وضرورت اوراس کے فقر ومحتا جی سے کے آگے پردہ ڈال دےگا''۔ (انہیں حل نہیں کرے گا جس طرح وہ لوگوں کے مسائل حل نہیں کیا کرتا تھا) ۞

<sup>🛈</sup> احمد 🕝 بزار\_طبراني في الاوسط 🕝 احمد\_ابن حبان

مسلم'نساثی
 ابوداؤد ترمذی

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

'' عنقریب فاسق ظالم حکمران ہوں گے، پس جس شخص نے ان کے جھوٹ کی تقیدیق کی اوران کے ظلم پران کی مدد کی ، تو ایبا شخص جھھ سے ہے نہ میں اس سے اور وہ حوض کوثر پر بھی نہیں آئے گا''۔ ()

اوررسول الله صلى ألله عليه وسلم في فرمايا:

''میری امت میں سے دوقتم کے لوگ ہیں،جنہیں میری شفاعت نصیب نہیں ہوگ۔ ظالم دغا باز بادشاہ اور دین میں غلو کرنے والا ،ان کے خلاف گواہی دی جائے گی اور ان سے لاتعلقی کا ظہار کیا جائے گا۔' ﴿

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

"روز قیامت ظالم بادشاه کوسب سے زیاده عذاب دیاجائے گا"۔ ®

اور حديث مين ہے كەرسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''لوگو! نیکی کاتھم دواور برائی ہے روکو،اس ہے پہلے کہتم اللہ ہے دعائیں کرواوروہ قبول نہ ہوں، تم اللہ ہے مغفرت طلب کرو وہ تنہیں معاف نہ کرے، کیونکہ یہود کے علاء اور عیسائیوں کے راہبوں نے جب نیکی کا تھم دینا اور برائی ہے روکنا چھوڑ دیا تو اللہ نے ان کے انبیاء کی زبان پران پرلعنت فرمائی پھران پرعموی طور پرعذاب بھیج دیا''۔ ۞ اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

"جس شخص نے ہمارے اس امر (دین) میں کوئی نیا کام جاری کیا جواس سے نہیں تو وہ مردود ہے۔ اور جس نے کوئی نیا کام جاری کیا یا کسی نئے کام جاری کر نیوالے (بدعتی) کو پناہ دی تو اس پر الله فرشتوں اور تمام انسانوں کی لعنت ہواللہ اس کا کوئی فرض بقول کرتا ہے نہ فل ۔ " ۞

<sup>🛈</sup> احمد' ابوداؤد 🕜 طبراني في الكبير 🕝 طبران

<sup>©</sup> اصبهانی نے حدیث ابن عمر سے روایت کیا ہے اور منذری نے اس کے ضعف کی طرف اشارہ کیا ہے۔

بخاری مسلم

اور حدیث میں پیھی ہے:

'' جو خص رحم نبیں کرتا ،اس پررحم نہیں کیا جاتا اور جو مخص لوگوں پر رحم نہیں کرتا تو اللہ اس

يررم نبيل كرتا" ـ 🛈

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''امام عادل کو اللہ اس روز اپنے سائے میں جگہ نصیب فرمائے گا، جب اس کے

سائے کے سواکوئی سانیبیں ہوگا" 🏵

اورقر ماما:

''انصاف کرنے والے نور کے منبروں پر ہوں گے، جواپنے فیصلوں ،اپنے اہل و

عیال اور ماتحتوں کے درمیان انصاف کرتے تھے'۔ 🏵

جب رسول الله صلى الله عليه وسلم نے معاذ رضى الله عنه كويمن كى طرف جيجاتو فرمايا:

''ان کے قیمتی اور عمر ہتم کے مال لینے ہے بچنا اور مظلوم کی بددعا ہے بھی بچنا ، کیونکہ

اس (بددعا) کے اور اللہ کے مابین کوئی پر دہ نہیں''۔ 🏵

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

در تین قتم کے لوگ ہیں جن سے اللہ روز قیامت کلام نہیں فرمائے گا۔ آپ نے حھوٹے بادشاہ کا بھی ان میں ذکر فرمایا''۔©

اورآپ نے فرمایا:

''تم یقیناً امارت و حکمرانی کی حرص کرو گے ، جبکه روز قیامت وہ ندامت کا باعث

اور بخاری کی روایت میں سیجی ہے:

''اللّٰہ کی قتم! ہم اس عمل (امارت ) پر کسی ایسے خص کو مامور نہیں کریں گے جواس کا

🛈 بخاری (۲۲۰) مسلم (۱۰۱۳) بخاری مسلم ترمذی

🥝 بخاری (۲٤٤۸)' مسلم (۱۹)

🕏 مسلم(۱۸۲۷)

🛈 بخاری (۲۱٤۸) @ مسلم(۱۰۷) طلبگار ہو یاوہ اس کا حریص ہو''۔ ① . . . . . . صل یہ سلا ، . . . .

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

'' کعب بن عجرہ! اللہ آپ کو نادانوں کی امارت سے پناہ میں رکھے، میرے بعد حکران ہوں گے، جومیری ہدایت کے ذریعے ہدایت حاصل کریں گے نہ میری سنت پرچلیں گے'۔ ﴿

ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نی سلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں ،آپ نے فرمایا:

'' جو خص مسلمانوں کے قاضی بننے کا منصب طلب کرے حتی کہ وہ اس پر فائز ہو جائے ، پھر اس کاعدل ،اس کے ظلم پر غالب آ جائے تو اس کے لیے جنت ہے اور جس کاظلم اس کے عدل پر غالب آ جائے تو اس کے لیے جہنم ہے''۔ ﴿

اورآپ نے فرمایا:

'''تم عنقریب امارت کی حرص کرو گے جبکہ روز قیامت وہ ندامت کا باعث ہوگی''۔ ﴿
عمر رضی اللہ عنہ نے ابو ذررضی اللہ عنہ سے کہا: مجھے کوئی حدیث بیان کریں جو آپ نے
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے سی ہوتو ابوذررضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں، میں نے رسول اللہ صلی
اللہ علیہ وسلم نے فرماتے ہوئے سنا:

'' حکمران کوروز قیامت لایا جائے گا اور اسے جہنم کے بل پر پھینک دیا جائے گا، وہ بل اس شدت سے ہلائے گا کہ اس کا کوئی جوڑ اپنی جگہ پرنہیں رہے گا، پس اگر وہ اپنے عمل میں اللہ کی اطاعت کرنے والا ہواتو وہ وہاں سے گزرجائے گا اور اگر اس نے اپنے عمل میں اللہ کی نافر مانی کی ہوگی تو بل میں سوراخ ہوجائے گا اور اسے پچاس سال کی مقد ارجہنم میں بھینک دیا جائے گا۔''

تو عمر رضی الله عنہ نے فرمایا: ابو ذر! اے کون طلب کرے گا؟ انہوں نے کہا: جواللہ کے لیے

<sup>🛈</sup> بخاری (۷۱٤۹) مسلم (۱٤)

P احمد (٣٢١/٣) حاكم (٤٢٢/٤)

<sup>🕏</sup> ابوداؤد

پوری صدیث اس طرح ہے: "اس کا ملنا اچھا ہے اور اس کا چلے جانا برائے" ( بخاری، نمائی )

كتاب الكبائر كالمنظمة المنظمة المنظمة

ا بنی ناک کاٹ دے اور اپنے رخسار کومٹی سے ملادے۔ @

عمر و مِن مہا جربیان کرتے ہیں: عمر بن عبدالعزیز نے مجھے فرمایا: جبتم مجھے حق سے انحراف کرتا ہوادیکھوتو اپنا ہا تھ میرے کربیان پر رکھ کر کہنا: ''عمر کیا کررہے ہو؟

ظالم کے نام پرراضی ہونے والے! تم پرکس قدرمظالم ہیں، قید جہتم ہاور حاکم حق ہے،
جس چیز کے بار مے ہیں تم جھڑا کرتے ہو، اس میں تمہارے لیے کوئی جحت نہیں۔ قبر ہولناک
ہے، پٹن تم اپنی اسیری کو یاد کرواور حساب طویل ہے، پس اپنے آپ کور ہا کرا، عمر ایک دن کی
طرح ہے، پس جلدی کر، تو اپنے مال سے خوش ہوتا ہے جبکہ کمائی حرام ہے، تو اپنی امیدوں پر
اتر اتا ہے حالانکہ چلنا جلدی ہے ہے، بے شک ظلم جو ہے، اس سے انگل کے پور کے برابر بھی
کی تہیں چھوڑا جائے گا، پس جب تم ظالم کود کھوک ظلم بہت ہوگیا ہے تو پھر پرسکون رہو کی کونکہ بسا
اوقات جب وہ کی رات موے گاتو اس کے جسم میں پھوڑے نکل آئیں گے۔

☆☆☆

اس طرح کی روایت ابن الی نیانے ابو ہر برہ ہے۔ وایت کی ہے جے منذری نے ضعیف قرار ویا ہے۔

#### (۱۷) تکبر

تكبر فخر ،غروراوراكر كبيره گناه بالله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَقَالَ مُوْسَى عُذُتُ بِرَبِّى وَ رَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكِّبَرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ

الْحِسَابِ٥﴾ (المؤمن: ٢٧/٤٠)

''اورموکٰ (علیہ السلام ) نے کہا: میں اپنے اور تمہارے رب کی پناہ لے چکا ہوں ہراس متکبر شخص سے جوروز حساب پر ایمان نہیں لاتا''۔

اورالله تعالی نے فرمایا:

﴿ لَا جَسَرَمَ اَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ

الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴾ (النحل: ٢٣/١٦) \* دوة تكبركرن والول كويقيناً يستنبيس كرتا "-

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

وہ قیامت تک اس میں دھنتا چلا جار ہاہے'۔ 🛈

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمايا:

'' جابراور متکبرتسم کے لوگ روز قیامت چیونٹیوں کی طرح جمع کیے جا کیں گے،لوگ انہیں روندیں گےاور ذلت ہرجگہ سے انہیں ڈھانپ لےگ''۔ ﴿

سلف میں سے کسی نے کہا،سب سے پہلا گناہ،جس کے ذریعے اللہ تعالی نافر مانی کی گئی،

نگبرہے۔ استار

الله تعالى نے فرمایا: ﴿ وَإِذْ قُلُنَا لِلْمَلْمِكِةِ السُجُدُوْ الِأَدَمَ فَسَجَدُوْ اللَّا اِبْلِيْسَ اَبِي وَاسْتَكْبَرَ

وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِيْنَ﴾ (البقره: ٣٤/٢)

🛈 بخاری (۷۸۹) مسلم (۲۰۸۸) 🕐 احمد (۲/۱۷۹) ترمذی (۲٤۹۲)

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

الكبائر كتاب الكبائر كالمجائر كتاب الكبائر كالمجائر كتاب الكبائر كالمجائر ك

"اور (یادکرو) جب ہم نے فرشتوں کو علم دیا کہ آدم کو تجدہ کروتو اہلیس کے سواسب نے سجدہ

کیا،اس نے نہ مانا، تکبر کیااوروہ کا فروں میں سے تھا۔''

پی جوشن و رکبر کرے واس کا ایمان اس کے لیے نافع نہیں، جیسا کر المیس نے کیا۔

نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے ثابت ہے، آپ نے فر مایا: درجہ شخص سر مار ہور در سرتھ کا سردنہ معر شہور ایرکائن ا

'' جس مخص کے دل میں ذرہ برابر تکبر ہوگا،وہ جنت میں نہیں جائے گا''۔ ①

اورالله تعالى فرمايا: ﴿إِنَّ الله لَا يُعِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَحُوْرٍه ﴾ (لقمان: ١٨/٣١)

''یقیناً الله ہراتر انے والے اور شخی والے کو پسندنہیں کرتا''۔

ادررسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمایا:

"الله تعالى نے فرمایا عظمت میرى از اراور كبريائى ميرى چادر ب، پس جس مخص نے

إن ميں ہے تھینچنے کی کوشش کی تو میں اے جہنم میں ڈالوں گا''۔ ①

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''جنت اورجہنم میں جھٹرا ہوا، تو جنت نے کہا: میرے لیے کیا ہے، مجھ میں توضعیف اور غیر اہم لوگ ہی داخل ہوں گے؟ جہنم نے کہا: میرے اندر تو جابر اور متکبر تم کے لوگ آئیں گے''۔

اورالله تعالی نے فرمایا:

﴿ وَلَا تُصَعِّرُ خَدِّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يُعِبُّ

كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍهِ ﴾ (لقمان: ١٨/٣١)

''اورلوگوں سے بے رخی نہ کر،اورز مین پراتر کرنہ چل،الله کسی اترانے والے اور شخی والے کو پیندنہیں کرتا''۔

سلمہ بن اکوع بیان کرتے ہیں: ایک آ دمی نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے پاس بائیں

٠ مسلم (٩١) مسلم (٢٦٢٠)

<sup>🕜</sup> بخاری (٤٨٥٠) مسلم (٢٨٤٦)

خال کتاب الکبائر
 پاتھ سے کھایا، آپ نے فرمایا: ''دائر کی ہاتھ سے کھاؤ''۔اس نے کہا: میں استطاعت نہیں رکھتا، تو آپ نے فرمایا: '' تواسقطاعت نہیں رکھتا، اس کو صرف تکبر نے روکا ہے''۔ پس وہ بعد میں اس ہاتھ کوا ہے منہ تک نہیں اٹھا سکا۔ ①

اوررسول التصلى التدعليه وسلم في فرمايا:

''کیا میں تہیں جہنیوں کے بارے میں نہ بتاؤں؟ فرمایا: ہرا کھر مزاج، اتر اکر چلنے والا اور متکبر''۔ ﴿

ابن عمر رضى الله عنه بيان كرتے بين بيل نے رسول الله صلى الله عليه وسلم كوفر ماتے موسے

ىنا:

''جو خض اترا کر چلنا ہے اور اپنے آپ کو بڑا سمجھتا ہے تو وہ اللہ سے ملاقات کرے گا تو وہ اس پر ناراض ہوگا''۔ ﴿

ابو ہریرہ والنو کی حدیث سے جو سیح ثابت ہے کہ پہلے تین مخص جوجہم میں جائیں گے:

'' طالم بادشاه ، زكورة ادانه كرنے والا مال داراور متكبر فقير' \_ @

رسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

'' تین قتم کے لوگ ہیں،اللہ جن کی طرف روز قیامت ( نظر رحت ہے )نہیں دیکھے گا،انہیں پاک نہیں کرے گا اوران کے لیے دردناک عذاب ہوگا،ازاراٹ کانے والا،

احسان جتلانے والا اور جھوٹی قتم سے اپناسودا بیچنے والا''۔

"مسل" اس مخص کو کہتے ہیں جوا پنا ازار یا اپنا کپڑا ایا پی شلوار گخنوں سے نیچے تک لٹکا تا ہے

حتی کہ وہ اس کے پاؤں پر آجا تا ہے۔

آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''جوازارٹخوں سے نیچے ہوتو وہ آگ میں ہے''۔ ⑥

- 🛈 مسلم (۲۰۲۱) 💮 بخاری (۲۹۱۸) مسلم (۲۸۵۳)
- احمد (۲/۵۱) روایت ضعیف ہے۔

  ۳ احمد (۲/۵۱) روایت ضعیف ہے۔
  - 🕲 بخاری

کتاب الکبائر کتاب الکبائر کے جوابے علم کی بدولت بندول پر تکبر کرتا ہے۔ اور اپنی نصیات کی وجہ سے اپنی آپ کو بڑا سمجھتا ہے، پس بیعلم اس کے لیے نفع مند نہیں، کیونکہ جوشی آخرت کے لیے علم عاصل کرتا ہے اس کاعلم اس میں کسرنفسی پیدا کرتا ہے، اس کے دل میں خشیت پیدا ہوتی ہے اور نفس (جی) میں عاجزی پیدا کرتا ہے، وہ اپنی نگر انی کرتا ہے، وہ اس سے عافل دل میں خشیت پیدا ہوتی ہے۔ وہ اس سے عافل ہے۔ وہ اس سے ستی نہیں کرتا بلکہ وہ ہر وقت اس کا محاسبہ کرتا ہے، اگر وہ اس سے عافل ہوجائے تو وہ صراط متنقیم سے نکل جائے اور اسے ہلاک کرڈالے اور جوشخص فخر و غلبے اور مسلمانوں پر تکبر کرنے ، انہیں بے وقوف بنانے اور ان کو پریشان کرنے کے لیے ہوتو یہ سب مسلمانوں پر تکبر کرنے ، انہیں بے وقوف بنانے اور ان کو پریشان کرنے کے لیے ہوتو یہ سب سے بڑا تکبر ہے اور جس شخص کے دل میں ذرہ برابر بھی تکبر ہوگا ، وہ جنت میں نہیں جائے گا۔ (لاحول ولاقوۃ الا بالتد العلی العظیم)

☆☆☆

#### 

## (۱۸) جھوٹی گواہی

الله تعالیٰ نے فر مایا:

﴿ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ ﴾ (الفرقان: ٧٢/٢٥)

''اوروه لوگ جوجھوٹی گواہی نہیں دیتے''۔

اٹر 🛈 ( قول ضحابی ) میں ہے کہ جھوٹی گواہی کو دومقامات پر اللہ تعالیٰ کے ساتھ شرک کرنے

كے برابر قرار دیا ہے، اللہ تعالی نے فرمایا:

﴿ وَاجْتَنِبُوا قُولَ الزُّورِ ٥﴾ (الحج: ٣٠)

"اور جمونی باتول سے اجتناب کرو"۔

مدیث میں ہے:

'' جھوٹی گواہی دینے والے کے قدم روز قیامت ال نہیں سکیں گے حتی کہ اس کے لیے جہنم واجب ہوجائے''۔ ﴿

مصنف ؓ نے فرمایا: جھوٹی گواہی دینے والا بڑے گنا ہوں کا ارتکاب کرتا ہے۔ان میں سے ایک کذب وافتر اہے۔اللہ تعالٰی نے فرمایا:

﴿ إِنَّ اللَّهُ لَا يَهُدِى مَنْ هُوَ مُسُوفٌ كَدَّابٌ ٥ ﴾ (المؤمن / ٠٤٠) \* (٢٨) \* (المؤمن / ٠٤٠) \* (القيناً الله الشخص كومدايت نبيل ديتاجو صد عرَّز رفي والا كذاب مؤلا

مديث مل إ:

"مومن خیانت اور جموث کاارتکاب نبیس کرسکتا". - 🗇

حبوثی گواہی دینے والاجھوٹ کے علاوہ ظلم کا ارتکاب کرتا ہے کہ وہ کسی شخص کے خلاف

- سیاٹر نہیں، بلکہ حزیم بن فاتک سے مرفوع روایت ہے۔ ابو داؤد میں ہے اور الفاظ تر فدی کہتے ہیں،
   انہوں نے بیآیت تلاوت فرمائی: "فاجتنبو الوجس من الازثان"
  - 🛈 ابن ماجه (۲۳۷۳) روایت ضعیف ہے۔اس کی سند میں محمد بن الفراث کذاب ہے۔
    - © احمد (۲۰۲/٥) روايت ضعيف ب\_

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

موٹی گوائی دیتا ہے جی کہ وہ اپنی گوائی ہے اس کا مال، اس کی عزت اور اس کی جان لے لیتا

' تیسرااس نے اس شخص پرظلم کیا جس کے حق میں جھوٹی گواہی دی کیونکہ اس طرح اس نے اس کوحرام مال کا دارث بنا دیا اور اس نے بیحرام مال اس کی گواہی کے باعث لیا، تو اس کے لیے جہنم واجب ہوگئی۔

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''میں جس شخص کے لیے اس کے بھائی کے مال میں سے ناحق حصہ دینے کا فیصلہ کر دوں تو وہ اس مال کو نہ لے، (ناحق صورت میں) میں تو اس کے لیے محض جہنم کی آگ کا گلزا کا ہے کر دے رہا ہوں''۔ ①

جھوٹی گواہی دینے سے چوتھا گناہ یہ ہوتا ہے کہ وہ مخص اللہ تعالیٰ کی حزام کردہ چیز کومباح قرار دے دیتا ہے اور اللہ نے جو مال و جان اور عزت محفوظ کی تھی بیاس گواہی کے ذریعے اسے مباح قرار دے دیتا ہے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

'' کیا ہیں تہہیں کبیرہ گناہوں کے متعلق نہ بتاؤں؟'' اللہ کے ساتھ شریک کھیرانا ، والدین کی نافر مانی کرنا ، سن لوجھوٹی بات کرنا اور سن لوجھوٹی گواہی دینا۔'' آپ صلی اللہ علیہ وسلم بار باریہ فرماتے رہے ، حتی کہ ہم نے کہا کہ کاش آپ خاموش ہوجا کیں ۔'' ۞ ہم اللہ تعالیٰ سے ہرشم کی بلاء سے سلامتی اور عافیت کی درخواست کرتے ہیں۔

☆☆☆

<sup>(</sup>۱۷۱۳) مسلم (۱۷۱۳)

<sup>🛈</sup> بخاری (۲۲۰۶) مسلم (۸۷)

#### حال الكبائر كالمجائر كالمجائز كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائز كالمجائز

## (۱۹)شراب نوشی

الله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ يَا يُنَهَا الَّذِيْنَ امَنُوْ آ إِنَّمَا الْحَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزُلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطُنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ٥ إِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطُنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللهِ وَعَنِ الصَّلُوةِ فَهَلُ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ٥ ﴾ (المائدة: ٩٠ - ٩١)

''اے ایمان والو! شراب پینا، جوا کھیلنا، بت پوجنا اور پانے پھینکنا بلاشبہ ناپاک شیطانی کام جیں، پس ان سے اجتناب کروتا کہ مہیں فلاح حاصل ہو۔ شیطان تو یہی چاہتا ہے کہ شراب اور جوئے کے ذریعے سے تمہارے درمیان دشمنی اور بغض و لوادے اور اللہ کے ذکر اور نماز سے تمہیں روکے تو کیا اب بھی تم (ان برائیوں سے) ماز نہیں آئے''۔

اللّٰه عز وجل نے اس آیت میں شراب سے منع کیا اور اس سے ڈرایا ہے۔ نبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم نے فر مایا

"شراب ہے بچو، کیونکہ وہ تمام برائیوں کی اصل اور مال ہے"۔

پس جو شخص اس سے اجتناب نہ کر ہے تو اس نے اللہ اور اس کے رسول کی نافر مانی کی اور وہ اللہ اور اس کے رسول کی نافر مانی کی دجہ سے عذاب کا مستق تضمیرا۔

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَمَنْ يَعْصِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدُخِلُهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ٥﴾ (النساء: ١٤/٤)

"اور جوشخص الله اور اس کے رسول کی نافر مانی کرے اور اس کی حدود سے تجاوز کر جوشخص اللہ اور اس کے حدود سے تجاوز کر جائے ،اللہ اسے دوزخ میں داخل کرے گا، وہ اس میں ہمیشہ رہے گا اور اس کے لیے رسواکن عذاب ہوگا''۔

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

حرار کتاب الکیانر کی اللہ عنمانے فرمایا: جب حرمت شراب کے بارے میں تھم نازل ہواتو صحابہ کرام ایک دوسرے کے پاس گئے اور کہنے گئے: شراب حرام قرار دے دی گئی ہے اور اسے شرک کے برابر قرار دیا گیا ہے۔ €

عبداللہ بن عمر ورضی اللہ عنہما کا موقف ہے کہ شراب کبیرہ گناہوں میں سے بڑا گناہ ہے اور اس میں کوئی شکنہیں کہ بیام النجائث ہے اور کئی احادیث میں اس کے پینے والے پر لعنت کی گئی ہے۔

ابن عمرض الله عنه بيان كرتے بين ، رسول الله صلى الله عليه وسلم في مايا:

نہیں پیئے گا''۔ 🛈

جابر رضی الله عنه بیان کرتے ہیں ، رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''نشہ آوراشیاء استعال کرنے والے کے بارے میں اللہ پر بیعبد ہے کہوہ اسے دوز خیوں کے پیپلہو کی تلچصٹ بلائے گا''۔عرض کیا گیا ، اللہ کے رسول!''طینة المنجبال'' کیا چیز ہے؟

آب نے فرمایا: دوز خیوں کا پسینہ یا دوز خیوں کے زخموں کا نچوڑ''۔ 🏵

رسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''جس شخص نے دنیا میں شراب پی تو وہ آخرت میں اس (شراب طہور ) سے محروم رہے

O\_"K

بیان کیا گیا ہے کہ شراب کا عادی شخص ، بت کے پجاری کی طرح ہے۔

ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کدرسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''شراب کا عادی ، بت کے پیجاری کی طرح ہے''۔ @

🕏 اِحمد (۱۷۸/۲) 💮 بخاری (۵۷۵) مسلم (۲۰۰۳)

(۲۷۲/۱) احمد

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

① طبراني في الكبير (۲۷/۱۲) ② بخاري (۵۷۵) مسلم (۲۰۰۳)

### **+ (124 ) + (124 )**

بیان کیا گیا ہے کہشراب کاعادی جب توبہ کیے بغیر فوت ہوجائے تووہ جنت میں داخل نہیں پوگا.

> ابن عمر رضی الله عند ہے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فر مایا: ''والدین کا نا فرمان اور عا دی شراب نوش جنت میں نہیں جا کیں گئے'۔ ①

اور ایک روایت میں ہے:''اللہ نے تین قتم کے لوگوں پر جنت حرام کردی ہے، عادی شراب نوش، اینے والدین کا نافر مان اور دیوث جو اپنی اہلیہ کے بارے میں برائی پر خاموثی اختیار کرلیتاہے''۔

روایت کیا گیا ہے کہ اللہ نشہ میں مست شخص کی کوئی نیکی قبول نہیں کرتا، جابر بن عبدالله رضی الله عنه سے روایت کیا گیا ہے کہ رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

'' تین قتم کےلوگ ہیں کہان کی نیماز قبول ہوتی ہے نہان کی کوئی نیکی آسان کی طرف بلند ہوتی ہے،مفرور غلام حتی کہ وہ اینے مالکوں کے پاس واپس آ جائے اور اپنے آپ کوان کے حوالے کر دی وہ عورت جس پر اس کا خاوند ناراض ہو، حتی کہ وہ اس سے راضی ہو جائے اور نشریس مست شخص حتی کہوہ ہوش میں آ جائے''۔ 🏵

"خر" وہ چیز ہے جوعقل کو ڈھانپ دے،خواہ وہ تر ہویا خشک، کھانے سے تعلق رکھتی ہویا يينے ہے۔ ابوسعيد خدري رضي الله عنه بيان كرتے ہيں، رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمايا: ''اللهٔ شراب نوش کی اس وقت تک نماز قبول نہیں کرتا جب تک اس کا پچھ حصہ بھی اس

کے جسم میں رہتا ہے''۔

اورایک روایت ہے۔ '' جو مخص شراب ہے' اللہ اس سے کوئی چیز قبول نہیں کرتا اور جس کواس ہے نشہ ہوجائے تو اس کی حالیس روز کی نماز قبول نہیں ہوتی ،اگر وہ تو بہ کر لے اور پھر پی لے تو الله پرحق ہے کہوہ اس کوجہنم کی پیپ بلائے''۔

اوررسول التُدصلي التُدعليه وسلم نے فر مايا:

'' بچخص شراب چیئے اور نشہ نہ جڑھے تو اللہ اس سے جالیس روز تک اعراض کرتا ہے

نسائی ابن خزیمه ابن حبال محکمه دلائل وبرابین سئے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبه

اور جوشخص شراب ہے اورائے نشہ کڑھ جائے تو اللہ اس سے چالیس روز تک نہ فرض متبول کرتا ہے نہ نفل اگر وہ اس حالت میں فوت ہوجائے تو وہ بت پوجنے والے ی موت مرے گا اوراللہ پرت ہے کہ اے' طینة الخبال' سے پلائے''۔عرض کیا گیا ،اللہ کے رسول!" طیب نہ الے جب ل''کیا چیز ہے؟ آپ نے فرمایا:" جہنمیوں کی پیپ اور خون کا نچوڑ'۔ ①

عبداللہ بن ابی ادفی بیان کرتے ہیں: جو خف عادی شراب نوش کی حالت میں فوت ہوتو وہ لات اورعزی کے بچاری کی موت مرتا ہے، کہا گیا: بتا کیں کیا عادی شراب نوش وہ ہے، جواپی شراب سے ہوش میں نہ آئے۔انہوں نے کہا نہیں، بلکہ اس سے وہ خفص مراد ہے کہ جب بھی

اے شراب میسرآ جائے ،خواہ سالوں کے بعد ہو، وہ اسے پی جائے۔ ذکر کیا گیا ہے کہ جو شخص شراب بیتا، وہ جس وقت شراب بیتا ہے تو وہ اس وقت مومن نہیں ہوتا۔ حضرت ابو ہر یرہ رضی اللہ عنہ، نبی صلی اللہ علیہ وسلم ہے روایت کرتے ہیں، آپ نے فرمایا: ''چور جب چوری کرتا ہے، تو وہ اس وقت مومن نہیں ہوتا، زانی جب زنا کرتا ہے، تو وہ اس وقت زنا کرتا ہے، اس وقت مومن نہیں ہوتا، اور شراب نوش جب شراب نوش کرتا ہے تو وہ اس وقت مومن نہیں ہوتا اور اس کے بعد تو بیش کی جائے گی۔' ©

اور حدیث می*ں ہے*:

'' جو خض زنا کرتا ہے یا شراب بیتا ہے تو اللہ اس سے ایمان کواس طرح نکال لیتا ہے ، جس طرح انسان اپنے سر ہے قیص ا تار تا ہے''۔ ۞

اوراس میں ہے: جو تحض شام کے دقت شراب بیتا ہے تو وہ مبیح کے دقت مشرک ہوجا تا ہے اور جو شخص سے کے دقت اسے بیتا ہے تو وہ شام کے دقت مشرک ہوجا تا ہے۔

ر جو حص سج کے دفت اسے پیتا ہے تو وہ شام کے دفت مشرک ہوجا تا ہے۔ ادر اس میں ہے: نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت ہے کہ آپ نے فر مایا: ''جنت کی خوشبو

پانچ سوسال کی مسافت ہے آ جاتی ہے، کیکن والدین کا نافر مان ،احسان جنلانے والا ،شراب کا

) ابن حبان 🕜 بخار

🕝 مستدرك حاكم

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

كتاب الكبائر كاب الكبائر

عادی اور بت کا بجاری،اس کی خوشبوبھی نہیں یا کیں گئے'۔ 🛈

ابوموی اشعری رضی الله عنه بیان کرتے ہیں ،رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فر مایا: ''عادی شراب نوش، جادو پر یقین رکھنے والا اور قطع رحی کرنے والا جنت میں نہیں جا کیں گے، جوشخص اس حال میں فوت ہو کہ وہ شراب بیتیا ہوتو اللہ اس کو''نہرغوطہ'' سے پلائے گا اور وہ ایبا یانی ہے جوزانیہ عورتوں کی شرم گا ہوں سے جاری ہوتا ہے، جہنمی ان کی شرم گا ہوں ہے اٹھنے والی ہد ہو ہے تکلیف محسوس کریں گئے'۔ 🏵 اوررسول الله صلى الله عليه وسلم في قرمايا:

''اللّٰہ نے مجھے جہانوں کے لیے رحمت اور ہدایت بنا کرمبعوث کیا ہے،آلات موسیقی اور امرجابلیت کوختم کرنے کے لیے مجھے مبعوث کیا ہے۔رب تعالیٰ نے اپنی عزت کی تتم اٹھا کر کہا: میرے بند دں میں سے جو بندہ ایک گھونٹ شراب پیئے گا تو میں اس شکل میں اس کوجہنم کا کھولتا ہوا یا نی بلاؤں گا ،اورمیرے بندوں میں ہے جو بندہ میرےخوف کی وجہ سے اسے چھوڑ دے گا تو میں اے وہی چیز (شراب طہور ) جنت میں بہترین ساتھیوں کے ساتھ پلاؤں گا''۔ ©

جس شخص پرشراب کے بارے میں لعنت کی گئی ،اس کا ذکر ،رسول الله صلی الله علیه وسلم نے

''شراب،اس کے پینے والے،اس کے ساقی ،اس کے بیچنے والے وخریدنے والے، اس کے نچوڑنے والے، رس نکلوانے والے،اس کے اٹھانے (لانے ) والے جس کے لیے لائی گئی اوراس کی قیمت کھانے والے پر لعنت کی گئی''۔ © ابن عباس رضی اللہ عنہما بیان کرتے ہیں، میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو فر ماتے

🛈 طبرانی نے اے الصغیر میں روایت کیا ہے اور بیابو ہر برہ رضی اللہ عندے مروی ہے ،منذری نے اس کے ضعیف ہونے کی طرف اشارہ کیا ہے۔

ابر خبان

 امام احمد نے ابوامامہ کی حدیث علی بن بزید یعنی الالھانی کے طریق سے اسے روایت کیا ہے، اس میں خلاف ہےاورا کثرنے اسے ضعیف قرار دیا ہے۔

🕝 ابوداؤد

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

ہوئے سنان جرئیل علیہ السلام میرے پاس آئے تو انہوں نے کہا:

محمد (صلی الله علیه وسلم )! الله نے شراب، اس کا رس نکالنے والے، نکلوانے والے، بیچنے والے، خریدنے والے، پینے والے، اس کی قیت کھانے والے، لانے والے، جس کے لیے

رت میں ہوت ہوت ہے۔ اس کی طلب کرنے والے پر لعنت کی ہے'۔ ①

جب شراب نوش بیار ہوجائے تو اس کی عیادت کرنے اور اس طرح الے سلام نہ کرنے کے بارے میں عبد اللہ بن عمرو بن عاص رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں:

''جبشرابنوش بيار ہوجا ئيں توان کی عيادت نہ کرؤ'۔

ابن عمر رضی اللّٰدعنہ نے فر مایا:

"شراب نوش كوسلام نه كرو" \_اورآب صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''شراب نوشوں کی ہم نشینی اختیار کروندان کے مریضوں کی عیادت کرواور نہ ہی ان کے جنازوں کے ساتھ جاؤ، کیونکہ شراب نوش روز قیامت اس حال میں آئے گا کہ اس کا چہرہ سیاہ ہوگا، بیاس کی وجہ سے اپنی زبان اپنے سینے کی طرف نکال رہا ہوگا، اس کا لحبرہ ساہ ہوگا، اسے د کیھنے والا ہر مخض اسے ملامت کررہا ہوگا اور اسے پہچان کے گا کہ وہ شراب نوش ہے'۔ ﴿

بعض علاء نے کہا: ان کی عیادت کرنے اور انہیں سلام کرنے سے محض اس لیے منع کیا گیا ہے، کیونکہ شراب نوش فاسق ملعون ہے، اللہ اور اس کے رسول نے اس پر لعنت فر مائی ہے، جیسا کہ پہلے بیان ہو چکا ہے، اللہ نے شراب اور اس کے پینے والے پر لعنت فر مائی ہے۔ اگر اس نے اسے خرید ااور اس کارس نکالا تو وہ دومر تبہ ملعون ہے۔ اور اگر اس نے اپنے علاوہ اسے کسی کو پلایا تو وہ تین مرتبہ ملعون ہے۔ پس اس لیے اس کی عیادت کرنے اور اسے سلام کرنے سے منع فر مایا ہے۔ الا ایہ کہ وہ تو بہ کرلیتا ہے تو اللہ بھی اس کی تو بہ قبول فر مالیتا ہے۔ الا ایہ کہ وہ تو بہ کرلیتا ہے تو اللہ بھی اس کی تو بہ قبول فر مالیتا ہے۔

<sup>🛈</sup> احمد' ابن حبان

ابن جوزی نے اے موضوعات میں ذکر کیا ہے۔ ابن عدی کی سند ہے ابن عمر تک اور کہا: یہ روایت موضوع ہے، اس میں لیٹ اور جعفر بن الحرث ابوداؤدلاً ھیب وابوطیع ضعیف ہیں۔

شراب سے علاج کرنا جائز نہیں:

اس نے اس پرحرام قراردے رکھی ہے'۔ 🛈

شراب کے بارے میں روایت کی گئی متفرق احادیث کا بیان إ

ابوموی رضی الله عنه بیان کرتے ہیں: نبی صلی الله علیه وسلم کے پاس ایک گھڑے میں نبینر لائی گئی جو کہ کھو لنے کی آواز دے رہی تھی ، آپ نے فرمایا:

''اس کواس دیوار پر دے مارو، کیونکہ بیتو اس مخص کامشروب ہے جواللہ اور یوم آخرت پر ایمان نہیں رکھتا''۔

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم نے فر مايا:

''جس شخص کے سینے میں کتاب اللہ کی ایک آیت ہواوروہ اس پرشراب ڈالے (پیے) تو روز قیامت اس آیت کا ہر حرف آئے گا، پس وہ اس کی پیشانی کو پکڑے گا، چس کہ وہ اسے اللہ جارک و تعالیٰ کے سامنے کھڑا کرے گا اور پھروہ اس سے جھٹڑا کرے گا تو وہ مغلوب ہوجائے گا۔ اس شخص کے لیے ہلاکت ہے جس سے قرآن روز قیامت جھٹڑا کرے'۔ اور نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے مروی ہے،''اللہ' دنیا میں جمع ہوکرنشہ آوراشیاء استعالی کرنے والوں کو جہنم میں جمع کرے گا تو وہ ایک دوسرے کے سامنے آپس میں ملامت کریں گے، وہ ایک دوسرے سے کہیں گے: اے فلاں! اللہ تھتے میری طرف سے جزائے خیر عطانہ فرمائے، تو نے دوسرے سے کہیں گے: اے فلاں! اللہ تھتے میری طرف سے جزائے خیر عطانہ فرمائے، تو نے ہی اسے بھے پلایا تھا۔ جواب میں دوسرائھی اسے اس طرح کیے گا۔''

اور نبی صلی الله علیہ وسلم ہے مروی ہے کہ آپ نے فر مایا:

<sup>🛈</sup> بيهقى'ابويعلى

" جس شخص نے دنیا میں شراب بی ، اللہ اسے زہر میلے خطرنا ک سانیوں کا زہر پلائے گا، اور
اس کے پینے سے پہلے ہی اس کے چہرے کا گوشت برتن میں گرجائے گا، پس جب وہ اسے پی
لے گا تو اس کا گوشت اور اس کی جلد گرجائے گی، جس سے جہنمی تکلیف محسوں کریں گے۔ بن لو!
اس کو پینے والا ، اس کا رس نکا لنے والا ، رس نکلوانے والا ، اسے لانے والا ، جس کے لیے لائی
جائے اور اس کی قیمت کھانے والا ، سب اس کے گناہ میں شریک ہیں۔ جب تک تو بہ نہ کریں
اللہ ان کا کوئی فرض قبول کرتا ہے نہ نقل اور نہ ہی جج ، پس اگر وہ تو بہ کرنے سے پہلے فوت
ہوجا کیں تو اللہ پرحق ہے کہ وہ ان کو اس کے ہرگھونٹ کے بدلے میں ، جو انہوں نے و نیا میں پی
ہوجا کیں تو اللہ پرحق ہے کہ وہ ان کو اس کے ہرگھونٹ کے بدلے میں ، جو انہوں نے و نیا میں پی
مرحق ہونے میں اس میں بیا ہے۔ سن لو! ہر نشر آ ور چیز شر اب ہوا ور ہر شر اب حرام ہے '۔
مرحم میں بیا ہے۔ سن لو! ہر نشر آ ور چیز شر اب ہوا ور ہر شر اب حرام ہے '۔
مرحم میں بیا ہیں بیا ہیں بیا ہیں بیا ہیں بیا ہیں بیا ہیں میں مشفیش بھی منظ

ھی جہم کی پیپ بلائے۔ سن لوا ہر نشر آور چیز شراب ہے اور ہر شراب حرام ہے''۔ اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ''ہر نشہ آور چیز شراب ہے''۔اس میں حشیش بھی داخل ہے، جیسا کہ اس بارے میں ان شاء اللہ بات ہوگی۔

اور مروی ہے ''جب شراب نوش بل صراط پر آئیں گے تو عذاب کے دارو نے انہیں نہر خیال کی طرف ایک لیس گے۔ خیال کی طرف ایک لیس گے، تو انہیں ہر جام کے بدلے، جو انہوں نے جام شراب نوش کیا تھا، نہر خیال سے جام پلایا جائے گا، اگر وہ مشروب آسان سے گرایا جائے تو سارے آسان اس کی حرارت ہے جل جائیں، نعوذ باللہ منہا

#### شراب کے بارے میں سلف سے مروی آثار کا بیان:

ابن مسعود رضی الله عند نے فرمایا: جب شراب نوش فوت ہوجائے تو اسے دفن کرو، پھراس کو لکڑی پرسولی چڑھاؤ، پھراس کی قبرا کھاڑو، پس اگرتم اس کا چبرہ قبلہ سے مڑا ہوانہ دیکھوتو ٹھیک ورندا سے سولی برچڑھا ہوا چھوڑ دو۔

نفیل بن عیاض رحمہ اللہ سے روایت ہے کہ وہ اپنے ایک شاگر دکے پاس اس وقت گئے جب اس کی موت کا وقت قریب تھا، تو یہ اسے کلمہ شہادت کی تلقین کرنے گئے، کیکن اس کی زبان سے بیکلمات اوانہیں ہور ہے تھے، انہوں نے بار باراسے پڑھنے کی تلقین کی، تو اس نے کہا: میں اسے نہیں پڑھتا، میں اس سے بیزار ہوں، پس فضیل روتے ہوئے اس کے پاس سے آئے، پھر حتاب الکتائیں انہوں نے مدت کے بعدا سے خواب میں دیکھا کہ اسے آگ کی طرف گھسیٹا جارہا ہے، تو انہوں نے اسے کہا: اے مسکین! تجھ سے معرفت کس وجہ سے چین کی گئی؟ اس نے کہا: استاد تی! مجھے کوئی بیاری تھی، میں کسی طبیب کے پاس گیا تو اس نے مجھے کہا: تم ہرسال ایک بیالہ شراب پی لیا کرو، اگر تم ایسے نہیں کرو گئو چھر تمہاری بیاری نہیں جائے گی، پس میں بطور علاج ہرسال ایک بیالہ شراب پی لیا کرتا تھا! پس بی حال اس کا ہے جو بطور علاج اسے بیتا ہے، تو جو شخص علاج کے علاوہ اسے بیتا ہے، تو جو شخص علاج کے علاوہ اسے بیتا ہے، اس کا کیا حال ہوگا؟

ہم اللہ تعالیٰ سے ہر بلاء کے متعلق عفو وعافیت کا سوال کرتے ہیں کمی تو بہ کرنے والے سے
اس کی تو بہ کا سبب پوچھا گیا تو اس نے کہا: میں قبریں کھودا کرتا تھا، تو میں نے ان میں مردول کو
قبلہ سے ہٹے ہوئے دیکھا، تو میں نے ان کے متعلق ان کے گھر والوں سے پوچھا تو انہوں نے
کہا: وہ دنیا میں شراب پیا کرتے تھے، اور وہ تو بہ کے بغیر فوت ہوگئے۔

کسی صالح فض نے کہا: میرا چھوٹا بچ فوت ہوگیا، جب میں نے اسے دفن کردیا تو میں نے اس کی موت کے بعد اسے خواب میں دیکھا کہ اس کا سرسفید ہو چکا ہے، میں نے کہا: میرے بچ ا میں نے تہہیں دفن کیا تھا، اس وفت تو تم چھوٹے تھے، تو تمہیں کس چیز نے بوڑھا کردیا؟ اس نے کہا: اباجان! میرے بڑوس میں ایک ایسا فخص ہے جود نیا میں شراب پیا کرتا تھا۔ اس کے آنے پر جہتم نے ایک سانس لیا ہے، پس اس کے سانس کی شدت کی وجہ سے ہر بچ کا سرسفید ہوگیا ہے۔ نعوذ باللہ منہا، ہم آخرت میں عذاب کا باعث بننے والی ہر چیز کے بارے میں اللہ تعالی سے عفوہ عافیت کی ورخواست کرتے ہیں، پس بندے پر واجب ہے کہ وہ اس سے پہلے ، اللہ تعالی کے حضور تو بہ کرلے ، کہ اسے موت آئے تو وہ بہت بری حالت پر ہو، جس کے سبا سے جہتم میں ڈال دیا جائے ، نعوذ باللہ منہا

#### فصل

پوست کے پتوں سے بنائی ہوئی حشیش بھی شراب کی طرح حرام ہے۔اس کے پینے والے کو بھی، شراب پینے والے کو بھی، شراب پینے والے کی طرح حدلگائی جائے گی اور بیشراب سے بھی زیادہ ضبیث ہے،اس

لحاظ سے کہ نی<sup>عقل</sup> ومزاج کوخراب کردیتی ہے حتی کہ وہ آ دمی میں مخنث و دبوٹی کی تصلتیں پید**ا** 

کردیتی ہے اوراس کے علاوہ بھی بہت سے فساد وخرابیاں ہیں، جبکہ ایک لحاظ سے شراب زیادہ بری ہے، کیونکہ وہ جھگڑ ہےاور مقاتلے تک پہنچا دیتی ہےاور بید دونوں اللہ تعالیٰ کے ذکر اور نماز

ہےروک دیتی ہیں۔ بعض متاخرین علماء نے اس کی حد کے بارے میں تو قف کیا ہے اور ان کا خیال ہے کہ اگر

کوئی شخص اسے کھالے تو اسے حدلگانے کی بجائے اس پرتعزیر لگائی جائے ،ان کا خیال ہے کہوہ مستی کے بغیر عقل کومتغیر کردیتی ہے اور رہیر بھنگ کی طرح ہے۔علاء متقد مین سے اس بارے میں کوئی کلامنہیں، حالا نکہاس طرح نہیں ہے، بلکہاہے کھانے والوں کونشہ چڑھتا ہے اور وہ شراب نوش کی طرح ، بلکہ اس ہے بھی زیادہ وہ اس کی رغبت رکھتے ہیں،حتی کہوہ اس سے رکٹہیں

سے، اور جب وہ اس کا زیادہ استعال کرتے ہیں تو وہ انہیں اللہ تعالیٰ کے ذکر اور نماز سے روکتی ہے، اور اس کے ساتھ ساتھ اس میں دیوٹیت وتخت ، مزاج وعقل کے بگاڑ کے علاوہ بھی گئی خرابیاں ہیں،لیکن جب وہ جامد ہو، کھائی جاتی ہو، بی نہ جاتی ہوتو پھراس کی نجاست کے بارے

میں علاء کا اختلاف ہے، اس کے تین اقوال ہیں اور بدامام احمد وغیرہ کے مذہب کے مطابق ىبى-

کسی نے کہا: پیشراب مشروب کی طرح نجس ہےاوریہی اعتبار سیجے ہے۔ بعض نے کہا،اس کے خشک ہونے کے باعث نجس نہیں۔ ب-

اور بعض نے کہا: اس کے جامداوراس کے مائع مونے کے اعتبار سے اس میں فرق کیا -3

بہر حال بیلفظا ومعنا نشہ آورشراب کے زمرے میں داخل ہے، جسے اللہ اور اس کے رسول

نے حرام قرار دیا ہے۔ ابوموی رضی الله عنه نے کہا: الله کے رسول! ہمیں ان دوشر ابول 'جیع' 'اور' مزر' کے متعلق

بنائیں، جوہم یمن میں بنایا کرتے تھے۔ ' دبیع'' پہ شہد سے نبیذ بنائی جاتی تھی حتی کہوہ سخت ہو جاتی ۔

محکمہ دلائل وہراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

+ كتاب الكبائر كي الكب

"مزر" يكى اورجو سے نبيذ بنائى جاتى تقى حتى كەربىھى تخت ہوجاتى -

راوى بيان كرتے بيں، رسول الله عليه وسلم كوجوامع الكلم عطاكيے گئے تھے۔ آپ صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

"برنشه آور چیز حرام ہے'۔

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''جس چیز کی کثیر مقدارنشہ جڑھادے تواس کی قلیل مقدار بھی حرام ہے''۔

آپ سلی الله علیه وسلم نے اس کے ماکول یا مشروب ہونے کی بنا پر سمی میں فرق نہیں کیا ،
کیونکہ بھی شراب کے ساتھ آٹا گوندھ کرروٹی بھی بنائی جاتی ہے اور بھی اس مشیش کو پانی میں حل
کرکے پی لیا جاتا ہے۔ اور شراب پی اور کھائی جاتی ہے اور حشیش پی اور کھائی جاتی ہے۔ علاء
نے اس کا ذکر نہیں کیا ، کیونکہ گذشتہ سلف کے عہد میں یہ موجود نہیں تھی۔ یہ تو تا تا ریوں کے بلاد
اسلام کی طرف آنے پر وجود میں آئی ہے۔ اس کے وصف کے بارے میں ایک شعر کہا گیا ہے:
فسل علی الشقی مصیبت ان

"لى اسے حلال سمجھ كر كھانے والا ادرائے كاشت كرنے والے بدنصيب پر بيدود مصيبتيں ہں"۔

الله كاتم ابلس كوجس قدر حشيش سے خوشی نصیب ہوئی ،اس قدر وہ پہلے بھی خوش نہیں ہوا، كونكه اس نقدر وہ پہلے بھی خوش نہیں ہوا، كونكه اس نفوس خسيسه كے ليے مزين كرديا، تو انہوں نے اسے حلال اور ارزال سمجھا۔
قل لمن يأكمل الحشيشة جهلاً عشمت في أكملها بناقب عيشمه قيمة المسرء جوهر فلماذا ياأخا الجهل بعته بحشيشه

'' جو شخص جہالت کی بنا پر حشیش کھا تا ہے، اسے کہو، تم نے اسے کھا کر بہت تہیج زندگی گزاری۔''

'' آدمی کی قیت توجو ہرہے، پس اے بھائی! تم نے اسے حشیش کے بدلہ میں کیوں پیجو ما''۔

#### دكايت:

عبداللہ الملک بن مروان سے روایت ہے کہ ایک نوجوان روتا ہوا رنجیدہ حالت میں اس کے پاس آیا تو اس نے کہا: امیر المونین! میں نے ایک بہت بڑے گناہ کا ارتکاب کیا ہے، کیا میرے لیے تو بہ کی کوئی صورت ہے؟ اس نے پوچھا: تمہارا گناہ کیا ہے؟ اس نے کہا: میرا گناہ بہت بڑاہے، اس نے کہا: جوبھی ہو، پستم اللہ تعالیٰ کے حضور تو بہ کرو، کیونکہ وہ اپنے بندوں کی

> تو بہ قبول کرتا اور گناہوں سے درگز رکرتا ہے۔ این مند میں

اس نے بتایا امیرالمونین! میں قبریں کھودا کرتا تھا اور میں اس میں بہت عجیب معاملات دکھتا تھا۔ اس نے پوچھا ہم نے کیا دیکھا؟ اس نے بتایا امیرالمونین! ایک رات میں نے قبر کھودی ، تو میں نے صاحب قبر کودیکھا کہ اس کا چرہ قبلہ ہے موڑ دیا گیا ہے ، پس میں اس سے ذرگیا ، اور میں نے وہاں سے نکلنے کا ارادہ کیا تو قبر میں سے کسی نے کہا: مردے سے نہیں پوچھتا کہ اس کا چرہ قبلے سے کیوں پھیر دیا گیا ہے؟ اس نے بتایا کہ اس کا چرہ قبلے سے کیوں پھیر دیا گیا ہے؟ اس نے بتایا کہ دینماز کو ہلکا جانتا تھا ، اسے اہمیت نہیں دیا کرتا تھا۔ یہ اس جے کی مزاہے۔ اسے ذبخیروں سے بندھ دیا گیا ہے اور اس کی گردن میں طوق ہیں۔ میں تو اس سے ڈرگیا اور وہاں سے نکلنے لگا تو کئی بچھے کہ دہا ہے جم اس سے اس کے مل کے بارے میں نہیں پوچھتے کہ اسے عذا اس کیوں دیا جارہا ہے؟ میں نے کہا: کیوں؟ اس نے بتایا: شخص دنیا میں شراب پیا کرتا تھا اور بی تو بہ کے بغیر فرت ہوگیا۔

امیر المونین! میں نے تیسری قبر کھودی تو میں صاحب قبر کو دیکھتا ہوں کہ اسے زمین کے ساتھ آگ کی میخوں سے باندھ دیا گیا ہے اور اس کی زبان کو اس کی گدی سے نکال دیا گیا ہے۔
پس میں تو ڈرگیا اور لوٹ آیا اور میں نگلنے لگا تو مجھے آواز دی گئی ہم اس سے اس کے حال کے متعلق نہیں پوچھتے ، کہ اسے کیوں آز ماکش سے دو چار کیا گیا ہے؟ میں نے پوچھا: کیوں؟ اس نے کہا:
پیشا ب سے نہیں بچا کرتا تھا اور لوگوں کے درمیان با تیس پہنچایا کرتا تھا۔ پس بیاس جیسے خص کی سراوجز اے۔

امیر المونین! میں نے چوشی قبر کھودی تو میں نے صاحب قبر کو دیکھا کہ اس پرآگ جوڑک رہی ہے۔ میں اس سے ڈرگیا اور نکلنے کا ارادہ کیا تو کہا گیا: تم اس سے اس کے اور اس کے حال کے متعلق نہیں یوچھتے؟ میں نے کہا: اس کا حال کیا ہے؟ اس نے کہا: یہ نماز کا تارک تھا۔

امیرالمونین! میں نے پانچویں قبر کھودی تو میں نے اسے دیکھا کہ وہ حدنظر تک میت پروسیج
ہے۔اس میں نور پھیلا ہوا ہے، جبکہ میت تخت پرسوئی ہوئی ہے۔اس کا نور چبک رہا ہے اوراس
پرا چھے اچھے کپڑے ہیں۔ میں اس سے بھی خوف زدہ ہوگیا، میں نے باہر نکلنے کا ارادہ کیا تو مجھے
کہا گیا: تم اس سے نہیں پوچھو گے کہ اسے اس اعزاز سے کیوں نوازا گیا ہے؟ میں نے کہا: اس
کیوں نوازا گیا ہے؟ مجھے بتایا گیا: کیونکہ وہ اطاعت گزار نو جوان تھا، اس نے اللہ عز وجل کی
اطاعت دعبادت میں نشو ونمایائی اور پروان چڑھا۔

عبدالملک نے اس وقت کہا: اس میں گناہ گاروں کے لیے عبرت اور اطاعت گزاروں کے لیے عبرت اور اطاعت کی طرف لیے بشارت ہے۔ پس ان برائیوں میں مبتلا شخص پر واجب ہے کہ وہ تو بہ اور اطاعت کی طرف جلدی کرے۔

اللہ ہم کوادر آپ کواطاعت گزاروں میں سے بنائے اور ہمیں افعال فاسقین سے بچائے، (آمین) کیونکہ وہ تخی داتا فیاض ہے۔

\$ \$ \$

#### (۲۰) جوا

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ يَا يُهَا الَّذِيْنَ امَنُوْ آ اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَالْانْصَابُ وَالْازْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطُنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ٥ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطُنُ اَنْ يُوْفَعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغُضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمُ عَنْ ذِكْرِ اللهِ وَعَنِ الصَّلُوةِ فَهَلُ اَنْتُمْ مُّنْتَهُونَ ٥ ﴾ (المائدة: ٩٠-٩١)

''اے ایمان والو! شراب، جوا، بت پوجنا اور پانے پھینکنا بلاشیدنا پاک شیطانی کام بیں ۔ پس ان سے تم اجتناب کرو، تا کہ تہمیں فلاح حاصل ہو، شیطان تو یہی چاہتا ہے کہ شراب اور جوئے کے ذریعے سے تمہارے درمیان دشمنی اور بغض ڈلوا دے اور اللہ کے ذکر اور نماز سے تمہیں روکے، تو کیا اب بھی تم (ان برائیوں سے) بازنہیں یہ ۔،،

''لميسر''اس سے مراد جوا ہے،خواہ وہ جس بھی نوع سے تعلق رکھتا ہو، چوسر ہویا شطرنج یا 'نگینوں کے ذریعے ہویا نرد (کھیل) کا نگینہ،مہرہ یا اخروٹ یا انڈے یا کنگریاں یااس کے علاوہ کوئی اور بیسب لوگوں کا مال باطل طریقے سے کھانے کے زمرے میں آتا ہے۔جس سے اللہ نے اپنے فرمان سے منع فرمایا ہے:

﴿ وَلَا تَأْكُلُواۤ ٱمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ. ﴾ (البقرة: ١٨٨)

"أورآبي مين ناحق أيك دوسركا مال نه كهاؤ"-

اور نبی صلی الله علیه وسلم کے فرمان ہے بھی اس کی ممانعت ثابت ہے، آپ نے فرمایا:

'' بے شک جولوگ اللہ کے مال میں ناحق مشغول ہوتے ہیں تو ان کے لیے روز قیامت جہنم کی آگ ہے'۔ ①
اوررسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا:

🛈 بخاری

'' جو مخص اپنے ساتھی سے کہے: آؤ میں تمہارے ساتھ جوا کھیلوں تو اسے صدقہ کرنا

عاہیے'۔ 🛈

جب محض اتنا کہددینا کہ آؤ میرے ساتھ جوا کھیلو کفارہ یا صدقہ کو واجب کردیتا ہے تو جوا کھیلنے کے بارے میں آپ کا کیا خیال ہے؟ ۔

#### فصل

علماء نے چوسراور شطرنج کے بارے میں اختلاف کی حرمت پر اتفاق کیا ہے۔ کیونکہ رسول اللّه صلی اللّه علیہ وکلم سے سجح ثابت ہے کہ آپ نے فرمایا:

''جو شخص نردشیر (چوسر ) کھیلتا ہے تو گویا وہ اپنا ہاتھ خزیر کے گوشت اور اس کے خون سے رنگین کرتا ہے''۔ ①

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

'' جس فخص نے چوسر کھیلی تو اس نے اللہ اور اس کے رسول کی نا فر مانی کی''۔ ﴿ ابن عمر رضی اللہ عنہ نے فر مایا: چوسر کھیلنا جوا ہے اور بیا ایسے ہی جیسے خزیر کی چربی کا تیل لگانا

۔

فرمایا: جہاں تک شطرنج کا تعلق ہے تو اکثر علماء نے اس کے کھیلنے کو حرام قرار دیا ہے، خواہ وہ شرط کے ساتھ ہویا شرط لگانے کے بغیر ہو، دہاشرط لگا کر کھیلٹا تو وہ بلاخلاف حرام ہے۔ صرف اس صورت میں کلام ہے جب وہ شرط کے بغیر ہو، لیکن اکثر علماء کے نزدیک وہ بھی جوا ہے اور حرام ہے۔ امام شافتی سے ایک روایت میں اس کی اباحت بیان کی گئی ہے، بشرطیکہ جب وہ خلوت میں ہواوروہ کی واجب اور نماز کو وقت پر پڑھنے سے عافل نہ کردے، امام نووی سے شطرنج کھیلنے کے ہواوروہ کی واجب اور نماز کو وقت پر پڑھنے سے عافل نہ کردے، امام نووی سے شطرنج کھیلنے کے بارے میں پوچھا گیا، کیا وہ حرام ہے یا جائز؟ تو آپ نے جواب دیا: وہ اکثر اہل علم کے نزدیک حرام ہے۔ آپ سے سے بھی پوچھا گیا، شطرنج کھیلنا جائز ہے یا نہیں، کیا اسے کھیلنے والا گناہ گار ہوتا

<sup>🛈</sup> بخاری (۸۲۰) مسلم (۱۹٤۷)

<sup>🕜</sup> مسلم 💮 مالك ابه داؤد

ہے یانہیں؟ آپ نے جواب دیا: اگر اسے کھیلتے ہوئے نماز اپنے وقت سے فوت ہوجائے یا وہ کسی عوض یعنی شرط لگا کر کھیلی جائے تو وہ حرام ہے، بدیگر صورت امام شافعیؒ کے نز دیک مکر وہ اور دیگر کے نز دیک حرام ہے۔ پھرامام نو دی نے اسے اپنے فتاوی میں ذکر کیا ہے اور اکثر جواس کی تحریم کی دلیل لیتے ہیں وہ اللہ تعالیٰ کا یہ فرمان ہے:

﴿ حُرِّمَتُ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْحِنْزِيْرِ وَمَاۤ أَهِلَّ لِعَيْرِ اللهِ بِهِ وَ الْمُنْحَدِيقَةُ وَ الْمَنْحَدِيقَةُ وَ النَّطِيْحَةُ وَمَاۤ أَكُلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا أَكُنَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكِيتُهُ قَد وَمَا ذُبِحَ عَلَى النَّصُبِ وَ أَنْ تَسْتَقُسِمُوا بِالْأَزُلَامِ . ﴾ مَاذَكَيْتُمْ قَد وَمَا ذُبِحَ عَلَى النَّصُبِ وَ أَنْ تَسْتَقُسِمُوا بِالْأَزُلَامِ . ﴾ (المائدة: ٣/٥)

''تم پرحرام کردیا گیا ہے، مردار،خون،خزیرکا گوشت اور وہ جانور جواللہ کے سواکس اور کے لیے نامزدکردیا گیا ہواور وہ جو گلا گھٹنے سے مرگیا، اور جو چوٹ سے مراہو، جو اوپر سے گرکر مرجائے، جوکس جانور کے سینگ مارنے سے مرجائے، وہ جے درندوں نے بچاڑ کھایا ہو، گروہ جسے تم ذرج کرلو، اور وہ جانور جوکسی تھان پر ذرج کیا جائے اور یہ بات کہتم تیروں کے پانسول سے تقسیم کرو۔''

وکیج بن جراح اورسفیان نے فر مایا:اس سے مراد شطرنج ہے۔

علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ نے فر مایا: شطرنج ، عجمیوں کا جوا ہے، آپ رضی اللہ عنہ ایسے لوگوں کے پاس سے گزرے جو شطرنج کھیل رہے تھے، تو انہوں نے فر مایا: یہ کیا مورتیاں ہیں، جن پرتم اعتکاف کیے بیٹھے ہو؟ یہ کہتم میں ہے کسی کا انگارے کو پکڑلینا حتی کہ وہ بھسم ہوجائے، اس کے لیےاسے ہاتھ لگانے سے بہتر ہےاور پھرفر مایا:

الله کی قتم اِتمہاری تخلیق کا مقصد ،اس کے علاوہ کچھاور ہے ،اور آپ رضی اللہ عنہ نے فر مایا: شطرنج کھیلنے والاسب سے جھوٹا انسان ہے ،تم میں سے کوئی (کھیل کے دوران) کہتا ہے ، میں نے قبل کردیا ، حالا نکہ اس نے قبل نہیں کیا اور وہ کہتا ہے ، وہ مارا گیا ، حالا نکہ وہ مرانہیں ہوتا۔ ابوموی اشعری رضی اللہ عنہ نے فر مایا: گناہ گار شخص ہی شطرنج کھیلا ہے ، اسحاق بن راہو یہ سے کہا گیا : کیا آپ شطرنج میں کوئی برائی محسوس کرتے ہیں؟ انہوں نے فر مایا: ساری برائی ہی حراب الكبائر الكبائر الكبائر الم المؤرد ( سرحدول والي ، بارڈروالي ) توجنگ كے ليے اللہ اللہ على اللہ اللہ فور ( سرحدول والي ، بارڈروالي ) توجنگ كے ليے اللہ كھيلتے ہيں ، انہول نے فرمایا: وواہل تغور ، اہل فجور ( سناہ گار ) ہیں۔

محمہ بن کعب القرظی سے شطرنج کھیلنے کے بارے میں پوچھا گیا تو انہوں نے فر مایا: اس میں جو کم تر (گناہ یا سزا) ہے، وہ یہ ہے کہ شطرنج کھیلنے والا قیامت کے دن اصحاب باطل کے ساتھ پیش کیا جائے گایا اُٹھایا جائے گا۔

ابن عمر رضی اللہ عنہ سے شطر نج کے بارے میں پوچھا گیا ، تو انہوں نے فرمایا نیہ چوسر سے بھی بدتر ہے اور اس کی تحریم کے متعلق بات ہو چک ہے۔ امام مالک بن انس ؓ سے شطر نج کے بارے میں پوچھا گیا تو انہوں نے فرمایا شطر نج ، چوسر کی قتم ہے۔

ابن عباس والمست جمیں یہ بات بینجی ہے کہ وہ ایک میٹیم کے مال کے وارث بے تو انہوں نے میٹیم کے مال کے وارث بے تو انہوں نے میٹیم کے والد کے ترکہ میں اسے پایا تو انہوں نے اسے جلادیا، اگر اسکا کھیلنا حلال ہوتا تو آپ اسکے مال بیٹیم ہونے کی وجہ سے اس کے جلانے کو جائز قرار نہ دیتے ،لیکن جب اس کا کھیلنا حرام ہوا تو اسے جلادیا، پس یونس شراب سے ہے کہ جب وہ مال بیٹیم میں پائی جائے تو اس کا گرادینا، بہادینا واجب ہوجا تا ہے۔ اس طرح شطرنج ہے اور یہ جرالاً مہ (ابن عباس واللہ) کا فد جب بہادینا وہ تو ملعونہ ہے۔ اس طرخ کھیلئے کے بارے میں کیا فرماتے ہیں؟ انہوں نے فرمایا: وہ تو ملعونہ ہے۔

ابو بكراثرم نے واثلہ بن اسقع كى سند سے رسول الله صلى الله عليه وسلم سے اپنى جامع ميں روايت كيا ،آپ نے فرمايا: الله ہر روز تين سوسائھ مرتبہ اپنى مخلوق كى طرف ويكھتا ہے، ليكن صاحب شاہ ليمنى شطرنج كھيلنے والے كے ليے اس ميں كوئى حصة نہيں ، كيونكہ وہ (كھيل كے دوران كئى مرتبہ) كہتا ہے: شاہ (بادشاہ) فوت ہوگيا۔

ابو بكرآ جرى نے اپنی اسناد سے ابو ہر پرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: '' جب تم ان تیروں کے پانسوں' چوس' شطرنج اور بے مقصد کھیل کھیلنے والوں کے پاس سے گزروتو انہیں سلام نہ کرو، کیونکہ جب وہ جمع ہوتے ہیں اور اس پر جھکتے ہیں تو شیطان اپنی لا وَلشکر کے ساتھ ان کے پاس آتا ہے اور انہیں گھیر لیتا ہے۔ جب بھی ان میں سے کوئی

جاتا ہے، وہ اس سے اپنی نگاہ ہٹاتا ہے توشیطان اپنائشکر کے ساتھ اسے گھونسا مارتا ہے، پس وہ کھیلتے رہتے ہیں۔ وہ کھیلتے رہتے ہیں۔ وہ اس میں سے کھاتے ہیں، جو کسی مردار پر جمع ہوتے ہیں۔ وہ اس میں سے کھاتے ہیں، جتی کدان کے پیٹ بھر جاتے ہیں، پھر وہ بھر جاتے ہیں کیونکہ وہ اس کھیل میں جھوٹ بولتے ہیں، کہتے ہیں شاہ (باوشاہ) مرگیا''۔

''روز قیامت صاحب شاہ لیعنی صاحب شطرنج کوسب لوگوں سے زیاوہ سخت عذاب دیا جائے گا، کیا آپ اسٹنیں دیکھتے ہیں، وہ کہتا ہے: میں نے اسٹیل کردیا،اللہ کی قتم!وہ مرگیا، اللہ کی قتم اس نے جموث باندھا، دراں اللہ کی قتم اس نے جموث باندھا،'۔ ①

عجابہ ؓ نے بتایا جو بھی میت فوت ہوتی ہے تو اس کے ہم نشین ، جن سے وہ ہم نشینی رکھا کرتا تھا، اس کی موت کا تھا، اس کے لیے تمثیل بنائے جا کیں گے، پس ایک شخص جو کہ شطر نج کھیلا کرتا تھا، اس کی موت کا وقت قریب آیا تو اسے کہا گیا: کہو: لا الدالا اللہ' تو اس نے کہا: تمہارا شاہ پھر مرگیا، پس وہ چیز اس کی زبان پرغالب آگئ، جو اس کی زندگی میں کھیل کے دوران اس کا معمول تھی، پس کلمہ اضلاص کے عوض اسے وہ کلمہ مل گیا: تیرا شاہ ۔ اور بیجسیا کہ ایک دوسرے انسان کے بارے میں آیا ہے کہ وہ شراب نوشوں کا ہم نشین تھا، پس جب اس کی موت کا وقت آیا تو ایک انسان اسے کلمہ شہادت کی تلقین کرنے کے لیے اس کے پاس آیا، تو وہ (شراب نوش) اسے کہتا ہے: خود پواور شہادت کی تلقین کرنے کے لیے اس کے پاس آیا، تو وہ (شراب نوش) اسے کہتا ہے: خود پواور مجھے پلاؤ کو پھروہ اس حالت پر فوت ہوگیا۔ ''لاحول ولاقو قالا باللہ العلی العظیم'' جیسا کہ حدیث میں مروی ہے:

"انسان نے جس حالت پر زندگی بسرکی ہووہ اس پر وفات پاتا ہے اور وہ جس حالت پر وفات پاتا ہے اور وہ جس حالت پر وفات پاتا ہے، اے اس حالت پر اٹھایا جائے گا"۔ ہم اللہ احسان کرنے والے سے بیاس کے فضل کے ذریعے درخواست کرتے ہیں کہ وہ ہمیں مسلمان کی حالت ہیں وفات دے نہ کہ (دین کو) بدلنے والے تبدیلی کرنے والے، گمراہ ہونے والے اور کج روی اختیار کرنے والے، میراہ ہونے والے اور کج روی اختیار کرنے والے، میراہ ہونے والے اور کج روی اختیار کرنے والے، میراہ ہونے والے اور کج روی اختیار کرنے والے، میراہ ہونے والے اور کج روی اختیار کرنے والے میراہ ہونے والے اور کا دو تا اور کے دو تا والے میراہ ہونے والے میرا

① منذری نے ترغیب میں بیر کہا: شطرنج کا ذکر احادیث میں وارو ہے، میں ان کی اساد کے صحیح اور حسن ہونے کے بارے میں نہیں جانتا۔

## (۲۱) پاک دامن عورتوں پرزنا کی تہمت لگانے کی ممانعت:

الله تعالى نے أ

﴿إِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنِٰتِ الْعُفِلْتِ الْمُؤْمِنِٰتِ لُعِنُوْ ا فِي الدُّنْيَا وَالْاَحِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ٥ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ الْسِنَتُهُمْ وَ آيْدِيْهِمْ وَ

اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَغُمَلُونَ. ﴾ (النور: ٢٣/٢٣ـ ٢٣)

'' وہ لوگ جو پاک دامن بھولی بھالی ایمان دارعورتوں پر زنا کی تہمت لگاتے ہیں،ان پر دنیا وآخرت دونوں میں لعنت ہوگی،اورانہیں بڑاعذاب ہوگا،جس دن ان کی زبانیں،ان کے ہاتھ

اوران کے پاؤں اُن کےخلاف ان کے اعمال کی گواہی دیں گئے'۔

اورالله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَاتُوا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجُلِدُوْهُمْ ثَمْنِيْنَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً ابَدًا وَ اُولِيْكَ هُمُ الْفُسِقُوْنَ٥﴾ (النور: ٣/٢٣)

''اوروہ لوگ جو پاک دامن عورتوں پرتہمت لگاتے ہیں ، پھر چار گواہ پیش نہ کر سکیں تو ان کو اس اس کوڑے لگا ؤ اور ( اس کے بعد ) بھی ان کی شہادت قبول نہ کرو، اور بیہ لوگ فاسق و بدکر دار ہیں''۔

اللہ تعالیٰ نے آیت میں بیان فر مایا ہے کہ جوشخص کسی پاک دامن ،آ زادعفت دارعورت پر زنا اور فاحشہ ہونے کا بہتان لگائے تو وہ دنیا وآخرت دونوں میں ملعون ہے اوراس کے لیے بڑا مذا ور ماہ مدن نامیں اس مراسی کو میں کی مدر میں اس کی جدیدا مار میں ماس کی گھڑا ہی قبدا نہیں

عذاب ہےاورد نیامیں اس پراسی کوڑوں کی حد ہے،اوراگر چہوہ عادل ہو،اس کی گواہی قبول نہیں کے سیار سے

کی جائے گی۔ رسول اللّه صلی اللّه علیہ وسلم نے فر مایا:

''سات مہلکات سے بچو''اور آپ نے ان میں پاک دامن، بھولی بھالی مومن عورتوں پر

تبت نگانے کوبھی شار کیا۔ اور'' قذف' یہ ہے کہ کوئی شخص کسی اجنبی آزاد پاک دامن مسلمان

الکہائر کتاب الکہائر کے بہ اسکارہ ایا اے بدکارہ! یادہ اس کے خاوند ہے کہے : بدکارہ کے خاوند ہے کہے : بدکارہ کے خاوند یا اس کے خاوند ہے کہے : زانیہ کے خاوند یا اس کی بیٹی ہے کہے : زانیہ کی خاوند یا اس کی بیٹی ہے کہے : زانیہ کی خاوند یا کوئی آدمی یا کوئی عورت کی بیٹی! یابدکارہ کی بیٹی! یونکہ ''فجہ'' زانیہ ہے عبارت ہے ، پس جب کوئی آدمی یا کوئی عورت کی مرد یا کسی عورت ہے کہے ، جس طرح اس نے کسی آدمی ہے کہا: اے زانی! یا وہ کسی آزاد بچ ہے : یاعلق! یاا ہے منکوح! تو ایسے خص پراس کوڑوں کی حدواجب ہوجائے گی۔الا یہ کہوہ اس پر'' بینہ'' بیش کر سکے اور'' بینہ'' جیسا کہ اللہ تعالیٰ نے فر مایا: چارگواہ جواس کے اس عورت یا کہ اس مرد پر بہتان لگانے کے بارے بیس اس کی تصدیق کریں ، پس اگروہ دلیل پیش نہ کر سکے تو اس مورت ، جس پراس نے تہمت لگائی ہے یا اس آدمی ، جس پراس نے تہمت لگائی ہے کے مطالے پر ،اس ( تہمت لگائی ہے یا اس آدمی ، جس پراس نے تہمت لگائی ہے کے مطالے پر ،اس ( تہمت لگائی والے ) محض پراسی کوڑے لگائی اپنی لونڈ می پر تہمت لگائی کہا اے کہا: اے زانی! یا پنی لونڈ می پر تہمت لگائی کہا ہے کہا: اے زانی! یا پنی لونڈ می پر تہمت لگائی کہا ہے گہا: اے زانی! یا پنی لونڈ می سے کہا: اے زانی! یا اس کے معلی اللہ کا اس کے خرمایا:

''جو خص اپنے مملوک پر زنا کی تہت لگائے اور اگر وہ ویبانہ ہوجیسا کہ اس نے کہاہے، تو روز قیامت اس پر حد قائم کی جائے گی''۔ ①

بہت سے جائل لوگ اس قتم کے فش گلام میں ببتلا ہیں جود نیا وآخرت میں ان کے لیے عقوبت کا باعث ہے، اس لیے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے ثابت ہے کہ آپ نے فرمایا:

'' بے شک آ دمی کوئی ایسا کلمہ بولتا ہے، جس کے انجام سے وہ واقف نہیں ہوتا، لیکن وہ اسکی وجہ سے جہنم میں اس قدر دور جاگرے گا جتنا مشرق اور مغرب میں بعد ہے۔' ﴿

معاذ بن جبل رضی اللہ عنہ نے آپ سے عرض کیا ، اللہ کے رسول! ہم جو بات چیت کرتے ہیں، اس پر ہمارا مواخذہ ہوگا؟ تو آپ نے فرمایا:''معاذ! تیری ماں تجھے گم پائے، بھلا لوگوں کو چروں کے بل جہنم میں کون می باتیں ڈالیس گی، یہی زبان سے نکلی ہوئی باتیں'۔

اور حدیث میں ہے: ''جو مخص اللہ اور یوم آخرت پر ایمان رکھتا ہوتو اسے چاہیے کہ وہ

🛈 بخاری (۲۸۵۸) مسلم (۱۶۶۰) 🔻 بخاری ٔ مسلم

+ كتاب الكبائر كتاب الكبائر

خیرو بھلائی کی بات کرے یاوہ خاموش رہے''۔ 🛈

الله تبارك وتعالى في اپني كتاب عزيز ميس فرمايا:

﴿ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ٥ ﴾ (ق: ١٨)

''وہ کوئی لفظ بھی منہ سے نہیں نکالنے پاتے مگر محافظ ( فرشتہ اسے ضبط تحریر میں لانے کے لیے اس کے پاس تیار رہتا ہے''۔

عقبہ بن عامر رضی الله عند نے عرض کیا ، الله کے رسول! نجات کیا ہے؟ آپ نے فر مایا:

''اپنی زبان پر قابور کھ، تیرا گھر تیرے لیے کافی ہونا چاہیے اورا پی خطاوں پر رویا کر، کیونکہ بخت دل شخص تمام لوگوں سے زیادہ اللہ سے دور ہوتا ہے''۔ ﴿

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''اللّٰدَّے ہاں بخش گواور بدکلام مخص تمام لوگوں سے زیادہ مبغوض وناپسند ہے''۔ اللّٰہ تعالٰی اپنے احسان و کرم سے ہمیں اور تمہیں ہماری زبانوں کے شر سے محفوظ رکھے،

کیونکہ وہ بخی داتا فیاض ہے۔ (ا

☆☆☆

ا بخاری مسلم

ابوداؤد ترمذی

مؤلف نے ''الصغری'' میں فرمایا: جو فض، ام المؤمنین عائشہ رضی اللہ عنہا پر ، ان کی آسان ہے براءت
 نازل ہونے کے بعد بھی، بہتان لگائے تو وہ قرآن کو جیٹلانے والا کا فرہے اور اسے حالت کفر میں قبل کرویا

### (۲۲) مال غنيمت ميں خيانت كرنا

بیت المال اور زکا ق سے خیانت کرنا کمیره گناه ہے الله تعالی نے فرمایا: ﴿ إِنَّ اللَّهُ لَا يُعِبُّ الْحَاتِنِيْنَ ٥﴾ (الانفال: ٥٨/٨) ''بِشك الله خیانت كرنے والوں كو پسندنہيں كرتا''۔

اورالله تعالى في فرمايا:

﴿ وَمَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنُ يَنَّغُلَ وَمَنْ يَنْغُلُلْ يَانْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيْمَةِ. ﴾ (آل عمران: ١٦١/٣)

"اور کسی نبی کے شایان شان نہیں کہ وہ (کسی طرح کی) خیانت کرے اور جو خیانت کرے گا، قیامت کے دن اپنی خیانت لا حاضر کرے گا، آ۔

ابو ہریرہ رضی اللّٰدعنہ بیان کرتے ہیں ،رسول اللّٰەصلی اللّٰدعلیہ وسلم ایک روز ہمیں خطبہ ارشاد فر مانے کے لیے کھڑے ہوئے تو خیانت کا ذکر فر مایا تو آپ نے اس کے معاملے کو بڑا تھین قرار دیتے ہوئے فرمایا: ''میںتم میں سے کسی کواس حال میں نہ یا وَں کہ وہ روز قیامت آئے تو اس کی گردن پر اونٹ سوار ہواور وہ آ واز نکال رہا ہو، پھر پیخف کہے؛ اللہ کے رسول! میری مدد فر ما ئیں، تو میں کہوں گا: میں تمہارے متعلق اللہ ہے کسی چیز کا اختیار نہیں رکھتا، میں نے تمہیں (مکمل دین ) پہنچا دیا تھا، میںتم میں ہے کسی کواس حال میں نہ یا وُں کہوہ قیامت کے روز آئے تو اس کی گردن پر گھوڑا سوار ہواوروہ ہنہنا رہا ہو، تو وہ خص کہے ، اللہ کے رسول! میری مدد فر مائیں، تو میں کہوں گا: میں تمہارے لیے اللہ کے ہاں کسی چیز کا بھی اختیار نہیں رکھتا، میں نے تو بہنچا دیا تھا، میںتم ہے کسی کواس حال میں نہ پاؤں کہوہ قیامت کے دن اس حال میں آئے کہ اس کی گردن پر بکری ہواور وہ ممیا رہی ہواور وہخض کہے: اللہ کے رسول! میری مددفر مائیں ،تو میں کہوں: میں تمہارے متعلق اللہ کے ہاں کسی چیز کا بھی اختیار نہیں رکھتا، میں نے تو ( دین ) پہنچا دیا تھا۔ میںتم میں ہے کسی کواس حال میں نہ یا ؤں کہوہ روز قیامت آئے تو اس کی گردن پر کو کی جان ہواور و ہ آواز نکال رہا ہو، تو وہ چخص کہے گا ، اللہ کے رسول! میری مدد فرّ ما کیں ، تو میں کہوں

ہاں کچھ بھی اختیار نہیں رکھتا، میں نے تو پہنچا دیا تھا۔ میں تم میں سے کسی کواس حال میں نہ پاؤں کہوہ دوروز قیامت آئے تواس کی گردن پر سونا یا جا ندی اوروہ شخص کہے: اللہ کے رسول!میری مدد فرمائیں ، تو میں کہوں: میں تمہارے لیے اللہ کے ہاں کسی چیز کا اختیار نہیں رکھتا، میں نے تو

( دین ) پہنچادیا تھا۔''

پس جوشخص مال غنیمت کی ان ندکورہ اشیاء میں ہے ،مجاہدین میں تقسیم ہونے سے پہلے، یا امیر کی بیت المال سے اجازت کے بغیریا فقراء کے لیے جمع کی گئ زکوۃ سے کوئی چیز بھی حاصل کر لے، تو وہ روز قیامت اس حال میں آئے گا کہ وہ چیز اس کی گردن پر سوار ہوگی' جیسا کہ اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید میں فرمایا ہے:

﴿ وَمَنْ يَكُلُلُ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيلَمَةِ. ﴾ (ال عمران: ١٦١/٣)

''اور جوخیانت کرےگا، قیامت کے دن اپنی خیانت لا حاضر کرےگا''۔

اور نبی صلی الله علیه وسلم کا فرمان بھی ہے کہ:

'' سوئی دھاگے تک ادا کردو اور خیانت سے بچو کیونکہ روز قیامت وہ اپنے خائن کے لیے باعث عار ہوگی''۔

اور نبی صلی الله علیه وسلم کے فر مان کے مطابق ، جب آپ نے ابن تبیه کوصد قد وصول کرنے پر عامل مقرر فر مایا ، اور وہ آئے تو انہوں نے کہا: یہ آپ کے لیے ہے اور یہ مجھے ہدیہ (تخفہ ) دیا گیا ہے ، یہ ن کر نبی صلی الله علیه و سلم منبر پر چڑ ھے اور الله تعالیٰ کی حمد و ثنا بیان کی اور فر مایا: ''الله کی تتم اسم منہ منبر پر چڑ ھے اور الله تعالیٰ کی حمد و ثنا بیان کی اور فر مایا: ''الله کی تتم بیس سے جو شخص کوئی چیز ناحق قبول کرتا ہے ، تو وہ روز قیامت اسے اٹھائے ہوئے آئے گا۔ پس میس تم میس سے کسی آ دمی سے اس حال میس ملاقات نہ کروں کہ وہ اللہ سے ملاقات کرے تو اس فیا یہ وہ نور وہ آواز نکال رہی ہویا گائے اٹھائی ہوئی اور وہ آواز نکال رہی ہویا کہری ہو جو میار ہی ہو، پھر آ پ مُنافی اللہ ایکا میں نے بہنچا کہری ہو جو میار ہی ہو، پھر آ پ مُنافی اللہ ایکا میں نے بہنچا

دیا؟''ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں ، ہم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ خیبر کی طرف روانہ ہوئے ، وہاں ہمیں فتح نصیب ہوئی ، تو ہمیں وہاں مال غنیمت میں سونا ملانہ چاندی، ہمیں اناج غلہ اور کیڑ نے غنیمت میں ملے ، پھر ہم وادی لیعنی وادی قری کی طرف روانہ ہوئے ، اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ ایک غلام تھا جو ہو جزام قبیلہ کے رفاعہ بن بزید بنوضبیب نامی شخص نے آپ کو ہبہ کیا تھا، جب ہم نے وادی میں پڑاؤ ڈالا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا غلام آپ کی سواری کا پالان کھولنے لگا تو اسے ایک تیرلگا جس سے اس کی موت واقع ہوگئی ، تو ہم غلام آپ کی سواری کا پالان کھولنے لگا تو اسے ایک تیرلگا جس سے اس کی موت واقع ہوگئی ، تو ہم

علام آپ ق سواری کا پالان تقویے کا تو اسے آیک بیر رہ ، سے آس ق سوت واس ہوں، نے کہا: اللہ کے رسول!اسے شہادت مبارک ہو، تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: ''ہرگزنہیں ، اللہ کی قتم!''شال جواس نے مال غنیمت سے اس کی تقسیم سے پہلے ہی

چرالی تھی، وہ اس پرآگ بن کر بھڑک رہی ہے''۔ راوی بیان کرتے ہیں ،لوگ تو گھبرا گئے ،ایک آ دمی جوتے کا ایک یا دو تھے لایا (اس نے کہا، خیبر کے دن مجھے ملے تھے ) تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

''ایک تسمہ یادو تھے آگ کے ہیں''۔ 🛈

عبدالله بن عمر ورضی الله عنه بیان کرتے ہیں ،کر کرہ نا می محض رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے سامان پر مامور تھا، جب وہ فوت ہوگیا تو نبی صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا:

''وہ جہنمی ہے''۔ تو صحابہ اس کا حال جاننے کے لیے اس کی طرف چل دیے، انہوں

نے ایک چادرد یکھی، جواس نے خیانت کی تھی۔ 🛈

زید بن خالد جہنمی رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ایک آدمی نے غز وہ خیبر میں خیانت کی تو نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے اس کی نماز جنازہ پڑھنے سے منع فریادیا ،اور فر مایا:''تمہارے اس ساتھی نے اللہ کی راہ میں خیانت کی ہے''۔

راوی بیان کرتے ہیں، جب ہم نے اس کے سامان کی تلاشی لی تو ہم نے اس میں یہود کے گئینوں میں سے ایک مگیند پایا جو صرف دو درہم کے مساوی تھا۔ امام احمد ؓ نے فرمایا: ہمیں معلوم

بخاری (۲۳٤) مسلم (۱۱۵)

۴ بخاری (۳۰۷٤)

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

موسی کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے خائن اورخودکشی کرنے والے کےسوائسی اور کی نماز جناز ہ پڑھنے سیمنع فر ماما ہو۔

اور نی صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا ''صدقات وصول کرنے والے ذمہ داران کو ملنے والے تحا کف خیانت ہیں''۔

اس بات کے متعلق بہت ہی احادیث ہیں ،ان میں سے بعض کا باب ظلم میں بیان ہوگا۔ظلم کی تین اقسام ہیں:

ا۔ باطل طریقے سے مال کھانا۔

ب۔ قتل و مارکٹائی،اعضا تو ڑنے اور زخم لگا کربندوں پڑھلم کرنا۔

ج ۔ گالی گلوچ بعن طعن، برا بھلا کہہ کراور تہمت لگا کر بندوں پرظلم کرنا۔

نبی صلی الله علیه وسلم نے منی میں خطاب کیا تو فرمایا:

''سن لو! تمہاری جانیں ،تمہارے اموال اور تمہاری عزتیں ،تمہارے اس دن ،تمہارے اس مہینے اور تمہارے اس شہر کی حرمت کی طرح ،تم پرحرام ہیں''۔ ①

ہ ہیں۔ ادرآ پ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''الله طہارت کے بغیر نماز قبول کرتا ہے نہ مال خیانت سے صدقہ قبول کرتا ہے''۔ ﴿ الله طہارت کے بغیر نماز قبول کرتا ہے ''۔ ﴿ الله تعالیٰ سے اس کے محبوب اور پیندیدہ اعمال کی درخواست کرتے ہیں ، کیونکہ وہی خی

وا تاہے۔

 $^{2}$ 

<sup>🛈</sup> بخاری (٤٤٠٦) مسلم (١٦٧٩)

<sup>🛈</sup> مسلم (۲۲۶)

#### (۲۳)چوری

الله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقُطَعُواۤ آيِدِيَهُمَا جَزَآءً بِمَا كَسَبَانَكَالًا مِّنَ اللهِ وَاللهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ٥﴾ (المآئدة: ٣٨)

"اور چورمرد ہوتو ، عورت ہوتو ، دونوں کے ہاتھ کاٹ ڈالوان کے اس فعل کے بدلے میں، بیاللّہ کی طرف سے بطور سزاکے ہا اور اللّه غالب حکمت والا ہے '۔

ابن شہاب رحمۃ اللہ نے فرمایا: اُللہ نے لوگوں کے اموال چوری کرنے کی سزا، ہاتھ کا ثنا مقرر فرمائی ہے، اور اللہ چور سے انقام لینے کے بارے میں غالب ہے، اور اس نے چور کا ہاتھ کا شخے کی جوسز امقرر کی ہے، اس میں وہ تکیم ووانا ہے۔

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''زانی جب زنا کرتا ہے تو اس وقت مومن نہیں ہوتا اور چور جب چوری کرتا ہے تو وہ اس وقت مومن نہیں ہوتا ،کیکن تو بہ پیش کی جائے گی۔'' ①

ابن عمر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک ڈھال کی چور پر ،جس کی قیت تین درہم تھی ، ہاتھ کا ٹا۔ ©

عا ئشەرضى اللەعنہابيان كرتى ہيں،رسول اللەصلى اللەعلىيە دسلم ايك چوتھائى ديناراوراس سے اوپر (زائد) قيمت كى چورى پر ہاتھ كاٹ ديا كرتے تھے۔ ۞

ایک روایت میں ہے،رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:'' ڈھال کی قیمت سے کم چوری کیا ہے؟ انہوں نے فرمایا: چوتھائی وینار، اور ایک روایت میں ہے، فرمایا:''چوتھائی وینار کی چوری پر ہاتھ کاٹو اور اگر اس سے کم ہواس پر نہ کاٹو''۔(ان دنوں چوتھائی وینار تین درہم کے برابرتھااور دینار بارہ درہم کا ہے) @

<sup>🛈</sup> بخاری (۲۸۱۰) مسلم (۵۷) 🛡 بخاری و مسلم

٠ بخاري و مسلم الله احمد

حتاب الكبائر كالمجاهر الكبائر الكبائر كالمجاهر الكبائر كالمجاهر الكبائر كالمجاهر الكبائر كالمجاهر الكبائر كالمجاهر المجاهر الكبائر كالمجاهر المجاهر ال

ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں ،رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ''لائٹ ایس جس برلعز میں فر اسٹر براہڑ ہے جس کی تا سریاتو ایس کا اتھ کا بیٹر داروا تا سریاوں تا

"اللہ اس چور پرلعنت فرمائے ، انڈ ہ چوری کرتا ہے ، تو اس کا ہاتھ کا اند دیا جاتا ہے ، اور رس کوری کرتا ہے تو اس کا ہاتھ کا اند دیا جاتا ہے "۔ ﴿ الحمش بیان کرتے ہیں کہ وہ (انڈ ہے ہے) لو ہے کا انڈ ہمراد لیتے تھے ، اور رس کے بارے میں ان کا خیال تھا کہ اس سے مرادوہ رس ہے جس کی قیمت تین درہم کے برابر ہو ۔ عائشہ رضی اللہ عنہا بیان کرتی ہیں ، مخر و می عورت عاریخ سامان لیتی اور پھرا ہے والیس نہیں کرتی تھی (اس کے بعد والے حصہ حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ چوری کیا کرتی تھی ) ، تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کا ہاتھ کا شے کا تھم در مایا۔ اس کے اہل خانہ اسامہ بن زیدرضی اللہ عنہ کے یاس آئے تو انہوں نے اس کے متعلق بات کی ، انہوں (اسامہ)

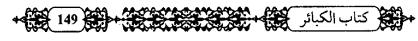
اسامہ بن زیدرضی اللہ عنہ کے پاس آئے تو انہوں نے اس کے مصلی بات کی ، انہوں ( اسامہ ) نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے بات ( سفارش ) کی تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

"اسامہ! میں تہہیں، اللہ تعالیٰ کی حدود میں ہے کی حد کے بارے میں سفارش کرتے ہوئے نہ و کیصوں ' پھر نہ صلی اللہ علیہ وسلم خطبہ ارشاد فرمانے کے لیے کھڑے ہوئے تو فرمایا:
"ای چیز نے تم ہے پہلے لوگوں کو ہلاک کیا، ان کا معمول تھا کہ جب ان میں ہے کوئی شریف (معزز بڑے فاندان والا) چوری کرتا تو وہ اسے چھوڑ دیتے ، اور جب ان میں ہے کوئی ضعیف خض چوری کرتا تو وہ اس کا ہاتھ کا ف دیتے تھے، اس ڈات کی شم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! اگر فاطمہ بنت محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) بھی چوری کرتیں تو میں اس کا ہاتھ کا ف دیتا "۔ آپ پھرمخز ومیہ کا ہاتھ کا ف دیا گیا۔

عبدالرحلٰ بن جریر بیان کرتے ہیں، ہم نے فضالہ بن عبید سے چور کا ہاتھ کا کراس کی گردن میں اٹکانے کے متعلق سوال کیا، کیا بیسنت سے ثابت ہے؟ تو انہوں نے فرمایا، نی صلی الله علیہ وسلم کے پاس ایک چور لایا گیا، اس کا ہاتھ کا ف دیا گیا، پھر آپ نے اس کے متعلق تھم فرمایا تو اس (ہاتھ) کواس کی گردن سے لئکا دیا گیا۔

علماء نے فرماما: چور کی تو بہ تب ہی نفع مند ہوگی کہ اس نے جو چوری کی ہے، وہ مال واپس کرے،اوراگر وہ مفلس ہوتو پھرصا حب مال سے معاف کرائے۔واللہ اعلم

🛈 بخاری (۲۷۸۲) مسلم (۱۲۸۸) 🕏 بخاری (۲۷۸۲) مسلم (۱۲۸۷)



### (۲۴)ۋا كەزنى

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ إِنَّمَا جَزَاؤًا الَّذِيْنَ يُحَارِبُونَ اللّهَ وَ رَسُولُهٌ وَ يَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا اللهَ عَنْ يَسُعُونَ فِي الْآرْضِ فَسَادًا اللهُ عَنْ يَعْدَالُهُ مَ أَنْ يُتُقَتَّلُوْ آ اَوْ يُنْفَوْ آ اَوْ يُنْفَوْ آ مِنَ الْآرُضِ طَ ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي اللَّانْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ٥ ﴾ الأرض ط ذلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي اللَّانْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ٥ ﴾ (المائدة: ٣٣)

''جولوگ اللہ اور اس کے رسول سے جنگ کرتے ہیں اور ملک میں فساد پھیلاتے پھرتے ہیں، ان کی سزا بلاشیہ یہی ہے کہ وہ قتل کر دیے جائیں، یا سولی چڑھا دیے جائیں یا ان کی سزا بلاشیہ یہی ہے کہ وہ قتل کر دیے جائیں یا آئہیں جلا وطن جائیں یا انہیں جلا وطن کر دیا جائے، یہ تو ان کی رسوائی دنیا میں ہوگی اور آخرت میں بھی ان کے لیے بڑا عنداں سے ''

واحدی (صاحب التفاسير المشهوره) (البسيط والوسيط والوجيز، واسباب نزول القران والتجير في شرح اساء الله الحسني) نے فر مايا: الله اور اس كے رسول صلى الله عليه وسلم سے جنگ كرنے سے مراد، ان كى نافر مانى كرنا اور ان كى اطاعت نه كرنا ہے، جو بھى آپ كى نافر مانى كرے، وه آپ كے ساتھ لاائى كرنے والا ہوگا۔

ملک میں فساد پھیلاتے پھرتے ہیں، یعنی قتل، چوری اور لوگوں کے اموال ہتھیانے کا ارتکاب کرتے ہیں، ہروہ فخص جومومنوں کےخلاف اسلحہ اٹھا تا ہے تو وہ اللہ اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم سے جنگ کرنے والا ہے، امام ما لک، اوز اعی اور شافعی رحم ہم اللہ کا بیقول ہے۔ اللہ تعالیٰ کا بیفر مان:

''ییکہ وقتل کرویے جائیں پاسولی چڑھادیے جائیں یاان کے ہاتھ اور پاؤں مخالف طرف سے کاٹ دیئے جائیں یا انہیں جلاوطن کر دیا جائے''۔ والبی (علی بن البی طلحہ)، ابن عباس رضی اللّه عنہما سے روایت کرتے ہیں،''اؤ'''یا'، تخییر کے لیے داخل کیا گیا ہے اور اس کامعنی ابا ت حرار الكبائر على الكبائر على الكبائر على الكبائر على الكبائر على الكبائر الكب

جس شخص نے تل کیا اور مال بھی لوٹ لیا تو اسے تل کیا جائے گا اور اسے سولی چر ھا دیا جائے گا۔ جو شخص مال لوٹ لے، کیکن تل نہ کرے تو اس کا ہاتھ کا ٹا جائے گا، جو تل کرے لیکن اموال پر قبضہ نہ کرے تو اسے تل کیا جائے گا، اور جس نے مسافر کوخوف زدہ کیا، اس نے قل نہیں کیا تو اسے جلاوطن کرویا جائے گا اور بیدام شافعیؒ نے فرمایا: ہرا کیہ اسے جلاوطن کرویا جائے گا اور بیدام شافعیؒ نے فرمایا: ہرا کیہ اپنے فغل ، جرم کی مقدار کے برابر سرایائے گا، پس جس شخص پر قل اور سولی چڑھا نا وونوں واجب ہول تو اسے سولی چڑھا نے ویہ بہول تو اسے سولی چڑھا نے ویہ جہاور اسے تارا جائے گا، اور جس پر سولی چڑھا نے کے اسے تین روز تک سولی پر لفکا دیا ہے گا، پھر اسے اتارا جائے گا، اور جس پر سولی چڑھا نے کے علاوہ محض قبل کرنا واجب ہوتو اسے قبل کیا جائے گا اور اس کو اس کے اہل خانہ کے بہر وکر دیا جائے گا تا کہ وہ اسے دفن کر کئیں اور جس پر قبل کرنے کے علاوہ محض ہاتھ کا ثان واجب ہوتو اس کا دایاں ہاتھ کا نہ دیا جائے گا، پھر اسے داغ دیا جائے گا، پھر اگر وہ دوبارہ چوری کرتے تو اس کا بایاں ہاتھ کاٹ دیا جائے گا، جوری کرتے تو اس کا بایاں ہاتھ کاٹ دیا جائے گا، جبراگر وہ دوبارہ چوری کرتے تو اس کا بایاں ہاتھ کاٹ دیا جائے گا، جبراگر وہ دوبارہ چوری کرتے تو اس کا بایاں ہاتھ کاٹ دیا جائے گا، جبراگر وہ دوبارہ چوری کرتے تو اس کا بایاں ہاتھ کاٹ دیا جائے گا، جبراگر وہ خور کے متعلق فرمایا:

''اگروہ چوری کریے تو اس کا ہاتھ کا ٹو، پھر چوری کرتے تو اس کا پاؤں کا ٹو، پھراگر چوری کرتے تو اس کا ہاتھ کا ٹو، پھراگر چوری کریے تو اس کا پاؤں کا ٹو''۔ ①

کیونکہ ابو بکر اور عمر رضی اللہ عنہ کا بھی یمل ہے اور کسی صحابی نے ان دونوں کی مخالفت نہیں کی اور اس کے بایاں ہونے کی وجہ پرا تفاق ہے، جس نے ہاتھ کا شنے کے بعد پاؤں کا شنے کواختیار کیا ہے، کیونکہ وہ بایاں ہی ہوگا اور "من خلاف" کا یہی معنی ہے۔

"أوينفوا من الأرض"

ابو داؤ د' نسائی\_

حتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب

ابن عباس رضی الله عنهمانے فر مایا: امام اس شخص کے خون کورائیگاں قرار دیتے ہوئے کہے، جوشحص اسے ملے تو وہ اسے قل کر دیے، بیاس کے لیے ہے جواس پر قادر ہو، رہا وہ شخص جواس پر قادر ہو، رہا وہ شخص جواس پر قادر ہو، رہا وہ شخص جواس پر قابض ہوتو وہ اسے جس اور جیل میں قید کر کے جلا وطن کر دے، کیونکہ جب اسے قید کر دیا جائے تو وہ اس ملک سے جلا وطن ہی کی طرح ہے۔ اور شہروں میں آنے جانے سے روک دیا جائے تو وہ اس ملک سے جلا وطن ہی کی طرح ہے۔ ابن قتیمہ نے بعض قید یوں کے جذبات واحساسات کے اظہار کے لیے شعر کہے:

خرجنا من الدنيا و نحن من أهلها فلسنا من الأحياء فيها ولا الموتى إذا جاء نا السجان يومًا لحاجة عجبنا و قلنا جاء هذا من الدنيا

''ہم دنیا سے نکل آئے حالانکہ ہم ای سے تعلق رکھتے ہیں، پس ہم زندوں میں سے ہیں ندم دوں میں سے ہیں ندم دوں میں سے ' ہیں ندم دوں میں سے''جب کسی روز داروغہ جیل ہمارے پاس کسی ضرورت کے تحت آتا ہے، تو ہم تعجب کرتے ہیں اور کہتے ہیں، بید نیاسے آیا ہے''۔

فر ہایا: ڈاکہ زنی ادر مسافروں کوخوف زدہ کرنا ہی بہت بڑا جرم ہے، تو پھراس کی تنگینی کیسی ہوگی جب مال لوٹ لیا جائے یا زخمی کر دیا جائے یا اسے قل کر دیا جائے؟ پس انہوں نے متعدو کبیرہ گنا ہوں کاار تکاب کیا، اس پرمتنز ادبیہ کہ انہوں نے نماز ترک کردی اورلوٹے ہوئے مال کو شراب نوشی ، زنا اورلواطت (اغلام بازی) وغیرہ جیسے کاموں پرخرچ کیا۔

پس ہم اللہ تعالیٰ سے ہر شم کی آ ز مائش و پریشانی ہے، عافیت طلب کرتے ہیں، کیونکہ وہ کئی داتا فیاض بخشنے والارم کرنے والا ہے۔

☆☆☆

# الكبائر الكب

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ إِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهُدِ اللّٰهِ وَآيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولَئِكَ لَاخَلَاقَ لَهُمُ فِي الْاَحِرَةِ وَلَا يُكَلِّـمُهُمُ ٱللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيلَمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۞ (ال عمران: ٧٧)

''بِشک وہ لوگ جواللہ کے عہد اور اپنی قسموں پرقلیل (دنیاوی) معاوضہ لیتے ہیں، ان لوگوں کا آخرت میں کوئی حصہ نہیں قیامت کے دن اللہ ان سے کلام کرے گا نہان کی طرف دیکھے گا اور نہ ہی انہیں (گنا ہوں سے) پاک کرے گا اور ایسے لوگوں کے لیے در دنا ک عذاب ہوگا''۔

واحدی (مفسر) نے بیان کیا کہ یہ آیت ان دوآ دمیوں کے بارے میں نازل ہوئی، جنہوں نے ایک جا گیرکے بارے میں نبی سلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں مقدمہ پیش کیا، تو مدعی علیہ نے قسم اٹھانے کا ارادہ کیا تو اللہ نے بیآیت نازل فرمائی، اس پر مدعی علیہ قسم اٹھانے سے رک گیا اور مدعی کے حق کوشلیم کرلیا۔عبداللہ بیان کرتے ہیں، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

اشعث نے کہا: اللہ کا قتم! یہ آیت میرے بارے میں تازل ہوئی، وہ بیان کرتے ہیں، میرے اورایک یہودی کے مامین زمین کے بارے میں جھڑا تھا،اس نے مجھے انکارکیا تو میں اسے نبی سلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں لے گیا،تو آپ نے فرمایا:'' کیا تمہارے پاس کوئی دلیل ہے؟'' میں نے عرض کیا،نبیس۔آپ نے یہودی سے فرمایا:قتم اٹھاؤ، میں نے عرض کیا،اللہ کے رسول!وہ تو قتم اٹھالے گا اور میرامال لے جائے گا،تو اللہ تعالیٰ نے آیت نازل فرمائی:

" بے شک جولوگ اللہ کے عہد اور اپنی قسموں پر قلیل معاوضہ لیتے ہیں'۔

یعنی وہ دنیا کامعمولی سا سامان حاصل کرنے کے لیے جھوٹی فتم اٹھالیتے ہیں ﴿ اُولَیِّكَ لَا تَحْلَاقَ لَهُمْ فِسَى الْاحِسِرَةِ ﴾ ''ایسے لوگوں کے لیے آخرت میں کوئی حصر نہیں'۔ ﴿ وَ لَا یُکَیِّلَمُهُمُ اللّٰهُ ﴾ ''الله ان سے کلام نہیں فرمائے گا'۔ یعنی ایسی کلام نہیں فرمائے گاجس سے ﴿ كِتَابِ الْكِبَائِرِ ﴿ وَلَا يَنْظُو اللَّهِمْ ﴾ "اوروه ان كى طرف نبيل ديكھے گا" يعنی نظر رحت انبيل خوثی نصيب ہو۔ ﴿ وَ لَا يَنْظُو اللَّهِمْ ﴾ "اوروه ان كى طرف نبيل ديكھے گا" ويعنی نظر رحت سے نبیل دیکھے گا جس ہے انبیل كوئی خوثی نصیب ہو۔ ﴿ وَ لَا يُسْزَيِّكِيْهِمْ ﴾ "اور انبیل پاکنبیل کرے گا"، ان كوفير و بھلائى میں بڑھائے گاندان كی ثابیان كرے گا۔

عبدالله بن مسعود رضی الله عُنه بیان کرتے ہیں کہ میں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا:

'' جس شخص نے ناحق کسی مسلمان شخص کے مال پرفتم اٹھائی تو وہ اللہ سے اس حال میں ملا قات کرے گا کہ دہ اس شخص پر ناراض ہوگا''۔

عبدالله رضی الله عنه بیان کرتے ہیں کہ پھر رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے اس کی تصدیق میں الله کی کتاب سے بیآیت تلاوت فرمائی:

﴿ إِنَّ اللَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَآيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا. ﴾ (ال عمران: ٧٧) ابوالممدرضي الله عنه بيان كرتے ہيں: ہم رسول الله صلى الله عليه وسلم كى خدمت ميں حاضر تھے كه آپ نے فرمايا:

'' جس شخص نے اپنی تنم کی بدولت کی مسلمان شخص کاحق قطع کیا تو اللہ نے اس کے لیے جہنم واجب کردی اور جنت اس پرحرام کردی''۔

تو کسی شخص نے عرض کیا ، اللہ کے رسول! خواہ وہ (حق) معمولی ہو؟ آپ نے فرمایا: ''اگرچہدہ پیلوکی شاخ ہو'۔۔ ①

حفص بن میسره نے بیان کیا ، بیر حدیث کتنی شدید ہے ، تو کہا: کیا کتاب الله میں نہیں ہے۔ ﴿ إِنَّ الَّذِیْنَ یَشْتُرُوْنَ بِعَهْدِ اللهِ وَآیْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِیلًا . ﴾ (ال عمران: ۷۷) ابوذ رضی الله عنه ، نبی سلی الله علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں ، آپ نے فرایا:

'' تین قتم کے لوگ ہیں ،روز قیامت الله ان سے کلام کرے گا نہ آئییں پاک کرے گا اور ان کے لیے درد تاک عذاب ہوگا''۔ آپ نے تین مرتبہ آئییں وہرایا، تو ابوذ ررضی اللہ عنہ نے عرض کیا، اللہ کے رسول! وہ تاکام و تا مراد ہوئے، وہ کون لوگ ہیں؟ آپ نے فرمایا:'' اڑا الألئكا نے

🛈 مسلم(۱۳۷)

الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر

والا ،احسان جتلانے والا اور جھوٹی قتم سے اپنا سودا بیچنے والا''۔ 🛈

اوررسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمایا:

''الله کے ساتھ شریک تھہرانا، والدین کی نافر مانی کرنا قبل نفس اور جھوٹی قشم کبیرہ گناہ . . ''

''الغموس'' عدا! جھوٹی قتم اٹھانا، جھوٹی قتم کو''غموس'' اس لیے کہتے ہیں کہ بیتم اٹھانے والے کو گناہ میں ڈبودیتی ہے، اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ بیاس کوجہنم میں ڈبودیتی ہے۔

امام منذری نے ان دونوں اقوال کی اس طرح توجید بیان کی ہے کہ جھوٹی قتم اُٹھانے والا دنیا میں گناہ کامستحق کھہرتا ہے اور آخرت میں جہنم اس کامقدر کھبرے گی۔

فصل:

الله عزوجل کے سواکسی اور کی قتم اٹھانا ، جیسے نبی کعب فرشتوں آسان پانی حیات وزندگی اور امانت کی قتم اٹھانا بھی اسی زمرے میں آتا ہے اور اس سے بھی زیادہ تنگیین سے ہے کہ کوئی روح ، سر، جیات سلطان (بادشاہ) بادشاہ کی نعمت اور فلال کی قبر کی قتم اٹھائے۔

ابن عمر رضی الله عنه، نبی صلی الله علیه وسلم سے روایت کرتے ہیں ، آپ نے فر مایا:

''الله تنهبين منع فرماتا ہے كہتم اپنے آباء كی تتم اُٹھاؤ، پس جس شخص نے تتم اٹھانی ہوتو وہ اللہ كى تتم اُٹھائے يا خاموش رہے''۔

اورایک روایت میں ہے:

'' جو خص قتم أٹھائے تو وہ صرف اللہ کی قتم اٹھائے یا پھر خاموش رہے''۔ 🏵

عبدالرحن بن سمره رضى الله عنه بيان كرتے ہيں،رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمايا:

''طواغی اورایخ آباء کی شم نه اٹھاؤ''۔ 🕀

طواغی ،'' طاغیہ'' کی جمع ہے،اس کامعنی ہے اصنام،اس سے حدیث ہے، بیدوس قبیلے کے اصنام اور معبود ہیں۔

بخاری الك بخاری مسلم ابوداؤد الله مسلم

← كتاب الكبائر كتاب كالمسائر كتاب كالمسائر كتاب كالمسائر كتاب كالمسائر كتاب كالمسائر كتاب كالمسائر كالمسائ

حضرت بریدہ رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:
''جوشخص قتم اٹھائے اور کے کہ میں اسلام سے بیزار ولا تعلق ہوں، پس اگروہ جھوٹا
ہے تو وہ ویسے ہی ہے جیسے اس نے کہاہے، اور اگروہ سچاہے تو بھی وہ اسلام کی طرف صحیح سالم نہیں لوٹے گا'۔ ①

ابن عمر رضی الله عند سے روایت ہے کہ انہوں نے ایک آ دمی کو کہتے ہوئے سنا:

کھبہ کی تتم: تو انہوں نے فر مایا: اللہ کے سواکسی کی تتم ندا تھاؤ، کیونکہ میں نے رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم کوفر ماتے ہوئے نا:

''جس فحض نے اللہ کے سواکبی کی تتم اٹھائی تو اس نے کفر کیایا شرک کیا''۔ ﴿
بعض علاء نے'' کفریا شرک کیا'' کی تفسیر میں فر مایا کہ بیخی کے طور پر ہے، جبیبا کہ نبی صلی
اللہ علیہ وسلم سے مروی ہے کہ آپ نے فر مایا:'' ریا شرک ہے''۔

اورآپ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

"جس مخص نے تتم اٹھائی اوراس نے اپن تتم میں کہا: لات اورعزی کی تتم ! تواہے" لا اللہ اللہ" پڑھنا چاہیے"۔ 🛡

صحابہ میں بعض ایسے بھی تھے جو قبول اسلام سے پہلے اس طرح (غیر اللہ) کی قتم اٹھایا کرتے تھے لیکن قبول اسلام کے شروع کے ایام میں وہ سبقت نسانی کی وجہ سے اس طرح کی قتم اٹھا جاتے تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم آنہیں فوراً ''لا الہ الا اللہ'' پڑھنے کا حکم فرماتے تا کہ اس کلمہ کی وجہ سے سبقت لسانی کی وجہ سے جو ہواوہ ختم ہوجائے۔ وباللہ التوفیق

☆☆☆

ا بوداؤد ابن ماجه

<sup>🗹</sup> ابوداؤد (۳۲۵۱) ترمذی (۱٬۵۳۵)

<sup>🕏</sup> بخاری (۸٦٤٧) مسلم (٤٨٦٠)

# + (156 عناب الكبائر ) + (156 عناب الكبائر ) الكبائر (٢٦) ظلم

لوگوں کے اموال کھا کر اور اسے نا جائز طریقے سے لے کرظلم کرنا ، اور مارپٹائی گالی گلوچ اور زیادتی کرکےلوگوں پرظلم کرنا اور کمزورلوگوں پر دست درازی کرنا۔

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظُّلِمُونَ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمُ لِيَوْم تَشْخَصُ فِيْهِ الْآبْصَارُ٥ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُ وُسِهِمْ لَايَرْتَدُّ الِّيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَ اَفْهِدَتُهُمْ هَوَ آوْهِ وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا رَبَّنَا آخِرْنَا إِلِّي اَجَلٍ قَرِيْبٍ نُبِجِبُ دَعُولَكَ وَ نَتِّبِعِ الرُّسُلَ اَوَلَمْ تَكُونُوْ آ اَقُسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَالَكَ مِّنْ زَوَالٍ ٥ وَّسَكَنْتُمْ فِي مَسْكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْ آ أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ 0 ﴾ (ابراهيم: ٢/١٤ ـ ٥٥) ''اورالله کوان کاموں سے بے خبر خیال نہ سیجئے جوظالم کرر ہے ہیں، وہ تو ان کواس دن تک مہلت دے رہا ہے جب آنکھیں کھلی کی کھلی رہ جائیں گی ،سراو پر کواٹھائے ہیبت کے مارے جلدی جلدی آئکھیں جھیک رہے ہوں گے ، ان کی نظریں ان کی طرف چرنہ پلیس گی اور ان کے دل پریشان ہوں کے اور لوگوں کواس دن سے آگاہ سیجئے جب ان پرعذاب آئے گا،تو وہ لوگ جو ظالم ہیں،کہیں گے: ہمارے پروردگار! ہمیں تھوڑی سی مدت کے لیے مہلت وے کہ ہم تیری دعوت قبول کریں اور رسولوں کی ا تباع کریں ، ( کہا جائے گا ) کیاتم پہلے شمنہیں کھا چکے کہ تمہیں پھے بھی زوال نہ ہوگا ادرتم ان لوگوں کے گھروں میں رہ چکے ہوجنہوں نے اپنی جانوں پرظلم کیا تھا اورتمہیں معلوم ہو چکا تھا کہ ہم نے ان کے ساتھ کیساسلوک روارکھااور ہم نے تمہارے لیے مثالیں بیان کر دی تھیں''۔ مثالیں بیان کر دی تھیں''۔

اورالله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَ سَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْ آ اَنَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ٥ ﴾ (الشعراء: ٢٢٧/٢٦)

''اور جن لوگوں نے ظلم کیا ہے،ان کوجلد معلوم ہوجائے گا کہ وہ کس جگہ لوٹ کر جاتے ہیں''۔

اورالله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ إِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِينَ يَظُلِمُونَ النَّاسَ. ﴾ (الشورى: ٢/٤٢)

''الزام دملامت توان لوگوں پرہے جولوگوں برظلم کرتے ہیں''۔

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''یقیناً الله ظالم کودهیل دینار ہتا ہے حتی کہ جب اسے پکڑتا ہے تو پھراسے چھوڑ تانہیں''۔ ①

پھررسول الدُّصلی الله علیه و کلم نے بیآ یت تلاوت فرمائی: ﴿ وَ کَذَٰلِكَ ٱخۡدُرَبِّكَ اِذَاۤ ٱخَذَا الْقُرای وَهِیَ ظَالِمَةٌ اِنَّ ٱخۡدَٰهُ اَکِیْمٌ شَدِیْدٌ ﴾

(هود: ۱۰۲/۱۱)

'' آپ کے رب کی کپڑ الی ہی ہوتی ہے کہ جب وہ بستیوں کو پکڑتا ہے جبکہ ان کے رہنے و'لے ظالم ہوں، بے شک اس کی پکڑ در دناک اور سخت ہے''۔

اورآ پ سلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

''جس نے اپنے (مسلمان) بھائی پرعزت یا کسی چیز کے حوالے سے کوئی ظلم کیا ہوتو وہ آج اس سے معاف کرا لے، اس سے پہلے کہ جب درہم ودینارنہیں ہوں گے، اگر اس کے پاس کوئی عمل صالح ہوگا تو وہ اس کے ظلم کے برابر اس سے لے لیا جائے گا، اگر اس کے پاس نیکیاں نہیں ہوں گی تو پھراسکے صاحب (مظلوم) سے گناہ لے کر

اس (ظالم) پرڈال دیے جائیں گئے'۔ 🏵

اورآپ صلی الله علیہ وسلم اپنے رب تعالیٰ سے روایت کرتے ہیں کہاں نے فرمایا: اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم این میں میں اور آپ میں اور آپ میں کہاں نے فرمایا:

''میرے بندو! میں نے ظلم کواپنے نفس پرحرام قرار دیا ہےادراسے تمہارے مابین بھی حرام

قراردیاہے، پس باہم ظلم نہ کیا کرؤ'۔ © اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

الکہانر کیا تم جانے ہو، مفلس کون ہے؟ صحابہ نے عرض کیا، اللہ کے رسول! ہم میں مفلس وہ شخص ہے جس کے پاس درہم ہوں نہ مال ومتاع، آپ نے فر مایا: ''میری امت کامفلس شخص وہ ہے جو نماز وز کو قاور روز ہوج (جیسے اعمال) کے ساتھ روز قیامت اللہ کے حضور پیش ہوگا اور پھر وہ فخص بھی پیش ہوجائے گا، جس کو اس نے گالی دی ہوگی، اس کا مال لیا ہوگا، اس کی عزت پر زاکہ ڈالا ہوگا، اس کی پائی کی ہوگی اور اس کا خون بہایا ہوگا، تو پھر اس فخص کی نیکیاں لے کر اس رفظوم) کو دے دی جا نمیں گی، اور اس (دوسرے مظلوم) کو اس کی نیکیاں لے کر دی جا نمیں گی، اگر اس کے ذمہ حقوق کی اور اس (دوسرے مظلوم) کو اس کی نیکیاں لے کر دی جا نمیں گی، اگر اس کے ذمہ حقوق کی اور اس اور پھر اسے جہنم میں ڈال دیا جائے گا، ۔ ①

فرمایا: ''جولوگ اللہ کے مال میں ناحق تصرف کرتے ہیں، روز قیامت جہنم ان کا مقدر ہوگی، جب آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے معاذ رضی اللہ عنہ کو یمن کی طرف روانہ کیا تو فرمایا:

''مظلوم کی بددعاہے بچنا، کیونکہ اس کے اور اللہ کے درمیان کو کی حجاب نہیں'۔ 🏵

ر ہاں بررف سے بیان پر امین کے مروستہ کے در در تیاں ہوتا ہے۔ اور فریایا:'' جس نے بالشت برابرز بین پر ناجائز قبضہ کیا تو روز قیامت اسے ساتوں زمینوں کاطوق پہنایا جائے گا''۔ ©

اور بعض كتابول ميں ہاللہ تعالی فرماتا ہے:

جس محض کامیرے سوا کوئی حامی و ناصر نہ ہو، جب اس پرکوئی ظلم کرتا ہے تو اس ( طالم ) پر میراغضب نہایت شدید ہوجا تا ہے''۔

اور کسی نے بیاشعار کیے ہیں:

لا تظلمن إذا ما كنت مقتدرًا فالظلم يرجع عقباه إلى الندم تنام عيناك و المظلوم منتبه يدعو عليك وعين الله لم تنم "جبتم صاحب قدرت بهوتو پرظلم نه كرو، كونكظلم كاانجام ندامت بئو-تيرى آكيس سوجاتى بين، جبكه مظلوم جاگ كرتير فلاف دعا كرتا ہے، اور الله كى سيكنيد بير ترب ثنيد بير ترب

🕡 مسلم' ترمذی 🕑 بخاری' مسلم 🕝 بخاری (۳۱۹۵)' مسلم (۱۲۱۲)

الكبائر في الكبائر في المجائر في ا

بعض سلف کا قول ہے:

''ضعفاء پرظلم نه کرورنه تو طاقتوراشرار میں سے ہوجائے گا''۔

سیدنا ابو ہر رہ درضی اللّٰہ عنہ بیان کرتے ہیں:''سرخاب اپنے گھونسلے میں ظالم کےظلم کی وجہ سے کمزور ولاغر ہوکر دم تو ڑ جاتا ہے''۔

مشہور ہے کہ تو رات میں لکھا ہوا ہے:''منادی کرنے والا بل صراط کے پیھیے ہے آ واز دے گا: جابر وسرکش گروہ!غرور و تکبر کرنے والے بدبختو!اللّٰدا پنی عزت وجلال کی تتم اٹھا کرفر ما تا ہے کہ کوئی ظالم آج اس بل کوعبورنہیں کر سکے گا''۔

جابر رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں، جب حبشہ کی طرف ہجرت کرنے والے، فتح مکہ کے سال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ نے فرمایا:

'' کیاتم مجھے بتاؤگے کہ ملک حبشہ میں تم نے کون ی عجیب چیز دیکھی؟''

ان میں سے ایک جماعت نے عرض کیا جی ہاں، اللہ کے رسول! ہم ایک روز بیشے ہوئے تھے کہ ایک بڑھیا سر پر پانی کا مٹکا اٹھائے ہوئے ہمارے پاس سے گزری تو جب وہ ان میں سے ایک نوجوان کے پاس سے گزری تو اس نے اس کے کندھوں کے درمیان اپنا ایک ہاتھ رکھا، پھر اسے دھکا دے دیا، وہ بڑھیا اپنے گھٹوں کے بل گر پڑی اور اس کا مٹکا ٹوٹ گیا، جب وہ کھڑی ہوئی تو اس نے پیچھے مڑکر دیکھا، پھر کہا: دھو کے باز! عنقریب تجھے معلوم ہوجائے گا، جب اللہ تمام اولین و آخرین کوجع کرے گا اور کری لگائے گا، ہاتھ اور پاؤں اپنی کارگز اری کے متعلق کلام کریں گے، تجھے عنقریب کل اپنے اور میرے معاطے کے بارے میں اس کے ہاں پتہ چل کریں گا، تو رسول اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''اس (بوھا)نے سے فرمایا: الله کسی قوم کوکیے پاک کرے گا، جب ان کے طاقتوروں سے ان کے ضعیفوں کا بدلہ نہ لیا جائے''۔

إذا ما الظلوم استوطأ الظلم مركبً ولج عتوًا فى قبيح اكتسبابه فكله إلى صرف الزمان وعدله سيبدوله مالم يكن فى حسابه "جب ظالمظم يراترآئ اوروه اليناس فتيح اكتباب من بوهتا چلا جائ تو پيمراس

کوز مانے کے تغیر اور اس کے عدل کے میر دکر دے، پھر عنقریب وہ سب پچھاس کے سامنے ظاہر ہوجائے گا جواس کے وہم و گمان میں بھی نہ تھا''۔

نی صلی الله علیه وسلم سے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا:

'' پانچ قتم کے لوگوں پراللہ کا غضب ہے، اگر وہ چاہتے واپنے غضب کوان پر دنیا ہی میں نافذ کرد ہے، ورندان کے بارے میں جہنم کا حکم جاری فر ماد ہے، کسی قوم کا حکمران، جب وہ اپنی رعیت سے اپنا حق تو وصول کر لے لیکن اپنی طرف سے آئیں انصاف فراہم کرے ندان سے ظلم منائے، کسی قوم کا ذمہ دار شخص جو اس کی اطاعت کرتے ہوں' لیکن وہ قوی وضعیف کے مابین مساوی سلوک نہ کرتا ہواور وہ خواہشات کے مطابق گفتگو کرتا ہو، وہ آ دمی جو اپنے اہل وعیال کو اللہ کی اطاعت کا حکم دیتا ہے نہ آئیں ان کا دین سکھا تا ہے اور وہ آ دمی جو کسی مزدور کو کام پرلگا تا ہے، وہ اس سے کام تو پور الیتا ہے، لیکن اس کواس کی اجرت پوری نہیں دیتا، اور وہ آ دمی جس نے عورت پر اس کے حق مہر کے بارے میں ظلم کیا۔''

عبدالله بن سلام بیان کرتے ہیں، جب الله تعالیٰ نے طلق کو تخلیق فر مایا، اور وہ اپنے پاؤں پر کھڑے ہوں کہ کھڑے ہوگئے تو انہوں نے اپنے سرآ سان کی طرف اٹھائے اور عرض کیا: پروردگار! تو کس کے ساتھ ہے؟ فر مایا: مظلوم کے ساتھ حتی کہ اس کاحق اسے دلا دیا جائے۔

وہب بن منہ بیان کرتے ہیں، کی جابرہ ظالم مخص نے ایک مضبوط محل بنایا تو ایک محتاج
بڑھیا آئی اور اس نے اس (محل) کی جانب ایک جھونپڑی تغیر کی وہ اس میں پناہ حاصل کرتی
تھی، ایک روز وہ جابر مخص سوار ہوا اور اس نے محل کے اردگرد چکر نگایا تو اس نے وہ جھونپڑی
دیکھی، اس نے کہا: یہ من کی جھونپڑی ہے؟ اسے بتایا گیا کہ ایک محتاج عورت کی ہے، وہ اس میں
پناہ لیتی ہے، پس اس نے اس کے متعلق تھم ویا تو اسے گرا دیا گیا۔ پس وہ بڑھیا آئی تو اس نے
بناہ لیتی ہے، پس اس نے اس کے متعلق تھم ویا تو اسے گرا دیا گیا۔ پس وہ بڑھیا آئی تو اس نے
اسے گرا ہوا پایا تو بو چھا کہ اسے کس نے گرایا ہے؟ بتایا گیا کہ باوشاہ نے اسے دیکھا، تو اس نے
موجو دنہیں تھی، تو تو کہاں تھا؟ راوی بیان کرتے ہیں کہ اللہ نے جبر مل علیہ السلام کو تھم دیا کہوہ
موجو دنہیں تھی، تو تو کہاں تھا؟ راوی بیان کرتے ہیں کہ اللہ نے جبر مل علیہ السلام کو تھم دیا کہوہ
موجو دنہیں تھی، تو تو کہاں تھا؟ راوی بیان کرتے ہیں کہ اللہ نے جبر مل علیہ السلام کو تھم دیا کہوہ

اور بیان کیا گیا ہے کہ جب خالد بن بر مک اوراس کے بیٹے کوقید کیا گیا تواس (بیٹے) نے کہا: ابا جان! ہم عزت و غلبے کے بعد قید وجس کا شکار ہو گئے ، تواس نے جواب دیا: بیٹے! مظلوم کی بددعا رات کے وقت محوسنر ہوتی تھی ،ہم اس سے عافل ہوتے تھے ہیکن اللہ اس سے عافل نہ تھا۔

یزیدین عیم کہا کرتے تھے: میں نے بھی کسی کواپی ہیبت سے خوف زدہ نہیں کیا کہ میں نے اس پرظلم کیا ہو، مجھے معلوم ہے کہ اللہ کے سوااس کا کوئی حامی وناصر نہیں، وہ مجھے کہتا ہے: مجھے اللہ کافی ہے، اللہ میرے اور تیرے درمیان (شاہد وحاکم) ہے۔

ہارون الرشید نے ابوعما ہیکوقید کیا تواس نے قیدے اسے بیدوشعر لکھے:

أما والله إن الظلم شوم ومازال المسىء هو المظلوم ستعلم يا ظلوم إذا التقينا غدًا عند المليك من الملوم

''سن لو! الله کوشم!ظلم نحوست ہے اور دہ بری ہی رہتی ہے، جبکہ وہ مظلوم ہو''۔ ''ظالم شخص! جب کل ہم مالک الملک سے ملاقات کریں گے تو عنقریب تجھے پینہ چل جائے گا کہ ملامت زدہ کون ہے''۔

ابواہامہ بیان کرتے ہیں، ظالم تخف روز قیامت آئے گا جتی کہ جب وہ جہنم کے بل پر پہنچے گا تو مظلوم اس سے ملاقات کرے گا، اور وہ اسے پہچان لے گا، جواس نے اس کے ساتھ ظلم کیا ہوگا، تو مظلوم، ظالموں سے الگ نہیں ہوں گے حتی کہ وہ ان کے ہاتھوں میں موجود تمام نیکیاں چھین لیس گے۔ جس قدرانہوں نے ان پرظلم کیا ہوگا حتی کہ وہ جہنم کے نچلے طبقے کی طرف لوٹا دیے جائیں گے۔

عبدالله بن انیس و التفاییان کرتے ہیں، میں نے رسول الله مَلَالْتَیْزَ کوفر ماتے ہوئے سنا:

دروز قیامت بندوں کو اس حال میں جمع کیا جائے گا کہ وہ نگلے پاؤں نگلے بدن اور غیر مختون ہوں گے۔ پس ایک آ واز دینے والا انہیں پکارے گا، اور وہ اسے دور بی سے ایسے سنیل گے جیسا کہ وہ اسے قریب سے سنتا ہے، میں فیصلہ کرنے والا بادشاہ ہوں، کسی جنتی کولائق ہے کہ وہ جنت میں داخل ہوجائے یا کسی جہنمی کولائق ہے کہ وہ جہنم میں چلا جائے اور اس کے ذھے کوئی ظلم ہو یہاں تک کہ اس کا فیصلہ کر دیا جائے اگر کسی نے طمانچہ مارا ہویا اس پرکوئی زیادتی کی ہو، طلم ہو یہاں تک کہ اس کا فیصلہ کر دیا جائے اگر کسی نے طمانچہ مارا ہویا اس پرکوئی زیادتی کی ہو،

اس کا بھی فیصلہ اور ادائیگی ہوگی اور تیرار ب سی پرظلم نہیں کرے گا۔'' نی صلی الله علیه وسلم سے روایت ہے کہ آب نے فرمایا:

'' جس شخص نے ایک کوڑ ابھی ناجائز ماراہوگا توروز قیامت اس سے بدلدلیا جائے گا''۔ واقعه فل کیا گیا ہے کہ بادشاہ ایران کسریٰ نے اینے بیٹے کی تعلیم وتربیت کے لیے ایک ا تالیق مقرر کیا جتی کہ جب بحیفضل وادب کی معراج کو پہنچے گیا تو اس ا تالیق نے بیچے کو بلایا اور کسی جرم وسبب کے بغیراہے بہت زیادہ سزادی، بچے نے معلم کے بارے میں دل میں کینہ رکھ اُ لیا جتی کہ جب وہ بڑا ہوگیا اور اس کا والدفوت ہوگیا تو اس کے بعدوہ بادشاہ کے منصب پر فائز ہوا تواس نے معلم کو بلایا اوراہے کہا: آپ کوکس چیز نے ابھاراتھا کہ آپ نے فلال فلال ون کسی جرم دسبب کے بغیر مجھے بہت تکلیف دوسز ادی تھی۔ تومعلم نے جواب دیا بادشاہ سلامت! تمہیں معلوم ہونا چاہیے کہ جب تم فضل وادب کی معراج پر پہنچ گئے تو مجھے پیتہ چل گیا تھا کہتم اپنے والد کے بعد باوشاہ بنو کے میں نے ارادہ کیا کہ میں مار پٹائی اورظلم کی تکلیف کا تہمیں ذا لقہ چکھاؤں حتی کہتم کسی پرظلم نہ کروتو اس نے کہا: جز اک اللہ خیرا۔ پھراس نے اسے انعام و کرام سے نوازنے کا تھم دیا۔

اورایک روایت میں ہے کہ مظلوم کی دعا باولوں کے اوپر بلند ہوتی ہے اور الله تبارک و تعالیٰ فرماتا ہے؟ ''مجھے اپنی عزت وجلال کی تشم! میں تیری ضرور مدد کروں گا،خواہ پچھ مدت کے بعد'۔ ادرانهول في شعر يره.

ليرفع فوق السحب ثم يجاب

وبيسن إلسه العمالميس حجاب

ولا أنبه يتخفى عبليبه خطاب

لأنبصر البميظلوم وهو مشاب

تـوق دعـا الـمـظـلوم إن دعـاء ه توق دعا من ليس بين دعائه ولاتحسبن الله مطرحًاله

فقدصح أن الله قال و عزتى فمن لم يصدق ذا الحديث فإنه

جهول وإلاعقك فمصاب ''مظلوم کی بدوعاہے بچو، کیونکہ اس کی دعا، بادلوں سے اوپر بلند ہوتی ہے اور پھر قبول ہوتی ہے'۔

'' یہ نہ مجھو کہ اللہ اس دعا کونظر انداز کردے گا اور سی بھی خیال نہ کرو کہ وہ خطاب (یکار)اس برخنی ہے''۔

'' بیرسیح ثابت ہے کہ اللہ نے فرمایا، مجھے میری عزت کی قتم! میں مظلوم کی ضرور مدد کروں گااوراہے جزاملے گئ'۔

''پس جو شخص حدیث والے کی تقید بی نہیں کرتا، تو وہ جاہل ہے یا پھراس کی عقل کا فتورے''۔

قصل:

ایے ذمے تن کی ادائیگی میں ، قدرت ادائیگی کے باوجود ٹال مٹول کرناسب سے بواظلم ہے، صحیحین میں ثابت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فر مایا:

"مال دار شخص كا (حق وض كي ادائيك ميس) ثال منول كرناظلم بين "

"قرض ادا کرنے کی طاقت رکھنے کے باوجود ٹال مٹول کرناظلم ہے ایسے مخص کو سزادینا، بعزت کرنا اور اسے روکنا، بند کرنا ارداسے روکنا، بند کرنا انہ ہوں کہ ان ہوں کہ ان ہوں کہ ان ہوں کہ ان ہوں کہ اور اسے روکنا، بند کرنا

جائزہے۔

نصل:

عورت کے حق مہر ،اس کے نان و نفقے اور اس کے لباس میں کمی کرنا بھی ظلم کے زمرے میں ہے اور بیآپ صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمان میں داخل ہے۔

"حت کی ادائیگی کرنے کی قدرت رکھنے کے باوجود ٹال مٹول کر ناظلم ہے،اس کی بے

عزتی کرنااوراے سرادینا جائزہے'۔

🛈 بخاری (۲٤۰۰)'مسلم (۱۵٦٤)

ابن معود رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں، روز قیامت غلام یالونڈی کے ہاتھ سے پکڑ کرتمام

مخلوق کی موجود گی میں اعلان کیا جائے گا، بیفلاں بن فلاں ہے، جس کا اس شخص کے ذھے کوئی حق ہوتو وہ اپنے حق کے حصول کے لیے آجائے۔توعورت خوش ہوگی کہ اس کا اپنے والدیا اپنے بھائی یا اپنے خاوند کے ذھے کوئی حق ہو، پھر آپ نے بیآیت پڑھی:

﴿ فَلَا آنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوَمُبِدٍ وَلاَ يَتَسَآءَ لُوْنَ٥ ﴾ (المؤمنون: ١٠١/٢٣)

''اس روز باہمی رشتہ داری کام آسکے گی نہ وہ ایک دوسرے سے پچھ لیو چھ تکیں گے''

کے جن پر بڑھادے گا، جن کہ وہ اس کے ذریعے اسے جنت میں داخل فر ماوے گا اور اگر وہ خف برنصیب ہوا اور اس کی کوئی نیکی نہ بچی تو فرشتے عرض کریں گے، اس کی نیکیاں ختم ہوگئی ہیں، لیکن

اس سے مطالبہ کرنے والے ابھی باقی ہیں، تو اللہ فرمائے گا: ان کے گناہ لو اور انہیں اس کے گناہوں کے ساتھ ملا دو پھر جہنم کی طرف دھیل دیا جائے گا۔ نبی صلی اللہ علیہ وسلم کا فرمان، جو

کناہوں کے ساتھ ملادہ چھر جہم می طرف دیں دیا جائے پہلے بھی بیان ہو چکاہے وہ اس کی تائید کرتاہے۔ فرمایا:

"کیاتم جانے ہوکہ مفلس کون ہے؟" پھر بیان کیا گیا کہ مفلس آپ کی امت بیس سے مفلس وہ خص ہے جوروز قیامت نماز زکو ۃ اورروز ہے جسے اعمال لے کرآئے گا اور وہ خص بھی مفلس وہ خص ہے جانے گا کہ اس نے اس مخفص کی ماضر ہو جائے گا کہ اس نے اس مخفص کی ہوگی اور اور ہمخص کے اس کی نیکیاں پٹائی کی ہوگی اور اس مخض کا اس نے مال لیا ہوگا۔ پس اِن میں سے ہرخض کے لئے اس کی نیکیاں بھائی کی ہوگی اور اس مختص کا اس نے مال لیا ہوگا۔ پس اِن میں سے ہرخض کے لئے اس کی نیکیاں

پی جا کمیں گی۔اگراس کے ذہے واجب حقوق کی ادائیگی سے پہلے اس کی نیکیاں ختم ہوگئیں' تو پھر ان کی خطا کمیں لے کراس مخص پرڈال دی جا کمیں گی اور پھراسے چہنم میں ڈال دیا جائے گا۔'' ①

) مسلم' ترمذی

یہ بھی ظلم ہے کہ کسی مزد در کومز دوری پر لگا کریا کسی انسان کوکسی کام پر لگا کراس کی اجرت نہ ويناجيها كتيم بخارى من ثابت بكرسول الله مَا فَيْرَافِ فرمايا:

''الله تعالیٰ فرما تا ہے تین قتم کے لوگ ہیں میں روز قیامت ان کے مقابل ومخالف ہوں گا۔اور میں جس کے مقابل آ جاؤں تو میں اس پر غالب آ تا ہوں'ایک وہ آ د**ی** جس نے مجھے ضامن تھبرایا اور پھر بے وفائی کی۔ دوسرا وہ آ دمی جس نے کسی آ زاد شخص کوفروخت کر دیا اور تیسراو شخص جس نے کسی مزدور کومزدوری پر لگایا' اس سے يورايورا كام لياليكن اس كى اجرت نددى-'

اوراس طرح جب سی بہودی یاعیسائی پرظلم کیایا اس کی طاقت سے بڑھ کراس کوس کام بر مامور کیا۔ یا اس کی رضامندی کے بغیراس ہے کوئی چیز لے لی تو وہ اللہ تعالیٰ کے اس فرمان میں داخل ہے:''میں روز قیامت اس کا مقابل ہوں گا۔''

اوراین ذے قرض کے بارے میں جموثی فتم کھالے تو وہ بھی اسے زمرے میں آتا ہے۔ صحیحین میں ثابت ہے کہرسول الله مَثَاثِيْرُ من فرمايا:

'' جو شخص اپنی شم کے ذریعے کسی مسلمان شخص کاحت مارے تواللہ نے اس کے لئے جہم واجب قراردے دی ہےاوراس پر جنت کوحرام قرار دے دیا ہے۔''

عرض کیا گیا'اللہ کے رسول! خواہ وہ کوئی معمولی سی چیز ہو؟ آپ نے فرمایا:'' خواہ وہ پیلوک شاخ ہو۔''

> فخف القصاص غدًا إذا وفيت ما فى موقف منا فيه إلا شاخص أعصاؤهم فيه الشهودو سجنهم أن تمطل اليوم الحقوق مع الغني

كسبت يبداك اليوم ببالقسطاس أو مهبطيع أو منقبت للسراس نبار و حباكمهم شديد البناس فعدا تسؤديها مع الإفلاس

''پی قصاص دید لے سے ڈر جا'جب کل تجھے تیرے ہاتھوں کی کمائی کا انصاف سے

مورث كتاب الكبائر في المجائز في المجازي الكبائر الكبائر الكبائر الكبائر الكبائر المجازي المجازي المجازي المجاز **166** پورابورابدله دیا جائے گا'جوتونے آج کیا ہے۔''

''حشر کے میدان میں لوگوں کی نگاہیں جھکی ہوں گی یا عاجزی وانکساری ہے ان کے

مراٹھے ہوئے ہول گے۔''

''ان کے اعضاء گواہ بن جائیں گے اور آگ' جیل بن جائے گی' اور ان کے دارو غے سخت کیر ہول گئے۔"

''آج تم مال دار ہونے کے باوجود حقوق کی ادائیگی میں ٹال مٹول کررہے ہو' تو کل

(روز قیامت)تم حالت افلاس میں اس کی ادا کیگی کرو گے۔''

روایت کیا گیا ہے کدروز قیامت بندے کواس بات میں کوئی تنگی نہیں ہوگی کہ وہ اس مخض کو

پہچانے جس نے اس پر دنیا میں ظلم کیا ہوگا ادراس کواینے اس ظلم کے ازالے کے لئے مطالبہ

كرنے ميں كوئى ڈرخوف نہيں ہوگا۔ جيسا كه بي تَالَيْظُ نے فرمايا:

'' قیامت کے دن' حق داروں کوان کے حقوق دلائے جا کیں گے حتیٰ کہ سینگوں کے

بغیر بکری کوسینگوں والی بکری سے بدلہ دلا یا جائے گا۔'' 🛈

اورآ بِ مَا لَيْنَا لِلْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ مَا مِا:

''جس شخص کے ذہے اپنے کسی بھائی کا'اس کی عزت پاکسی اور چیز کے حوالے ہے کوئی حق ہوتو وہ آج ہی اس سے معاف کرائے اس سے پہلے کہ درہم ودینار نہیں موں گے۔اگراس کے پاس نیک اعمال ہوئے تو وہ اس کے ظلم کے برابراس سے لے لئے جائیں گے اور اگر اس کے پاس نیکیاں نہ ہوئیں تو اس کے صاحب (حقدار) کی خطائیں لے کراس کے ذہبے ڈال دی جائیں گی اور پھراس کوجہنم میں

کھنک دیاجائے گا۔''

عبدالله بن الي دنیانے اپنی سند سے ابوا یوب انصاری رضی الله عنه سے روایت کیا ہے کہ رسول اللهُ فَأَثِينِكُمْ نَهُ فَر مايا:

"روز قیامت سب سے پہلے جومقدمہ پیش ہوگا وہ آ دی اوراس کی اہلیہ کا ہوگا۔اللہ کی

الكبائر كاب الكبائر كالمستخب الكبائر كالمستخب المستخب الكبائر كالمستخب المستخب المستحد

قتم! اس کی زبان بات نہیں کرے گی بلکہ وہ دنیا میں اپنے خاوند کو جو تکلیف پہنچایا کرتی تھی' اس پر اس کے ہاتھ اور اس کے پاؤں اس کے خلاف گواہی دیں گے۔اور

اس طرح آ دمی جواپی بیوی کے خیر یا شرکے معاطع کا ذمہ دارتھا'اس پراس کے ہاتھ اور پاؤں اس کے خلاف گواہی دیں گے۔ پھراس طرح آ دمی اوراس کے خادموں کو

اور پاؤں اس کے خلاف لوابی ویں ہے۔ چرائی طرح ا دی اور اس سے حاد موں ہو۔ لایا جائے گا' اور ان سے درہم ودینار نہیں لئے جا کیں گے' بلکہ اس ظالم کی نیکیاں لی جا کیں گی اور اس مظلوم کو دے دی جا کیں گی اور اس مظلوم کی خطا کیں اس ظالم پر

جا میں بی اور اس مطلوم بودے دی جا یں بی اور اس مطلوم بی صوط یں اس جا ہر ڈال دی جائیں گی۔ پھر سرکٹوں کولوہے کے گرزوں کے ساتھ پیش کیا جائے گا' تو انہیں کہا جائے گا کہ انہیں ہا تک کرجہنم کی طرف لے جاؤ۔' ①

قاضی شریح بیان کیا کرتے تھے : عقریب ظالم جان لیں گے جوانہوں نے حق میں کی گئ کہ ظالم عذاب کا انتظار کرے گا اور مظلوم مدداور ثواب کا انتظار کرے گا۔

رہ ہمد ب اللہ اپنے بندے سے خیر و بھلائی کا ارادہ فرماتا ہے تو اللہ ایسے ۔

روایت کیا گیا ہے کہ جب اللہ اپنے بندے سے خیر و بھلائی کا ارادہ فرماتا ہے تو اللہ ایسے ۔

روایت کیا گیا ہے کہ جب اللہ اپنے بندے سے خیر و بھلائی کا ارادہ فرماتا ہے تو اللہ ایسے ۔

شخص کواس پرمسلط کر دیتا ہے جواس پرظلم کرتا ہے۔ طاؤس بمانی 'ہشام بن عبدالملک کے پاس گئے تواہے کہا: یوم اذان سے اللہ سے ڈر جاؤ'

ہشام نے کہا: یوم اذان کیا ہے؟ انہوں نے کہا: اللہ تعالیٰ نے فر مایا ہے:

﴿ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمُ أَنُ لَكُنَّةُ اللَّهِ عَلَى الظَّلِمِينَ ﴾ (الاعراف: ٤٤)

جب اس کاعینی مشاہدہ ہوگا تو اس وقت ذلت کی کیا کیفیت ہوگی؟ ظالم کے نام سے راضی ہونے والے! تچھ پر کتنے مظالم کا بوجھ ہے؟ جہنم کا قید خانہ اور حق تو اس حاکم کا ہوگا جس کو فیصلے کا اختیار

طرانی نے عبداللہ بن عبدالعزیز اللیثی کی سند ئے اسے اپنی مسند میں روایت کیا ہے اور وہ ضعیف ہے۔
 سعید بن سینب نے اس کی توثیق کی ہے اور کہا ہے کہ امام مالک اس سے خوش تھے۔ (معصم الزوائد)

+ (168 عاب الكبائر ) + (168 and )

لصل ا

ظلم کرنے طالموں کا ساتھ ویے اوران کی مدد کرنے سے بیچنے کے بارے میں اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَالَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُونُ نَ٥﴾ (هود: ١١٣)

"اوران لوگوں کی طرف نہ جھکو جو ظالم ہیں۔ورنہ تہمیں بھی آگ اپنی لیبٹ میں لے لے گی۔اوراللہ کے سواتہارا کوئی مددگار نہیں ہوگا۔"

''رکون'' یہاں رکون سے مراد ہے کسی چیز سے راحت محسوں کرنا اور محبت سے اس کی طرف میلان و جھکا وُرکھنا۔

ا بن عباس رضی الله عنهمانے فر مایا بحبت نرم کلامی اور مودت میں کھمل طور پر ماکل ندہو جاؤ۔ ابن زیداور سدی نے کہا: طالموں سے مداہنت اور سمجھونہ نہ کرو۔

عکرمہنے کہا:اس سے مرادیہ ہے کہان کی اطاعت کروندان سے محبت کرو۔

ابوالعاليدن كبا: ان كے اعمال كو پسندنه كرو\_

((فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ)) "ورندا كتهين اين لپيك من لے لى ك،

((وَمَالَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ))

ابن عباس رضی الله عنمانے فرمایا: اس سے مراد ہے کہ

' دختہیں اللہ کے عذاب ہے بچانے والا کوئی نہیں ہوگا۔''

((ئُمَّ لَا تُنْصَرُونَ)) "تم ال كعذاب وردك نبيل سكوك\_"

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ ٱحْشُرُوا آلَّذِيْنَ ظَلَمُوا وِّ إَزُّواجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ٥ ﴾ (الصفات:

· (۲۲

'' خلا کموں کواوران کے ہم مشر بوں کوجھ کرد۔''



یعنی ان جیسوں اوران کے پیروکاروں کو جمع کرو۔ابن مسعود رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں

رسول الله مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهُ مَا ما يا:

''عنقریب ایسے امراء ہوں گے کہ لوگ ان کے اردگر داور ان کے آگے چھیے ہول عے وہ ظلم کریں سے جموث بولیں سے۔ پس جو خص ان کے باس جائے ان کے حجوٹ کی تصدیق کرے اوران کے ظلم بران کی مدد کرے تو وہ مجھ سے ہے نہ میں اس ہے ہوں۔اور جو خص ان کے ماس جائے ندان کے ظلم بران کی مدد کرے تو وہ مجھ ے ہوں۔" (

اورابن مسعود رضی الله عنه بی بیان کرتے ہیں نی تالی کا اللہ عنه بی بیان کرتے ہیں نی تالی کا اللہ عنه اللہ عنه بی

"جو خص ظالم کی روکرتا ہے قواس کواس پرمسلط کردیا جاتا ہے۔" 🏵

سعید بن المسیب رحمہ اللہ نے فرمایا: طالموں کی اعانت کرنے والوں کو جی بھر کرنہ دیکھو اگرد کیمونواینے دل ہے اس کا نکار کرؤ کہیں تمہارے اعمال صالحہ ضائع نہ ہوجا کیں۔

کھول دمشقی نے فرمایا: روز قیامت منادی کرنے والا اعلان کرے گا' ظالم اوران کے

مددگار کہاں ہیں؟ پس جس مخص نے ان کے لئے روشنائی بنائی یا ان کے لئے روشنائی کو دوات میں ڈالا یاان کے لئے قلم بنائی یااس ہے او پر سی کام میں ان کی اعانت کی ان میں سے کوئی باقی نہیں رہے گا' وہ سب (معاون) ان کے ساتھ حاضر ہوں گے اور انہیں آ گ کے ایک تابوت

میں ڈال کرآ گ میں بھینک دیا جائے گا۔ ایک درزی سفیان توری کے پاس آیا تو اس نے کہا میں ایک درزی ہوں اور بادشاہ کے

كبرك سيتا مول كيامين بهي ظالم كے معاونين ميں شار موتا موں؟ توسفيان رحمداللہ نے فرمايا: بلکہتم تو ان ظالموں میں سے ہو ظالموں کے معاونین میں تو وہ لوگ ہیں جولوگ تخفیے سوئی اورر

دھامے فروخت کرتے ہیں۔

<sup>🛈</sup> احمد' ابو يعلي' ابن حبان

السیوطی نے اپنی جامع صغیر میں ابن عسا کرعن ابن مسعود کی روایت سے نقل کیا ہے اور اس کے ضعف کی طرف اشارہ کیا ہے۔

نی مَنْ کَالْتِیْزُ کے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا: ''قوام میں کردن کوڑوں وار لاگی میں میں مہا جنمو میں

'' قیامت کے دن کوڑوں والے لوگ سب سے پہلے جہنم میں جائیں گئیدوہ لوگ ہیں جن کے یاس کوڑے تھے اور وہ ان سے ظالموں کے سامنے' لوگوں کو مارا کرتے

تقر "

ابن عمر رضی الله عند نے فرمایا: '' جلاوز ہ'' اور سپاہی روز قیامت (اپنے ظلم کی وجہ ہے ) جہنم کے کتے ہول گے۔ ( ( جلاوز ہ ) )'' نظالم کے مددگار''

روایت کیا جاتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے موی علیہ السلام کی طرف وجی کی کہ بنی اسرائیل کو حکم دیں کہ وہ میرے ذکر سے پچھ بھی تلاوت نہ کریں کیونکہ جو میرا ذکر کرتا ہے تو میں اسے یاد کرتا ہوں اور ایک روایت میں ہے پس ان ہوں اور ایک روایت میں ہے پس ان میں سے جو شخص میرا ذکر کرتا ہوں۔ اور نبی تاریخ ہے میں اعزت کے ساتھ اس کا ذکر کرتا ہوں۔ اور نبی تاریخ ہے مردی ہے کہ آپ تاریخ ہے فرمایا:

ں ہے میں ہے ہوئی ہوئی ہوئی۔ ''تم میں سے کوئی شخص ایسی جگہ کھڑانہ ہو جہاں کسی مظلوم کی پٹائی ہور ہی ہو' کیونکہ اگر وہ اس کا دفاع نہ کریں' تو وہاں موجود ہرشخص برلعنت نازل ہوتی ہے۔''

اوررسول الله مَا الله

''ایک آدمی اپنی قبریس آیا تواسے بتایا گیا' ہم تہہیں سوکوڑے مارنے والے ہیں'وہ مسلسل ان سے رعایت کی درخواست کرتا رہا جی کہ وہ ایک کوڑے پر رضا مند ہوگئے۔ جب انہوں نے اسے مارا تو قبر سے آگ کے شیعلے اٹھنے لگے۔ اس نے کہا: تم نے بیمزا مجھے کیوں دی ہے؟ توانہوں نے کہا: تم نے بیمزا مجھے کیوں دی ہے؟ توانہوں نے کہا: تم نے ایک مرتبہ بلا طہارت نماز پڑھی تھی اور تم ایک مظلوم شخص کے پاس سے گزرے تھے تو تم نے اس کی مدنہیں کی شخص کے پاس سے گزرے تھے تو تم نے اس کی مدنہیں کی شخص ۔' ①

جب قدرت ہونے کے باوجود مظلوم کی مدد نہ کرنے والے کا بیرحال ہے تو پھر ظالم کا کیا

<sup>🛈</sup> طبرانی نے ابن عمر کی حدیث سے روایت کیا ہے۔اس کی سند میں بیجی بن عبداللہ البابل ضعیف ہے۔ (مجمع الزوائد)

رسول الله فَأَلَيْنَا مُصْحِيح ثابت بكرآب فرمايا

''اینے بھائی کی مدد کرؤ خواہ وہ ظالم ہو یا مظلوم''

تو عرض کیا:اللہ کے رسول! جب وہ مظلوم ہوگا تو میں اس کی مدد کروں گالیکن جب وہ ظالم ہوتو پھراس کی مدد کیسے کروں؟ آپ نے فرمایا:

''تم اسے ظلم سے روکو کیونکہ یہی اس کی مدد ہے۔'' 🛈

جیسا کہ حکایت بیان کی گئی ہے کہ کسی اللہ والے نے کہا: میں نے ظالم اور نیکس وصول کرنے والوں کی خدمت کرنے والے ایک شخص کؤ اس کی موت کے پچھ مدت بعد خواب میں

بری حالت میں دیکھا' تو میں نے اے کہا: تیراکیا حال ہے؟ اس نے کہا' برا حال ہے۔ میں نے
کہا: تو کہاں پہنچا؟ اس نے کہا' اللہ کے عذاب کی طرف میں نے کہا: اس کے نزدیک ظالموں کا

مہا ہو ہماں چاہاں نے کہا: ہرا حال ہے۔ کیاتم نے اللّٰدعز وجل کا فرمان نہیں سنا: کیا حال ہے؟ اس نے کہا: برا حال ہے۔ کیاتم نے اللّٰدعز وجل کا فرمان نہیں سنا:

﴿ وَسَيَعْكُمُ الَّذِيْنَ ظَكَمُو ٓ آتَى مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۞ ﴿ (الشعراء: ٢٢٧) ''اور جن لوگوں نے ظلم کیا ہے اُن کوجلد معلوم ہو جائے گا کہ وہ س جگہ لوٹ کر جاتے ''

مسی حکایت میں ہے' کسی نے کہا: میں نے ایک آ دمی کودیکھا جس کا ہاتھ کندھے سے کٹا جواتھا'اوروہ آ واز دے رہاتھا' جس نے مجھے دیکھ لیا ہے' وہ کسی پرظلم نہ کرے ۔ پس میں اس کے

پاس گیا تواہے کہا' بھائی! تمہارا قصہ کیا ہے؟ اس نے کہا: بھائی! بڑا عجیب قصہ ہے۔ وہ اس طرح ہے کہ میں ظالموں کا حمایتی تھا' میں نے ایک دن ایک شکاری کودیکھا کہاس نے ایک بہت بڑی مچھلی کا شکار کیا ہے۔ پس وہ مچھلی مجھے پہندآ گئی تو میں اس کے پاس گیا اور اے کہا کہ یہ مچھلی مجھے

، ن معادیا ہے۔ ہیں وہ ، ن سے پیعدا کی دین ، ن سے پی کی اور اسے ہا تہ ہے ، ن سے درو اس نے کہا ، میں یہ تہیں نہیں دول گا میں اس کی قیمت سے اپنے اہل وعمال کے لئے خوراک کا انتظام کروں گا۔ پس میں نے اس کی پٹائی کی اور اسے جبراً اس سے لیا اور اسے

لے کرچل پڑا۔

🛈 بخاری'مسلم

+ 172 كتاب الكبائر كالمبائر ك وہ بیان کرتا ہے جب میں اسے اٹھائے ہوئے چل رہا تھا تو اس نے بڑی قوت سے میرے انگوٹھے یر کاٹ لیا۔ جب میں اسے لے کرایے گھر آیا اور اسے اپنے ہاتھ سے ڈال دیا' میں نے اپنے انگو تھے ہریٹی باندھی۔ میں نے بہت شدید تکلیف محسوں کی حتیٰ کہ جس اس کی شدت تکلیف والم سے رات بھرسونہ سکا' اور میرا ہاتھ سوج گیا۔ پس جب صبح ہو کی تو میں طبیب کے پاس آیا اور اسے تکلیف کے متعلق بتایا۔ تو اس نے کہا: پیعضوتو کھانے والی بیاری کا آغاز ہے۔اسے کاٹ ڈالؤورنہ تیرا ہاتھ کا ٹنا پڑے گا۔ پس میں نے اپنا انگوٹھا کاٹ ڈالا پھر میں نے این ہاتھ پرپٹی ہاندھی کیکن میں تکلیف کی شدت کی وجہ سے سوسکانہ قرار آیا ، مجھے بتایا گیا کہ اپٹی ہتھیلی کاٹ ڈالو پس میں نے اسے کاٹ دیا' لیکن تکلیف بازوتک پھیل گئی اور مجھے شدید تکلیف ہونے لگی۔ مجھے آرام نصیب نہ ہوا۔ میں شدت الم سے مدد طلب کرنے لگا تو مجھے کہا گیا' اسے کہنی تک کاٹ دؤمیں نے اسے کاٹ دیالیکن تکلیف کہنی اور کندھے کے درمیان تک پھیل گئی تو میں نے پہلی تکلیف ہے بھی زیادہ زور ہے بازو پریٹی باندھ لی۔ مجھے بتایا گیا کہ اپنا ہاتھ کندھے سے کاٹ دو ورنہ بیے بیاری تمہارے سارے جسم میں سرایت کر جائے گی' پس میں نے اسے کاٹ دیا۔

اے کان دیا۔

کی شخص نے بچھ سے کہا' تیری کلیف کا سبب کیا ہے؟ میں نے مچھلی والا قصہ بیان کیا تو

اس نے بچھ سے کہا: اگرتم پہلی تکلیف پر بی مچھلی والے کے پاس چلے جاتے' اس سے معافی
مانگ لیتے اورا سے راضی کر لیتے تو تیرا کوئی بھی عضو نہ کا ٹا جا تا۔ پس اب بھی اس کے پاس جاؤ
اوراس سے پہلے کہ تکلیف تیرے سارے بدن میں پہنچ جائے' اس کی رضا مندی حاصل کرلو۔
اوراس سے پہلے کہ تکلیف تیرے سارے بدن میں کرنچ جائے' اس کی رضا مندی حاصل کرلو۔
میں گر پڑا آئیس چو ما اوررو نے لگا میں نے اسے کہا: میرے آقا! میں اللہ کے نام پر تجھ سے سوال
کرتا ہوں' کیا آپ بچھے معاف نہیں کریں گے؟ اس نے بھے کہا: تم کون ہو؟ میں نے کہا: میں وہ شخص ہوں جس نے ناحق تم سے پھلی لے لی تھی۔ اور میں نے اپنے ساتھ بیتے والا قصہ بیان کیا
اورا پنا ہاتھ اسے دکھایا۔ پس جب اس نے اسے دیکھا تو وہ رو پڑا۔ پھر اس نے کہا: میرے بھائی!
جب میں نے تہ ہیں اس تکلیف میں دیکھا تو فورا تہ ہیں معاف کر دیا۔ پھر میں نے کہا' میرے بھائی۔

حراب الكبائر التحريب ميں نے تم سے مجھل ل تھی تو تم نے ميرے لئے بددعا كى تھى؟ اس نے كہا: ہاں! ميں نے كہا تھا: اے الله! شخص اپنی قوت كبل بوتے پرميرى كمزورى كى وجہ سے اس چيز پر ناحق قابض ہوا' جو تو نے مجھے عطا كى تھى ۔ پس تو اس كے متعلق مجھے اپنی قدرت دکھا دے ۔ تو ميں نے كہا: ميرے آقا! الله تعالى نے بقيناً مجھے ميں اپنی قدرت تمہيں و كھا دى اور ميں فالموں كى جو خدمت كيا كرتا تھا' اس سے الله عزوجل كے حضور تو به كرتا ہوں اور جب تك ميں زندر ہاان شاء الله ان كے دروازے يرووبارہ جاؤں گاندان كا معاون بنوں گا۔ وباللہ التوفیق زندر ہاان شاء اللہ ان كے دروازے يرووبارہ جاؤں گاندان كا معاون بنوں گا۔ وباللہ التوفیق

نفيجيت:

میرے بھائیو! موت نے کتے نفوں کو ان کے گھر سے نکالا کھروہ واپس نہیں آسکے اور کتنے ہی جسموں کو اس کے قرب میں اتارا' جس کے قرب میں وہ نہیں آئے تھے۔ اور اس نے کتنی آنکھوں سے چشموں کی طرح آنسورواں کردیئے جبکہ وہھم چکی تھیں۔

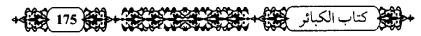
یا معرضًا بوصال عیش ناعم ستصدعنه طائعًا أو کارها ان الحوادث تزعج الأحرار عن أوطانها و الطیر عن أو کارها در عیش و عشرت ملنے پراعراض کرنے والے چارونا چار کھے اس سے روک و یا جائے سی سی کار

'' کیونکہ حادثات نے احرار کواپنے وطنوں سے اور پرندوں کوان کے گھونسلوں سے نکال دیا۔'' نکال دیا۔''

وہ کہاں ہے جومشارق ومغارب کا مالک بنا اس نے اطراف واکناف کوآباد کیا باغات لگائے خواہشات کی تکمیل کی اور نوجوان لڑکیوں سے شادی کی؟ اب اس کے گھرکوآکا کمیں کا کمیں کا کمیں کا کمیں کرتا چکر لگا تا ہے۔ اس کے ابھو ولعب کا سلسلہ ختم ہو چکا کڑک اور بجلیاں اسے ڈانٹ رہی ہیں۔ اس پر ایسے مصائب آئے کہ اس نے ماگل کے بعض بال سفید کر دیۓ اس کے محبوب وست نے اسے چھوڑ دیا جو بھی اس سے جدانہیں ہوا تھا۔ سچ دوست وساتھی نے بھی اس سے قطع تعلق کرلیا ، وہ مخلوق کے قرب وجوار میں جا پہنچا اللہ کی قتم ! اس پر موت

الکیائر کتاب الکیائر کی جوئی وہ اس سے فیج ند سکا 'اس کے عزت و غلبے کے بعداسے قبر سے ذکیل کرویا 'اس کے خرم وہلائم بستر ہے کے بعدخت مٹی نصیب ہوئی 'اس سے کیڑوں کے گئروں کی طرح 'کیڑوں نے قبر میں اسے ریزہ کردیا 'وہ اپنی معاش میں سخت تنگی میں باتی رہا' اور دوست سے دور ہوا گویا کہ وہ اسے بہچانا ہی نہیں۔اللہ کی قسم! احتراز (بچائی) نے اسے کوئی فائدہ نہ پہنچایا' پوشیدہ خزانہ اس سے نہیں لوٹایا گیا' بلکہ کم زادراہ نے اسے نقصان پہنچایا' اللہ کی قسم! وہ گزرنے والوں خزانہ اس سے نہیں لوٹایا گیا' بلکہ کم زادراہ نے اسے نقصان پہنچایا' اللہ کی قسم! وہ گزرنے والوں کے لئے عبرت بن گیا' اس نے پراگندگی کے عالم میں دور دراز کے سفر کئے'وہ وہ زمن رہ گیا' وہ نہیں جانتا کہ ہلاک ہوایا کا میاب ہوا اور چندایا م بعد بی تو اس انجام کو پہنچا۔اب تو خوابوں میں زندگی بر کررہا ہے' تیری دنیا اصلاح نہ کرسکی اور تم نے جو پھے سنا' اسے کمل طور پرکل دیکھ لے گا اور میں مور نہیں ؟





## (۲۷) ٹیکس وصول کرنا

بیاللہ تعالی کے اس فرمان میں داخل ہے:

﴿ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْآرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ الْوَاسَ اللَّهُ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴾ (الشورى/٢:٤٢)

''الزام تو ان لوگوں پر ہے جولوگوں پرظلم کرتے ہیں' اور ملک میں ناحق فساد کرتے ہیں' ان لوگوں کے لئے دردناک عذاب ہوگا۔''

فیکس وصول کرنا 'ظالموں کی بہت بوی اعانت کرنے کے زمرے میں آتا ہے 'بلکہ وہ فی نفسہ ظلم ہے کیونکہ وہ جس چیز کاحق نہیں رکھتا 'اسے حاصل کرتا ہے اور جس کاحق نہیں 'اسے دے دیتا ہے۔اسی لئے نبی مُلَالِیَّا اللہ فرمایا:

' • نیکس وصول کرنے والا جنت میں نہیں جائے گا۔' 🛈

اورآ پِمَالَالْتُمُ نِي فَر مايا:

'' نیکس وصول کرنے والا جنت میں نہیں جائے گا۔''

اور یہاس لئے ہے کہ وہ بندوں کے مظالم کو تحفظ فراہم کرتا ہے۔ روز قیامت میکس وصول کرنے والے کے پاس وہ کہاں سے آئے گا کہ اس نے لوگوں سے جو پچھ لیا تھا'اسے انہیں واپس کر دے؟ اگر اس کی پچھ نیکیاں ہوئیں تو وہ اس کی نیکیاں لے لیس گے! اور یہ چیز نبی تالیق نیکی کے اس فرمان میں داخل ہے۔ ''کیا تم جانے ہو مفلس کون ہے؟''صحابہ نے عرض کیا'اللہ کے رسول!ہم میں مفلس شخص وہ ہے جس کے پاس درہم ودینارہوں نہ مال ومتاع۔ آپ نے فرمایا: ''میری امت کا مفلس شخص وہ ہے جو (روز قیامت) نماز وز کو قاور روزہ وجج کے ساتھ آئے گا اور وہ شخص بھی آ جائے گا جس کو اس نے گالی دہ ہوگی' اس کی پٹائی کی ہوگی اور اس کا مال لیا ہوگا۔ پس ان سب کے لئے الگ الگ اس کی نیکیاں لے لی ہوگئیں ہو گئیں گا گراس کے ذمے واجب الا داحقوق کی ادائیگی سے پہلے نیکیاں فتم ہوگئیں ہوگئیں

حران (حقداروں) کی برائیاں لے کراس کے کھاتے میں ڈال دی جا کیں گی اور

تو پھران(حقداروں) کی برائیاں لے کراس کے کھاتے میں ڈال دی جا میں کی اور پھرا سے جہنم رسید کر دیا جائے گا۔''

اس عورت کی مدیث میں ہے جس نے رجم کے ذریعے اپنے آپ کو پاک کیا۔ ''اس نے ایسی تو بہ کی ہے کہ اگر نیکس وصول کرنے والا بھی ایسی تو بہ کرے تو اسے بھی 'نفر میں میں میں تاہ تھی قرال کی سریا''

بخش دیاجائے یا ( فرمایا ) اس کی تو بھی قبول کی جائے۔''

نیکس وصول کرنے والا راہزن اور چوروں سے مشابہ ہے۔ نیکس وصول کرنے والا اسے کیس وصول کرنے والا اسے کھنے والا اسے پر گواہ بننے والا اوراسے پکڑنے والاخواہ وہ فوجی ہویا شخ یا آ گےر پورٹ دینے والا گناہ میں اور حرام کھانے میں سب برابر کے شریک ہیں۔

اور صحیح ثابت ہے کہ رسول الله ملافقة النا فرمایا:

"حرام سے پرورش پانے والا گوشت جنت میں داخل نہیں ہوگا۔ جہنم اس کی زیادہ

حقدار ہے۔''

((السحت)) ہرحرام چیز جس کا ذکر کرنافتیج ہواوراس سے عاروشرمندگی لازم آتی ہو۔ واحدیؓ ﴿ نے اللّٰہ تعالٰی کے فرمان:

﴿ قُلْ لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ ﴾ (المائدة /٥: ١٠٠)

'' کہہ و بحیح کہ خبیث اور طبیب برابز ہیں ہوسکتے۔''

جابر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ایک آ دمی نے عرض کیا اللہ کے رسول! میں شراب کی تجارت کیا کرتا تھا۔ میں نے اس کی نیچ سے مال جمع کیا ہے۔ آگر میں اس مال کو اللہ کی اطاعت میں استعال کروں تو کیاوہ مجھے فائدہ پہنچائے گا؟ تورسول اللہ مَا اللّٰہِ عَالَیْ اللّٰہِ مَایا:

''اگرتم نے اسے حج یا جہاد یا صدقہ میں خرچ کر دیا تو وہ اللہ کے ہاں مچھر کے پر کے برابر بھی نہیں۔ کیونکہ اللہ صرف یا کیزہ وطلال چیز ہی قبول کرتا ہے۔''

الله تعالى في رسول الله كالله و من كل تقديق ك لئ يه يت نازل فرما كي :

① انہوں نے اپی تفییر میں بلاسند ذکر کیا ہے۔الیوطی نے ''لباب العقول فی اسباب النزول' میں ضعیف سند سے روایت کیا ہے۔

من كتاب الكبائر كالمنطقة المنطقة المن

'' کہہ دیجئے' ناپاک اُور پاک برابرنہیں' اگر چہ ناپاک کی بہتات آپ کواچھی معلوم ہو۔''

عطاءاور حسن رحمهم الله نے فرمایا طیب اور خبیث سے حلال اور حرام مراد ہے۔ ہم اللہ سے عفود عافیت کا سوال کرتے ہیں۔

#### تقبيحت:

وہ کہاں ہے جس نے پختہ اور مضبوط قلع تغیر کئے اور بڑا بچاؤ کیا۔ باغات آباد کئے پس اس نے بہت سے درخت لگائے اپنے لئے عزت وشرف کی کری نصب کی اور اس پر براجمان ہوا 'وہ عروج کو پنچااور عرض گزاروں کودیکھا' اس نے اپنے دل میں بقا کا گمان کیا' لیکن اس نے اپ نفس میں ناکام ونامراد گمان کیا' اللہ کی قتم الذتوں کوختم کردینے والی (موت) نے اسے ہلا دیا' اورا چک لیا' قبر کے ساتھ اسے گھوڑے سے اتارا مصائب و آزمائش کی طرف اسے متوجہ کر دیا تو اسے مٹادیا' اسے جہل و بے عرقی کے اندھیروں میں چھوڑ دیا۔ پس دانا شخص وہ ہے جواپ ایام کویادگار بناتا ہے' کیونکہ انجام تواجا تک ظہور پذیر ہوجاتا ہے۔

تبنى و تجمع والآثار تندرس وتأمل اللبث والأعمار تختلس ذا اللب فكر فما فى العيش من طمع لابد ما ينتهى أمر و ينعكس أين الملوك و أبناء الملوك ومن كانوا إذا الناس قاموا هيبة جلسوا ومن سيوفهم فى كل معترك تخشى و دونهم الحجاب و الحرس

> أضحك وابمه لكة في وسط معركة صرعي وصاروا ببطن الأرض و انطمسوا

وعمهم حدث و ضمهم جدث باتوا فهم جثث في الرسم قد حبسوا كأنهم قط ما كانوا وما خلقوا ومات ذكرهم بين الورى ونسوا

→ كتاب الكبائر

والله لو عاينت عيناكما صنعت أيدى البلابهم و الدود يـفتـرس

"تم تعمیر کرتے اور جمع کرتے ہوجبکہ نشانات منادیۓ جاتے ہیں۔ تم زندہ رہنے کی امیدر کھتے ہوجبکہ عمریں ایک لی جائیں گی۔"

''عقل مند شخص!غور کروزندگی میں کیاطمع ہے۔ جومعاملہ انتہا کو پنچتا ہے تو وہ لازی طور پرالٹ جاتا ہے۔''

'' بادشاہ اور بادشاہوں کی اولا داور وہ لوگ کہاں ہیں کہ جب لوگ ہیبت سے کھڑے رہتے تتھاور وہ بیٹھے ہوتے تتھے''

'' ہرمعرکے میں ان کی تکواروں ہے ڈرا جاتا تھا جبکہ ان کے آگے حجاب اور محافظ ہوتے تھے۔''

''وسط معرکہ میں ہلاکت پروہ بننے وہ پچھاڑے گئے وہ زبین کے اندر چلے گئے اور مٹ گئے۔''

، ''عموی حادثات نے انہیں اپنی لپیٹ میں لے لیا اور انہیں قبروں سے جاملایا انہوں نے رات گزاری تو وہ رسی طور برجم ولاشے تھے جور دک لئے گئے تھے۔''

''گویا کہ وہ بھی تھے ہی نہیں' اور نہ وہ پیدا کئے گئے' مخلوق میں ان کا ذکرختم ہو گیا اور وہ بھلا دیئے گئے۔''

''الله کی قتم!اگرتمہاری آئکھیں اس چیز کا معائنہ کرتیں جومصائب کے ہاتھوں نے ان کے ساتھ کیااور کیڑے چیر بھاڑ رہے ہیں۔''

'' وہ البتہ ایسے منظر کو دیکھتیں جو دلوں کو ممکنین کر دے گی اور وہ ناپسندیدہ اور حیران کن منظر دیکھتیں۔''

'' کتنے ہی ترونازہ چېرے جن کود کیھنے والا جیران رہ جاتا ہے۔ان میں حسن کی رونق ہے ٔوہ کیسے مٹادیے گئے۔''

''اور بری بری پوسیدہ ہڈیاں جن میں کوئی رمتی نہیں۔وہ اس کے لئے باتی نہیں رہیں گی'جبکہ وہ نو چی جاتی ہیں۔''

الكبائر كتاب الكبائر كالمنائر كا

''بولنے دالی زبانیں جن کوادب نے زینت بخشی ہو۔ان کی کیاشان تھی کہ گو کیگے پن کی آفت نے انہیں عیب دار بنادیا۔''

''عقل مند هخص! فیصله کر'اس کی نادانی تمهیس باز نه رکھے۔اور تیری آ تکھوں کے آ نسول تھمیں گےنہیں' جبکہ دہ جاری کردیئے جا ئیں۔''

### نفيحت:

اے دہ خص ا جو ہرروز ایک مرحلہ کوچ کرتا ہے اور اس کی کتاب نے ہر چیز کاحتی کہ رائی

الک متصل اور سلسل ہے۔ وہ تا صح (خیر خواہ) کی طرف کان نہیں دھرتا حالانکہ اس نے اسے

معزول کیا ہے۔ اس کی زر ہیں بھٹ چی ہیں جبکہ تیر چلائے جا چی ہیں۔ نور ہدایت تو ظاہر ہو

معزول کیا ہے۔ اس کی زر ہیں بھٹ چی ہیں جبکہ تیر چلائے جا چی ہیں۔ نور ہدایت تو ظاہر ہو

چکا۔ لیکن اس نے اسے و یکھا نہ اس پر خور وفکر کیا جبکہ دہ تو بقا کی امید کرتا تھا۔ حالانکہ دہ دہ یکھتا ہے

چراناس کا جواس کی امید کرتا ہے اسے دیوائی کے جوش کے ساتھ بردھا ہے کے بعد عیب ونقص

پر دوک لیا گیا ہے۔ جس طرح چا ہو ہو جاؤ میاب وزلزلہ تہمارے سامنے ہے۔ اور ہاں تیری

جلد کو کیڑوں نے ضرور کھانا ہے۔ جز ااور سوال وجواب کا یقین رکھنے والے مومن پر تعجب ہے جو

فقر وغرور کا شکار ہے۔ اے تھی پر افسوں ہے کس نے تجھے دعوت دی اور اپنی منزل کھول دی اور

فقر وغرور کا شکار ہے۔ اے تھی پر افسوں ہے کس نے تجھے دعوت دی اور اپنی منزل کھول دی اور

ختے ہلاکت کے کنارے تک پہنچا دیا' کاش کہ تو اس کی منزل کو جان لے۔ پس تہماری جو عمر باتی

 $^{2}$ 

# (۲۸) حرام کھانااورجس طرح بھی ہواسے حاصل کرنا

الله عزوجل نے فرمایا:

﴿ وَلَا تَأْكُلُوْ آ آمُوَ الكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدُلُوْ ا بِهَاۤ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاكُلُوْ ا فَرِيْقًا مِّنْ آمُوَ الِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُونَ۞ (البقرة: ١٨٨)

''اورآپس میں تأخق ایک دوسرے کا مال نہ کھاؤ۔''

یعنی تم میں ہے کوئی ناحق کسی کا مال نہ کھائے۔ ابن عباس رضی اللہ عنہمانے فر مایا بعنی آدی باطل جھوٹی قتم کے ذریعے اپنے بھائی کا ناحق طریقے سے مال نہ کھائے۔ اور ناحق طریقے سے مال کھا نادوطرح سے ہیں۔

(الف) ظلم كے طور پر ہو۔ جيسے غصب ُ خيانت اور چوری۔

(ب) ہلمی نداق اور کھیل وغیرہ کے ذریعے جیسا کہ جو ہاور آلات لہوولعب اور اس طرح کے ذرائع ہے۔ کے ذرائع ہے۔

رسول الله مَنْ اللَّهُ مَا لِيَدِّمُ فِي مايا:

''جولوگ اللہ کے مال میں ناحق تصرف کرتے ہیں' ان کے لئے روز قیامت آگ ہوگی۔'' 🛈

صحیح مسلم میں ہے جب نبی منائل نی آئے نے ذکر فرمایا: ''آ دمی دور دراز کا سفر طے کرتا ہے' پراگندہ حال بھرے میں ہے حال بھرے بال' پاؤں گردآ لود ہیں' وہ آسان کی طرف ہاتھ بلند کرتا ہے اور کہتا ہے' اے رب! اے رب! جبکہ اس کا کھانا' اس کا پینا اور اس کا لباس حرام ہے۔ اس کی غذا ہی حرام ہے۔ توایسے مخض کی دعا کیسے قبول ہوگی۔''

انس رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں' میں نے عرض کیا' اللہ کے رسول! اللہ سے دعا فرما کیں کہ وہ مجھے ستجاب الدعوۃ بنادے۔ تو آپ نے فرمایا:

''' ''انس! اپی کمائی پا کیزه کر لئے تیری دعا 'میں قبول ہوں گی' کیونکہ آو دی حرام کالقمہ

🛈 بخاری

حق كتاب الكبائر

ا پے مندی طرف اٹھا تا ہے تو اس کی جالیس روز تک دعا قبول نہیں ہوتی۔'' بیہی نے اپنی اسناد سے روایت کیا ہے کہ رسول الله کالٹینے کے فرمایا:

'بیٹک اللہ نے تمہارے ابین تمہارے اخلاق تقیم کے جس طرح اس نے تمہارے درمیان تمہارے رزق تقیم کے ۔ اور اللہ دنیا اپ پیند و ناپندسب کو دینا ہے لیکن وہ دین اپ صرف پندیدہ شخص ہی کو عطا کرتا ہے۔ لیس اللہ جس شخص کو دین عطا کر دیت ہوتا وہ اس کا پیندیدہ شخص ہے اور بندہ جو حرام مال کما تا ہے اور وہ اس میں سے خرچ کرتا ہے تا کہ اس میں اس کے لئے برکت ہوا ایسانہیں ہوتا اور وہ اس میں سے جوصد قد کرتا ہے وہ بھی قبول نہیں ہوتا۔ اور جو مال اپنے پیچھے چھوڑ جاتا ہے تو وہ اس کا جہنم کی طرف زادراہ ہے کیونکہ اللہ برائی کے ذریعے برائی کوئم نہیں کرتا بلکہ وہ نیکی کے ذریعے برائی کوئم نہیں کرتا بلکہ وہ نیکی کے ذریعے برائی کوئم نہیں کرتا ہے۔''

ابن عرر بيان كرت بين رسول الله مَثَالَة عَلَم في فرمايا:

''دنیا شریں وسرسز وشاداب ہے جس نے اس میں طلال طریقے سے مال کمایا' اسے اس کے حق میں خرچ کیا' اللہ نے اس تو اب عطا کیا اور اسے اپنی جنت میں داخل کر دیا اور جس شخص نے اس میں ناجا کز طریقے سے مال کمایا اور اسے ناحق خرچ کیا تو اللہ تعالیٰ اسے ذلت ورسوائی کے گھر میں داخل فرمائے گا۔ اور بسا اوقات (نفس کی خواہش پر حرام میں) تصرف کرنے والے کیلئے قیامت سے دوز جہنم ہوگی۔' اور آیٹ کا تیج کہ سے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا

''جو شخص اس چیز کی پروانہیں کرتا کہاں نے مال کہاں سے کمایا ہے' تو اللہ بھی پروا نہیں کرے گا کہ وہ اے کس دروازے ہے جہم میں داخل فر مائے گا۔''

ابوہرری بیان کرتے ہیں:

''تم میں ہے کوئی شخص اپنے مندمٹی میں ڈال لئے بیاس سے بہتر ہے کہ وہ اپنے منہ میں حرام داخل کرے۔'' ① سوسف بن اسباطٌ نے فر مایا: جب نو جوان عبادت کرتا ہے تو شیطان اپنے حمایتیوں ہے کہتا ہے: دیکھواس کا کھانا کیسا ہے؟ اگر اس کا کھانا برا ہوتو وہ کہتا ہے؟ اے چھوڑ دؤ اے تکلیف اور مشقت و تھکاوٹ برداشت کرنے دؤ تمہارے لئے یہ خود ہی کافی ہے۔ کیونکہ اس کا حرام کھا کر مخت و کوشش کرنا اس کے لئے نفع مند نہیں۔ اور آپ نگائی کے فر مان ہے اس کی تائید ہوتی ہے جب آپ نے اس آ دمی کے متعلق فر مایا تھا: ''جس کا کھانا' بینا اور لباس حرام تھا' اس کی غذا اور جب آپ نے اس کی درش حرام ہے گہاں کی دعا تھوں ہو؟'' ایک حدیث میں مروی ہے کہ بیت المقدس پر دورش حرام ہے گہاں کی دعا کیے قبول ہو؟'' ایک حدیث میں مروی ہے کہ بیت المقدس پر دورش حرام ہے گہاں کی دعا ہے۔ المقدس پر دورش حرام ہے گھانا واز دیتا ہے:

'' جو محض حرام کھا تا ہے اللہ اس کانفل قبول کرتا ہے نہ فرض''

عبدالله بن مبارک نے فرمایا ''اگر میں مشتبداور مشکوک ایک درہم لینے ہے انکار کر دوں تو یہ جھے ایک لا کھ درہم صدقہ کرنے سے زیادہ پسند ہے۔''

اور نی منافظ سے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا:

''جو شخص حرام مال سے حج کرے اور وہ کہے'لیک'' میں حاضر ہوں' تو فرشتہ جواب دیتا ہے: تیری حاضری قبول ہے نہ تیرا آنا باعث سعادت ہے۔ تیرا حج قبول نہیں۔' ①

امام احمدؒ نے اپنی مسند ﴿ میں رسول الله مَثَاثِیَّا کِسے روایت کیا ہے کہ آپ نے فر مایا:''جو شخص دس درہم کا کپڑ اخریدے اور راس کی قیمت میں ایک درہم حرام کی کمائی سے ہوتو جب تک وہ کپڑ ااس کےجسم پررہےگا'اللہ اس کی نماز قبول نہیں کرےگا۔''

وہب بن درد بیان کرتے ہیں: اگرتم ستون کی طرح (ہمیشہ) قیام کروٴ تو یہ تیرے لئے تب نفع مند ہے کہ تو یہ دیکھے کہ تیرے پیٹ میں حلال داخل ہوتا ہے یا حرام۔ مند ہے کہ تو یہ دین نہ میں مدال داخل ہوتا ہے یا حرام۔

ا بن عباس رضی الله عنهمائے فر مایا: ''الله اس فخص کی نماز قبول نہیں کرتا جبکہ اس کے پیٹ

<sup>🛈</sup> طبرانی نے حدیث ابی ہریرہ ہے روایت کیا ہے اس کی سند میں سلیمان بن داؤد الیمانی ضعیف ہے۔

ابن عمروی صدیث ہے مروی ہے کہ اس کی سند میں ہاشم ہے۔ پیٹی اے نہیں پہنچاہتے اس کے ضعف کی طرف اشارہ کیا ہے۔

میں حرام ہوجی کہ وہ اس بارے میں اللہ تعالی کے حضور تو ہرے۔''

سفیان توریؒ نے فر مایا '' جو محض حرام مال نیک کام میں خرچ کرتا ہے وہ اس محض کی طرح ہے جو پیشاب سے کپڑا یاک کرتا ہے۔ جبکہ کپڑا تو پانی سے پاک صاف ہوتا ہے۔ اور گناہ حلال سے ختم ہوتا ہے۔''

عمرٌ نے فرمایا: ہم حرام میں واقع ہونے کے اندیشے سے حلال کے دس میں سے نو جھے بھی چھوڑ دیا کرتے تھے۔

زید بن ارقم بیان کرتے ہیں: ابو بکر گا ایک غلام تھا جوان کے لئے خراج وصول کیا کرتا تھا

یعنی وہ ان کے مال پر مامور تھا۔ وہ ہرروز خراج لے کرآتا تو آپ اس سے بوچھے کہم اسے

کہاں سے لے کرآئے ہو؟ اگرآپ اسے بند کرتے تو اسے کھا لیتے ورنہ چھوڑ دیتے۔ بیان

کرتے ہیں کہ ایک رات وہ آپ کے پاس کھا نا لے کرآیا۔ ابو بکر ڈروزہ سے سے انہوں نے اس

سے ایک لقمہ لے لیا۔ آپ اس سے بوچھنا بھول گئے۔ پھر انہوں نے بوچھا کہم اسے کہاں سے

لاکے ہو؟ اس نے جواب دیا کہ وہ دور جا بلیت میں لوگوں کے لئے کہانت کیا کرتا تھا ' حالانکہ

میں اچھی طرح کہانت نہیں جانتا تھا۔ میں تو بس انہیں دھوکہ دیتا تھا۔ ابو برڈ نے فر مایا: تم پر افسوں

میں اچھی طرح کہانت نہیں جانتا تھا۔ میں تو بس انہیں دھوکہ دیتا تھا۔ ابو برڈ نے فر مایا: تم پر افسوں

الکن وہ نگل نہیں رہا تھا۔ آپ کو بتایا گیا کہ وہ پانی کے ساتھ نظے گا۔ انہوں نے پانی منگایا۔ اور

پانی پی کرتے کرنے گئے جی کہا گیا:

اللہ آپ پر رحم فر مائے۔ بیسب کچھا کی بیٹ میں جو پھی تھا وہ سب نکال دیا۔ آپ سے کہا گیا:

اللہ آپ پر رحم فر مائے۔ بیسب پھھا کی جاتی تو میں اسے ضرور نکال کیونکہ میں نے رسول اللہ مکا گیا: اگر

ام مائے ہوئے سا ہے:

"جوجهم حرام سے پر درش پائے وہ آگ کا زیادہ مشتق ہے۔" 🏵

<sup>🛈</sup> ترمذی ابن حبان ۔ 🛈 بخاری

معرفي كتاب الكبائر في الكبائر ف

اس لئے مجھے اندیشہ ہے کہ کہیں اس لقے کی وجہ سے میرے جسم میں نشو ونما نہ ہو۔ اور آ ب مَالْیِنْظِمُ کا فرمان گزر چکا ہے:

"حرام سے تیار ہونے والاجسم جنت میں نہیں جائے گا۔"

علاء رحمهم الله نے فرمایا: اس باب میں درج ذیل سب داخل ہیں:

فیکس وصول کرنے والا خیانت کرنے والا 'جعل ساز' چور' بے ہودہ کام کرنے والا 'سود کھانے اور کھلانے والا ' یتیم کا مال کھانے والا 'جھوٹی گواہی دینے والا ' ادھار چیز لے کر واپس نہ کرنے والا 'رشوت خور' تاپ تول میں کی کرنے والا 'کسی چیز کے عیب چھپا کر فروخت کرنے والا ' جوا باز' جادوگر' نجوی' مصور' زانی' نوحہ کرنے والی' اختلاط کرنے والی' دلال' جب وہ بائع کی اجازت کے بغیرا پی اجرت لے لے اور خریدار کو زیادہ قیمت کی خبر دینے والا اور وہ خض جو کسی آزاد آدی کو فروخت کر کے اس کی قیمت کھا جائے۔

### فصل:

رسول اللهُ مَا اللهُ عَلَيْدُ اللهُ عَلَيْدُ اللهُ عَلَيْدُ اللهُ عَلَيْدُ اللهُ عَلَيْدُ اللهُ عَلَيْدُ الله

'' قیامت کے ون کچھ لوگوں کو لایا جائے گا' ان کے پاس تہامہ کے پہاڑوں جیسی نکیاں ہوں گئ جی کہ جب انہیں پیش کیا جائے گا تو اللہ نے ان کواڑتی ہوئی خاکر دیا جائے گا تو اللہ نے ان کواڑتی ہوئی خاک کر دے گا اور پھر انہیں جہنم میں مجھینک دیا جائے گا۔''

عرض کیا گیا' اللہ کے رسول! میر کس طرح؟ آپ نے فرمایا:''وہ نماز پڑھا کرتے تھے' روزے رکھا کرتے تھے'زکو ۃ دیا کرتے تھے اور جج کیا کرتے تھے کین جب انہیں کوئی حرام چیز پیش کی جاتی تووہ اسے بھی لے لیتے تھے پس اللہ نے ان کے اعمال کوضائع کر دیا۔'' ①

بعض صالحین ہے روایت ہے کہ اے اس کی موت کے بعد خواب میں دیکھا گیا' تو اے کہا گیا' اللہ نے تمہارے ساتھ کیا سلوک کیا؟ اس نے کہا: بہتر کیکن ایک بات ہے کہ جھے ایک

طبرانی نے ابوامامہ بابلی کی حدیث ہے روایت کیا ہے۔اس کی سند میں کلثوم بن زیاد اور بحر بن سبل
 الدمیاطی ہیں۔وونوں کی توثیق کی گئی ہے۔اوراس میں ضعف ہے باتی رجال سیح ہیں۔ (مجمع الزوائد)

حق کتاب الکبائر ک

ریا ہے۔۔ پس ہم اللہ تعالیٰ ہے عفوہ درگز رو عافیت وسلامتی اوراس کے پسندیدہ اعمال کی تو فیق کی درخواست کرتے ہیں کیونکہ وہ تخی داتا فیاض شفیق ومہر بان ہے۔

### تصیحت:

اللہ کے بندو! کیا را تیں اور دن زند گیوں کوختم نہیں کر دیتے ہیں؟ کیا دنیا میں مقیم رہنے کا انجام زوال کی طرف نہیں؟ کیاصحت کا انجام آخر کار بیاری نہیں؟

کی اسلامتی کی غایت 'نقصان کمال نہیں؟ کیا استقر ارحمل کے بعد آ جال (موتیں) حملہ آ ورنہیں ہو جاتیں؟ کیاشہیں کوچ کے بارے میں نہیں بتا دیا گیا جبکہ انقال کا وقت تو قریب آپنچا کیاتمہارے لئے عمرونصائح واضح نہیں ہوئے جبکہ تہمیں مثالیں بیان کردگ گئیں۔

وعزين نساعه فل لسه کل صعب المرتقی وعر المرام فکساه بعد لين ملبسس خشنًا بالرغم منه فی الرغام و وجوه نساضرات بدلت بعد لون الحسن لونًا کالقتام و شموس طالعات أفلت بعد ذاك النور منها بالظلام

''عزیز نرم ونازک هخص بلندی کی ہرمشکل اور مقصود کی ہررکاوٹ اس کے قابو میں آئے''

''زم وملائم لباس کے بعد اس کی ناپسندیدگ کے باوجودا ہے ٹی میں کھر درالباس بہنا دیا گیا۔''

''تر وتازہ چبرے خوبصورت رنگ کے بعد سیاہ گردیٹس بدل دیئے گئے۔'' ''چڑھتے سورج غائب ہو گئے اوراس نور کے بعداب اندھیرے ہیں۔'' ''بلندو بالاعمارتیں ان کے کنارے زم پڑ گئے اوران کی بنیادیں ہل گئیں۔'' ''ونیا کے لئے افسوس' اس کی تو عادت ہی ہیں ہے کہ وہ عہد و بیان اورا مان کا خیال + (186 کتاب الکبائر کتاب الکبا

''پس زادراہ کی تیاری کرو'نجات پا جاؤ گے اور خیے گرانے سے پہلے پہلے نیک عمل کر ا.'''

چک دمک سے متعلق شخص! اس کی بقا بجلیوں کی رفتار سے چمکتی ہے۔ حقوق کی ادائیگی کو خواہشات میں ضائع کرنے والے! تو خالق سے مقابلہ کرتا ہے۔ بلند یوں اور چوٹیوں پراثر انداز ہونے والے ان فسوق کو چھپانے والے! سن لے عنقریب تم ان فسوق کو دکھیا نے والے! سن لے عنقریب تم ان فسوق کو دکھیا کے دواہشات کے گہوارے میں پھرنے والے طالا نکہ وہ ذلت کی قید اور معمولی

چیز ہے۔تم اینے بیارنفس پرروؤ کیونگہتم رونے کے ستی ہو۔

اس شخص پرافسوں ہے جس نے اپنے ساتھی کومرتے دیکھا'اس کے نتم ہو جانے کا یقین کر لیالیکن ابی باری کا فیصلهٔ بیس کیا ؟ خرت پرایمان اپنے دل میں ساکن کرلیا (عمل نه کیا) اینے پہلو پرغفلت کی نیندسوگیا' اپنے جرم و گناہ پر ملنے والی جز اوسز اکو بھول گیا' آپی خواہشات کی تکمیل کی خاطراپنے رب سے غافل ہو گیا۔اے گرم کھولتے ہوئے پانی کا جام پلا دیا گیا'وہ اپنے اس ینے سے مدد طلب کرے گا۔موت نے اس کواس کے اہل وعیال اور مال مولیثی سے تنہا کر دیا۔ اس کواس کی قبر کی طرف نتقل کر دیا اوراس کے عجب وغرور کے بعد اسے ذلیل کر دیا پس عقل مند تخض!اں کی قبرکے پاس ہے گز راوراس کوآ واز دو کہ مواعظ نے کان پھاڑ دیئے۔ میں نہیں سجھتا کہ سامع نے اس سے استفادہ کیا ہو۔نورتو اپنے طلوع ہونے کی جگہ سے ظاہر ہو گیالیکن اس نے مطالع کو نابینا کر دیا۔عبر ونصائح تو غیر کے آثار سے اس مخص کے لئے ظاہر ہوگئے جوالیمی جگہوں سے دھوکہ کھا گیا۔ تو اس کا کیا حال ہے جوآ نسونہیں بہا تا۔ اس دل پر تعجب ہے جوذ کرحق پر ڈر رتانہیں ۔ یقیناً اس میں طمع ولا کچ نے پنچے گاڑ دیئے۔اے وہ شخص جس پر اس کا بڑھایا طاری موچکا تیراکیا خیال ہے کہ تیری گزری ہوئی عمرواپس آجائے گی۔جوباقی رہ گئی ہےاس کے متعلق ہوشیارہوجا'بازآ جااورلوٹآ ۔

ہولنا کی بہت بڑی ہوگی حساب سخت اور راستہ دور پر خطر۔ یقیناً تیرے رب کا عذاب واقع ہونے والا ہے اسے کوئی ٹالنے والنہیں۔

# 

# (۲۹)خورکشی

الله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ لِسَا يَنْهَا الَّذِيْنَ الْمَنُوا لَا تَا كُلُوْآ اَمُوالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضِ مِّنْكُمْ وَ لَا تَقْتُلُوا اَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ٥ وَمَنْ يَقْعُلُ ذَٰلِكَ عُدُوانًا وَظُلُمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللهِ يَسِيْرًا ٥ ﴾ (النساء: ٢٩ - ٣٠)

''اورایک دوسرے کوتل نہ کرو'یقین کرواللہ تم پر بڑار حم کرنے والا ہے۔اور جوسر کشی اور ظلم سے ابیا کرے گا تو ہم عنقریب اسے آگ میں جھوٹکیں گے اور اللہ کے لئے ابیا کرنا بہت ہی آسان ہے۔''

واحدیؓ نے اس آیت کی تفسیر میں فرمایا:

﴿ وَ لَا تَفْتُلُوْا اَنْفُسَكُمْ ﴾ لعنى تم ميں ہے وئى كسى وقل ندكرے كوئدتم سبكاايك دين ہاورتم ايك نفس كى مانند ہوا بن عباس اوراكثر كا يہى ندہب وموقف ہاور پچھلوگوں كا يہ خيال ہے كداس سے مراديہ ہے كدانسان كواپ آپ وقل كرنے ہے منع كيا ہے۔اس موقف كى تائيد ابومنصور محمد بن محمد المنصورى كى سند ہے عمر و بن عاص ہے مروى روايت ہے ہوتى ہے۔وہ بيان كرتے ہيں أيك سرورات ميں مجھے احتلام ہوگيا اور ميں غزوة ذات السلاسل ميں شريك تھا۔ مجھے خدشہ ہواكہ اگر ميں نے عشل كيا تو ميں ہلاك ہو جاؤں گا پس ميں نے تيم كيا اور اپنے ساتھيوں كوئي كى نماز پڑھائى۔ ميں نے نبى مُن الله في اس كاذكر كيا تو آپ نے فرمايا:

''عمرو!تم نے اپنے ساتھیوں کونماز پڑھادی' جبکہ تم جنبی تھے؟''

پس میں نے آپ کونسل نہ کرنے کی وجہ بتائی تو میں نے عرض کیا میں نے اللہ کا فرمان سنا

﴿ لِلَّا لَيُهَا الَّذِيْنَ امَنُوا لَا تَا كُلُواۤ اَمُوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا اَنْ تَكُونَ تِحَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَ لَا تَقْتُلُواْ الْفُسَكُمُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ مورات الكبائر (الكبائر (الكلا) (الكبائر (الكبائر (الكلا) (ال

رَحِيمًا ٥ ﴾ (النساء: ٢٩)

''اورایک دوسرے کول نہ کرو'یقین کرواللہ تم پر بردار حم کرنے والا ہے۔''

اس پر رسول الله مَلَیْ اَلْمُنِیَّمِ مُسَمَرا دیئے اور آپ نے انہیں کچھ نہ کہا۔اس حدیث سے ثابت ہوا کہ عمر وؓ نے اس آیت کی تفسیرا ہے آپ کو ہلاک کرنے سے کی ہے۔کسی اور کوٹل کرنے سے نہیں کی اور نبی مُلَالِیْئِلِم نے اس پڑکیرنہیں فر مائی۔

((ومن يفعل ذلك))" اورجواليا كركاك

ابن عباس فرمایا کرتے تھے: اس میں ان تمام امور کی طرف اشارہ ہے جن سے سورت کے شروع سے لے کریہاں تک منع کیا گیا ہے اور بعض نے کہاہے کہ وعید 'باطل طریقے سے مال کھانے اور نفس محرمہ کوئل کرنے کی طرف راجع ہے۔

﴿عُدُوانًا وَّظُلُمًا فَسَوْفَ نُصُلِيهِ نَارًا﴾ زيادتى كساتھ يكالله خصكاامرديا إن مين زيادتى كرنا۔

﴿ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيْرًا ٥ ﴾

یعنی اس نے آگ میں داخل کرنے کا کی جودھمکی دی ہےوہ اس کے واقع کرنے یعنی ایسا

كرنے پر قادر ہے۔ بياس كے لئے آسان ہے۔

جندب بن عبداللہ رضی اللہ عنہ نبی کا گھٹے کے سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے فرمایا: ''تم سے پہلے لوگوں میں ایک آ دی تھا' اے کوئی زخم ہوگیا تو وہ گھبرا گیا' اس نے چھری لی اور اس سے اپنا ہاتھ کاٹ ڈالا' خون بہنے لگاحتیٰ کہوہ فوت ہوگیا۔اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ''میرے بندے نے اپنے نفس (کوہلاک کرنے) پر جھے سے جلدی کی' میں نے اسے پر جنت حرام قرار دے دی۔'' ① ابو ہریر ہیان کرتے ہیں رسول اللہ مُناکی کے فرمایا:

''جس فخص نے اپنے آپ کولو ہے (ئے آلے) سے قل کیا تو اس کالوہااس کے ہاتھ میں ہوگا اور وہ جہنم میں ہمیشہ کے لئے اسے اپنے پیٹ میں مارتا رہے گا اور جس نے اپنے آپ کوز ہر سے قل کیا' تو اس کا زہر اس کے ہاتھ میں ہوگا اور وہ جہنم میں ہمیشہ

🛈 یخاری (۳٤٦۳) مسلم (۱۱۳)

مورث كتاب الكبائر كي مورث الكبائر كي المورث المورث الكبائر كي المورث المورث المورث المورث الكبائر كي المورث المورث

ہمیشہ کے لئے تھوڑا تھوڑا کر کے اسے بنتا رہے گا اور جس نے پہاڑ ہے گر کراپنے آپ کوِل کیا تو وہ ہمیشہ ہمیشہ کے لئے جہنم میں گرتارہے گا۔'' ①

ثابت بن ضحاك بيان كرتے بين رسول الله مَن الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَي الله

''مومن پرلعنت بھیجنا'اس کے قل کرنے کے مترادف ہے'جس نے کسی مومن پر کفر کا بہتان لگایا تو وہ اس کے قل کرنے کے مترادف ہے'اور جس نے اپنے آپ کوکسی چیز

بہال کی توروز قیامت اس کواس کے ساتھ عذاب دیا جائے گا۔'' 🏵

صیح حدیث میں اس آ دمی کے متعلق ہے جس کو زخم نے تکلیف پہنچائی تو اس نے موت کے بارے میں جلد بازی کی اوراپنی تلوار کی دھارے اپنے آپ کوتل کرلیا تو رسول اللّٰدِ کَالْیَّا اِللّٰمِ اللّٰلِیَّ فرمایا:

''و څخص جہنمی ہے۔'' 🕝

پس ہم اللہ تعالیٰ ہے دعا کرتے ہیں کہوہ ہمیں ہماری رشد وہدایت عطا فرمائے اور ہمیں ہمار نے نفوں اور ہمارے برے اعمال کی شرور ہے محفوظ رکھئے کیونکہ وہ تنی واتا فیاض بخشنے والا مہر بان ہے۔

نصیحت:

ابن آ دم! تم اپنے اعمال کو کیے مضبوط بچھتے ہو حالانکہ تہمیں معلوم ہے کہ وہ ایک دھوکہ فریب ہے؟ تم مولی کے معاطے کو کیے چھوڑ دیتے ہو حالانکہ تم جانتے ہو کہ وہ مفید ہے؟ تم اپنے زادراہ میں کیے کمی کرتے ہو حالانکہ تم جانتے ہو کہ راستہ لمبااور دور ہے؟ ہم سے اعراض کرنے والے! یہ جفااوراعراض کب تک چلے گی؟ موت اور عمر سے غافل! خاتے میں کوئی شک نہیں۔ اپنی امید میں فریفتہ ہونے والے موت کے ہاتھ اس کی امید کرفینچی کے ساتھ کر رہے ہیں۔ اپنی امید میں فریفتہ ہونے والے موت کے ہاتھ اس کی امید کرفینچی کے ساتھ کر رہے ہیں۔ اپنی صحت اور اپنے بدن کے بارے میں غرور کرنے والے تم ہر روز انہدام وشکستگی کی طرف

<sup>🛈</sup> بخاری (۵۷۷۸) مسلم (۱۰۹)

<sup>🕜</sup> بخاری (۲۱۰۵)'مسلم (۱۱۰)

<sup>🕏</sup> بخاری (۲۸۹۸)'مسلم (۱۱۲)

جارہے ہو۔

اے وہ شخص! جس کا پھے حصدروزانہ فنا ہوتا ہے اللہ کی قتم اعتقریب سارا فنا ہو جائے گا۔
زاد راہ سے غافل شخص! حالانکہ سیابی (جوانی کے بعد سفیدی (بڑھاپے) نے تجھے متنبہ کر دیا
ہے۔ کم حفاظت کرنے والے! جبکہ موت کے تیر لمبے چوڑے ہیں۔ اے وہ شخص جو تلف و
ہلاکت کے گھاٹ کی طرف چلایا جاتا ہے حالانکہ تو حوض سے بھی دور کر دیا گیا ہے اسے مسکرانے
والے! فنا کی آئیس سوتی نہیں۔ جس شخص کے سامنے یہ اوقات ہوں تو اس کی پلکیس چشم ہوتی پر
کسے قادر ہو کتی ہیں؟

☆☆☆

# حاب الكبائر كاب الكبائر كاب

# (۳۰)ا کثر حجموٹ بولنا

الله تعالی نے فرمایا:

﴿ فَمَنْ حَاجَكَ فِيهِ مِنْ بَعُدِ مَاجَآءَ لَا مِنَ الْعِلْمِ فَقُلُ تَعَالُوْا نَدُعُ اَبُنَاءَ نَا وَ اَبْنَآءَ كُمْ وَ نِسَآءَ نَا نِسَآءَ كُمْ وَاَنْفُسَنَا وَ اَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّغْنَتَ اللهِ عَلَى الْكَذِبِيْنَ٥﴾ (ال عمران: ٦١)

''حجورُوں پرالله کی لعنت ہو۔''

اور فرمایا:

﴿ قُتِلَ الْحَرَّاصُونَ ﴾ (الذاريات: ١٠)

''انگل مارنے والے (انداز ہ لگانے والے ) مارے گئے۔''

اور فرمایا:

﴿ ان الله لا يهدى من هوسوف كذاب ﴾ (المومن / ٤٠ : ٢٥) "لقين ركهوكم الله حدي كررن والعجموع كوبدايت نبيس ويتاء"

ابن مسعودٌ بيان كرتے بين رسول الله مَالَيْنَا مِنْ فرمايا:

"نیقینا سیائی نیکی کی طرف را منهائی کرتی ہے اور نیکی جنت کی طرف را منهائی کرتی ہے۔ آدمی سی بولتار ہتا ہے اور سیائی کا قصد کرتا ہے حتی کہ وہ اللہ کے ہاں سیالکھا جاتا ہے۔ آدمی سی جوٹ گناموں کی طرف را منهائی کرتا ہے گناہ جہنم کی طرف را منهائی کرتا ہے گناہ جہنم کی طرف را منهائی کرتا ہے گئاہ جہن آدمی جھوٹ بولتار ہتا ہے اور جھوٹ کا قصد کرتا ہے حتی کہ وہ اللہ کے ہاں جھوٹا لکھا جاتا ہے۔ " ()

صحیحین میں روایت ہے کہ آپ مُلَا یُوْمُ نے فرمایا

''منافق کی تین نشانیاں ہیں خواہ وہ نماز پڑھے اور دوزہ رکھے اور وہ گمان کرے کہ وہ مسلمان ہے: جب بات کرے جھوٹ بولے جب وعدہ کرے خلاف ورزی کرے

<sup>🛈</sup> بخاری (۲۰۹٤) مسلم (۲۲۰۷)

اور جب اس کے پاس امانت رکھی جائے تو وہ خیانت کرے۔'' 🛈 اور آب مِنْ اللّٰہِ عُرِفِ ایا:

" چارخصلتیں ایسی ہیں وہ جس شخص میں ہوں تو وہ خالص منافق ہاور جس میں ان میں ہے کوئی ایک خصلت ہوتو اس میں نفاق کی ایک خصلت ہوگی تی کہ وہ اسے چھوڑ دے۔ جب اس کے پاس امانت رکھی جائے تو خیانت کرئے جب کوئی معاہدہ کرے تو بے وفائی کرے اور جب جھگڑ اکر ہے تو گائی گلوچ پراتر آئے گا۔' ؟ اورضیح بخاری میں نبی تَافِیْنِ کے خواب کی حدیث میں ہے آپ نے فرمایا:

'' بیس ہم ایک آ دمی کے پاس آئے وہ اپنی گدی کے بل (لیعنی النا) لیٹا ہوا تھا' جبکہ دوسر اضحف لو ہے کا آ کڑا لئے اس پر کھڑا ہے۔وہ اس کا گلیھڑ ااس کی گدی تک چیر دیتا ہے اور اس کی آ تکھوں کو بھی اس کی گدی تک پھر وہ دوسری جانب جاتا ہے وہ اس کے ساتھ بھی وہی کرتا ہے جو اس نے پہلی جانب کیا تھا۔وہ ابھی اس طرف واپس نہیں آئے گا کہ وہ اپنی پہلی حالت پر پھر آ جائے گا' قیامت کے دن تک اس کے ساتھ اس طرح ہوتا رہے گا۔ میں نے ان دونوں سے پوچھا' بیکون ہے؟ انہوں نے ساتھ اس طرح ہوتا رہے گا۔ میں نے ان دونوں سے پوچھا' بیکون ہے؟ انہوں نے کہا بیدوہ شخص ہے کہ وہ شبح اپنے گھرسے نکاتا تو ایسا جھوٹ بولتا کہ وہ ساری دنیا تک بہتے جاتا۔' ؟

اورآ پِمَالُيْنَا مِمَالِيَ الْمُعَالِمِينَا مِمَالِيا

مومن میں خیانت اور جھوٹ کے علاوہ کوئی بھی خصلت ہو علی ہے۔'' 🍘

اور صدیث میں ہے:

''برگمانی سے بچو' کیونکہ برگمانی سب سے بڑا جھوٹ ہے۔'' ⑥

اورآ پ مَالْفِيْنَاكُ نِي مُالِيَّةِ

<sup>🛈</sup> بخاری (۳۳) مسلم (۵۹) 🔻 بخاری (۳۶) مسلم (۹۸)

<sup>🕈</sup> بخاری (۷۰٤۷)

<sup>@</sup> بخاری (۲۰۱۳) مسلم (۲۵۹۳)

+ كتاب الكبائر في المنافر في ال

'' تین قتم کے لوگ ہیں اللہ ان سے کلام کرے گا ندروز تیامت ان کی طرف دیکھے گا اور نہ ہی انہیں پاک کرے گا اور ان کے لئے ور دناک عذب ہے۔ بوڑھا زانی 'جھوٹا بادشاہ اور متکبر فقیر۔'' ①

اورآ پِسَالْقِیَامِنے فرمایا:

''اس شخص کے لئے ہلاکت ہے جو بات کرتا ہے تو جھوٹ بولٹا ہے تا کہ وہ اس کے ذریعے لوگوں کو ہنسائے۔اس کے لئے ہلاکت ہے اس کے لئے ہلاکت ہے اور اس

کے لئے ہلاکت ہے۔"

اوراس سے بری جھوٹی قتم اٹھانا ہے۔جیسا کہ اللہ تعالی نے منافقین کے متعلق فر مایا: ﴿ وَ يَهُمُ لِكُلُمُونَ ﴾ (المحادلة/ ٥٨: ١٤)

'' وه جھوٹی قتم کھا جاتے ہیں۔ حالانکہ وہ جانتے ہیں۔''

صیح بخاری میں ہے کدرسول الله منا الله علی فرمایا

"تین قتم کے لوگ ہیں کہ اللہ روز قیامت ان سے کلام کرے گانہ آئیس پاک کرے گا
اور ان کے لئے دردناک عذاب ہوگا ایک وہ آ دمی جس کے پاس کوئی زائد چیز
(پانی) ہوتو وہ اسے مسافر سے روک لیتا ہے ایک وہ آ دمی جو کسی کوسودا فروخت کرتا
ہے اور اللہ کی قتم اٹھا تا ہے کہ اس نے اسے آئی قیمت پرخریدا ہے طالا تکہ اس نے اس
کو اس بتائی ہوئی قیمت کے علاوہ قیمت پرخریدا ہوتا ہے۔ ایک وہ آ دمی جو دنیا کی
خاطر امام و حکمران کی بیعت کرتا ہے اگر وہ اس کو اس (دنیا) میں سے مجھ دے دیا
ہے تو و فاکرتا ہے اور اگر وہ اس کے تھی بین دیتا تو وہ اس سے بے و فائی نہیں کرتا ہے۔"
اور آ یے مانی خرمایا:

'' سب سے بڑی خیانت میہ ہے کہتم اپنے بھائی سے کوئی بات کرو جبکہ وہ اس کے متعلق تمہیں سچاسمجھتا ہو' جبکہ تم اس کے ذریعے اس سے جھوٹ بولتے ہو۔'' ©

<sup>1)</sup> مسلم (1) احمد

<sup>🕏</sup> امام ترندی کے علاوہ محدثین کی جماعت نے اسے مدایت کیا ہے۔

يه بھی حدیث میں ہے آپ نے فرمایا:

''جس مخض نے کوئی ایبا خواب بیان کیا' جو کہ اس نے دیکھانہیں تو (روز تیامت) اسے دوجو کے درمیان گرہ لگانے کے متعلق مکلّف و ذمہ دار بنا دیا جائے گا جبکہ وہ گرہ

نہیں لگا سکے گا۔" ①

اوررسول الله مثالية المستفر مايا:

''الله پر جھوٹ باندھنے کے مترادف ہے کہ آ دمی اپنی آ تکھوں کو وہ چیز دکھائے ( حجموٹا خواب بیان کر ہے )جوانہوں نے دیکھی نہیں۔'' ۞

اس کامعنی میرے کہ وہ مخص کہے: میں نے اپنے خواب میں میریہ کچھ دیکھائے جبکہ اس نے کچھ بھی نددیکھا ہو۔

ابن مسعودٌ نے فرمایا: بندہ جھوٹ بولتا رہتا ہے اور جھوٹ کا قصد کرتا ہے جتیٰ کہاس کے دل پر سیاہ نکتہ لگادیا جاتا ہے جتیٰ کہاس کا دل بالکل سیاہ ہو جاتا ہے اور وہ اللہ کے ہاں جھوٹوں میں لکھ دیا جاتا ہے۔ ⊕

پس مسلمان کو چاہیے کہ وہ اپنی زبان کو کلام ہے محفوظ رکھے' سوائے ایسے کلام کے جس میں مصلحت ظاہر ہوپس سکوت (خاموثی) میں سلامتی ہے اور سلامتی کے مساوی کوئی چیز نہیں۔ ابوہرریہ ؓ رسول اللّٰد مُنَّافِیۡتُمْ ہے روایت کرتے ہیں' آپ نے فر مایا:

'' جو خص الله اور یوم آخرت پرایمان رکھتا ہؤا سے چاہیے کہ خیر و بھلائی کی بات کرے ور نہ خاموش رہے۔'' ۞

پس اس حدیث کی صحت پر امام بخاری اور امام مسلم حمہم اللّٰد کا اتفاق ہے۔ یہ اس پرنص صرتے ہے کہ انسان کو چاہیے کہ وہ جب کلام کر ہے تو وہ خیر پر پٹنی ہونا چاہیے اور کلام خیروہ ہے جس میں متکلم کے لئے اس کی مصلحت ظاہر ہو۔

ابومویٰ اشعری (عبدالله بن قیس) رضی الله عنه بیان کرتے ہیں میں نے عرض کیا اللہ کے

<sup>🛈</sup> بخاری (٤٠٤٨) 🛚 بخاری (٣٥٠٩) <sup>.</sup>

<sup>🕝</sup> مالك 🦪 بخارى

+ الكبانر الك

رسول! كون سامسلمان افضل هي؟ آپ فرمايا:

'' جس کی زبان اور ہاتھ سے دوسرے مسلمان محفوظ ہوں۔'' 🛈

اور سحیحین میں ہے:

'' کہ آ دی کوئی کلمہ ادا کرتا ہے جس میں وہ غور وفکر نہیں کرتا ( کہ وہ حرام پر جنی ہے) لیکن وہ اس کی وجہ سے اس قدر دور جہنم میں چلا جاتا ہے' جس قدر مشرق ومغرب کے درمیان دوری ہے۔''

بلال بن حارث المر فی رضی الله عنہ بے روایت ہے کہ رسول الله مُلَّا الله فَر مایا:

"آ دمی الله تعالیٰ کی رضا مندی والاکلمہ اوا کرتا ہے اس کے وہم و گمان میں بھی نہیں تھا

کہ بیکلمہ اس مقام تک بینی جائے گا جہاں وہ بینی گیا۔ الله تعالیٰ اس کلے کی وجہ بے

اس مخص کے لئے اس دن تک کے لئے ابنی رضا مندی لکھ ویتا ہے جس روز وہ اس
سے ملا قات کرے گا۔ اور آ دمی الله تعالیٰ کی ناراضی والاکلمہ اوا کرتا ہے اور اس کا گمان

نہیں تھا کہ یہ وہاں تک بینی جائے گا جہاں تک یہ بینی گیا۔ الله اس کلے کی وجہ ہے اس
مخص کے لئے اس دن تک کے لئے جس دن وہ اس سے ملا قات کرے گا ابنی
ناراضی لکھ ویتا ہے۔ " آ

ہم نے جس طرح ذکر کیا ہے اس طرح بہت ی سیح احادیث ہیں۔اوراس میں ہم نے جو
اشارہ کیا ہے وہ کافی ہے۔کسی سے سوال کیا گیا، تم نے ابن آ دم میں کتنے عیوب پائے؟اس نے
کہا: وہ شار سے زیادہ ہیں۔ میں نے جو شار کئے ہیں وہ آٹھ ہزار ہیں۔اور میں نے ایک الی
خصلت پائی ہے اگر اسے اپنا لیا جائے تو وہ تمام عیوب کو چھپا لیتی ہے اور وہ ہے زبان کی
حفاظت۔اللہ ہمیں اپنی نافر مانی سے بچائے اور ہم اس کو ایسے امور میں بروئے کار لائیں جن
سے دہ راضی ہوتا ہے کیونکہ دہ تی داتا فیاض ہے۔

<sup>1</sup> مالك

ا بخاری مسلم

موري كتاب الكبائر في الموري الكبائر في الموري الكبائر في الموري الكبائر في الموري الموري الموري الموري الموري ا

تقيحت:

اے بندے! تجھ پر تیری عمر ہے زیادہ عزیز کوئی چیز نہیں لیکن تو اسے ضائع کر رہا ہے۔ شیطان کی طرح تیرا کوئی وشمن نہیں لیکن تو اس کی اطاعت کرتا ہے تیرے نفس کی موافقت سے زیادہ نقصان دہ کوئی چیزنہیں اور تو اس ہے دوستی لگا تا ہے ٔ سلامتی کی گھڑیوں کے سوا کوئی پونجی نہیں اورتواس میں اسراف کرتا ہے تیری عمر کا بہترین حصہ تو گزرچکا 'لفیں سفید ہونے کے بعد کیا باتی بچاہے؟ حاضر بدن اور غائب دل والے! بڑھاپے کا آ جانا تمام مصائب کا جامع ہے۔ بچپن اور پیاروں کی محبت کا دور جاتا رہا' اب تو وعظ ونصیحت اور ڈانٹ ڈپٹ کرنے کے لئے بڑھایا کافی ہے۔اے عافل! یہ بہترین مناقب میں سے ہے عظیم مطالبے کے خوف سے رونا کہاں ہے؟ وہ کھیل کے میدان میں ضائع ہوجانے والا زمانہ کہاں ہے؟ میں نے عواقب کے آخر میں دیکھا۔جیسا کہ قیامت میں گناہوں پڑجن کو کا تب کی کتاب نے لکھ لیا تھا' بہتے آنسوؤں کو دیکھا جب میں حساب دینے کے لئے موقف میں کھڑا ہوں گا اور مجھے کیا جائے گا کہتم نے تمام امور واجب میں کیا کیا؟ تواس وقت میری کیا حالت ہوگی اور میرا کون ہوگا جومیرے فائدے کی بات كر سكي؟ تم نجات كى كيبے اميد كرتے ہو جبكه تم ہمہ وقت كھياوں ميں مشغول رہتے ہو جب آ رز و کیں ظن کا ذب کے ساتھ تیرے پاس آ کیں۔موت تمام مشارب سے زیادہ بخت ہے وہ فوجی دستوں کے سینوں میں اپنی تخی کے جام انڈیلے گا۔ پس اپنے نفس کا خیال کر اور غائب کے آنے والے کا انتظار کر'وہ بھر پورانداز میں آئے گا اور درست (نشانے پر لگنے والا ) تیر سے بھیلے گا۔اے امید کرنے والے! یہ کہ تو مصائب ہے محفوظ رہے گا کہ تونے مکڑی کے جالا بننے کی طرح گھر بنایا ہے۔ وہ شاہسوار کہاں گئے 'موت نے ان پر تمام رائے تنگ کر دیئے اور تھوڑی ہی دیر بعد تو بھی مصائب کا حلیف بننے والا ہے پس دیکھ اور عجائب کے رونما ہونے سے پىلىغوروقگراور تدېركر ـ

ተ ተ

# حال الكبائر كالمجائر كالمجائر

### (۳۱) برا قاضی

الله تعالى نے فرمایا:

وَإِنَّا اَنْزَلْنَا التَّوْرِلةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِيْنَ اَمْلَمُوا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبَانِيُّوْنَ وَالْاحْبَارُ بِهَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتْبِ اللهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ فَلَا تَخْشُوا النَّاسَ وَ اَخْشُونِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاللِيمَ ثَمَنَا قَلِيلًا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ فَلَا تَخْشُوا النَّاسَ وَ اَخْشُونِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاللِيمَ ثَمَنَا قَلِيلًا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ فَلَا تَخْشُوا النَّالَ فَلَوْلَيْكَ هُمُ الْكُفِرُونَ ٥ (المائدة: ٤٤) وَمَنْ لَمْ يَرْدُهُمْ بِمَا آنْزَلَ الله فَاولَيْكَ هُمُ الْكُفِرُونَ ٥ (المائدة: ٤٤) اور جَوكِنَ الله كَازل كرده شريعت عمطابق فيعلدند كري ويكالوك كافر بين الله الله تعالى في المُعْلَّ الله تعالى في المؤلِّ المؤلِّ الله تعالى في الله تعالى في المؤلِّ الله تعالى في المؤلِّ المؤلِّ المؤلِّ الله تعالى في المؤلِّ المؤلِّ المؤلِّ المؤلِّ المؤلِّ المؤلِّل الله المؤلِّ المؤلِّ المؤلِّل الله المؤلِّ المؤلِّ المؤلِّ المؤلِّ المؤلِّل المؤلْل المؤلْل الله المؤلْل المؤلْ

﴿ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَا آنَّ النَّفُسَ بِالنَّفُسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَ الْآنُفَ بِالْآنُفِ وَالْآنُفِ وَالْآنُفِ وَالْآنُفِ وَالْآنُفِ وَالْآنُفِ وَالْآنُفِ وَالْآنُفَ وَالْآنُفَ وَالْآنُفُ وَالْآنُونَ وَالْجَرُونَ وَالْجُرُونَ وَالْجُرُونَ وَالْجُرُونَ وَالْجُرُونَ وَاللّهُ فَاوَلَيْكَ هُمُ الظّلِمُونَ ٥ ﴾ كَفَارَةٌ لَذَ وَ مَنْ لَهُ مَا لظّلِمُونَ ٥ ﴾ (المائدة: ٥٤)

''اور جو کوئی اللہ کی نازل کردہ شریعت کے مطابق فیصلہ نہ کرے تو بھی لوگ ظالم ہیں۔''

اورالله تعالی نے فرمایا:

﴿ وَلْيَحْكُمُ آهُلُ الْإِنْجِيْلِ بِمَا آنُزَلَ اللَّهُ فِيْهِ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا آنُزَلَ اللَّهُ فَيه فَاوُلْنِكَ هُمُ الْفُسِقُونَ٥﴾ (المائد/ ٥: ٤٧)

"اور جو کوئی الله کی نازل کرده شریعت کے مطابق فیصلہ نہ کرے تو یہی لوگ فاسق

بير-"

طلحہ بن عبیداللّٰد نبی مَثَلَ اللّٰهِ عَلَیْ اللّٰہِ اللّٰہِ عَلَیْ ہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ ''اللّٰہ اس حکمران کی نماز قبول نہیں کرتا جواللّٰہ کی نازل کردہ شریعت کے علاوہ کسی اور

## + (198 <del>كتاب الكبائر (198 ) +</del>

چزے ماتھ نفلے کرتا ہے۔' 🛈

بريدة بيان كرت بين رسول الله مَا اللهُ عَلَيْهِ فَعَر مايا:

'' قاضی تین قتم کے ہیں۔ایک قاضی جنتی اور دو قاضی جہنمی ہیں۔ وہ قاضی جس نے حق پہچان کر حق پہچان کر حق پہچان کر حق پہچان کر پہر جان ہو جھکر خلم کیا تو وہ جہنمی ہے اور وہ قاضی جس نے علم کے بغیر فیصلہ کیا تو وہ بھی جہنمی ہے۔'' ﴿

صحابہ نے عرض کیا جو مخص لاعلمی میں فیصلہ کرتا ہے اس کا کیا گناہ ہے؟ فرمایا: ''اس کا گناہ بیہ ہے کہ وہ جب تک علم حاصل نہ کرلیتا تو وہ قاضی نہ بنتا۔''

ابو ہر مرة بيان كرتے بين رسول الله مَاليَّيْنِ من فرمايا:

" جے قاضی بناویا گیاوہ تو چھری کے بغیر ذرج کر دیا گیا۔" 🏵

فضیل بن عیاضؓ نے فر مایا:'' قاضی کو جا ہے کہ وہ ایک دن فیصلے کرے اور ایک دن اپنے نفس برروئے۔''

محر بن واسع مُینظیہ نے فرمایا: روز قیامت حساب کے لئے سب سے پہلے قاضیوں کو بلایا جائے گا۔

عائشہ رضی اللہ عنہا بیان کرتی ہیں میں نے رسول اللہ مُلَّاثِیَّا کُوفر ماتے ہوئے سنا: ''منصف قاضی کوروز قیامت لایا جائے گا۔وہ حساب کی جس شدت سے دو چار ہوگا تو وہ پسند کرے گا کہ اس نے کسی دوآ دمیوں کے درمیان ایک تھجور کے بارے میں بھی فیصلہ نے کیا ہوتا۔'' ۞ معاذبن جبلؓ سے روایت ہے کہ رسول اللہ مُلَّاثِیَّا کُے فر مایا:

'' قاضی جہنم میں عدن ( یمن کے شہر ) سے بھی زیادہ دور مسافت جتنا تجسلتا جلا

- اس کی سند میں عبداللہ بن محمد عدوی رادی کمز در اور معہم ہے۔ اور بیان روایتوں میں سے ہے جن کا امام حاکم بہتنائے نے انکار کیا ہے۔ (منذری) اس کے الفاظ میں: ''اللہ ظالم بادشاہ کی نماز قبول نہیں کرتا۔'' امام ذہبیؒ نے اپنے رسالے الصغر کی میں فر مایا: بیالی سندسے مردی ہے جس سے میں مطمئن نہیں ہوں۔
  - 🧿 ابوداؤد (۲۵۷۳) ابن ماجه (۲۳۱۵)
  - ابوداؤد (۳۰۷۱) آل احمد' ابن حبان آن لائن مکتبہ محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

# **→ (199)** كتاب الكبائر كالمجائر كالم كالمجائر كالمجائر كالمجائر كالمجائز كالمجائر كالمجائر كالمجائز

جائے گا۔''

علی بن ابی طالب ٔ بیان کرتے ہیں میں نے رسول الله کا ﷺ کوفر ماتے ہوئے سنا:
'' ہر حکمران اور قاضی کوروز قیامت الله عز وجل کے حضور کیل صراط پر لا کھڑا کیا جائے
گا' بھراس کے رازوں کونشر کیا جائے گا اور تمام مخلوق کے سامنے آئیس پڑھا جائے گا۔
اگر وہ منصف ہواتو اللہ اس کے عدل کی وجہ ہے اسے نجات و سے گا اور اگر وہ اس کے
علاوہ ( ظالم ) ہواتو بھراس کی وجہ ہے بل شدت سے کا نے گا اور اس کے تمام اعضاء
کے درمیان اتنا اتنا فاصلہ ہو جائے گا۔ بھر بل اسے ساتھ لئے جہنم کی طرف بھٹ
جائے گا۔'

کمول بیان کرتے ہیں: ''اگر جھے منصب قضا اوراپی گردن مارے جانے کے درمیان کسی ایک کونتخب کرنے کا اختیار دیا جائے تو میں قاضی بننے کی نسبت اپنی گردن مارے جانے کونتخب کروں۔''

ایوب بختیانی نے فر مایا ''میں نے لوگوں میں سے سب سے زیادہ عالم کواس (قضاء) سے ان سب سے زیادہ دورر ہے (بھا گئے ) والا پایا۔

ا مام ثوریؒ سے کہا گیا کہ شرح کو قاضی بنا دیا گیا ہے انہوں نے کہا: انہوں نے اس آ دمی کو خراب کر دیا۔

مالک بن منذر نے محمد بن واسع کو بھرہ کا قاضی بنانے کے لئے بلایا تو انہوں نے انکار کر دیا۔وہ بار بارانہیں کہتار ہااور پھر کہا:تم اس منصب پرضرور بیٹھو گے ورنہ بیل تہمیں کوڑے ماروں گا۔ تو انہوں نے کہا: اگرتم ایسا کرو گے تو تم بادشاہ ہو ( کر سکتے ہو) کیونکہ دنیا کی ذلت آخرت کی ذلت سے بہتر ہے۔

وہب بن منبہ نے فرمایا: جب حاکم ظلم کا ارادہ کرتا ہے یا اس کے مطابق عمل کرتا ہے تو اللہ اس کی مملکت کے باشندوں میں نقص داخل کر دیتا ہے حتی کہ بازاروں مارکیٹوں غلوں کھیتوں اور دودھ (تھنوں میں) بلکہ ہر چیز میں کمی کر دیتا ہے۔ اور جب وہ خیر و بھلائی یا عدل کا ارادہ کرتا ہے تو اللہ اس طرح اس کی مملکت کے باشندوں میں برکت داخل کر دیتا ہے۔ جمص کے ایک گورنر محکمہ دلائل وہراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتب

## + ( كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر

نے عمر بن عبد العزيزُ كوخط لكھا:

ا ما بعد! شرحم من تو خراب ہو چکا ہے اس کی اصلاح کی ضرورت ہے۔ عمر بن عبد العزیر نُر نے جواب کھا:

''اسے عدل کے ساتھ محفوظ رکھواوراس کے راستوں کوظلم سے صاف کردؤ' والسلام فرمایا: قاضی پرحرام ہے کہ وہ غصے کی حالت میں فیصلہ کر ہے۔ اور جب قاضی میں' قلت علم' براارادہ' بر سے اخلاق اور قلت فتو کی و پر ہیزگاری جیسی خصلتیں جمع ہوجا کیں تو اس کا خسران محمل ہوگیا۔ اب اس پر واجب ہے کہ وہ اپنے آپ کومعزول کر سے اور چھٹکارا پانے میں جلدی کر ہے۔ پس ہم اللہ سے عفو و عافیت اور اس کے پہندیدہ امورکی توفیق کا سوال کرتے ہیں۔ کیونکہ وہ تی واتا ہے۔

#### تقبيحت:

اے وہ خض کہ جب بھی اس کی عمر زیادہ ہوئی تو وہ کم ہوئی اےموت کے فرشتے سے بے خوف ہونے والے اوہ تو تیرا پیچھا کر ہاہے۔ دنیا کی طرف مائل ہونے والے اکیاتم نقص سے محفوظ ہو گئے ہو؟ اپن عمر میں صدیے بڑھنے والے! کیاتم نے ملنے والے مواقع کی طرف جلدی کی ہے؟ اے وہخص! جب بھی منہاج ہدایت کی طرف زقی کرتا ہے بھرخواہشات جعلملانے لگی ہیں تو وہ پیچیے ہٹ جاتا ہے ٔ حشر کے دن جب نامہ اعمال کھلیں گے تو اس وقت تیرا حمایتی کون ہوگا اس نفس پر تعجب ہے کہوہ پوری رات سوکر گزار دیتا ہے۔اوروہ قیامت کی ہولنا کیول کو بھول گیا اگر مواعظ نے اسے دستک دی تو اس کے کان جھک گئے۔ پھر زواجراس سے نا کام لوٹے۔ نفوں' کریم کے کرم میں طمع کرنے والے بن گئے اور وہ کسی حال میں بھی اس کے اطاعت گزار نہ بے۔اقدام ٔ خواہشات میں دور دراز راستوں میں دوڑ رہے ہیں اس کے بعد کہ ہدایت کے وسیع وکشادہ راہتے واضح ہو گئے ۔ہمتوں نے خواہشات کے راستوں میں منازع والگ رائے بنا لئے ہیں عقل مندوں کی تھیجتیں ان کے لئے نافع نہ ہوئیں۔دل اس وقت تو ہہ کے عادی ہیں جب کسی واقعے اوررو کنے والا ڈانٹ سے گھبرائیں۔ پھروہ بار باراس چیز کی طرف لوٹے ہیں جو

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

# (۳۲) فیصلے یزرشوت لینا

﴿ وَلَا تَاْكُلُوْ آ أَمُوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَاۤ اِلِّي الْحُكَّامِ لِتَاكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ آمُوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَٱنْتُمْ تَعْلَمُونَ۞﴾ (البقرة: ١٨٨) ''اور آپس میں ناحق ایک دوسرے کا مال نہ کھا ؤ اور نہ ہی مال کواس نیت ہے حکام تک پہنچاؤ کہ لوگوں کے مال میں ہے کچھ ناجائز طریقوں سے کھا جاؤ حالانکہ تم

یعنی اپنے اموال حکام تک نه پنجا وَ بعنی آنہیں رشوت نه دو که وہ تمہارے علاوہ کسی کاحق تمہیں دے دیں حالانکہتم جانتے ہو کہ وہ تمہارے لئے حلال نہیں۔ابو ہربرہؓ بیان کرتے ہیں رسول الله منافقية من فرمايا:

''الله نے تھم میں رشوت دینے والے اور رشوت لینے والے پرلعنت فر مائی ۔'' 🛈 عبدالله بن عمرةً بمان كرتے ہيں رسول الله مَنْ اللهِ عَلَيْهِمْ نے رشوت دينے والے اور رشوت لينے والے پرلعنت فرمائی ہے۔

علاءنے فرمایا: ((السوانسسی)) وہ ہے جورشوت دیتا ہے ٔ اور ((السمبر تنشسی)) وہ ہے جو رشوت وصول کرتا ہے اور رشوت وینے والا تب لعنت کامستحق تھم رتا ہے جب وہ اس کے ذریعے سی مسلمان کواذیت پہنچانے یا کسی ایسی چیز کو حاصل کرنے کے لئے رشوت دیتا ہے جواس کا حت نہیں۔رہاوہ مخص جواپنا جق وصول کرنے اور اپنے سے ظلم دور کرنے کے لئے رشوت دیتا ہے توو العنت کے زمرے میں نہیں آتا۔ جہاں تک حاکم کا تعلق ہے تو اس پر رشوت حرام ہے وہ اس کے ذریعے حق کو باطل کرے یااس کے ذریعے کی ظلم کو دور کرے۔

اور دوسری روایت میں مروی ہے کہ رشوت ولانے والے پر بھی لعنت ہے۔ ((المواش)) یہ وہ خض ہے جوان دونوں کے درمیان کوشش کرتا ہے اور بیر شوت دینے والے کے زمرے میں

### 

آتا ہے اگر اس کا خیر و بھلائی کا قصد ہوتو پھڑ لعنت اس کو لاحق نہیں ہوتی۔ اگریہ قصد نہ ہوتو پھروہ لعنت کامستحق تھبر تا ہے۔

فصل:

اسی بارے میں وہ روایت ہے جے امام ابوداؤ ڈنے اپنی سنن میں روایت کیا ہے ابوامامہ با بلی بیان کرتے ہیں رسول اللہ مُکافِینے کے فر مایا:

''جس تحض نے کسی آ دمی کی سفارش کی' پھراس پراسے مدید پیش کیا گیا تو وہ سود کے۔ ابواب میں سے ایک بہت بڑے باب کو پہنچا۔''

ابن مسودؓ نے فرمایا: حرام یہ ہے کہ تم اپنے بھائی کے لئے کوئی حاجت طلب کرو وہ پوری ہوجائے اور وہ تمہیں کوئی ہدیے پیش کرے اورتم اس کی طرف سے اسے قبول کرلو۔

مسروق سے روایت ہے کہ انہوں نے ابن زیاد سے کسی ظلم کے بارے میں سفارش کی تو اس نے اس ظلم ) کو دور کر دیا۔ مظلوم خف نے انہیں ایک غلام کا تخفہ پیش کیا تو انہوں نے اس واپس کر دیا اور اسے قبول نہ کیا اور انہوں نے کہا: میں نے ابن مسعود کی کوفر ماتے ہوئے سا ہے: "جس نے کسی مسلمان سے کوئی ظلم دور کیا اور اس (مظلوم) نے اس پراسے قبیل یا کشر چیز عطاکی تو وہ رشوت ہے۔ "آ دمی نے کہا: ابوعبد الرحمٰن! ہم تو صرف فیصلے میں رشوت دیے کو حرام سمجھتے تھے انہوں نے کہا: وہ تو کفر ہے۔ ہم اس کے متعلق اللہ سے بناہ طلب کرتے ہیں اور ہم اللہ سے ہرآ زبائش اور نا پہند یدہ امر سے عفود عافیت کا سوال کرتے ہیں۔

### دکایت:

امام ابوعمر اوزاعیؒ سے روایت ہے۔ وہ بیروت میں رہائش پذیر تھے کہ ایک نفرانی ان کے پاس آیات اس نے کہا بعلبک کے سربراہ نے مجھ برظلم کیا ہے میں چاہتا ہوں کہ آپ اسے رقعہ لکھ دیں وہ آپ کے پاس شہر کا منکا لے کرآیا' اوزاعیؒ نے فر مایا: اگرتم چاہوتو میں منکاشہیں واپس کر دیا ہوں اوراکرتم چاہوتو منکا لے لیتا ہوں (رقد نہیں لکھتا) دیا ہوں اوراکرتم جاہوتو منکا لے لیتا ہوں (رقد نہیں لکھتا) پس آپ نے اس سربراہ کے لئے اسے رقعہ لکھ دیا کہ اس نفرانی کے خراج میں پچھ کی کردیں۔

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

حتاب الكبائر كالمجادر الكبائر الكبائر

اس نے مٹکا اور رفعہ لیا اور سرابرہ کی طرف چل دیا۔ پس اس نے اسے وہ رفعہ دیا تو اس نے امام کی سفارش پراس سے تمیں درہم کم کر دیئے۔اللہ ان پر رحم فر مائے اور ہمیں ان کے زمرے میں شامل فرمائے۔

#### تصيحدی:

الله کے بندو! عواقب برغور وَفکر کرو' مناقب کی قوت سے بچو' سزا دینے والے کی سزا ہے ڈرو۔سلب کرنے والے کےسلب کرنے سے خوف کھاؤ کیونکہ اللہ کی تیم! طالب غالب ہے۔وہ لوگ کہاں ہیں جوخواہشات کی طلب میں بیٹھے رہے اور پھر کھڑے ہو مجتے اور وہ دار کوچ کی موافقت میں گھوے اور انہوں نے حفاظت کی؟ وہ کتنا ہی کم تھبرے اور کتنا ہی پورا ہے جو انہوں نے قیام کیا اور انہوں نے اپنی قبروں کے گڑھوں میں 'اسینے آپ پڑان اعمال کی وجہ سے جو انہوں نے آ مے بھیج تھے افسوس کیا اور ملامت کی۔

لماخلقوالماهجعوا وناموا عيبون قبلوبهم تساهوا وهساموا و تسوبيسخ و أهسوال عسظسام فبصلوا من مخيافتيه و صياموا كأهل الكهف أيقاظ نيام

أمسا والبلسه لبو عبله الأنسام لقد خلقوا لأمر لوراته مسمسات شم قبسر شم حشسر ' ليوم الحشر قدعملت رجال ونسحسن إذا أمسرنسا أو نهيسنسا ''سنلو!الله كي قتم!ا گرلوگ! يِن تخليق كامقصد جان ليس تو وه رات كونه سوئيس''

''وہ ایک کام کے لئے پیدا کئے گئے ہیں اگران کے دل کی آٹکھیں اے دیکھ لیں تو وه خوف ز ده هوجا ئيں اورا ہتمام کريں۔''

"موت ہے چرقبر چرحشز زجروتو ج ہے اور ہولنا کیاں ہیں۔حشر کے دن کے لئے لوگوں نے نمازیں پڑھیں اوراس کے ڈرےروزےر کھے''

''اور ہم ہیں' جب ہمیں تھم دیا گیا یا ہمیں منع کیا گیا تو ہم اصحاب کہف کی طرح' خواب وبیداری کی حالت میں ہوجاتے ہیں۔'' حراب الكبائر كاب الكبائر

اے وہ فخص! خطاؤں کی گندگی ہے تھڑے ہوئے مصیبتوں کی آفات ہے ملے ہوئے کہ اے وہ فخص اس کے کلام کو سنتے ہو جو ملامت کرتا اور ڈائٹا ہے۔ توبہ کا عقد بائد ھتا ہے جی کہ جب شام ہوتی ہے تو فنح کر دیتا ہے۔ اپنی زبان کو مطلق آزاد چھوڑ نے والے! فرشتہ شار کرتا اور نقل کرتا ہے۔ اے وہ فخص جس کے سنے میں خواہش کے پرندے نے گھونسلا بنایا اور چوزہ دیا۔ موت نے کتنے ہی او نیچے پہاڑوں جسے باوشا ہوں کو ہلاک کر دیا۔ کتنی ہی بنیا دوں کو ہلا دیا جو کہ کہر میں پختے تھیں اور انہیں لحد کے اندھیرے میں بسا دیا اور ان کے چھچے برزخ ہے۔ اے وہ فخص جس کا دل اس کے بدن ہے گنا ہوں کے ساتھ میلا ہوگیا ہے۔ اے عظائم ہے مقابلہ کرنے والے! کیا تو اس سے بہ خوف ہوگیا ہے کہ مجھے دھنسا دیا جائے یا مجھے کے کردیا جائے۔ اے وہ فخص بڑھا ہے کہ مجھے دھنسا دیا جائے یا مجھے کے کردیا جائے۔ اے وہ فخص بڑھا ہے کہ تجھے دھنسا دیا جائے یا مجھے کے کہ دیا تاریخ کا حصہ بن رہا ہے۔

اور ہرطرح کی تعریف وشکر ہمیشداللہ کے لئے ہے۔



WWW.Vitabosaniacream

## (۳۳)عورتول کامردوں سے

## اورمردوں کاعورتوں ہےمشابہت کرنا

رسول اللهُ مَنْ اللهُ عَلَيْهِ مِنْ مِنْ ما ما يا:

''اللّٰه مردوں سے مشابہت کرنے والی عور توں اورعور توں سے مشابہت کرنے والے

مردوں پرلعنت فرمائے۔'' ①

اورایک روایت میں ہے:

"الله مردول سے مشابهت كرنے والى عورتول پرلعنت فرمائے۔" الله مردول سے مشابهت كرنے والى عورتول پرلعنت فرمائے۔"

اورایک روایت میں ہے فرمایا:

''الله كى لعنت ہوان مخنثوں پر جومرووں سے مشابہت كرتے ہیں اور ان عورتوں پر جو

مردوں سے مشابہت کرتی ہیں۔" 🐨

لیمیٰ وہ عورتیں جولباس اور انداز گفتگو میں مردوں سے مشابہت کرتی ہیں۔ ابو ہریرہ میان کرتے ہیں ٔ رسول اللّٰهُ ظَالِمُنْظِّ نے فر مایا:

جوعورت کالباس پہنتا ہے۔' © جبعورت کھلے گریبان اور شک آستیوں والا مردوں کا سالباس پہنتی ہے تو وہ مردوں

سے ان کے لباس میں مشابہت کرتی ہے پس وہ القدادر اس کے رسول مَثَاثِیْنَا کی لعنت کا شکار موجاتی ہے اور اس کے رسول مُثَاثِیْنَا کی لعنت کا شکار موجاتی ہے اور جب اس کا خاوند اسے ایسا کرنے کا اختیار دیتا ہے اور اس پر راضی ہوتا ہے اور اس اسے معنی نہیں کرتا تو پھروہ بھی اس کا ستحق تھہرتا ہے کیونکہ وہ اس کو اللہ کی اطاعت کرنے اور اس کی معصیت سے روکنے کا یابند کرنے پر مامور ہے۔ اللہ تعالی کا فرمان ہے:

<sup>🛈</sup> بخاری ابوداؤد 🌘 ابوداؤد (٤٠٩٩)

<sup>🕜</sup> بخاری (۵۸۸۹) 🕜 ابوداؤد (۴۰۹۸)

﴿ يَا يَكُهُ الَّذِيْنَ امَنُوْا آفُوا آنُفُسَكُمْ وَ آهُلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْمِلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلْئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا آمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُونَ اللَّهَ مَا آمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ . ﴾ (التحريم: ٦)

''اپنے آپ کواور اپنے اہل وعمال کواس آگ ہے بچاؤ جس کا ایندھن انسان اور

پھر ہوں گے۔''

کتاب الکبائر

لینی ان کو ادب سکھاؤ' انہیں تعلیم دو اور انہیں اللہ کی اطاعت کا تھم دو اور انہیں اللہ کی معصیت ہے منع کروجیسا کہ بیتمہارے اپنے بارے میں واجب ہے اور نبی مَثَاثِثَةِ مَا کا فرمان بھی

ے:

''تم سب ذمہ دار ہوا درتم سب اپنی رعیت کے بارے میں جواب دہ ہو۔ آ دمی اپنے اہل کا ذمہ دار ہے اور وہ ان کے بارے میں روز قیامت جواب دہ ہے۔'' ①

اور نبی مَا لَا لَیْدَ اللّٰ مِسروی ہے کہ آپ نے فر مایا:

''سن لو! مردوں نے جب عورتوں کی اطاعت کی تووہ ہلاک ہوگئے۔'' ﴿ حسن بصریؓ نے فرمایا: اللہ کی قتم! جس روز بندہ اپنی عورت کی خواہش کی اتباع کرتا ہے تو

ں، روے رہائیدں | الله تعالیٰ اسے جہنم میں اوندھاڈ الےگا۔

اورآ يَّ مَا لَيْنَا لِمُنْ اللهِ اللهِ

''جہنمیوں کی دونشمیں الی ہیں جو میں نے نہیں دیکھیں' وہ لوگ کہ ان کے پاس گائے کی دموں جیسے کوڑ ہے ہوں گے جن کے ساتھ وہ لوگوں کی پٹائی کرتے ہوں گے اور وہ عورتیں جولباس پہننے کے باوجود برہنہ ہوں گی' مائل کرنے والیاں یا مائل ہونے والیاں' ان کے سربختی اونٹوں کی کوہان کی طرح ہوں گے وہ جنت میں داخل ہوں گی نہ اس کی خوشبو پاسکیں گی حالانکہ اس کی خوشبوتو اتنی اتنی مسافت ہے آ جاتی

((كاسيات)) ''لباس پہنے ہوئے''لينی الله کی نعتوں ہے۔

① بخاری'مسلم ۞ مسلم (۲۱۲۸)

کتاب الکبائر
 کتاب الکبائر
 کشراداکرنے سے عاری۔اور یہ بھی کہا گیا ہے کہاں سے مراد ہے کہ ورت باریک کپڑے بینے جس سے اس کے بدن کارنگ بھی ظاہر ہو۔

((مسائلات)) اس کے بارے میں کہا گیا ہے اللہ کی اطاعت اور جس کی حفاظت کرنا ان پرلازم ہے اس سے اعراض کرنا۔

((مسمیسلات)) لینی وہ اپنے علاوہ کسی اور کو ندموم فعل کی تعلیم دیتی ہیں اور یہ بھی کہا گیا ہے۔ اپنے کندھوں کو ہلا کر چلنے والیاں اور یہ بھی کہا گیا ہے: مائل ہونے والیاں سے مراد ہے بالوں کا شائل اس طرح بنانا جیسے زانیے عورتوں کا ہوتا ہے اور ((مسمیسلات)) جواسی انداز سے اپنے علاوہ دوسری عورتوں کے بال سنوارتی ہیں۔

''ان کے سربختی اونٹوں کی کوہانوں کی طرح ہوں گے۔'' کیعنی وہ عمامہ یا پیگڑی باندھ کر انہیں بڑا کر لیتی ہیں۔

نافع بیان کرتے ہیں: ابن عمراور عبداللہ بن عمر ورضی اللہ عنہما' زبیر بن عبدالمطلب کے پاس تھے کہ اسنے میں ایک عورت کند ھے پر کمان رکھے ہوئے' بکریاں چراتے ہوئے سامنے آئی' تو عبداللہ بن عمرؓ نے فرمایا: کیا ہم مرد ہو یا عورت؟ اس نے جواب دیا' عورت۔ تب وہ ابن عمر و ک طرف متوجہ ہوئے اور فرمایا: اللہ تعالی نے اپنے نبی کا ٹیڈیم کی زبان پر'مردوں سے مشابہت کرنے والی عورتوں اور عورتوں سے مشابہت کرنے والے مردوں پرلعنت فرمائی ہے۔

نقاب کے پنچے سے سونے 'جواہرات اور زینت کا اظہار کرنا ایسے افعال ہیں جوعورت کے لئے لعنت کا باعث ہیں۔ اس کے علاوہ جب وہ کستوری 'عنر اور دوسری قتم کی خوشبولگا کر باہر نگلتی ہے۔ اور اس کا نگین ریٹمی لباس مچھوٹے چو نے لیے کیڑے خضر سے کہ وہ جدید فیشنی لباس میں نگلتی ہے اور اس کا نگین ریٹمی لباس مجھوٹے چو نے لیے کیڑے خضر سے کہ وہ جدید فیشنی لباس میں نگلتی ہے اور دوہ اور دوہ اور سے اور دوہ اور سے وہ افعال ہیں جوا کڑ عور توں پر غالب اس کے فاعل پر دنیا وہ خرت میں ناراض ہوتا ہے اور سے وہ افعال ہیں جوا کڑ عور توں پر غالب ہیں۔ بی مُنْ اللّٰہ خان کے بارے میں فرمایا:

''میں نے جہنم میں جھا تک کردیکھا تواس میں اکثریت عورتوں کی تھی۔'' 🛈

نخاری مسلم

اورآ پِمَالَيْنَا مِنْ عَرَالِيا:

''میرے بعد مردوں کے لئے سب سے زیادہ نقصان دہ فتنہ **عورتو**ں کا ہوگا۔''

بیر سے بمدروں کے جب سے بیاد ہے۔ پس ہم اللہ سے درخواست کرتے ہیں کہ وہ اپنے فضل دکرم سے ہمیں ان کے فتنے سے محفوظ رکھے نیز ہماری اوران کی اصلاح فر مادے۔

#### تفيحت:

ابن آ دم! گویا کہ تو موت کے ساتھ ہے وہ اچا تک تجھ پر دھاوابولے گی اور وہ تجھے پہلی قوموں کے ساتھ جا وہ اچا تک تجھ پر دھاوابولے گی اور وہ تجھے پہلی قوموں کے ساتھ جا ملائے گی۔ وہ تجھے تنہائی اور تاریکی کے گھر میں منتقل کر دے گی اور پھر مردوں کے جھے میں لے جائے گی جہاں تو خیمہ زن ہوگا۔ تو نے جو مال جمع کیا اور تو نے جو معاملات تر تیب و بچان سے تجھے جدا کردے گی۔ تم کثر ت اموال اور قوت خدام سے اسے ہنانہیں سکو گے۔

زندگی میں تفریط کرنے پر تھے انتہائی ندامت ہوگی۔ اس آکھ کے لئے افسوں ہے جوسوتی ہے حالانکہ اس کا طالب تو نہیں سوتا۔ جس چیز سے تہہیں ڈرایا دھمکایا جارہا ہے' تم اس سے کب ڈرو گے۔ تم اپنے دل میں خوف کی آگ کب سلگاؤ گے اور اس میں سلگو گے۔ کب تک تیری نکییاں مضمل اور تیری برائیوں کی تجدید ہوتی رہے گی واعظ کی زجر وتو بخ کب تک تمہیں نہیں ہلائے گی۔ تو کب تک فتور وکوتا ہی میں سرگرواں رہے گا' تو اس دن سے کب ڈرے گا جب جم کی جلد بولیس گی اور گواہی دیں گی تم لا فانی چیز کے حصول کی خاطر فانی چیز کو کب ترک کرو گے۔ کروجد میں خوف وامید کا جموز کا تھے کب ہلائے گا۔ تو' رات کو جب کدوہ چھا جائے تیا م کرنے والا کب بنے گا' وہ لوگ کہاں ہیں جنہوں نے تنہائی میں اپنے مولا کے لئے ممل کیا اور انہوں نے والا کب بنے گا' وہ لوگ کہاں ہیں جنہوں نے تنہائی میں اپنے مولا کے لئے ممل کیا اور انہوں نے طرف بڑھے اور حاضری دئ' انہوں نے دنوں کی گری اور پیش میں روزے رکے صبر کیا اور طرف بڑھے اور حاضری دئ' انہوں نے دنوں کی گری اور پیش میں روزے رکے صبر کیا اور جد جہد کی' وہ جا بھی' تو جانشین بن گیا اور انہوں نے جو کچھ پایا تھا تو نے اسے کھودیا۔ تو ان کے جد جہد کی' وہ جا بھی' تو جانشین بن گیا اور انہوں نے جو کچھ پایا تھا تو نے اسے کھودیا۔ تو ان کے جدودیا۔ تو ان کی جدودیا۔ تو ان کے جدودیا۔ تو ان کے جدودیا۔ تو ان کی گری اور تو بیا تو آنہیں میں نہیں سکتا وہ تو بہت دور نکل گئے۔

قم يساحبيبى قد دنسا الموعد لـم يسلـخ الـمـنــزل أو يـجهــد قـنـطرة الـعــرض لـكم مـــوعـد

يسا نسامهم البليل متنى تسرقند من نسام حتنى يستقنضنى ليبلسه فقل لنذوى الألبناب أهل التقى

" رات كوسونے والے! تو كب بيدار ہوگا ميرے حبيب! الحمد وقت وعدہ قريب

آپہنچا۔''

'' جو خص رات بھر سویار ہے وہ منزل نہیں پاسکیا خواہ وہ کوشش بھی کرتار ہے۔'' '' پس عقل مند واہل تقویٰ سے کہد دوئتم سے بیش بہانعتوں کا وعدہ ہے۔''

> ተ ተ

## ← كتاب الكبائر

### (۳۴) د بوث اور بے غیرت

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ اَلزَّانِي لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَ الْزَّانِية لا يَنكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَ حُرِّمَ ذَالِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ٥﴾ (النور: ٣)

''زانی مرد بجز'زانیه بامشرکه ورت سے کسی سے شادی نہیں کرسکتا اور زانیہ ورت سے بھی زانی یامشرک مرد کے سواکوئی اور زکاح نہیں کرسکتا اور بیمسلمانوں کے لئے حرام قرار دیا گیا ہے۔''

عبداللہ بن عمر ورضی اللہ عنہانی مُثَاثِیْرِ کے سے روایت کرتے ہیں آپ نے فر مایا: '' تین قتم کے لوگ جنت میں نہیں جائیں گے۔اپنے والدین کا نافر مان کے غیرت شخص اور عورتوں سے مشابہت کرنے والا۔'' ①

رسول الله مَثَالِينَ الله مَثالِية

'' تین قتم کے لوگ ہیں جن پر اللہ نے جنت حرام قرار دے دی ہے۔ عادی شراب نوش اپنے والدین کا نافر مان اور وہ بے غیرت شخص جواپی المید میں بدکاری پرخوش ہو۔'' ؟

یعنی و ۱ المیه کے متعلق بد کاری کو پہند کرتا ہو۔ نعوذ باللہ من ذلک

مصنف نے فرمایا: جس محص کواپی اہلیہ کے متعلق فاحشہ ہونے کا یقین ہولیکن وہ اس سے محبت ہونے یا اس کے فرمہ اس عورت کا قرض ہو جے وہ ادائہیں کرسکتا یا حق مہر بہت زیادہ ہویا اس کے چھوٹے چھوٹے بچے ہونے کی وجہ سے عفلت برتا ہو۔ تو وہ عورت قاضی کی طرف رجوع کرے گی اور ان (بچوں) کے حقوق کا مطالبہ کرے گی پس بیان میں سے نہیں جس سے اعراض کیا جائے ۔ اور جس محف میں غیرت نہ ہواس میں کوئی خیر و بھلائی نہیں ۔ پس ہم اللہ تعالیٰ سے ہوتم کی آز مائش ومصیبت سے عافیت طلب کرتے ہیں۔

① نسائی (٥/٠٨\_٨١) احمد (١٣٤/٢) 🔍 انسائی

تصيحت

فنا ہونے والی شہوات میں مشغول شخص! تو آنے والی موت کے بارے میں کب تیاری کرے گا' تو گزرے ہوئے قافلوں سے ملنے کی کب تک کوشش نہیں کرے گا۔ کیاتم طمع رکھتے ہو جبکہ تم سادات کے ملنے میں غالیچوں کے رہن (گروی) ہو؟ افسوں ہے افسوں ہے افسوں ہے افسوں ہے افسوں ہے دھاوا بولئے اسے اپنے زعم میں لذتوں کی امیدر کھنے والے لذتوں کو تو ڑنے والی (موت) کے دھاوا بولئے سے ڈراس کی چالوں اور تدبیروں سے نی وہ سانسوں اور کھوں میں پوشیدہ ہے۔'

تمضى حلاوة و بعدها تبقى عليك مسرارة التعات يا حسرة العاصين يوم معادهم لو أنهم سبقوا إلى الجنات لولم يكن إلا الحياء من الذى ستر العيوب لأكثروا الحسرات

''جوتم نے چھپایا وہ حلاوت چلی گئ اس کے بعداس کے اثرات کی کڑواہٹ تیرے'' ہاں باتی رہ گئی۔''

"بائے گناہ گاروں کی حسرت ان کے وعدہ کے دن (قیامت) کاش کے انہوں نے جنتوں کی طرف پیش قدمی کی ہو۔"

''اگر صرف اس ذات ہے جوعیوب کو چھپاتی ہے جیا ہوتی تو وہ زیادہ حسرتیں کرتے''

اے وہ خض جس کا نامہ اعمال گناہوں سے بھراہوا ہے اور گناہوں کی کثرت کی وجہ سے
اس کی (نیکیوں والی) تر از وہلکی ہوگئی ہے۔ کیا تم نہیں دیکھتے کہ اس کی امیدوں کا پلڑا بھر گیا ہے
کیا تم نے تنہا ئیوں کے دولہوں کونہیں دیکھا کہ وہ لحدوں کی طرف تیار کر دیئے گئے ہیں۔ کیا تم
نے آسودہ حال لوگوں کے بدنوں کونہیں دیکھا کہ انہیں گفن میں ڈال کر لپیٹ دیا گیا ہے۔ کیا تم
نے رحموں میں جسموں کے تیار ہونے کا معاینہ کیا ہے اے او تکھنے والے! اپنے نفس کو چھڑانے
کے لئے تم کب بیدار ہوگے۔

تم اپنے علاوہ کی اور کے مکان وحویلی ( کے کھنڈر بننے ) سے کب نصیحت حاصل کرو گے؟ کہاں ہیں شہنشاہ ' بہادر اور شاہسوار' سمندروں' خشکیوں اور فضاؤں پر گرفت رکھنے والے کہاں ہیں؟ چہروں پر تیوریاں چڑھانے والے متکبر کہاں ہیں؟ کشادہ محلوں کے عادی کہاں ہیں؟ جنہیں قبروں کی تنگی میں محبوں کر دیا گیا ہے۔ اپنے لباس کو دراز کر کے اترا کر چلنے والے کہاں ہیں اپنی مٹی (قبر) میں کپڑوں سے عریاں ہیں۔ اپنی امیداوراپنے اہل سے غافل اورا پی موت سے غافل کہاں ہیں اپنی امیداوراپنے اہل سے غافل اورا پی موت سے غافل کہاں ہیں موت کی تھیلی نے اچا تک اسے آ دبوچا۔ اموال جمع کرنے والا کہاں ہے جس کی تھا طت کی جارہی تھی وہ سلب کرلیا گیا اور تھا ظت کرنے والے بہرے وارکو ہلاک کر دیا گیا! جس شخص نے دنیا کے مکروچال کو جان لیا اس پرجن ہے کہ وہ اسے چھوڑ دے جو لاعلمی کا شکار ہے اسے چاہیے کہ وہ اسے چھڑک دے۔ جو اس کے انتقال کی حقیقت کو بھتا ہووہ اس سے خکار ہے اسے چاہیے کہ وہ اسے جھڑک دے۔ جو اس کے انتقال کی حقیقت کو بھتا ہووہ اس سے نشیحت حاصل کرے۔ جو تعمیں میسر ہوں وہ شکر کرے جے دارالسلام (جنت) کی طرف بلایا جائے وہ خواہشات کے سمندر کوعبور کرے تا کہ وہاں بہنچ سکے۔

### ٣٥ حلاله كرنے والا اورجس كے لئے حلاله كيا جائے:

ابن مسعودٌ ہے روایت ہے کہ رسول اللہ مُلَاثِیَّا نے حلالہ کرنے والے اور جس کے لئے حلالہ کیا جائے والے اور جس کے لئے حلالہ کیا جائے پرلعنت فرمائی ہے۔ ①

امام ترندیؒ نے فرمایا: اہل علم کا اس پر عمل ہے۔ عمر بن خطاب عثان بن عفان عبداللہ بن عمر رضی الله عنهم اور تابعین میں سے فقہاء کا یہی موقف و ند بہب ہے۔ ابن عباسؓ بیان کرتے ہیں۔

رسول الله مَنْ اللَّهِ عَلَيْهِ مِن اللهِ مَنْ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى الل رغبت سے ہوتا ہے مکر وفریب کا نکاح نہیں ہوتا اور الله عز وجل کی کتاب سے استہزاء نہیں حتیٰ کہ وہ ( نکاح کرنے والا ) جماع کی لذت سے لطف اندوز ہو۔''

عقبہ بن عامر بیان کرتے ہیں رسول الله مُلَّالَّةُ اِنْ فرمایا: ''کیا میں تنہیں مستعار بکرے' مینڈھے کے متعلق نہ بتاؤں؟'' صحابہ نے عرض کیا' کیوں نہیں اللہ کے رسول! ضرور بتا کیں

آپنے فرمایا:

<sup>🛈</sup> انسائی (۱۱۹۹۳) ترمذی (۱۱۲۰)

''وہ حلالہ کرنے والا ہے اللہ نے حلالہ کرنے والے اور جس کے لئے حلالہ کیا جائے' پرلعنت فرمائی ہے۔''

ابن عمر سے روایت ہے کہ ایک آ دمی نے ان سے پوچھا تو انہوں نے کہا: تم اس عورت کے بارے میں کیا کہتے ہو جس سے میں نے شادی کی ہے تا کہ میں اس کواس کے خاوند کے لئے حلال کروں اس نے مجھے تھم دیا نہ وہ بیجا نتا ہے۔ تو ابن عمر نے اسے فرمایا نہیں گاح رغبت سے ہوتا ہے۔ اگر تجھے پہند ہے تو اسے رکھ لواور اگر نا پہند ہے تو اسے چھوڑ دو 'ہم رسول اللہ مُکالِیْمُ اللہ کا لیہ کی کے دور میں اسے زنا شار کرتے تھے۔

جہاں تک صحاباور تابعین کے آثار کا تعلق ہے تواثر م اور ابن منذر نے عمر بن خطاب سے روایت کیا ہے انہوں نے فرمایا: ''حلالہ کرنے والا اور جس کے لئے حلالہ کیا جائے اگر میرے یاس لائے گئے تو میں انہیں رجم کروں گا۔''

عمر بن خطابؓ ہے عورت کواپنے خاوند کے لئے ( نکاح ٹانی کے لئے ) حلالہ کرانے کے متعلق یو چھا گیا توانہوں نے فرمایا:''بیزنا ہے۔''

عبدالله بن شریک عامری بیان کرتے ہیں ہیں نے ابن عمر سے سنا ان سے ایک آ دی کے متعلق بو چھا گیا جس نے اپنے چچا کی بیٹی کوطلاق دے دی تھی 'چروہ نادم ہوااوراس میں رغبت ظاہر کی 'کسی آ دمی نے ارادہ کیا کہ وہ اس سے نکاح کرے تا کہ اس کا اس (پہلے خاوند) کے لئے حلالہ کرئے ابن عمر نے فرمایا:

وہ دونوں زانی ہیں' خواہ وہ ہیں سال بھی دونوں اکٹھے رہیں۔ جب بیمعلوم ہو جائے کہ وہ تواس کاحلالہ کرنا چاہتا تھا۔

ابن عباس سے روایت ہے کہ ایک آ دی نے ان سے سوال کیا تو اس نے کہا: میرے پچا کے بیٹے نے اپنی بیوی کو تین طلاقیں دے دی ہیں۔ پھر وہ نادم ہوا۔ تو انہوں نے فرمایا: تیرے پچا کے بیٹے نے اپنے رب کی نافر مانی کی تو اس نے اسے ندامت کا شکار کر دیا 'اس نے شیطان کی اطاعت کی اس کے لئے کوئی حل نہیں اس نے کہا:

آ باس مخص کے بارے میں کیا فرماتے ہیں جواس کا حلالہ کرتا ہے؟ انہوں نے فرمایا:

← کتاب الکبائر کتاب الکبائر کتاب الکبائر کتاب الکبائر کوریتا ہے۔
جوش اللہ سے دھو کہ کرتا ہے تو وہ اسے دھو کے کاشکار کر دیتا ہے۔

ابراہیم نخعی نے فرمایا: جب نتیوں میں سے کسی ایک پہلا خاوند یا دوسرا خاوند یا عورت کی حلالہ کرنے کی خلالہ کی خلالہ کی خلالہ کی خلالہ کی خلالہ کی نتیت ہوتو دوسرے کا نکاح باطل ہوگا اور وہ پہلے کے لئے بھی حلال نہیں ہوگی۔ حسن بھری نے فرمایا: جب نتیوں میں سے کسی ایک نے حلالے کا ارادہ کیا تو اس نے برا

امام التابعین سعید بن مستب رحمه الله نے ایک آدمی کے متعلق جس نے ایک عورت سے شادی کی تاکہ وہ اس کے پہلے خاوند کے لئے طلالہ کرے فرمایا: طلال نہیں۔

ما لک بن انس ٔ لیٹ بن سعد ٔ سفیان تُوری اور امام احمد رحمہم اللہ بھی اسی موقف کے حامل س-

اساعیل بن سعید بیان کرتے ہیں میں نے امام احد سے اس آ دی کے متعلق ہو چھا ، جو عورت سے شادی کرتا ہے اوراس کے دل میں ہے کہ وہ اس کے پہلے خاوند کے لئے اس کا حلالہ کر کے گالیکن عورت کواس بارے میں پہنیں ؟ تو انہوں نے فرمایا : وہ حلالہ کرنے والا ہے ، جب وہ اس طرح حلالہ کرنے کا ارادہ رکھتا ہے تو وہ ملعون ہے۔ امام شافع گا کہ بہ بیہ ہے کہ جب عقد نکاح میں حلالے کی شرط ہوتو یہ عقد نکاح باطل ہوگا کیونکہ اس نے ایک شرط کے ساتھ عقد کیا ہو ، جس نے اس کی غایت کو منطع کر دیا ہے اور یہ نکاح متعہ کی طرح ہے اور اگر عقد سے پہلے شرط کی جائے تو زیادہ صحح بات یہ ہے کہ یہ صحح ہے اور اگر اس نے اس طرح عقد کیا اس نے عقد میں کوئی شرط قائم کی نہ اس سے پہلے تو مجرعقد فاسم نہیں ہوگا اور اگر اس نے اس پر اس عورت سے نکاح کیا کہ جب اس کا حلالہ ہو جائے گا تو وہ اسے طلاق دے دے گا تو اس میں دوقول ہیں اور نکاح کیا کہ جب اس کا حلالہ ہو جائے گا تو وہ اسے طلاق دے دے گا تو اس میں دوقول ہیں اور اس میں حصح قول یہ ہے کہ وہ نکاح باطل ہونے کی وجہ یہ ہے کہ اس نے ایک شرط قائم کی ہے جو کہ دوام نکاح کی صحت میں مانع ہے اور اس میں وقت کا تعین ہے جو کہ ذوام نکاح کی صحت میں مانع ہے اور اس میں وقت کا تعین ہے جو کہ ذکاح کی صحت میں مانع ہے اور اس میں وقت کا تعین ہے جو کہ ذکاح کی حصوت میں مانع ہے اور اس میں وقت کا تعین ہے جو کہ ذکاح کی صحت میں مانع ہے اور اس میں وقت کا تعین ہے جو کہ ذکاح کی

اور دوسری وجہ بیہ ہے کہ اس نے فاسد شرط قائم کی ہے جیسا کہ اگر وہ کسی عورت ہے اس شرط پر شادی کرے کہ وہ اس پر دوسری عورت سے شادی نہیں کرے گا اور نہ اس کے ساتھ سفر

كري گارواللّداعكم

ہم اللہ سے درخواست کرتے ہیں کہ وہ اپنے پہندیدہ امور کی ہمیں توفیق دے اور اپنی معصیت سے ہمیں بچائے کیونکہ وہ تخی دا تا فیاض بخشنے والا رحم کرنے والا ہے۔ تضییر ہیں:

اللہ بھلا کر نے ان لوگوں کا جنہوں نے دنیا کواس کے ترک کرنے سے پہلے ترک کردیا'
انہوں نے اس کے دشوارا ندھیروں سے اپ دلوں کو تیزی کے ساتھ۔ انہوں نے سلامتی کے
انہوں نے اس کے دشوارا ندھیروں سے اپ مولا کے کلام سے لذت حاصل کی اس کے عظم
ایام پائے اور غنیمت حاصل کی انہوں نے اپ مولا کے کلام سے لذت حاصل کی اس کے عظم
کے سامنے سر تسلیم خم کر دیا اور وہ بی گئے انہوں نے اس کے انعامات کوشکر کے ساتھ وصول کیا اور
انہیں قبنہ میں لےلیا۔ انہوں نے اس کی اطاعت میں نیند کی لذتوں کو چھوڑ ااور تمام مخلوق کو چھوڑ
انہوں نے رضا
کراس کی طرف بھا گے۔ انہوں نے اس کی اطاعت کو علم ووائش سے اختیار کیا' انہوں نے رضا
مندی کا اظہار کیا اور جو پھھ بیتا اس پر کوئی اعتراض نہ کیا' انہوں نے اپنی جانوں کو بچھ دیا' پس کتی
مندی کا اظہار کیا اور جو پھھ بیتا اس پر کوئی اعتراض نہ کیا' انہوں نے اپنی جانوں کو بچھ دیا' پس کتی
جوالے کر دی۔ انہوں نے اس کی خدمت کی اور سینداس کی خدمت کے لئے مشروع ہے ( یعنی
شرح صدر کے ساتھ خدمت کی انہوں نے ورواز سے پر دستک دی اور وہ وروازہ تو مغتوح
ہے۔ وہ سلسل روتے رہے اور پکلیس آ نسوؤں سے زخم خوردہ ہیں' انہوں نے سحری کے وقت قیام
کیا' اس شخص جیسا قیام جوروتا اور نوحہ کرتا ہے۔

انہوں نے اون کے کلزوں پر صبر کیا اور بالوں کے بنے ہوئے ٹاٹ پہنے انہوں نے اپنی جانوں کو اس وقت راضی و مطمئن رکھا جب قابل فرمت لوگوں کی مدح وسرائی کی گئی آپ ان کو ان کی نشانیوں سے پیچان لیس گے ان پر صدق کے آٹار حکیتے ہیں انہوں نے اس کی انس کو عام کرنے کے لئے قیام کیا' ان کی مسرتوں کی مہک مہکتی ہے۔ ثنا کی خوشبو سے ان کی خوشبو کی ہر جب سرتھی جاتی ہیں' خوشبووں کورو کنے والی قو تیں من لیس کہ وہ اجنبی ہیں' وہ ان کے سواکسی کے ہاں قیام نہیں کرتیں۔

+ (216 کتاب الکبائر کتاب الکبائر

## (٣٦) بيثاب سے احتياط نه کرنا

## جبكه وه عيسائيون كاشعار ہے

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَثِيَابَكَ فَطَهِّوْ ﴾ (المدثر: ٤) " (اورائي كُين ـ "

ابن عباس خاشئیان کرتے ہیں: نبی تاہیخ دو قروں کے پاس نے گزرے تو فرمایا: ''ان دونوں کو عذاب دیا جار ہاہے اور آئیس کی بڑے گناہ کی پاداش میں عذاب نہیں دیا جار ہا'ان میں سے ایک تو چغل خورتھا' جبکہ دوسرا پیٹاب سے احتیاط نہیں کرتا تھا۔'' () لیعنی اس سے بچتا نہیں تھا۔۔

اوررسول اللهُ مَنَا فِينَا لَهُمُ اللهُ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْ اللهُ مَا لِيا:

"پیٹاب سے بچا کرد کیونکہ قبر کاعموی عذاب ای ہے ہوتا ہے۔ "

پھراس کےعلاوہ یہ بھی ہے کہ جو خص اپنے بدن اور اپنے کپڑوں کے بارے میں پیشا ب سے احتیاط نہیں کرتا تو اس کی نماز قبول نہیں ہوتی۔

حافظ الونعيم في "المحلية" مين شقى بن ماتع الله كي سند برسول الله مَن الله مَن الله مَن الله مَن الله مَن الله م كيائ آپ في فرمايا:

" چارتم کے لوگ بین وہ جس اذبت میں مبتلا ہوں گے وہ اس سے جہنیوں کو بھی اذبت پہنچا کیں گے۔ وہ کھولتے پانی اور جہنم میں دوڑ رہے ہوں گے وہ تباہی وہر بادی کی آ واز لگارہے ہوں گے جہنی ایک دوسرے سے کہیں گے: ان لوگوں کا کیا حال ہے کہانہوں نے تو ہماری موجودہ تکلیف میں مزیداضا فہ کردیا ہے۔ فرمایا: ایک آ دی اس پر انگاروں کا تابوت بند ہوگا ایک آ دی انتزیاں تھیٹ رہا ہوگا اور ایک اس پر انگاروں کا تابوت بند ہوگا ایک آ دی این انتزیاں تھیٹ رہا ہوگا اور ایک

<sup>🛈</sup> بخاری (۲۱۶) مسلم (۲۹۲) 🕜 دارقطنی (۱۲۷/۱)

خوار کتاب الکبائر کتاب کار ماہ کا فر مایا

آدی کے منہ سے پیپ اورخون بہر باہوگا اور ایک آدی اپنا گوشت کھار ہاہوگا فر مایا صندوق والے سے کہا جائے گا ۔ کیا حال ہے ہلاک ہوجا 'تم نے تو ہماری اذبت میں مزید اضافہ کر دیا ہے؟ وہ کہے گا ہلاکت تو ہو چی اور اس کی گردن میں لوگوں کے اموال ہیں 'چراس شخص سے کہا جائے گا جوا بی انتزیاں تھیبٹ رہاہوگا 'کیا حال ہے ہلاک ہو جا 'تو نے تو ہماری اذبت میں مزید اضافہ کر دیا تو وہ کہے گا ہلاک ہوا وہ پیشاب کرتے وقت پروائیس کرتا تھا کہوہ کہاں لگ رہا ہے (وہ اسے دھوتا نہیں تھا) پیشاب کرتے وقت پروائیس کرتا تھا کہوہ کہاں لگ رہا ہے (وہ اسے دھوتا نہیں تھا) ہوا ہلاک ہو جوبا 'تو نے تو ہماری اذبت میں مزید اضافہ کر دیا ہے؟ وہ کہے گا ہلاک ہوا ہر بری ہوجا 'تو نے تو ہماری اذبت میں مزید اضافہ کر دیا ہے؟ وہ کہے گا ہلاک ہوا ہر بری بات دیکھا اوراس سے لذت حاصل کرتا تھا۔ 'اور ایک روایت میں ہے۔ ''وہ لوگوں کے گوشت کھا تا تھا 'ہلاک ہوا 'کیا ہوا' تم نے تو ہماری اذبت میں اضافہ کر دیا ہے؟ تو وہ کہے گا 'ہلاک ہوا 'کیا ہوا' تم نے تو ہماری اذبت میں اضافہ کر دیا ہے؟ تو وہ کہے گا 'ہلاک ہوا 'کیا ہوا' تم نے تو ہماری اذبت میں اضافہ کر دیا ہے؟ تو وہ کہے گا 'ہلاک ہوا 'کیا ہوا' تھا 'ہلاک ہوا 'کیا ہوا' تم نے تو ہماری اذبت میں اضافہ کر دیا ہے؟ تو وہ کہے گا 'ہلاک ہوا کی گوشت کھا تا تھا 'بلاک ہوا کو گوشت کھا تا تھا 'بلاک ہوا کو گوشت کھا تا تھا 'بلاک ہوا گوس کے گوشت کھا تا تھا 'بلاک ہوا کو گوشت کھا تا تھا 'بلاک ہوا گوست کھا تا تھا 'بلاک ہوا کو گوشت کھا تا تھا 'بلاک ہوا کو گوست کھا تا تھا 'بلاک ہوا گوسٹ کھا تا تھا 'بلاک ہوا گوسٹ کھا تا تھا 'بلاک ہوا کو گوسٹ کھا تا تھا 'بلاک ہوا گوسٹ کھا تا تھا 'بلاک ہوا کو گوسٹ کھا تا تھا 'بلاک ہوا گوسٹ کھا تا تھا 'بلاک ہوا گوسٹ کھا تا تھا 'بلاک ہوا گوسٹ کھا تا تھا کھا کو تھا تا تھا کھا کو کھا تا تھا کو کھا تا تھا گوسٹ کھا تا تھا کھا تا تھا کھا تا تھا کہ کو تھا تا تھا کھا تا تھا کھا تا تھا کھا تا تھا تا تھا تا تھا کھا تا تھا تا تھا تا تھا کھا تا تھا تا تھ

ہم اللہ سے اس کے فضل و کرم سے عفو و عافیت کا سوال کرتے ہیں۔ کیونکہ وہ سب سے زیادہ رحم کرنے والا ہے۔

### تفيحت:

. اے بندو! ان لوگوں کے کارنا ہے کو یاد کرو جوگزر گئے ان کے انجام پر تد بر کرؤوہ کہاں ہے بندو! ان لوگوں کے کارنا ہے کو یاد کرو جو گئے اور جو ہے گئے؟ جان لو کہ وہ مروہوں میں تقسیم ہو گئے جو اہل خیر سے وہ تو سعادت مند بن گئے اور جو اہل شر سے وہ بدنصیب تھہرے ہیں اپنی جان کا خیال کرؤاس سے پہلے کہتم اس انجام سے ملاقات کروجس سے وہ جالے ہیں۔

و المرء مثل هلال عند مطلعه يدو صنيلاً لطيفًا ثم يتسق يسزداد حتى إذا مناتم أعقب كر الجديد نقصًا ثم يمتحق كان الشباب رداء قد بهجت به فقد تنطاير منه للبلاء خرق و منات مبتسم جد المشيب به كالليل ينهض في أعجازه الأفق محكمه دلائل وبرابين سے مزين متنوع ومنفرد كتب پر مشتمل مفت آن لائن مكتبه

+ € كتاب الكبائر كتاب الكبائر

من راكنين إلى الدنيا وقد صدقوا عجبت والدهر لاتفنى عجائبه بطارق الفجع و التغيض قد طرقوا وطالما نغصت بالفجع صاحبها و ذو التجارب فيها خائف فرق دار لعهد بها الآجال مهلكة بعد البيان و مغرور بها يشق ياللرجال لمخدوع بباطلها أين الملوك ملوك الناس و السوق أقول و النفس تدعوني لزخرفها قد كان قبلهم عيش و مرتفق أين الذين إلى الذاتها جنحوا كأنهم لم يكونوا قبلها خلقوا أمست مساكنهم قفراً معطلة يا أهيل لهذة دار لا بقاء لها أن اغتراداً بيظل ذائيل حسق

''آ دی ہلال کی مثل ہے طلوع ہونے کے وقت وہ بتلا باریک ظاہر ہوتا ہے پھر مضبوط ہوتا ہے۔''

''وہ بڑھتا جاتا ہے جتی کہ جب مکمل ہوجاتا ہے تو رات اور دن اسے کم کرتے کرتے اس کی پہلی حالت کی طرف لوٹا دیتے ہیں' حتیٰ کہ وہ رو پوٹس ہوجاتا ہے۔'' ''گویا کہ جوانی' چا در ہے جس کے ذریعے سے آراستہ ہوتا ہے۔ پھر پوسیدہ ہوکراس کے فکر سے اڑنے گئتے ہیں۔''

ے دیے دیے ہے۔ ''وہ مسکرا تا ہوا فوت ہوا' بڑھا ہے نے اسے کاٹ ڈالا۔رات کی طرح اس کے آخری

ھے میں افق انگزائی لیتا ہے۔'' ۔ تبہ سیاسی کی دند میں افتار کا انتہائی کے انتہائی کی انتہائی کے انتہائی کا انتہائی کا انتہائی کا انتہائی کا ا

''میں نے تعجب کیا جبکہ زمانہ ہے کہ اس کے عجائبات ختم نہیں ہوتے۔ان سے جو دنیا کی طرف ماکل ہیں اور انہوں نے سے کہا۔''

''بہت دریے اس نے اپنے ساتھی کی زندگی کو اجیرن کر دیا۔ رات کو آنے والی مصیبت اور غیض وغضب کے ساتھ وہ مارے گئے۔''

''موت کا جو اس کے ساتھ عہد ہے وہ مہلک ہے۔ تجربہ کار اس میں خوف اور گھبراہٹ کاشکار ہیں۔''

''اے افسوس ان آ دمیوں کے لئے جواس کے باطل سے دھوکے کا شکار ہیں۔ بیان

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

كتاب الكبائر كالمنافر

کے بعداس کے دھوکہ براعتما دیئے ہوئے ہیں۔''

"میں کہتا ہوں نفس اپنی چیک کی طرف مجھے بلاتا ہے۔ بادشاہ کہاں ہیں کوگوں اور بارکیٹوں کے مالک و مادشاہ۔''

''وہلوگ کہاں ہیں جواس کی لذتوں کی طرف مائل ہو گئے۔ان سے پہلے بھی زندگی اور عيش وعشرت تقي.''

ان کے مساکن ویران بے آباد ہو گئے۔ گویا کہ وہ اس سے پہلے پیدا ہی نہیں

"اہے گھر کی لذت والو! اس کو بقا حاصل نہیں کیونکہ زائل ہونے والے سائے ہے دھوکہ کھانا حماقت ہے۔''

☆☆☆

## (۳۷)ريا

الله تعالى نے منافقوں كے بارے ميں بتاتے ہوئے فرمایا:

﴿إِنَّ الْمُنْفِقِيْنَ يُخْدِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوْآ إِلَى الصَّلُوةِ قَامُوْا كُسَالى يُرَآءُ وُنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللهِ إِلَّا قَلِيْلًا ٥﴾ (النساء:

(121)

''لوگوں کو دکھلاتے ہیں اور اللہ کا ذکر برائے نام ہی کرتے ہیں۔''

اورالله تعالی نے قرمایا:

﴿ فَوَيُلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۞ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلوتِهِمْ سَاهُوْنَ ۞ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُ وْنَ۞ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ۞﴾ (الماعون: ٤ - ٧)

''پس ان نمازیوں کے لئے ہلاکت ہے'جواپی نمازوں سے بے خبر ہیں۔وہ لوگ جو ریا کاری کرتے ہیں اور برہنے کی چیزیں بھی مائٹے نہیں دیتے۔''

اور فرمایا:

﴿ يَا يُهَا الَّذِيْنَ امَنُوا لَاتُبْطِلُوا صَدَقِيْكُمْ بِالْمَنِّ وَالْآدَٰى كَالَّذِى يُنْفِقُ مَالَهُ وَلَا يُهُ اللّهِ وَالْيَوْمِ اللّهِ حِو فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفُوانِ عَلَيْهِ وَالْيَوْمِ اللّهِ حِو فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفُوانِ عَلَيْهِ تُوابَّ فَاصَابَهُ وَابِلَّ فَتَرَكَهُ صَلْدًا لَا يَقْلِرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللّهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمُ الْكَفِرِيْنَ ٥ ﴾ (البقرة: ٢٦٤)

''اے ایمان والو! اپنے صدقات کہ اس مخص کی طرح احسان جتلانے اور تکلیف بہنچانے سے ضائع نہ کر و' جوابتا مال لوگوں کے دکھاوے کے لئے خرچ کرتا ہے۔'' اور اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ قُلْ إِنَّمَا آنَا بَشَرٌ مِّنْلُكُمْ يُوْلِى إِلَيَّ انَّمَاۤ اِلْهُكُمُ اِللَّهُ وَّاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَوْجُو الِقَاءَ رَبِّهٖ فَلَي عُمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكُ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖ اَحَدًا٥﴾ يَوْجُو الِقَاءَ رَبِّهٖ اَحَدًا٥﴾

(الكهف:١١٠)

كتاب الكبائر كالمجال الكبائر الكبائر كالمجال الكبائر ا

''پس جو شخص اپنے رب کی ملاقات جاہے اسے جا ہیے کہوہ نیک عمل کرے اور اپنے رب کی عبادت میں کسی کو بھی شریک نہ کرے۔''

رب مبادت ین ی و ی مریب سرح۔ یعنی اپنے عمل کے ذریعے ریانہ کرے۔ ابو ہریرہ ہیان کرتے ہیں۔ رسول اللہ مَا اللّٰهُ عَلَيْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ الْ

''روز قیامت لوگوں میں سے سب سے پہلے جس شخص کا حساب ہوگا وہ اللہ کی راہ میں شہید ہونے والا ہوگا۔ جب وہ ان کا اعتراف کر لے گا' تو الله فرمائے گا:تم نے ان کے بدلے میں کیاعمل کیا؟ وہ عرض کرےگا۔ میں نے تیری خاطر قبال کیاحتیٰ کہ میں شہید کردیا گیا۔الله فرمائے گا: تم فے جھوٹ بولا۔ بلکہ تم نے تواس لئے کیا تا کہ کہا جائے وہ جری شخص ہے۔ وہ تو کہہ دیا گیا۔ پھراس کے متعلق تھم دیا جائے گا تواہے چرے کے بل تھییٹ کرجہنم میں ڈال دیا جائے گا اور ایک وہ آ دمی جے اللہ نے کشائش عطاکی ہوگی اور مال کی تمام اصناف اے عطاکی ہوں گی۔ پھراہے پیش کیا جائے گا تو اللہ اسے این نعتیں یاد کرائے گا'وہ ان کا اعتراف کرلے گا تو اللہ یو چھے گا: تم نے ان کے بدلے میں کیاعمل کیا؟ وہ عرض کرے گا: میں نے ہراس جگہ تیری غاطرخرچ کیا'جہاں خرچ کرنا تحقیے پسندتھا۔اللّٰہ فر مائے گا:تم نے جھوٹ بولا۔تم نے تواس لئے کیاتھا تا کہ کہا جائے کہ وہ برائخی ہے۔ وہ تو کہدویا گیا۔ پھراس کے بارے میں تھم دیا جائے گا تو اے اس کے چبرے کے بل تھسیٹ کرجہنم میں ڈال دیا جائے گا۔اورایک وہ آ دی جس نے علم سیکھااوراہے سکھایااور قر آ ن پڑھا۔اے بھی پیش كيا جائے گا۔ پس اللہ اسے اپنی نعتیں یاد کرائے گا۔ وہ ان کا اعتر اف کر لے گا' تو اللہ یو چھے گا'تم نے ان کے بدلے میں کیا کیا؟ وہ عرض کرے گا: میں نے علم سیکھا اور اسے سکھایا اور میں نے تیری خاطر قرآن پڑھا۔اللّٰد فرمائے گائم نے جھوٹ بولا۔ بلکہتم نے تو اس لئے علم حاصل کیا تھا تا کہ کہا جائے کہوہ عالم ہےاورتم نے اس لئے

🛈 مسلم (۱۹۰۵) بخاری (۲۹۸۹) مسلم (۲۹۸۷)

اس کے چیرے کے بل گھیٹ کرجہنم میں ڈال دیا جائے گا۔'' 🛈

پڑھا تا کہ کہا جائے کہ وہ قاری ہے پھراس کے بارے میں تھم دیا جائے گا اور اسے

+ الكبائر كاب الكبائر

اورآ پِئَالْيُكُمُ نِ فرمايا:

''جس شخص نے لوگوں کے عیب دوسروں کو سنائے تو اللہ اس کے عیب دوسروں کو سنائے گا اور جس شخص نے لوگوں کے عیب دوسروں کو دکھائے تو اللہ اس کے عیب دوسروں کو دکھائے تو اللہ اس کے عیب دوسروں کو دکھائے تو اللہ اس کے عیب دوسروں کو دکھا دے گا۔' ①

خطائی نے فر مایا: اس کامعنی ہے ہے کہ جس شخص نے اخلاص کے بغیر کوئی عمل کیا' اس کامحض بیارادہ تھا کہ لوگ اسے دیکھیں اور اسے سنیں' تو اس کواس پر بید جزادی جائے گی کہ وہ اسے مشہور کر دے گا اور اسے رسوا کرے گا؟ پس وہ اس پر اس کے وہ اعمال ظاہر کر دے گا جن کو وہ چھپایا کرتا تھا۔ والنّداعلم

اورآ پِ مَالَيْنَةُ مِنْ فَرمايا:

''معمولی می ریا بھی شرک ہے۔'' 🕑

اورآ پِ مَالَيْنَا مُ مِنْ اللَّهُ مُلِيِّةً مِنْ عَلَيْنَا مُلَّالًا مُلَّالًا مُلَّالًا مُلَّالًا

'' مجھے تمہارے بارے میں شرک اصغر کا بہت اندیشہ ہے؟''

تو عرض کیا گیا' اللہ کے رسول! وہ کیا ہے؟ فرمایا:''ریا' اللہ تعالیٰ جس روز بندوں کوان کے اعمال کی جزادے گا' '( انہی لوگوں کے پاس چلے جاؤجن کوتم اپنے اعمال وکھایا کرتے ہے'' کیاتم ان کے ہاں جزا پاتے ہو۔''

اوراللد تعالیٰ کے اس ارشاد کے بارے میں کہا گیا ہے۔

﴿ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴾ (الزمر/ ٣٩: ٤٧)

''اوراللّٰد کی طرف ہےان کے سامنے وہ چیز رونما ہوجائے گی'جس کا ان کو وہم و گمان

تك ندتهاـ''

کہا گیا ہے: انہوں نے اعمال کئے جنہیں وہ دنیا میں نیکیاں خیال کیا کرتے تھے جَبکہ روز قیامت وہ ان کے لئے برائیوں کی صورت میں ظاہر ہوں گے۔ اور بعض سلف جب بیآیت تلاوت کرتے تو وہ کہا کرتے تھے اہل ریا کے لئے ہلاکت ہو۔

1 مستدرك حاكم الله مسنداحمد

یہ بھی کہا گیا ہے: ریا کارکوروز قیامت چارناموں سے پکاراجائے گا۔ ریا کارُ دھوکے باز' فاجر' ناکام و نامراد۔ جااور جن کے لئے تونے عمل کیا تھا' ان سے اپناا جروصول کر' تیرے لئے ہمارے پاس کوئی اجزئییں۔ ①

حسن بھریؓ نے فرمایا: ریا کار چاہتا ہے کہ وہ اپنے بارے میں اللہ کی قدر پر غالب آ جائے۔وہ برا آ دمی ہے۔وہ لوگوں کو بتانا چاہتا ہے کہ وہ نیک آ دمی ہے۔وہ کیسے کہہ سکتے ہیں جبکہ وہ اپنے رب کی طرف سے نکھے لوگوں کے مقام کا مستحق قرار پاچکا ہے؟ پس مومنوں کے دلوں کے لئے ضروری ہے کہ وہ اسے پہچانیں۔

قادہ رحمہ اللہ بیان کرتے ہیں۔ جب بندہ ریا کاری کرتا ہے تو اللہ تعالی فرماتا ہے: میرےاں بندے کی طرف دیکھؤمیرے ساتھ کیسے استہزا کرتا ہے؟

روایت کیا جاتا ہے کہ عمر بن خطابؓ نے ایک آ دمی کودیکھا کہ وہ اپنی گردن جھکا رہا ہے۔ انہوں نے فرمایا: گردن والے! اپنی گردن اٹھاؤ خشوع گردنوں میں نہیں خشوع تو دلوں میں ہے۔''

بیان کیا گیاہے کہ ابوامامہ با بلی رضی اللہ عندالیک آ دمی کے پاس متحد میں آئے جبکہ وہ اپنے سجدوں میں روروکر دعا کر رہاتھا۔ ابوامامہؓ نے اسے کہا:تم ہوا گرید (عمل) تمہارے گھر میں ہوتا (تو بہتر ہوتا)۔

محمد بن مبارک الصوری نے فر مایا: رات کے وقت ہیئت وصورت ظاہر کیا کرو کیونکہ وہ دن کے وقت ظاہر کرنے سے بہتر ہے۔اس لئے کہ دن کے وقت ہیئت وصورت کا اظہار مخلوق کے لئے ہےاور رات کے وقت کی ہیئت وصورت رب العالمین کے لئے ہے۔

على بن الى طالبُّ نے فرمایا: ریا کارکی تین علامتیں ہیں:

جب اکیلا ہوتا ہے تو سستی کرتا ہے اور جب لوگوں میں ہوتا ہے تو چست ہوتا ہے۔ جب اس کی تعریف کی جاتی ہے تو عمل زیادہ کرتا ہے اور جب اس کی مذمت بیان کی جاتی ہے تو پھر کا م

ابن انی دنیائے جلیہ تحصی ہے روایت کیا ہے انہوں نے صحافی ہے روایت کیا ہے لیکن اس کا نام نہیں
 لیا۔ اس کی اساد ضعیف ہیں۔ (عراقی)

+ (224 ) +

رہ ہے۔ نضیل بن عیاضؓ نے فر مایا: لوگوں کی خاطر ترک عمل ریا ہے ٰلوگوں کی خاطرعمل کرنا شرک

ہے اوراخلاص بیہ ہے کہ اللہ تمہیں ان دونوں سے عافیت بخشے۔

پس ہم اللہ سے اعمال واقوال اور حرکات وسکنات میں معونت واخلاص کا سوال کرتے ہیں۔ کیونکہ وہ تخی دا تا فیاض ہے۔

#### تضيحت:

اللہ کے بندو! تمہارے ایام بہت کم ہیں' تمہارے مواعظ مہلک ہیں' پس چاہیے کہ بعد والے پہلوں کی خبر دیں۔ غافل کو چاہیے کہ قافلوں کے کوچ کرنے سے پہلے بیدار ہوجائے' اے و پھنے میں کوئی شک نہیں لیکن اس کے پاس زادراہ ہے نہ سواری۔

خواہشات کے مفور میں بھنے ہوئے مخص تو ساحل کی طرف کب چڑھے گا؟ کیا تو خواب خرگوش سے بیدار ہوا' اور حاضر د ماغ کے ساتھ مواعظ میں حاضر ہوا' عقل مند کے قیام کی طرح رات کو قیام کیا' تو نے آنسوؤں (کی روشنائی) سے رسائل کی سطور کھیں۔

تواس کے ساتھ ندم ووسائل کی لمبی لمبی سانسیں چھپا تا ہے تو نے اسے بہتے آ نسوؤں کے سفینے میں بھیجا۔ شاید کہ وہ ساحل پر کنگر انداز ہوجائے ، ہائے افسوں مغرور جاہل غافل پر وہ تو اور بھیر عمری کے بعد کاہل کے گناہ کے ساتھ بوجھل ہوگیا ہے۔ اس نے جواں مردی و بہادری ضائع کردی اور اسے نادانی میں ضائع کر دیا۔ وہ خواہشات کی سواری کی طرف راغب سواری کی طرح مائل ہواوہ عمارتیں بنا تا اور قلع مضبوط کرتا ہے جبکہ وہ اپنی قبری یاد سے غافل ہے۔ اس کے بعد بھی وہ عقل مند ہونے کا دعوی کرتا ہے۔ اللہ کی قتم! مجاہد اعلی منازل کی طرف اس پر سبقت لے گئے۔ جبکہ وہ اپنی منازل کی طرف اس پر سبقت لے گئے۔ جبکہ وہ اپنی ہوتا۔ استوں بے بنیا وہ خص محض کمی امیدوں سے کامیا بی کامیا بی کی امید کرتا ہے۔ ہائے افسوں!

أيها المعجب فخراً بمقاصير البيوت إسما الدنيا محل لقيسام وقسنوت

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

ضيبقًسا بسعبد السنبحوت ف ف السنول بيت ا نساطقيات في البصموت بين أقوام سكوت ب ومسن السعيسس بسقسوت فسارض فسي المدنيسا بشو مشيل بيسبت السعسنسكبسوت و اته خد بیت اضعیف ئے قبل: یہا نیفیس ہندا بهبت مثواك فسموتسي ''اے کل نما گھروں پر فخروغرور کرنے والے۔'' '' د نیا تومحض قیام وقنوت (اطاعت ) کی جگہہے۔'' ''کل تو مت کے بعدایک تنگ گھر میں پڑاؤڈالےگا۔'' ''اقوام خاموشاں کے درمیان۔جو بوتی بوتی خاموش ہوگئیں۔'' ''پس دنیامیں ایک کیڑے اور گزارہ لائق خوراک برراضی ہوجا۔'' '' کمزی کے گھر کی طرح کمزور سا گھر بنا۔ پھر کہ اےنفس! یہ تیرا ٹھکانہ ہے' پھر مرنا

\*\*\*

# + كتاب الكبائر

# (۳۸) دنیا کے کئے علم حاصل کرنااورعلم چھپانا

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ إِنَّمَا يَخُشَى اللَّهُ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمْؤُا ﴾ (الفاطر/ ٣٥: ٢٨)

"بات صرف بیہ ہے کہ اللہ کے بندوں میں سے علم ہی اس سے ڈرتے ہیں۔"

یعنی اللہ عز وجل کاعلم اور معرفت رکھنے والے۔ ابن عباسؓ نے فر مایا: مرادیہ ہے کہ میری مخلوق میں سے مجھ سے وہ ڈرتا ہے جومیر ہے جروت (قدرت ٔ طاقت) غلباور میری حکمرانی کو ۔

> مجاہداور شعبی رحمہما اللہ نے فرمایا عالم وہ ہے جواللہ تعالیٰ سے ڈرتا ہے۔ رہے بن انس نے فرمایا جوخص اللہ سے نہیں ڈرتا وہ عالم نہیں۔

> > الله تعالی نے فرمایا:

﴿إِنَّ الَّذِيْنَ يَكُتُمُونَ مَا اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَٰى مِنْ بَعُدِ مَا بَيَنْهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَٰبِ اُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنَهُمُ اللَّعِنُونَ ٥﴾ (البقرة / ٢ : ٩ ٥ ١) '' بِ شُک وہ لوگ جواللہ کے کھلے احکام اور اس کی ہدایت کو اس کے بعد بھی چھپا رہے ہیں جبکہ ہم نے لوگوں کے لئے کتاب میں ہرتھم وضاحت کے ساتھ بیان کردیا

ہے ان پراللہ اور تمام لعنت کرنے والے لعنت کرتے ہیں۔''

لِلنَّاسِ ﴾ يعني وه لوگ جو چھپاتے ہيں۔

﴿ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُونَ ﴾ ابن عباسٌ نے فرمایا: ہر چیز نہ صرف جن اور انسان۔ ابن مسعودؓ نے فرمایا: دومسلمان آپس میں لعنت کرتے ہیں تو وہ لعنت ان یبود ونصار کی پرلوٹت ہے جومحم مُثَاثِیُّا کے امر اور ان کی صفت کو چھیاتے ہیں۔ اور اللّٰد تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَإِذْ اَخَذَ اللَّهُ مِيْفَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكُتُمُوْتَهُ

فَنَهَذُوهُ وَرَآءَ ظُهُوْدِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ لَمَنَّا قَلِيْلًا ط فَبِئُسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ٥﴾

''اور (یا دکرو) جب اللہ نے ان لوگوں ہے جواہل کتاب ہیں بیع مہدلیا تھا کہتم (اس کتاب کی تعلیمات ) کولوگوں پر واضح کرنا اور چھیا تانبیں تو انہوں نے اس عہد کو پس بشت ڈال دیا اور اللہ کی کتاب کوتھوڑی سی قیمت پر جے ڈالا سوانہوں نے برا سودا کیا۔''

واحدی نے بیان کیا: یہ آیت یہود مدینہ کے بارے میں نازل ہوئی۔اللہ نے ان سے تورات میں عہدلیا کہ وہ محمد مُلِّ الْتُنْزَعُ کی حیثیت آپ کی صفت اور آپ کی بعثت کے متعلق بیان کریں اوراے چھیا کین نہیں۔اور بیاللہ تعالی کافرمان ہے: ﴿ لَتُبِيِّنَكُ لِلنَّاسِ وَ لَا تَكْتُمُوْلَكُ ﴾ حسن بصریؓ نے فرمایا: بیاللہ نے علاء یہود ہے عہد لیا تھا کہان کی کتاب میں جو بچھ ہے وہ اسے واضح كرين اوراس مين رسول الله مَا لِيَهُ كَا ذكر ب- اور آپ كفر مان : ﴿ فَ مَن بَدُوهُ وَرَ آءَ ظُهُ وْرهِم مْ ﴾ ابن عباسٌ نے فرمایا: لعنی انہوں نے اس میثاق کو اپنی پشت پیچھے پھینک دیا۔ ﴿ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ﴾ يعنى وه اي على تسلط كى وجه سے اينے كم تر لوگوں سے جوحاصل كرتے تھے ﴿ فَهِنْسَ مَا يَشْفَرُونَ نَيْلُهُ ﴾ ابن عباسٌ نے فرمایا: براہان كا پيخااورانهول نے نقصان الثقابا \_ اوررسول اللَّهُ مَثَّاتُتُكُمُ نِهِ فَرِمَا يا:

'' جس شخص نے وہ ملم' جس سے اللہ کی رضا حاصل کی جاتی ہے' دنیا کے مال ومتاع كے حصول كى خاطر حاصل كيا تو وہ جنت كى خوشبو بھى نہيں پائے گا۔' 🛈

حضرت ابو ہر مرہ دلائنڈ کی حدیث جس میں ان تین لوگوں کا ذکر ہے جن کو گھسیٹ کرجہنم میں دھکیل دیا جائے گا' گزری ہے۔ان میں سے ایک وہ ہے جسے کہا جائے گائم نے تو اس لئے علم حاصل كيا تها تا كتههيس عالم كهاجائ أوروه كهدديا "كيااورآپ مُلَاثِيَّةُ لِمن في مايا:

'' جس تحض نے علم حاصل کیا تا کہ اس کے ذریعے علماء پر فخر کرے یا اس کے ذریعے ے نادانوں سے بحث ومباحثہ کرے یا لوگوں کے دلوں کواپنی طرف متوجہ کرے تو

🛈 ابوداؤد (۲۶۶۴)

(اس کی میروشش) جہنم کی طرف ہے۔اورایک روایت میں میالفاظ ہیں:"اللہ اسے

جہنم میں داخل کرےگا۔ '0

اورآ بِ مَنْ تُنْفِيِّمُ نِي فُر مايا:

ور جس شخص ہے علم کے متعلق یو چھا گیا اور اس نے اسے چھیایا تو اسے روز قیامت

آ ك كى نگام ذالى جائے گى۔" ①

اوررسول اللهُ مَا لِينْ المُراكِينَةُ عَلَى وعا موتى تقى \_

''میں ایسے علم سے تیری پناہ چاہتا ہوں جو نفع مند نہ ہو۔'' 🏵

اورآ بِ مَكَّ يُتَكِمُ نِهِ مِنْ اللهِ

''جِسْ مخص نے علم حاصل کیا' کیکن اس کے مطابق عمل نہ کیا تو ایساعلم محض اس کے تکبر میں اضافہ کرنا ہے۔'' ©

حصرت ابوامامه تلاتؤن فرمايار سول الله سَلَاتُونَا فَ فرمايا:

''عالم سوء کوروز قیامت لایا جائے گا تو اسے آگ میں پھینک دیا جائے گا وہ اپنی
انتزیوں کے ساتھ'الیے گھو ہے گا جیسے گدھا چکی کے گرد چکرلگا تا ہے۔اسے کہا جائے
گاہتم اس سے کیوں دو چار ہوئے جبکہ ہم نے تو تنہار کی وجہ سے ہدایت حاصل کی تھی۔
تو وہ کہے گا میں جس چیز سے تنہیں منع کیا کرتا تھا' خوداس کا ارتکاب کیا کرتا تھا۔'' ﴿
ابن علائے نے فر مایا علم حاصل کرنا مشکل ہے'اسے یاد کرنا اس کے حاصل کرنے سے زیادہ
مشکل ہے' اس پڑمل کرنا اس کے یاد کرنے سے بھی زیادہ مشکل ہے اور اس سے سلامتی پانا اس
کے ممل کرنے سے بھی زیادہ مشکل ہے پس ہم اللہ سے ہرتم کی آ زمائش سے سلامتی اور اس کے
بہند یدہ امور کی تو فیق چا ہے تیں کیونکہ وہ تی داتا فیاض ہے۔

<sup>🛈</sup> ترمذی (۲۲۵۶) 🕈 ابوداؤد (۳۲۵۸)

صلم (۲۷۲۲) 
 رمذی
 مسلم (۲۷۲۲)
 حمد 
 مسلم (۲۷۲۲)
 حمد 
 حمد 

 حمد 
 حمد 

 حمد 
 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 
 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد 

 حمد

<sup>@</sup> بخاری (۳۲۹۷) مسلم (۲۱۸۹)

فيحت:

ابن آ دم! تم معاملات کے انجام کو کب یاد کرو گے؟ تم ان محلات سے کب کوچ کرو گے؟ تو نے جو پچھتمبر کیا ہے ان میں کب تک گھومتا پھرے گا؟ تم سے پہلے جوان منزلوں اور گھروں میں سے وہ کہاں ہیں؟ وہ جس نے اپنی تدبیر سوء سے یہ یقین کرلیا تھا کہ وہ واپس نہیں پلئے گا، کہاں ہے؟ اللہ کی قتم! ان سب نے کوچ کیا اور قبروں میں جا جمع ہوئے۔ انہوں نے صور پھو نکے جانے تک تخت و کھر در سے پچھونوں کو اپنا وطن بنالیا، جب وہ فیصلہ سننے کے لئے آتھیں گےتو آسان تھر تھرائے گا۔

جاب بخفی کھول دیے جائیں گے اور پردے چاک کردیے جائیں گے افعال مجائب ظاہر ہوں گے اور جو پھے سینوں میں ہے ظاہر کردیا جائے گا۔ بل صراط نصب کردیا جائے گا اور کتنے ہی قدم ٹھوکر کھائیں گئ وہاں آئٹرے لگائے جائے گے جومغرور لوگوں کو اچک لیس گئ متقی لوگوں کے چہرے چودھویں رات کے چاند کی طرح چیکتے ہوں گے اور وہ اس تجارت کے ستحق تھہرے جس میں خیارہ نہیں 'جبکہ فاجر قسم کے لوگ تباہی و بربادی کی آ واز لگائیں گئ جہنم کو لگاموں کے ساتھ لایا جائے گا اور وہ جوش مارتی ہوگی جب انہیں اس میں ڈال دیا جائے گا تو وہ اس کی آ واز نشیں گے اور وہ جوش مارتی ہوگی۔ دنیا میں اس محض کے لئے کوئی سروز نہیں جوقیا مت پرایمان رکھتا ہے دنیا ہے صرف کا فریا جائل محض ہی خوش ہوتا ہے۔

إنسما السدنيا متاع كل مسا فيها غسرور فت ذكر هسول يسوم السسما فيسه تسمسور "دنيا صرف متاع ہے اس میں جو پچھ ہے وہ دھو كے كا سامان ہے اس دن كى ہولتا كى یاد كروجب آسان تقر تقرائے گا۔"

www.KitaboSunnat.com

\*\*\*

## (۳۹) خیانت

الله تعالی نے فرمایا:

﴿ لِلَّا يَّهُمَا الَّذِيْنَ اَمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوْآ اَمَٰئِكُمْ وَاتْتُمُ تَعْلَمُوْنَ٥﴾ (الانفال: ٢٧)

''ایمان دارو! الله اور اس کے رسول کے ساتھ خیانت نہ کرو اور اپنی امانوّں میں خیانت نہ کرواورتم جانتے ہو۔''

واحدیؒ نے فرمایا: یہ آیت ابولبابہ کے بارے میں نازل ہوئی جب رسول اللہ مَالَیْمُ اِنْ اِنْسِی بنو قریظہ کی طرف بھیجا' جب ان کا محاصرہ کیا اور اس کے اہل عیال ان میں شامل تھے۔ تو انہوں نے کہا: ابولبابہ! تمہارا ہمارے متعلق کیا خیال ہے اگر ہم اپنے بارے سعد (رضی اللہ عنہ) وَ نَصِلہ کو قبول کر لیں؟ تو ابولبابہ نے اپنے طق کی طرف اشارہ کیا یعنی یہ کہ وہ (فیصلہ) وَ نَ ہے۔ پس تم نہ کرو۔ یہ ان کی طرف سے اللہ اور اس کے رسول کے لئے خیانت تھی۔ ابولبابہ نے کہا: میں نے اپنی جگہ سے اپنے قدم نہیں ہلائے تھے کہ جھے پتہ چل گیا کہ میں نے اللہ اور اس کے رسول می گیا کہ میں نے اللہ اور اس کے رسول مَن اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ کے تھے کہ جھے پتہ چل گیا کہ میں نے اللہ اور اس کے رسول مَن اللہ اللہ کے میں نے اللہ اور اس کے رسول مَن اللہ اللہ کے میں نے اللہ اور اس کے رسول مَن اللہ کے اور اس کا فرمان ﴿ وَ اَسْ جُم وَ اَنْ اَنْ اللہ اللہ اللہ اللہ کہ اللہ کے اور اس کی ابن انتوں میں خیانت نہ کرو۔ ابن عباسٌ نے فرمایا:

''امانتوں سے مراد وہ اعمال ہیں جن کو اللہ نے بندوں پر امانت کھبرایا ہے۔ لیعنی فرائض وہ فر ماتا ہے۔ تم ان میں کمی نہ کرو۔''

الکلی نے فرمایا: جہال تک اللہ اوراس کے رسول کی خیانت کا تعلق ہے تو اس سے مرادان دونوں کی معصیت ہے اور رہی امانت کی خیانت تو ہر خص اس چیز کا امین ہے جو اللہ نے اس پر فرض قرار دی ہے۔ اگر چاہے تو اس میں خیانت کرے اور اگر چاہے تو اس ادا کرے اللہ تعالی کے سواا سے کوئی نہیں جانتا اور اس کا فرمان ﴿ وَ اَتَنْهُمْ تَعْلَمُونَ عَلَيْمٌ ﴾ تم جانتے ہو کہ وہ امانت ہے اس میں کوئی شرنہیں اور اللہ تعالی نے فرمایا:

﴿ أَنَّ اللَّهَ لَا يَهُدِي كَيْدَ الْخَآبِنِينَ ﴾ (يوسف: ٢٥)

''اللّٰدخیانت کرنے والوں کی تدبیروحپال کو <del>چلئ</del>ے ہیں دیتا۔''

یعنی جواپی امانت میں خیانت کرتا ہے اس کی حال کو چلنے نہیں ویتا لیعنی وہ ہدایت سے محردمی کی وجہ سے عاقبت میں رسوا ہو جاتا ہے اور آپ تائینے کے خرمایا:

''منافق کی تین نشانیاں ہیں جب بات کرے تو جھوٹ بولے جب وعدہ کرے خلاف درزی کرے جب اس کے پاس امانت رکھی جائے تو وہ خیانت کرے۔'' ① اور رسول اللّٰدِ کَالْاَئِیْمِ نے فرمایا:

''اس شخص کا ایمان نہیں جوامانت دار نہیں اور جو شخص عہد کا پابند نہیں اس کا کوئی دین نہیں \_'' ⊕

خیانت ہر چیز میں فتیج ہے اور اس کا بعض بعض سے زیادہ برا ہے اور جس نے تمہارے پیسوں میں خیانت کی وہ اس شخص کی طرح نہیں جس نے تمہارے اہل اور تمہارے مال میں خیانت کی اس نے بڑے گناہ کا ارتکاب کیا اور رسول اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللللللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰلِللللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ

بو ن چارہ ہاں ہوئے ہا۔ ساتھ خیانت کریے تم اس سے خیانت نہ کرو۔''

اور صدیث میں ہے: 💎 🖖

"مومن خیانت اور جھوٹ کے علاوہ کسی بھی چیز کا خوگر ہوسکتا ہے۔" 

اور رسول الله مَاللَّيْنَ فَي فِر مایا:

"الله فرماتا ہے: میں دوشراکت داروں میں تیسرا ہوتا ہوں جب تک ان میں ایک اسٹے میں ایک اسٹے میں ایک اسٹے میافتی سے خیانت نہیں کرتا۔" اور اس میں یہ بھی ہے۔" سب سے پہلے لوگوں سے امانت اٹھالی جائے گی اور آخر میں جو باقی رہے گاوہ نماز ہے اور بہت سے ایسے

<sup>(</sup>۹۹) مسلم (۹۹) مسلم (۹۹)

ابن ابي شيبه (الايمان ٧) احمد (٣/ ١٣٥)

<sup>🕑</sup> احمد

نمازی ہیں جن میں کوئی خیرو بھلائی نہیں۔'' ①

اوررسول اللهُ مَلَاثِينَا لِمُعَلِّينَا لِمُعَلِّينَا لِمُعَلِّينَا لِمُعَلِّينًا لِمُعَلِّينًا لِم

''خیانت سے بچو' کیونکہ وہ براہم نشین ہے۔'' 🏵

اورآ بِ مَاللَّيْمَ لِمِنْ اللَّيْمَ لِمِنْ اللَّهِ

''اس طرح جہنمی ہیں'آپ نے ان میں سے ایک آ دمی کا ذکر کیاوہ ظاہر نہیں کرتا تھا' اسے طبع تھا اگر اس کے پاس کوئی معمولی سی چیز بھی رکھ دیں تو وہ اس میں خیانت کرتا تھا۔''

ابن مسعود ؓ نے فر مایا: روز قیامت صاحب امانت کولا یا جائے گا جس نے اس میں خیانت کی ہوگی تو اسے کہا جائے گا: اپنی امانت ادا کرووہ کہے گا اے رب! کہاں سے (ادا کروں) دنیا تو گر رگی؟ فر مایا: اس کو جہنم کے گڑھے میں و یسی شکل دے دی جائے گئ جیسی اس روزشی جب اس نے اسے حاصل کیا تھا۔ پھر اسے کہا جائے گا وہاں جا و اور اسے لے کر آ و فر مایا: پس وہ اس کی طرف اترے گا اسے اپنی کندھے پر اٹھائے گا تو وہ اس پر دنیا کے پہاڑوں سے بھی زیادہ شیل ہوگی حتی کہ جب وہ سمجھے گا کہ وہ نجات یا گیا ہے تو وہ (امانت) گرجائے گی اور ھپر وہ بھی ہمیشہ کے لئے اس کے بیچھے چلا جائے گا پھر فر مایا: نماز امانت ہے وضو امانت ہے خسل ہمیشہ ہمیشہ کے لئے اس کے بیچھے چلا جائے گا پھر فر مایا: نماز امانت ہے وضو امانت ہے خسل امانت ہے وزن امانت ہے وار ان سے بڑی امانت ہے وزن امانت ہے ناپ امانت ہے اور ان سے بڑی امانت لوگوں کی رکھی ہوئی امانت ہے۔ اے اللہ! اپنے لطف و کرم سے ہمارے ساتھ معاملہ فرما اور اپنے عفو و در گزر سے ہمارا تہ دارک فرما۔

### نصیحت:

اللہ کے بندو! کیا ہی بہترین اوقات تھے جنہیں تم نے ضائع کردیا' کیا ہی جامل نفوس تھے جن کی تم نے اطاعت کی' اموال کے بارے میں کتنے ہی باریک سوال میں' ذراغور کروتم نے انہیں کیسے جمع کیا' اعمال کے رجسر کتنے محفوظ ہوں گے ذرا تد ہر کروکہ تم نے ان کے سپر دکیا کیا'

<sup>🛈</sup> ابوداؤد 🛈 ابوداؤد

کتاب الکبائر کتاب الکبائر کی کا حماب ہونے سے پہلے اوراس سے پہلے اوراس سے پہلے اوراس سے پہلے کہ ورائ کی حماب ہونے سے پہلے اوراس سے پہلے کہ میں کیڑوں کوڑوں کی خوراک بن جاؤ جس کا دروازہ بند ہے' (تدبر کرو) اور اگر اس میں گناہ گار سے کہا جائے تم کیا پند کرتے ہو' تو وہ کے گا: میں واپس جانا چاہتا ہوں اور میں دوبارہ (گناہوں کی طرف) نہیں لوٹوں گا:

أين أهل الديار من قوم نوح ثم عاد من بعدهم و ثمود بينما القوم في النمارق و الاستب برق أفضت إلى التراب الخدود و صحيح أضحى يعود مريضًا وهو أدنى للموت ممن يعود "توم نوح كره وال هر عاد (قوم بود) اوران كي بعد شمود (قوم صالح) كهال بين-"

''وہ جو تکیوں اور رکیٹم میں رہنے والی قوم تھی مٹی کے گڑھوں کی طرف چل گئی۔'' ''اور صحت مند شخص مریض کی عیادت کو جاتا ہے اور وہ اس شخص سے جس کی عیادت کے لئے جاتا ہے' موت کے زیادہ قریب ہے۔''

☆☆☆

## (۴۰)احسان جنانا

الله تعالیٰ نے فر مایا:

﴿ يَلَا يُنِهَا الَّذِيْنَ امَنُوا لَاتُبُطِلُوا صَدَقِيْكُمْ بِالْمَنِّ وَالْآدَٰى كَالَّذِى يُنْفِقُ مَالَةُ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفُوانِ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا لَا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكُفِرِيْنَ ٥ ﴾ (البقرة: ٢٦٤)

''ايمان دارو!اييخ صدقات كواحسان جمّا كراوراذيت پهنچا كرضائع نه كرو\_''

الواحديٌّ نے فرمایا: وہ بیہ کہ کوئی چیز دے کراحسان جمائے۔

'' تین قتم کے لوگ ہیں جن سے اللہ کلام کرے گا ندروز قیامت ان کی طرف دیکھے گا اور نہ ہی انہیں پاک کرے گا اور ان کے لئے در دناک عذاب ہے: از ارائ کانے والا'

احسان جمّانے والا اور جھوٹی قتم سے اپنا سودا بیچنے والا۔'' 🛈

((المسبل)) وہخص ہے جواپے ازاریا اپنے کپڑے یاا پی قیص یاا پی شلوارکواں قدر

لنكائ كدوه يا وَل تك بوجائ -اس كن كدآ ب كَالْفِيْ لم فارهايا:

''ازارے'جونخنوں سے نیچے ہے وہ آگ میں ہے۔'' 🏵

حدیث میں پیمی ہے:

'' تین قتم کے لوگ جنت میں نہیں جا کیں گے اپنے والدین کا نافر مان عادی شراب نوش اور احسان جمانے والا ۔'' ۞

نيز فرمايا:

'' وھو کے باز' بخیل اوراحسان جتانے والا جنت میں نہیں جا کیں گے۔''

🛈 مسلم 🕥 ابوداؤدا ابن ماجه 🕲 مسلم (١٠٦)

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

نی مُثَلِّیَّا کُسِی کہ آپ نے فر مایا: ''تم نیک کر کے احسان جتانے سے بچو کیونکہ وہ شکر کو باطل اوراجر کو ٹتم کر دیتا ہے۔''

يهررسول اللهُ مَنَاتِينَةِ مِنْ اللَّهُ عِز وجل كا فرمان تلاوت فرمايا:

﴿ يَنَا يُّهَا الَّذِيْنَ امْنُوا لَا تُبُطِلُوا صَدَقِيكُمْ بِالْمَنِّ وَالْآذَى كَالَّذِى يُنْفِقُ مَالَهُ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانِ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا لَا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ

لَا يَهُدِى الْقُوْمَ الْكُفِرِيْنَ ٥﴾ (البقرة: ٢٦٤)

ابن سیرینٌ نے ایک آ دمی کو دوسر ہے خص کہتے ہوئے سنا میں نے تیرے ساتھ احسان کیا میں نے (یہ) کیا اور میں نے (وہ) کیا۔

ا بن سیرینؓ نے اسے فرمایا: خاموش ہو جاؤ' اس ٹیک میں کوئی خیر و بھلائی نہیں جب اسے شار کیا جائے اوران میں سے بعض کہتے تھے:

جس شخص نے اپنی نیکی کے ساتھ احسان جتایا اس کاشکر کرنا ساقط ہو گیا' جس نے اپنے ۔ عمل پر فخر وغرور کیااس کااجر ضالع ہو گیا۔اور شافعیؓ نے شعر پڑھے :

لا تسحسما المنسام بسأن يسمنوا عسليك مسنسه و اختسر لسنسفسك حسطهسا و اصبسر فسيان السصبسر جسنسه

منسن السرجسال عملسى المقبلوب أشهد مسن وقسع الأسنسه "تم لوگول سے پچھندلوورندوه تم پراحمان کریں گے۔"

م و و اے چھنہ و دربہ دہ میں میں ہے۔ اینے آپ کے لئے اس کا متخب کر لے اور صبر کر کیونکہ صبر ڈھال ہے۔

''لوگوں کے احسانات' دلوں پر نیز وں سے زیادہ بخت واقع ہوتے ہیں۔''

اوران میں ہے کسی نے بیشعر پڑھے:

و صاحب سلفت منه إلى يد أبطاً عليه مكافاتي فعاداني لما تيقن أن الدهر حاربني أبدى الندامة مماكان أو لاني

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

+ كتاب الكبائر كاب الكبائر

افسدت بالمن ما قدمت من حسن ليس الكريم إذا أعطى بمنان ''كى شخص نے ميرے ساتھ احسان كرنے ميں جلدى كى ليكن جب ميں نے اس كاحسان كابدلہ چكانے ميں تاخير كى تووہ ميراد ثمن بن گيا۔''

''جبائے یقین ہوگیا کہ زمانے نے مجھ کے لڑائی کی ہے۔ تواس نے اس پر جو مجھ پراحیان کیا تھا۔ ندامت جتلائی۔''

پوسوں یا مصر کیا تھا'اس پراحسان جما کراہے ضائع کردیا۔ وہ مخص کی نہیں جو ''متم نے جواحسان کیا تھا'اس پراحسان جما کراہے ضائع کردیا۔ وہ مخص کی نہیں جو احسان جمانے کے لئے کوئی چیز دیتا ہے۔''

### نصيحت:

گناہوں کی طرف ہوھنے والے! تجھے کس چیز نے جاہل بنادیا! تواس ذات کے بارے میں کب تک دھو کے میں مبتلا رہے گا جس نے تجھے ڈھیل دی گویا کہ اس نے تجھے ہاک کر دیا دیا ہے؟ گویا کہ تو موت کے انظار میں ہے حالاتکہ وہ تجھ پر آچکی اور اس نے تجھے ہلاک کر دیا جبکہ کوچ ہے اور فرشتے نے تجھے خوف زدہ کردیا ہے۔ آزمائش نے خواہش کے بعد تجھے قید کر دیا وار تجھے باندھ کرر کھ دیا اور توعظیم ہو جھ پر نادم ہوا جس نے تجھے بوجس کر دیا۔ فانی چیز پر مطمئن ہونے والے! تیری خطا میں کس قدر ہیں ۔ نسیحت وخیر خواہی ہے اعراض کرنے والے! گویا کہ بھے نسیعت نہیں کی گئی۔ تیرامحبوب جو ہوا کرتا تھاوہ کہاں نتقل ہوگیا ہے؟ اور جہاں تک تیری وعظ ونسیعت کاتعلق ہو تو وہ اس کے جم تلف ہوگئی گویا کہ وہ کنویں کی تہہ میں اتر گئی وہ مال کثیر اور امید طویل کہاں ہے؟ کیا وہ اپنجا کی کہ میں تاتھ کی کھ میں تنہائمیں گیا۔ وہ جو خفلت میں اس کے ساتھ کی کھ میں تنہائمیں گیا۔ وہ جو خفلت میں اس کے ساتھ کی کھ میں تنہیں کیا اور وہ اس کے ساتھ کی کھ میں تنہائمیں گیا۔ وہ جو خفلت میں اس کے ساتھ کی کھ میں تنہائمیں گیا۔ وہ جو خفلت میں اس کے ساتھ کی کھ میں خبائی کے اس کے ساتھ کی کھ میں تاہیں کیا اس نے اس کے ساتھ کی سفر شروع نہیں کیا اور وہ اب تک کہاں جا پہنچا؟

روس میں اس کی سعادت مندی کا ستارہ غائب اور حجیب گیاوہ پہلے شہنشاہ 'زورآ ور'متکبر اللّہ کی تیم !اس کے اموال کے کوئی اور مالک بن گئے جب کہ دنیاا کیگردش ہے۔ مین کہنے ہیں؟

## (۴۱) تقدير كو حبطلانا

الله تعالی نے فرمایا:

﴿إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقُنَّهُ بِقَدَرٍ٥﴾ (القمر: ٩٤)

" ہمنے ہر چیز کوایک اندازے پر پیدا کیا۔"

ابن جوزيٌ نے اپن تفسير ميں فر مايا: اس كےسب نزول ميں دوقول ہيں:

(الف) مشرکین که رسول الله مَا کُانْتِیْم کے پاس آئے تو وہ تقدیر کے بارے میں آپ سے

جھڑنے لگے۔تو پھریآیت نازل ہوئی۔امامسلم اس کی روایت میں منفرد ہیں۔

ابواماء یفرمایا که بیآیت قدرید کے بارے میں نازل ہوئی۔ آ

#### فرمایا:

''تم الله ہے جھڑا کرنے والے ہو۔'' 🏵

توبيآيت نازل موئى:

﴿إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي صَلَلِ وَ سُعُرِهِ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّادِ عَلَى وَجُوْهِهِمْ فُو النَّادِ عَلَى وَجُوْهِهِمْ فُو النَّادِ عَلَى وَجُوْهِهِمْ فُو النَّامَ اللَّهِ عَلَى وَجُوْهِهِمْ فُو الْمَسَ سَقَرَهِ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَفُنهُ بِقَدَرٍهِ ﴾ (القسر: ٤٧ - ٤٩) ''بيثك گناه گارلوگ غلطى اورجنوں ميں پڑے ہيں۔ جس دن وہ منہ كے بل آگ ميں گھيئے جائيں گے۔ (ان سے كہاجائے گا) اب آگ كامرہ چكھو۔ ہم نے ہر چيزكو ايك انداز كے مطابق بيداكيا ہے۔''

عمر بن خطابٌ رسول اللهُ مَثَالِيُّةُ إِسے روايت كرتے ہيں آپ نے فر مايا: '' جب الله روز

① ابن عدی ٔ ابن مردوبیا در ابن عسا کر وغیرہ نے ضعیف سند سے اسے روایت کیا ہے۔البیوطی نے الدر المنثور میں ذکر کیا ہے۔

<sup>🕜</sup> ابن مردوبية ن ابن عباسٌ (السيوطي)

حراث کتاب الکبائر علی منادی کو مختم فرمائے وہ ایک آوازلگائے گا جس کو سیا مگلوں پچھلوں کو بہت کرے گا ایک منادی کو مختم فرمائے تو وہ ایک آوازلگائے گا جس کو سیب اگلے پچھلے سن لیس گے۔اللہ ہے جھلے سن لیس گے۔اللہ ہے جھڑا کرنے والے کہاں ہیں؟ تو قدریہ کھڑے ہول گے؟ پس ان کے بارے میں جہنم کی طرف لے جانے کا تھم دیا جائے گا۔''

الله فرمائے گا:

﴿ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَى وَجُوْهِهِمْ ذُوُقُوْ امَسَّ سَقَرَ ٥ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقُنهُ بِقَدَرِ ٥ ﴾ (القمر: ٤٨ - ٤٩)

"ابآ گ کامزہ چکھو۔ہم نے ہر چیز کواکی انداز کے مطابق بیدا کیا ہے۔"

انہیں اللہ ہے جھگڑا کرنے والے اس لئے کہا گیا ہے کہ دہ اس مسلے کے بارے میں سب جھگڑا کرنے والے اس لئے کہا گیا ہے کہ دہ اس مسلے کے بارے میں سب جھگڑا کرتے تھے کہا س طرح جائز نہیں کہ معصیت کو بندے پر مقدر کر دیا جائے پھراس پراسے عذاب دیا جائے۔

ہشام بن حسان نے حسن سے روایت کیا انہوں نے فر مایا: اللہ کی تنم! اگر قدریہ عقیدے کا شخص روزہ رکھتار ہے حتیٰ کہ وہ (سوکھ کر)ری کی طرح ہوجائے۔ پھر نماز پڑھے حتیٰ کہ وہ کمان کی تانت کی طرح ہوجائے تو اللہ اس کواس کے چہرے کے بل جہنم میں اوند ھے منہ داخل کرے گا تا تا کہا جائے گا آگ کا مزہ چکھو بے شک ہم نے ہر چیز کوایک اندازے کے مطابق پیدا کیا ہے۔

ابن عمرٌ نے فرمایار سول الله مَثَالَثِیْرُ منے فرمایا

''ہر چیزاندازے کےمطابق ہے حتیٰ کہ عجز ودانائی۔''

ابن عباسؓ نے فر مایا: ہم نے ہر چیز کو اندازے کے مطابق پیدا کیا ہے وہ اس کے وقوع پذیر ہونے ہے پہلے لوح محفوظ میں مکتوب ہے۔اللہ تعالیٰ نے فر مایا:

﴿ وَاللَّهُ خَلَقَكُمُ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴾ (الصافات: ٩٦)

''حالانکہاللہ نےتم کواور جوتم بناتے ہوسب کو پیدا کیا۔''

ابن جريرٌ نے فر مايا:اس ميں دووجہيں ہيں:

(الف) بيكه مصدر ك معنى مين موتومعنى موكا: الله في تم كواورتمهار عل كو بيداكيا-

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

حق کتاب الکبائر کی بھی میں ہو۔ تو پھریے منی ہوگا: اللہ نے تم کواور جس چیز کوتم اپنے ہوگا واللہ نے تم کواور جس چیز کوتم اپنے ہاتھوں سے اصنام وغیرہ بناتے ہو کو بیدا کیا۔ اور اس آیت میں اس پردلیل ہے کہ بندوں کے افعال مخلوق ہیں۔ واللہ اعلم

اورالله تعالی نے فرمایا:

﴿ فَٱلَّهُمَهَا فُجُورَهَا وَ تَقُوانِهَا ٥ ﴾ (الشمس: ٨)

''پھر بدکاری اور پرہیز گاری دونوں کی سجھ عطا کی۔''

الہام کامعنی ہے کسی چیز کودل میں ڈال دینا۔

سعید بن جیر ؓ نے فرمایا: ''اس کی بدکاری اور پر ہیزگاری اس پرلازم کردی۔'' ابن زید نے فرمایا: اپن تو فیق سے اسے تقوی عطا کیا اور اسے گنا ہوں کے لئے بے یارو مددگار چھوڑ دیا۔ واللہ اعلم

حديث مين رسول الله مَا الله عَلَيْقِ السيان على كرآب نفر مايا:

''بلاشک الله نے ایک قوم پراحسان کیا تو ان کے دل میں خیر و بھلائی ڈال دی اور انہیں اپنی رحمت میں داخل فرمادیا اور ایک قوم کو آز ماکش میں ڈالا تو آئیس تنہا چھوڑ دیا اور ان کے افعال پران کی فدمت کی اور ان کو جو آز مایا وہ اس کے سواکسی اور کی طاقت نہیں رکھتے پس اس نے آئیس عذاب سے دو چار کر دیا حالا تکہ وہ عادل ہے۔'' طاقت نہیں رکھتے پس اس نے آئیس عذاب سے دو چار کر دیا حالا تکہ وہ عادل ہے۔'' گلا یُسْنَلُ عَمَّا یَفْعَلُ وَهُمْ یُسْنَلُونَ ﴾ (الانہیاء: ۲۳)

''وہ جو کچھ کرتا ہے'اس کی کوئی بازیرس نہیں' جبکدان لوگوں سے بازیرس ہوگ۔''

معاذین جبل بیان کرتے ہیں رسول الله مَا لَيْنَا اللهِ عَلَيْنَا اللهِ مَا لَيْنَا اللهِ مَا اللهِ مَا

''اللہ نے جس بھی بنی کو بھیجا تو اس کی امت میں قدر بیاور مرجیہ تھے اور اللہ نے ستر انبیاء کی زبان برقدر بیاور مرجیہ پرلعنت فر ہائی۔''

عا نَشْدَ صَى اللَّهُ عَنْهَا بِيانَ كُرِتِّي فِي رَسُولِ اللَّهُ فَٱللَّيْئِكُمْ فَيْ فَرِمَا يَا:

"قدریاس امت کے مجوی ہیں۔" 🛈

ل یاورحدیث سابق ان میں مقال ( کلام کیا گیا) ہے بیضعف کی وجہ سے ثابت نہیں۔

الكبائر كتاب الكبائر كالمجائر كالمجائر

ابن عمرٌ بیان کرتے ہیں رسول الله مَثَالَةُ عِبَّمِ نَے فر مایا

'' ہرامت کے مجوی ہوئے اوراس امت کے مجوی قدریہ ہیں' جو گمان کرتے ہیں کہ قدر کوئی چزنہیں۔'' ①

اور یہ کہ معاملہ ابتداسے چلا آ رہا ہے(اللہ کااس پر کوئی اختیار وقضانہیں) فرمایا: ''جب تم ان سے ملوتو کہو: کہ میں ان سے بیزار ہوں اور وہ مجھ سے بےزار ولا تعلق ہیں۔''

پھرفر مایا:

''اس ذات کی قتم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے اگر ان میں سے کسی کے پاس احد کے مثل سونا ہواوروہ اسے اللہ کی راہ میں خرچ کر دے تووہ اس سے مقبول نہیں کیا جائے گاحتیٰ کہ وہ نقد رہے خیروشر پرایمان لائے۔''

پھر صدیث جبریل اور ان کا نجی مَنْ اَنْتُمْ ہے سوال کرنے کا ذکر ہے فرمایا: ''ایمان کیا ہے؟'' آپ مَنْ اَنْتُمْ اِنْ فرمایا: '' یہ کہ تو اللہ' اس کے فرشتوں' اس کی کتابوں اور اس کے رسولوں پر ایمان لائے اور تو تقدیر کے خیروشر پر ایمان لائے۔''

آپ کافر مانا: ((ان تؤ من بالله))'' یہ کہ تواللہ پرایمان لائے۔''اللہ پرایمان لانے سے مراد ہے' تقید بق کرنا کہ وہ سجانہ وتعالی موجود ہے' صفات جلال و کمال کے ساتھ موصوف اور صفات نقص سے منزہ ہے۔ اور بید کہ وہ کتا' بے نیاز' تمام مخلوقات کا خالق ہے' وہ اس میں جیسے چاہتا ہے تصرف کرتا ہے اور اپنی باوشاہت میں جو چاہتا ہے کرتا ہے۔ اور فرشتوں پرایمان لانے سے مراد ہے' تقید بی کرنا کہ وہ اللہ کے بندے عبود ہیں۔

﴿ وَقَالُوا اتَّخَذَا الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا سُبْطَنَةٌ بَلْ عِبَادٌ مُّكُرَمُوُنَ۞ لَا يَسْبِقُوْنَةُ بِالْقُوْلِ وَهُمْ بِآمُرِهِ يَعْمَلُوْنَ۞ (الانبياء: ٢٦ - ٢٧)

'' بلکہ وہ اس کے معزز بندے ہیں آ گے بڑھ کر کلام نہیں کرتے اور وہ اس کے تھم پر

عمل کرتے ہیں۔"

این الی عاصم نے ضعیف سند کے ساتھ روایت کیا ہے۔
 محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

الكبائر ا

خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُونَ٥﴾ (الانبياء: ٢٨)

میں بھی فرق نہ کیا جائے۔

''وہ جانتا ہے جو کچھان کے آگے ہے اور جو کچھان کے پہلے ہو چکا اور وہ کئی کی شفاعت نہیں کر سکتے' سوائے اس شخص کے جس سے اللہ خوش ہو اور وہ اس کی ہیبت

سے ڈرتے رہتے ہیں۔'' اوررسولوں پرایمان لا ناوہ تصدیق کرنا ہے کہ انہوں نے اللہ تعالی کی طرف سے جو پچھ بتایا

ہے وہ اس میں سے ہیں۔اللہ نے معجزات کے ذریعے ان کی تائید کی جوان کے صدق پر دلالت ہیں اور یہ کہ انہوں نے اللہ کی طرف سے اس کی رسالت کو پہنچا دیا اور اللہ نے ان کوجس چیز کا تھم دیا اس کو ملکفین کے لئے واضح کر دیا اور بیر کہ ان کا احترام واجب ہے اور بیر کہ ان میں سے کسی

یوم آخرت پرایمان لانا' قیامت کے دن اور وہ جوموت کے بعد دوبارہ جی اٹھنے' حشر و حساب' میزان' بل صراط اور جنت وجہنم جیسے مراحل پر مشتمل ہے' کی تصدیق کرنا اور یہ کہ وہ دونوں اس کے ثواب وعقاب کے لحاظ سے نیکوکاروں اور بدکارون کا گھرہے۔اوراس کے علاوہ جوضیح طور پر منقول ہے اس کی تصدیق کرنا اور تقدیر پر ایمان لانا' اس کی جو پہلے بیان ہو چکا' اس

> کی تصدیق کرنا ہےاوراس کا حاصل وہ ہے جس پراللہ تعالیٰ کا یہ فر مان دلالت کرتا ہے۔ ﴿ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴾ (الصافات: ٩٦)

> > ''حالانکہ اللہ نے تم کواور جوتم بناتے ہوسب کو پیدا کیا۔''

معلانا میرانند کے موادر ہوم بیائے ہو سب و پیدا میات اور اللہ کا رفر مان:

﴿إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَهُ بِقَدَرٍ ٥﴾ (القمر: ٤٩)

''ہم نے ہر چیز کوایک اندازے پر پیدا کیا۔''

اورای ہے ابن عبال ہے مروی حدیث میں آپ ملائی کا اور مان متعلق ہے:

'' جان لوُاگر پوری امت تمہیں کوئی فائدہ پہنچانے کے لئے اکٹھی ہوجائے تو وہ تمہیں اس کے سواکوئی فائدہ نہیں پہنچا سکتے جواللہ نے تیرے متعلق لکھے دیا ہے اورا گروہ اس

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

بات پر جمع ہو جائیں کہ وہ تہہیں کچھ نقصان پہنچا سکیں' تو وہ تہہیں اس کے سواکوئی نقصان نہیں پہنچا سکے جواللہ نے تیرے لئے لکھ دیا ہے۔ قلمیں اٹھالی گئی ہیں اور رجسڑ خنگ ہو چکے ہیں۔''

سلف صالحین اور ائمہ خلف کا بیہ فدہب ہے کہ جس شخص نے ان امور کی پختہ تقیدیق کی ا جس میں کوئی شک ہونہ تر د دُنو وہ سچا مومن ہے خواہ بی طعی دلاکل سے ہویا اعتقادات جازمہ سے۔واللہ اعلم

### فصل:

تابعین ائم مسلمین وسلف اور فقها ء امصار کے سر افراد کا اس پر اجماع ہے کہ وہ سنت و دستورجس پر رسول اللہ مخالی نظر نے وفات پائی اس کی پہلی بات یہ ہے: اللہ کی قضا وقدر پر رضاء اس کے حکم کوشلیم کرنا 'اس کے حکم کے تحت صبر کرنا 'اللہ نے جس کام کا حکم دیا ہے اسے بجالا نا اور جس سے اللہ نے منع کیا ہے اس سے رک جانا اللہ تعالیٰ کے لئے عمل میں اخلاص پیدا کرنا 'تقدیر کے اچھا برا ہونے پر ایمان لا تا 'دین کے بارے میں بحث ومباحث اور لڑائی جھگڑوں کوڑک کر دینا 'جرابوں پرسے کرنا 'ہر نیک و بدخلیفہ کے ساتھ مل کر جہاد کرنا اور اگر اہل قبلہ میں سے کوئی شخص فوت ہوجا کے تواس کی نماز جنازہ پڑھنا۔

#### الأيمان:

قول عمل اور نیت (کا نام) ہے اطاعت سے زیادہ ہوتا ہے اور معصیت سے کم ہوتا ہے قرآن اللہ تعالیٰ کا کلام ہے جسے جبریل علیہ السلام اس کے نبی تنافیڈ اپر لے کرنازل ہوئے وہ قرآن غیر مخلوق ہے (بلکہ وہ اللہ کی صفت کلام ہے) بادشاہ کے جسنڈ سے تلے صبر کرنا نواہ وہ جسیا بھی ہوعادل ہو یا ظالم ہم مراء کے خلاف تلوار لے کر نبیں نگلیں گے خواہ وہ ظلم کریں ہم اہل قبلہ میں سے کسی کو کا فرقر ار نبیں ویں گے خواہ وہ کبیرہ گنا ہوں کا ارتکاب کریں اللہ کہ وہ انہیں حلال تصور کریں ۔ ہم اہل قبلہ میں سے کسی کواس کی نیکی کی وجہ سے جنتی نہیں کہیں گے اللہ یہ کہ نبی تنافیڈ کم سے کسی کواس کی نیکی کی وجہ سے جنتی نہیں کہیں گے اللہ یہ کہ نبی تنافیڈ کی گوائی دی ہو۔ رسول اللہ مان کا فیڈ کے صحابہ کرام کے اس کے بارے میں (جنتی ہونے کی) گوائی دی ہو۔ رسول اللہ مان کی گئیڈ کے صحابہ کرام کے

ما بین ہونے والے تناز عات پر خاموثی اختیار کریں گے رسول اللّسَّلَاتِیْوَا کے بعد مخلوق میں سب ے افضل ابو بکر پھرعمر پھرعثان اور پھرعلی رضی اللّه عنہم ہیں اور ہم نبی مُثَالِّیْوَاکی تمام از واج 'آپ کی

اولا داور آب کے صحابہ کرام رضی الله عنہم اجمعین کے لئے رحمت کی دعا کرتے ہیں۔

فائدہ: لوگوں کی پچھالی باتیں ہیں جو کہ تفریبی علماء نے اس کی صراحت کی ہے ان میں سے کچھ یہ ہے اگر کسی نے اللہ کے اساء میں سے کسی نام یاس کے امریا اس کے وعدے یا اس کی

پھے یہ ہے اگر کئی نے اللہ کے اساء میں سے عن نام یا اس کے امر یا اس نے وعدے یا اس ک وعید کا نداق کیا تو اس نے کفر کیا خواہ وہ کہے اگر اللہ جھے یوں تھم کرے تو میں نہیں کروں گا اس

وعید فام ال کیا تواں نے نظر کیا تواہ وہ ہے اس سے اس کے نظر کیا اگر اسے کہا ۔ نے کفر کیا۔اگر قبلہ اس طرف ہو جائے تو میں نماز نہیں پڑھوں گا۔اس نے کفر کیا اگر اسے کہا

جائے یہ کہ تم نماز نہ چھوڑ و کیونکہ اللہ تعالیٰ تمہارامواخذہ کرےگا۔ تواس نے کہاا گراس نے بیاری میں در کے مصرف میں سات کی دھی اس نیاز مصرف کو القاب نے جمعے کا لیا تواس نے جمعے کا لیا تواس نے جمعے

یا تکلیف کی وجہ سے نماز چھوڑی اور راس کے باوجو داس نے اس وجہ سے مجھے پکڑ لیا تو اس نے مجھے مظلم کا تہ کف سب

رظلم کیا تو یکفرہے۔ اگراس نے کہااگرانبیاءاور فرشتے بھی میرے سامنے اس کی گواہی دے دیں تو میں پھر بھی

ا کرائل نے کہا کرانلیاءاور کرتھے کی پیرے ساتے اس وہی دیے دیا ہوں تصدیق نہیں کروں گا۔ تو اس کہنے والے نے کفر کیا۔اگراہے کہا جائے: اپنے ناخن تراش کے

تھیدیں ہیں روں 8۔ تو اس ہے واقع سے سرتیا۔ سرائے ہا جات ہے کا سے اس کے مسلم کیا 'اگراس نے کہا: کیونکہ بیسنت ہےاوروہ کہے: میں نہیں کروں گاخواہ بیسنت ہو۔ تو اس نے کفر کیا 'اگراس نے کہا: میں زور سے میں میں اس میں میں اس کا اس کا اس کے کہا:

وہ میری نظروں میں یہودی کی طرح ہاں نے کفر کیا 'اگراس نے کہا بلاشک اللہ انصاف کے لئے بیٹا ہے یا انصاف کے لئے کھڑا ہے اس نے کفر کیا 'اوراس طرح آیا ہے جس نے کسی

لئے بیٹا ہے یا انصاف کے لئے کھڑا ہے اس نے تفرکیا 'اوراس طرح آیا ہے جس نے سی ملمان سے کہا: اللہ تمہارا خاتمہ خیرو بھلائی پرنہ کرے یا تمہارا ایمان سلب کر لے اس نے تفرکیا '

میں کے بہا اللہ بہارا ما متد پر اسان ہے تسم طلب کی اور اس نے اللہ کی تشم اٹھانے کا ارادہ اور یوں بھی آیا ہے کہ جس نے کسی انسان ہے تشم طلب کی اور اس نے اللہ کی قشم اٹھانے کا ارادہ کیا تو اس شخص نے کہا: میر اارادہ ہے کہ تم طلاق کی تشم اٹھاؤ تو اس نے کفر کیا' انہوں نے اس شخص

ہیں وال کے جہائی بیزاادادہ ہے ہے اس کی بات میں است میں است میں است کی رؤیت کی طرح کی بات میں اختلاف کیا ہے جس نے کہا: تمہارے لئے میری رؤیت موت کی رؤیت کی طرح ہے ان میں سے بعض نے کہا ہے کہاس کی تکفیر کی جائے گی اگراس نے کہا: اگر فلال شخص نبی ہوتا تہ میں اس یہ بادر زیادا اس نے کفر کیا۔ اگر اس نے کہا: اگراس نے جو کہا ہے وہ اس میں سحا

تو میں اس پرائیان نہ لاتا اس نے تفرکیا۔اگراس نے کہا اگراس نے جو کہا ہے وہ اس میں سچا ہے ہم نے نجات پائی۔اس نے تفرکیا اگر اس نے مزاق کے طور پریا جائز بیجھتے ہوئے بلا وضو نماز پڑھی تو اس نے تفرکیا اگر دوآ دمیوں کے مابین جھگڑا ہو جائے آن میں سے ایک نے کہا

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

کتاب الکبائر
(الاحول و لا قوة الا بالله)) اور ذوسر ے نے کہا: ((لاحول و لوة الا بالله)) محص بھوک

بولتا ہے تواس نے کفر کیا۔ اگر وہ کئے میں قیامت ہے تیں ڈرتا'اس نرکفر کیا'اگر وہ ایناسامان ر تھماوں کہر میں

اگروہ کیے میں قیامت سے نہیں ڈرتا'اس نے کفر کیا'اگروہ اپناسامان رکھے اور کیے میں نے ایساللہ کے سپر دکیا ہو چورکا پیچھا نے ایسے اللہ کے سپر دکیا ہو چورکا پیچھا

ے ہے املدے پروئیا کو کہ دل ہے اسے بہا، مے اسے اسے بروئیا ہے ہو پورہ پیچا نہیں کرتا'اس نے کفر کیا اگر کوئی آ دمی خطیب کے مشابہ بلند جگہ پر بیٹھے اور لوگ **ندا**ق کے انداز

یں رہا ان کے سرلیا ہر توں اوی طیب مے مشابہ بسلوجلہ پر بیسے اور توں مذان کے الدار میں اس سے سوال کریں بیاان میں سے کوئی کہے: ثرید (کھانے کی ایک قتم) کا پیالہ علم سے بہتر ہے اس نے کفر کیا اور اگر مصائب سے اسے آز مایا جائے تو وہ کہے: تم نے میرا مال اور میری اولا د

باندھی اور اس سے اس کے متعلق پوچھا گیا تو اس نے کہا بیزنار ہے تو اکثر علاء کا خیال ہے کہ اسے کافر قرار دیا جائے گا۔اگر بچوں کے معلم نے کہا بہود مسلمانوں سے بہتر ہیں کیونکہ وہ اپنے

بچوں کے معلمین کو (مال و دولت وغیرہ) دیتے ہیں' تو اس نے کفر کیا' اگر اس نے کہا: نصر انی مجوی سے بہتر ہے' اس نے کفر کیا۔ اگر کسی آ دمی سے کہا جائے ایمان کیا ہے؟ اس نے کہا میں

نہیں جانتااس نے کفر کیا' اور اس طرح کے ناپندیدہ اور برے الفاظ میں جیسا کہ کوئی گہے: تیرا کوئی دین نہیں' تیرا کوئی دین نہیں' تیرا کوئی دین نہیں' تو فاجر ہے' تو منافق' تو زند میں اور تو فاس

ہے اور اس طرح کے جوالفاظ ہیں سب حرام ہیں اور اس کے باعث بندے کے ایمان سلب ہو جانے اور دائی جہنمی بن جانے کا اندیشہ ہے۔

ہم اللہ المنان سے اس کے لطف وکرم کے ذریعے درخواست کرتے ہیں کہ وہ ہمیں کتاب

وسنت کے عقید ہے پروفات دے کیونکہ وہ ارحم الراحمین ہے۔

نفیحت: ریاس:

اللہ کے بنرو! جنہوں نے فزانے محفوظ کے اور جمع کے وہ شہوات میں مرہوش ہو گئے اور محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرہ کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

الكبائر كتاب الكبائر كالمسلم المراكم المراكم المراكم المراكم الكراكم الكراكم

عمریں اس چیز میں فنا ہوگئیں جس سے وہ دھوکے کا شکار رہے وہ کہاں ہیں؟ شیطان نے ان کے لئے خواہشات کے جال نصب کئے اور وہ ان میں گرفتار ہو گئے 'موت کا فرشتدان کے پاس آ گیا

تو وہ ذلیل و عاجز ہوگئے اس نے ان کوان کے گھروں سے نکال دیا پس اللہ کی قتم! وہ واپس نہ آسکے وہ قبروں میں جداجدا ہیں' پس جب صور پھونکا جائے گا تو وہ جمع ہوں گے۔

وكيف قرت الأهل العلم أعينهم أو استلذوا لليذ العيش أو هجعوا و الموت ينذرهم جهرًا علانية لوكان للقوم أسماع لقد سمعوا

و النسار ضاحية لابد موردهم وليس يدرون من ينجو ومن يقع قد أمست الطير و الأنعام آمنة و النون في البحر لا يخشي لها فزع

والآدمى بهذا الكسب مرتهن لمه رقيب عملى الأسرار يطلع حتى يرى فيه يوم الجمع منفردًا وخصمه الجلد و الأبصار و السمع

وإذيقومون والأشهاد قائمة والجن والإنس والأملاك قد خشعوا وطارت الصحف في الأيدى منتشرة فيها السرائر والأخسار تنطلع

وطارت الصحف في الأيدى منتشرة فيها السرائر والأخبار تطلع فكيف بالنار و الأنباء واقفة عما قليل وما تدرى بما تقع أفى الجنان وفوز لا انقطاع له أم في الجحيم فلا تبقى ولا تدع

تهوى بسكانها طورًا و ترفعهم إذا رجوا مخرجًا من غمها قمعوا طال البكاء فلم ينفع تضرعهم هيهات لا رقية تغنى ولا جنزع

"الل علم کی آئکھیں کیسے ٹھٹڈی ہوئیں کیا انہوں نے زندگی کی لذت سے لذت ماصل کی یاوہ رات کوسوئے۔" ماصل کی یاوہ رات کوسوئے۔"

''موت علانبیطور پرانہیں آگاہ کررہی ہے کاش کہ قوم کے کان ہوتے تو وہ س لیتی۔'' ''آگ ظاہر ہے وہاں ان کا وار دہونالا زمی امر ہے کیکن وہ جائے بہیں کہ کون نجات یائے گا ادر کون اس میں واقع ہوگا۔''

پے۔ "پرندے اور چوپائے بے خوف ہیں' جبکہ مچھلی سمندر میں کسی خوف اور گھبراہٹ کا + كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كالمنافر كالم

شکار نہیں۔'' آ دمی اس کسب (اعمال) کے سبب گروی ہے۔اس کے اسرار پرایک گران ہے جومطلع رہتا ہے۔''

''حتیٰ کہ وہ حشر کے دن دیکھے گا کہ وہ منفرد ہے جبکہ جلد' آ ٹکھیں اور کان اس سے جھگوس گے۔''

''جب وہ کھڑے ہوں گے اور گواہیاں گئیں گی تو جن وانس اور بادشاہ ڈرر ہے ہوں گے۔''

ے۔ ''اعمال نامے ہاتھوں میں اڑ رہے ہوں گے اور وہ کھلی کتاب ہوں گے۔اس میں سرائر واخبار نظر آئیں گے۔''

''آ گ کی کیا کیفیت ہوگی' تھوڑی ہی در بعد خبروں کا پیتہ چل جائے گا۔ کسی کواپنے انجام کا پیتنہیں۔''

''کیا جنتوں میں کامیا بی کے ساتھ جس میں انقطاع نہیں۔ یا جہنم میں جس میں باتی رہے گانہ چھوڑ اجائے گا۔''

رہے ہ نہ پیور اجا ہے ں۔ '' وہ اپنے مکینوں کوگرائے گی اورانہیں او پراٹھائے گی۔ جب وہ اس کے خم سے نگلنے کی امید کریں گے تو آنہیں کچل دیا جائے گا۔''

''وہ روتے رہیں گےلیکن ان کا تضرع ان کے کچھ کامنہیں آئے گا۔ ہائے افسوس کوئی دم جھاڑ کفایت کرے گی نہ جزع فزع۔''

\*\*\*

(۴۲) لوگوں کی وہ باتیں چیکے سے سننا 'جن کووہ چھپاتے ہیں

الله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَ لَا تَجَسُّوا ﴾ (الحجرات: ١٢)

"جاسوسی مت کرو۔"

ابن جوزی ؓ نے فرمایا: ابوزید حسن ضحاک اور ابن سیرین نے اسے عاء کے ساتھ ((تحسسوا)) پڑھا ہے۔ ابوعبیدہ نے فرمایا: (التحسس اور التحسس)) ایک ہی ہے اور وہ ہے جبتو کرنا اور اسی سے جاسوں ہے۔ کی بن الی کثیر نے فرمایا: التحسس جیم کے ساتھ اس کا معنی ہے لوگوں کے عیب تلاش کرنا۔ اور التحسس عاکے ساتھ اس کا معنی ہے لوگوں کی باتیں غورے سننے کی کوشش کرنا۔

مفسرین نے فرمایا: التسجیسس کامعنی ہے مسلمانوں کے عیوب اوران کی خامیوں کے بارے میں جستجو کرنا۔ پس معنی ہے بتم میں سے کوئی اپنے کسی بھائی کے عیب تلاش کرنے کی جستجو نہ کرے تا کہ وہ ان پرمطلع ہو جائے جن کی اللہ نے پر دہ پوشی کی ہے۔

ابن مسعود گو بتایا گیا: به ولید بن عقبہ ہے اس کی داڑھی سے شراب بیکتی ہے انہوں نے فرمایا: ہمیں عیب تلاش کرنے سے منع کیا گیا ہے اگر ہم پر کوئی چیز ظاہر ہوئی تو پھر ہم اس پر مواخذہ کریں گے۔

''جس نے کسی قوم کی بات چیکے سے سننے کی کوشش کی جبکہ وہ اسے ناپسند کرتے ہوں توروز قیامت اس کے کانوں میں بگھلا ہواسیسہ ڈالا جائے گا۔'' ①

ہم اللہ ہے اس بارے میں پناہ جا ہتے ہیں اور اس کے پسندیدہ امور کے بارے میں توفیق طلب کرتے ہیں بے شک وہ تنی داتا فیاض ہے۔

(۲۰٤۲) بخاری

تصبحت

اللہ کے بندو! بیشک موت ہے دستک دے دی اور وہ قریب آپنجی نفوس تو گروی رکھے ہوئے ہیں ہم نے جمع کیا اور تھک گیا گویا کہتم ہلاکت کے ہاتھوں ہیں ہو جس نے تہمیں پکڑلیا اور سلب کرلیا کتنے ہی قبر پر طلوع ہونے والے سورج غروب ہو گئے ۔ فنا کے چوزے! بوسیدہ جال نصب کردیا گیا ہے۔ اللہ کے بندو! تمام گناہ کھے لئے گئے ہیں اور تمام نفوس اپنے گنا ہوں اور اعمال کے بدار ہمن ہیں۔ اس نے جو (نیک) اعمال کئے وہ ان کے کام آ کیں گے اور اس خور کہ نے جو (برے) اعمال کے بدار ہمن ہیں جا ان کا وہ ان کے ان کا وہ اس پر ہے۔ امیدوں اور جموئی آ رزووں سے دھو کہ کھانے والے! قبائے سے مبارزت کرنے والے! طالا نکہ وہ نہیں جا فتا کہ وہ کس سے برسر پر کیار ہے۔ حاضر بدن اور قلب غائب رکھنے والے! کیا تو پند کرتا ہے کہ تو بھلا ئیوں اور حسن پند چیز وں سے محروم ہوجائے؟ اسے وہ خض جو جوان ہوگیا گیاں اس نے تو بہ نہ کی میں فنا ہوگی اور وہ ممتاز لوگوں کی طرح چلتے ہیں۔ اسے وہ خض جو جوان ہوگیا لیکن اس نے تو بہ نہ کی میڈوردی بجیب بات ہے۔ کی طرح چلتے ہیں۔ اسے وہ خض جو جوان ہوگیا لیکن اس نے تو بہ نہ کی میڈوردی بجیب بات ہے۔ کی طرح جلتے ہیں۔ اسے وہ خض جو جوان ہوگیا لیکن اس نے تو بہ نہ کی میڈوردی بجیب بات ہے۔ کی مطلوب کیسے سوگیا جبکہ طالب غافل نہیں ہوا؟

**₩**₩

## (۴۳) چغل خور

یہ وہ محض ہے جولوگوں کے درمیان باتیں بیان کرتا ہے تا کہ وہ ان میں نساد پھیلا دے بیہ اس کا بیان ہے۔اس کا حکم یہ ہے کہ بیمسلمانوں کے اجماع سے حرام ہے۔اس کی حرمت پر کتاب وسنت سے دلائل واضح ہیں۔اللہ تعالی نے فرمایا:

﴿ وَ لَا تُطِعْ كُلَّ حَلَافِ مَّهِيْنِ ٥ هَمَّازٍ مَّشَّاءٍ بِنَمِيْمٍ ٥ ﴾ (القلم: ١٠-١١) "كى قتم كھانے والے ذكيل آدى كى باتوں ميں نه آنا۔ جولوگوں پرعيب لگاتا اور چغليال كھاتا پھرتا ہے۔"

رسول الله مَثَالِينَ الله مَايا:

" چغل خور جنت مین نہیں جائے گا۔" ①

اور حدیث میں ہے کہ رسول الله منافی کروقبروں کے پاس سے گزر بے تو فرمایا:

''ان دونوں کوعذاب دیا جارہا ہےاورانہیں کی بڑے گناہ کی پاداش میں عذاب نہیں دیا جارہا'البتہ وہ بڑا ہے'ان میں سے ایک اپنے بیشاب سے احتیاط نہیں کرتا تھا جبکہ دوسراچنل خورتھا۔'' ۴

پھرآپ نے تھجور کی ایک تازہ شاخ لی اور اسے دو جھے کر دیا اور ہر قبر پر ایک حصہ گاڑ دیا اور فرمایا شاید کہ بیہ جب تک خشک نہ ہوں ان سر علا اب میں تخفیف کردی جائے۔

آپ كافرمانا " أنبيل كى كبيره گنامول كى وجه سے عذاب نبيل ديا جار ہا۔"

لعنی اس کا چھوڑ نا ان پر کوئی بردانہیں تھایا ان کے خیال میں یہ کوئی بردانہیں تھا۔اس لئے ایک دوسری روایت میں فرمایا: ' بلکہ وہ تو براہے۔' ابو ہر ریر اُنہیان کرتے ہیں رسول اللّٰم اَلَّا اَلْتُمَا اِنْدُمَا اِللّٰمَا اللّٰمَا اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمَا اللّٰمِ اللّٰمَا اللّٰمَا اللّٰمَا اللّٰمِ اللّ

"م دو چېرول والے مخص كوسب سے برا ياؤ كئ جوان كے پاس آتا ہے تو ايك چېرے سے اور جودنيا ميں دوز بانوں والا ہوگا تو

٠ مسلم (١٠٥) العارى (٢١٨) ماللم ((٢٩٢)

# حالب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر

الله قیامت کے دن اس کی آگ کی دوز با نیس بنادےگا۔' 🛈

'' جو دوز بانوں والا ہوگا۔'' اس کامعنی ہے کہ جواس سے کسی اور کلام سے گفتگو کرتا ہے اور کسی و سیارہ سے گفتگا کہ تا میں اور درجہ یہ بریاں لیسے معنی میں میں

اس سے کسی اور کلام سے گفتگو کرتا ہے اور بیدو چپروں والے کے عنی میں ہے۔ یاد دلاری غودل ''' نو ان نال طب براس کا طالا قرایس موجل ہے ج

امام ابوحامہ غزالی "نے فرمایا غالب طور پراس کا اطلاق اس پر ہوتا ہے جوکسی کی بات اس تک پہنچا تا ہے جس کے بارے میں بات کی جاتی ہے وہ کہتا ہے فلال شخص تمہارے بارے میں بات کی جاتی ہے وہ کہتا ہے فلال شخص تمہارے بارے میں بوں کہتا ہے اور چغلی اس کے ساتھ مخصوص نہیں ، بلکہ اس کی حدیہ ہے کہ کسی ایسی بات کو کھولنا ، جس کا کھولنا ، افشاں کرنا ناپندیدہ ہو خواہ جس سے منقول کی جائے وہ ناپند کرے یا جس کی طرف منقول کی جائے وہ ناپند کرے یا کوئی تیسرا خواہ یہ ظاہر کرنا بات سے ہو یا لکھ کر ہو یا مرز سے ہو یا اشارے وغیرہ سے ہو خواہ یہ اقوال سے ہو یااعمال سے خواہ یے عیب کے تعلق ہویا اس کے علاوہ کی چغلی خوری کی حقیقت اس چیز سے بردہ ہٹانا اور داز افشاں کرنا ہے جس کا افشاں کرنا ہے جس کا افشاں کرنا ناپندیدہ ہو۔ انسان کو چاہیے کہ وہ لوگوں کے جو بھی احوال دیکھے ان پرخاموثی اختیار کرے الا یہ کہ اس کے بیان کرنے ہیں مسلمانوں کا فائدہ یا کسی معصیت کو ہٹانا مقصود ہو۔ آپ کے فرمایا: ہر وہ شخص جس سے چغلی کی جائے اور اسے کہا جائے فلاں مخص نے تمہارے بارے نے فرمایا: ہر وہ شخص جس سے چغلی کی جائے اور اسے کہا جائے فلاں محصیت کو ہٹانا مقصود ہو۔ آپ

میں اس طرح اس طرح کہا ہے۔اس کو چھاحوال لازم ہیں۔ (۱) میر کہ اس کی تصدیق نہ کرے کیونکہ وہ (چغل خور) فاسق ہے اور اس کی خبر قابل مقبول ن

(۲) یہ کہ دہ اس کواس ہے منع کرے اور اس سے سمجھائے اور اس کے اس فعل کو برا سمجھے۔

(۳) ہیر کہ اللہ عز وجل سے اس کے لئے بغض رکھے کیونکہ وہ اللہ کے ہاں مبغوض ہے اور اللہ کی خاطر بغض رکھنا واجب ہے۔

(س) یہ کہ جس کی طرف سے بات منقول کی جارہی ہے اس کے متعلق بدگمانی نہ کرے کیونکہ اللہ تعالیٰ کافر مان ہے:

﴿ اجْتَنِبُو الْكَثِيرُ اللَّهِ الظُّنِّ إِنَّ بَعُضَ الظُّنِّ إِنَّمْ ﴾ (الحمرات: ١٢)

<sup>1</sup> بخاری (۳٤٩٤) مسلم (۲۵۲۲)

خوار کتاب الکبائر کی الکبائر کی

(۵) یہ کہ جواہے بیان کیا گیاہے وہ اسے اس چیز کی حقیقت حال معلوم کرنے کے لئے

تجسس اور تفيش يرندا بهار \_\_الله سبحانه وتعالى في فرمايا: ((وَ لَا تَجَسَّسُوْا))

(۱) جس چیز سے چغل خورکومنع کیا گیا ہے ٔ وہ انسان اپنے لئے پہند نہ کرے کہ وہ آ گے کے دنا نہ میں میں میں میں میں میں میں ماجہ '' کس میں میں ک

اس کی چغل خوری کردے۔ بیان ہواہے کہ ایک آدمی نے عمر بن عبدالعزیزؓ ہے کسی آدمی کے بارے میں کوروفکر اسے میں خوروفکر ایرے میں اسے میں خوروفکر

ہرے یں نے اگرتو سچا ہواتو پھرتواس آیت ((ان جاء کم فاسق بنبا فتینوا)) کے مصداق ہوگا اور اگرتو جھوٹا ہواتو پھراس آیت والوں کے زمرے میں ہوگا ((هما زمشاء بسمیم))

''جولوگوں پرعیب لگا تا اور چغلیاں کھا تا پھرتا ہے۔' اورا گرنو چاہے تو ہم تجھ سے درگز رکرتے ہیں۔تواس نے کہاامیرالمومنین! درگز رفر مائیں میں آئندہ بھی بھی ایسے نہیں کروں گا۔

کسی انسان نے الصاحب بن عبادٌ ﴿ کوایک رقعہ کھا ، جس میں آپ کویتیم کا مال لینے کی ترغیب دلائی اس کا بہت سا مال تھا۔ انہوں نے رفتے کی پشت پر لکھا: چغل خوری ایک فتیج فعل ہے خواہ سیجے ہوئمیت پر اللہ رحم فرمائے ، بیتیم کے نقصانات اللہ پورے فرمائے مال کو اللہ بڑھائے اور چغل خور پر اللہ لعنت فرمائے۔ اور چغل خور پر اللہ لعنت فرمائے۔

حسن بھریؒ نے فرمایا: جس خص نے تیری طرف کوئی بات منتقل کی ہے تو جان لے کہ وہ تیری بات منتقل کی ہے تو جان لے کہ وہ تیری بات تیرے علاوہ کسی اور کی طرف منتقل کرے گا اور بیلوگوں کے قول کی مثل ہے: جس نے تیری طرف سے بھی نقل کرے گا پس اس سے نی کے۔

ابن مبارکؒ نے فرمایا: ولد زنا بات نہیں چھپاتا' انہوں نے اس کے ذریعے اس طرف اشارہ کیا کہ ہروہ مخص جو بات نہیں چھپاتا اور چھل خوری کرتا ہے توبیاس بات کی دلیل ہے کہ وہ ولد زنا ہے اور انہوں نے اللہ کے اس فرمان سے بیا شنباط کیا ہے ﴿عُمَّدُ سَلِّ بَسِعُ سَدَ ذَلِكَ زَنْیْمِ ﷺ﴾ (القلم: ١٣) 'مرکش ہے اور علاوہ ازیں وہ بدنا م بھی ہے۔''

زنیم وہ مخص ہے جوایک قوم میں سے ہونے کا دعویٰ کرے حالانکہ وہ ان میں سے نہ ہواور

ابن ابی شامه نے اپنی کتاب "الروضتین" میں محمد بن زنگی بیشید کے مناقب میں لکھاہے۔

ایندھن آ گ بھڑ کانے کا ذریعہ ہیں اور یہ بھی کہا گیا ہے: چغل خور کائمل شیطان کے ممل ہے زیا دہ نقصان دہ ہے کیونکہ شیطان کاعمل وسوسہ کے ذریعے ہے جبکہ چغل خور کاعمل آ منے سامنے ہوتا ہے۔

### حكايت:

روایت کی جاتی ہے کہ ایک آ دی نے ایک غلام بکتا ہواد یکھا وہ اس کے بارے میں بتار ہا تھا کہ اس میں کوئی عیب نہیں سوائے اس کے کہ بیچفل خور ہے؛ پس اس آ دمی نے اس عیب کو معمولی سمجھا اورا سے خریدلیا وہ اس کے ہاں چند دن مھرا تو اس نے اپنے مالک کی اہلیہ سے کہا: میراما لکتم پردوسری شاوی کرنا چاہتا ہے مارات کے وقت تمہیں کسی تکلیف سے دو چار کرنا چاہتا ہادر کہا کہ وہتم ہے تحبت نہیں کرتا اگرتم جاہتی ہو کہ وہتم پر مہر بان ہوجائے اور اپنے عزم سے

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

+ (253 عتاب الكبائر كيا الكبائر الكبائ بازآ جائے تو پھراپیا کرو کہ جب وہ سوجائے توایک استرا لے کراس کی داڑھی کے پنچے سے مجھے بال مونڈ دواور وہ بال اپنے پاس رکھو۔ اس عورت نے اپنے دل میں کہا: ہاں پس عورت کا دل مشغول ہو گیا اور اس نے عزم کرلیا کہ جب اس کا خاوند سوجائے گا تو وہ ایسے ہی کرے گی پھروہ آ دی اس کے خادند کے پاس آیا توائے کہا: میرے آقا! میری سیدہ آپ کی اہلیہ نے آپ کے علاوه کسی کودوست بنالیا ہے اوروہ اس کی طرف مائل ہے اور وہ آپ سے خلاصی و چھٹکارا جا ہتی ہاوراس نے رات کے دفت آپ کولل کرنے کا منصوبہ بنایا ہے اور اگر آپ میری بات کو سیج نہیں سجھتے تو پھرآ پرات کے وفٹ اسے سویا ہوا ظاہر کریں اور دیکھیں کہ وہ آپ کے پاس کس حال میں آتی ہے اس کے ہاتھ میں کوئی چیز ہوگی کہوہ اس کے ساتھ آپ کو ذریح کرے۔اس کے آقانے اسے سے سمجھا' پس جب رات ہوئی تووہ عورت ہاتھ میں استراکتے ہوئے آئی تا کہوہ اس کی داڑھی کے ینچے سے بال موتڈ ہے۔ آ دی نے اسے سویا ہوا ظاہر کیا اور اپنے دل میں کہا: الله كي تتم! غلام نے جو كہا تھااس نے سے كہا تھا۔ پس جب عورت نے استر اركھااورا سے مونڈ نے کے لئے جھکی تو وہ کھڑا ہوگیا اوراس سے اہتر الے لیا اوراس کے ساتھ اس عورت کو ذرج کر دیا۔ جب اس عورت کے گھر والے آئے اور انہوں نے اسے دیکھا کہ اسے قل کر دیا گیا ہے تو انہوں نے اس کے خاوند کو بھی قتل کر دیا پس اس منحوس غلام کی نحوست کی وجہ سے دونوں فریقوں میں قبال واقع ہو گیا۔اس لئے اللہ تعالیٰ نے چغل خور کواپنے فرمان میں فاسق کا نام دیا ہے۔ ﴿ يَاۤ اَيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُواۤ إِنْ جَآءَ كُمْ فَاسِقٌ م بَنَهِ فَتَبَيَّنُوۤ ٓ اَنْ تُصِيبُوُا قَوْمًا

بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَى مَا فَعَلْتُمْ لِدِمِيْنَ٥﴾ (الححرات: ٦) ''اگرکوئی بدکار مخف تمہارے پاس کوئی خبر لے کرآئے تو پہلے تحقیق کرلیا کرو کہ کہیں نادانی ہے کسی قوم پر نہ جاریو و پھر جو کچھ کر چکے اس پر نادم ہونا پڑے۔''

تقيحت:

اے وہ مخف! جس کوخواہش نے اسیر بنار کھاہے 'پس وہ اس سے رہائی کی استطاعت نہیں کر کھتا' اے تلف و بربادی ہے غافل! حالانکہ وہ اس تک پہنچ چکی ہے۔ اپنی سلامتی ہے دھوکہ کھانے والے! حالانکہ موت نے اس کے لئے جال لگار کھا ہے۔اپنے کوچ کے متعلق غور وفکر کر محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

حواب الكبائر كتاب الكبائر كالمونيس روتاتو كيررونے والى صورت، ى بنالے-

كفاك نذير الشيب فيك كفاك

مكان الشباب الغض ثم نعاكا

بإهلاكه للهالكين عناكا

أتطمع أن تبقى فلست هناكا

فينسساك مسا خلفتمه و ذاكبا

و تنسى و يهوى الحي بعد هواكا

إليك وإن بساك عمليك بكساكسا

يريد بمايحثو عليك رضاكا

عليك إذا الخطب الجليل أتاكا

غلقن فلم يقبل لهن فكاكا

بكيت فماتبكى شباب صباك

الم تر أن الشيب قد قام ناعيًا الم تر ينومًا مر إلا كأنه

الا أيها الفانی وقد حان حيسه ستمضی و يبقی ما تراه کما تری

تموت كما مات الذين نسيتهم كانك قد اقصيت بعد تقرب

كان خطوب الدهر لم تجر ساعة ترى الأرض كم فيها رهون دفينة

كأن الذي يحثو عليك من الثري

''تم روؤ پستم اپنے بچپن سے جوانی تک نہیں روئے بڑھاپے کا ڈرانے والا تجھ ہی

میں تیرے لئے کافی ہے۔'' ''کیا تونے دیکھانہیں کہ بڑھایا موت کا اعلان کرنے کے لئے کھڑا ہو چکا ہے۔اس

'' کیا تو نے دیکھا ہیں کہ بڑھا پا موت کا اعلان کرنے سے سے نظر انہو چھ ہے۔' نے شکفتہ جوانی کی جگہ لے لی ہےاور پھر موت ہے۔''

"کیاتم نے دن کونہیں دیکھا کہ وہ گزرگیا اور وہ اپنے ختم ہونے کے ساتھ ختم ہونے والوں کے لئے مشقت ہے۔"

''سنلو!اے فانی!اس کاونت قریب آپنچا۔ کیاتم طمع رکھتے ہو کہتم باتی رہو گےاور تم وہاں نہیں جاؤگے۔''

''عنقریب تم گزر جاؤ گے اور جے تو دیکھتا ہے جیسے دیکھتا ہے باتی رہ جائے گا اور تو جسے جانشین چھوڑ جائے گاوہ تخصے بھول جائے گاوہ ویساہی ہے۔''

''تم بھی ویسے ہی فوت ہو جاؤ گے جیسے وہ وفوت ہو گئے جن کوتم نے بھلا دیا۔اور تخجے بھلا دیا جائے گا اور تیرے بعد جوزندہ رہے گااس سے مجت کی جائے گی۔''

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

''گویا کہ تو تقرب کے بعد دور کر دیا گیا اگر چہوہ تچھ پر بہت زیادہ رویا ہے۔'' ''گویا کہ وہ خض جو تچھ پرمٹی ڈال رہا ہے۔ وہ تچھ پرمٹی ڈال کرتمہاری رضا مندی ...

عابتاہے۔''

''جب بہت بڑی پریثانی تھھ پرآئے گی توا پیے محسوں ہوگا کہ زمانے کی مشکلات تجھ ماری سے ماریھ مند رہری ''

رِيل برك لئ بهي نيس آئين-"

''تم زبین کودیکھو گے کہاس میں کتنے ہی دفینے گروی رکھے ہوئے ہیں۔وہ بند کر دیئے گئے ہیں اوران کی رہائی کے لئے کوئی چیز قبول نہیں کی جاتی۔''

 $^{4}$ 

+ (256 عاب الكبائر كالمبائر ك

## (۴۴۷)لعنت كرنا

نبي مَثَالِثُيْرَ لِمِ اللهِ اللهِ

" مسلمان کو گالی دینافتق اوراس سے لڑائی جھگڑا کرنا کفرہے۔" 🛈

اورآ پ مَثَالِثُيَّةِ مُ نِے فَرَمَا مِا:

''مومن کولعنت کرنااس گوتل کرنے کی مانندہے۔' 🏵

رسول الله مَنْ اللَّيْمُ السَّمِي اللَّهِ مَنْ اللَّهِ مَنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مَا اللَّهِ مَنْ اللَّهِ اللّ

''لعنت کر نیوالے قیامت کے دن سفارش کرسکیں گےنہ گواہی دے سکیں گے۔'' 
اور آپ نے فرمایا:

دوكسي سيح آوي كى ميشان نبيس كدوه لعنت كرنے والا مو- " الله عنت كرنے والا مو- " الله عند الله

اور صدیث میں ہے:

''مومن طعن کرنے والا ہوتا ہے نہ لعنت کرنے والا اور نہ ہی فخش گو ہوتا ہے نہ ید کلام۔''@

رسول اللهُ مَنَا لَيْدَ اللهُ مَنا اللهُ مَالِيا:

"جب بندہ کسی چیز پرلعنت کرتا ہے تو لعنت آسان کی طرف بلندہوتی ہے تو اس کے آسے آسان کی طرف بلندہوتی ہے تو اس کے آ آگے آسان کے دروازے بند کر دیئے جاتے ہیں پھروہ دائیں بائیں جاتی ہے جب جب وہ کوئی راستنہیں پاتی تو وہ اس مخص کی طرف لوٹ ہے جے لعنت کی گئی ہے بشر طبیکہ وہ اس کا اہل ہو۔ ورنہ وہ اس کے قائل کی طرف لوٹ آتی ہے۔' ۞

اور نبی مَثَالِیَّنِ نِے اسعورت کوسزا دی جس نے اپنی اونٹنی پرلعنت کی تھی وہ اس طرح کہ آپ نے اس سے وہی اونٹنی سلب کر لی۔''

<sup>🛈</sup> بخاری (۲۰۶۶) مسلم (۱۲) 🛈 بخاری (۲۰۶۶) مسلم (۱۱۰)

<sup>🕏</sup> مسلم (۲۰۹۸)

<sup>@</sup> ترمذی (۱۹۷۷) 🐧 ابوداؤد (٤٩٠٥)

ابو ہر براہ نی مُنَافِیْنِ کے روایت کرتے ہیں آپ نے فر مایا: ''سب سے بر می زیادتی 'آ دمی کا این مسلمان بھائی کی عزت پر دست درازی کرنا ہے۔'' ﴿

''عمر بن قیس بیان کرتے ہیں: جب آ دمی اپنی سواری پرسوار ہوتا ہے تو وہ کہتی ہے: اے اللہ!اس کو مجھ پرنرمی کرنے والا رحم کرنے والا بنا دے تو جب وہ اس پر لعنت کرتا ہے تو وہ کہتی ہے: ہم میں سے جو اللہ اور اس کے رسول کا نافر مان ہے اس پر اللہ عز وجل کی لعنت ہو۔''

فصل:

كناه كارول ركى تعيين وتعريف كي بعير لعنت كرنے كاجواز الله تعالى نے فرمايا: ﴿ أَلَا لَعْنَدُ اللهِ عَلَى الظَّالِمِيْنَ ﴾ (هود: ١٨)

"سن لوكه ظالمون پرالله كي لعنت ہے۔"

اورفر مایا:

﴿ فَمَنْ حَآجَكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَاجَآءَ كَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالُواْ نَدْعُ اَبْنَاءَ نَا وَ ٱبْنَاءَ كُمْ وَ نِسَاءَ نَا نِسَاءَ كُمْ وَانْفُسَنَا وَ انْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلُ فَنَجْعَلُ لَعْنَتَ اللهِ عَلَى الْكَذِبِيْنَ٥﴾ (ال عمران: ٦١)

'' پھر ہم عاجزی سے دعا کریں اور جھوٹوں پراللہ کی لعنت کریں۔''

اوررسول الله مَنَّ اللَّيْرِ السَّالِيَّةِ إِلَى ثابت بكر آب في فرمايا:

٠ مسلم (٢٥٩٥) ابوداؤد (٤٨٧٧)

+ (258 عناب الكبائر (258 عند) + (258 عic) + (258 عic) + (258 aid) + (258 aid)

''الله سود کھانے والے اس کے کھلانے والے اس کے گواہ اور اس کے کا تب پر لعنت فرمائے۔''

اورآ پ مَالْقُلِمْ نِے قرمایا:

"الله حلاله كرنے والے اور جس كے لئے حلاله كيا جائے پرلعنت فر مائے۔"

اورآ پُ اَلْقَیْمُ نے قرمایا:

''اللہ بال ملانے والی اور جس کے لئے بال جوڑے اور ملائے جا کیں پر' گودنے والی اور گدوانے والی اور گدوانے والی باور کیکیں باریک کرنے والی اور کرانے والی پرلعنت فر مائے۔''
اور آپ مُلَّا اَلِّمَا اُلِی اَلْکُلُوا نے مصیبت کے وقت آ واز بلند کرنے والی مصیبت کے وقت اپنے بال موثڈ نے والی اور مصیبت کے وقت اپنے کپڑے بھاڑنے والی پرلعنت فر مائی اور آپ مُلَّا اَلْکُا اَلَٰ اِللّٰ اِللّٰ اِلْکَا اِلَٰ اِللّٰ اِللّٰ اِللّٰ اِلْکَا اَلَٰ اَلْکُلُمْ اِللّٰ اِلْکُلُمْ اِللّٰ اِلْکُلُمْ اِللّٰ اِلْکُلُمْ اِللّٰ اِلْکُلُمْ اِللّٰ اِلْکُلُمْ اللّٰ اِللّٰ اللّٰکِ اللّٰ اللّٰ اللّٰکِ اللّٰکِ اللّٰلِی اللّٰ اللّٰکِ اللّٰ اللّٰلِی اللّٰلِی اللّٰلِی اللّٰلِی اللّٰکِ اللّٰ اللّٰلِلْکِ اللّٰلِی اللّٰکِ اللّٰلِی اللّٰکِ اللّٰلِی اللّٰلِیْلِی اللّٰلِی اللّٰلِیْلِی اللّٰلِی اللّٰلِی اللّٰلِی اللّٰلِی اللّٰلِی اللّٰلِی اللّٰلِ

''اللداس مخص پرلعنت کرے جو کسی نابینے مخص کوراہ سے بےراہ کردے اللہ چو بائے سے برفعلی کرنے والے پرلعنت فرمائے اور اللہ توم لوط کا ساعمل کرنے والے پر' لعنت فرمائے۔''

اور بیر کہ آپ نے اس شخص پر لعنت فر مائی جو کسی کا بمن نجوی کے پاس جائے یا اس نے اپنی بیوی کی پیٹے میں جماع کیا آپ نے نوحہ کرنے والی اور اس کے آس پاس والیوں پر لعنت کی۔ آپ نے ایسے مخص پر لعنت فر مائی جو لوگوں کی امامت کرائے جبکہ وہ اسے ناپیند کرتے ہوں اللہ اس عورت پر لعنت فر مائے جو اس حال میں رات گزار دے کہ اس کا خاوند اس پر ناراض ہو۔ آپ نے اس آ دمی پر لعنت فر مائی جو ((حی علی الصلوة اور حی علی الفلاح)) سے اور کے لئے ذرج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے ذرج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے ذرج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے ذرج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے ذرج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے ذرج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے ذرج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے درج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے درج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے درج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے درج کی بھر نماز کے لئے درج کرنے والے پر لعنت کی بھر نماز کے لئے درج کے درج کی بھر نماز کے لئے درج کے درج کے درج کے درج کے درج کے درج کی بھر نماز کے لئے درج کے درج کے درج کی بعد کی درج کی بھر نماز کی بھر نماز کے لئے دی تا اس کے درج کے درج کی بھر نماز کے لئے درج کے درج کے درج کے درج کی بھر نماز کے لئے درج کے درج کی بھر نماز کے لئے درج کے درج کردے درج کے درج کے

کتاب الکبائر کے اللہ کے والے پرلعنت کی آپ نے مختوں سے مشابہت کرنے والے مردوں ادرمردوں سے مشابہت کرنے والے ورتوں پرلعنت فرمائی اورعورتوں سے مشابہت اختیار کرنے والے مردوں اورمردوں سے مشابہت کرنے والی عورتوں پرلعنت فرمائی۔ آپ نے مردوں کاسا لباس پہننے والی عورتوں اورعورتوں کاسالباس پہننے والے مردوں پرلعنت فرمائی۔ آپ نے لوگوں کے رائے پر رفع حاجت کرنے والے پرلعنت فرمائی آپ نے اپنے ہاتھوں پرمہندی اور کے رائے پر رفع حاجت کرنے والے پرلعنت فرمائی آپ نے اپنے ہاتھوں پرمہندی اور آپ کھوں میں سرنہ نہ لگانے والی پرلعنت فرمائی۔ آپ نے اس مخص پرلعنت فرمائی جوعورت کواس کے خاوند کے خلاف یا غلام کواس کے مالک کے خلاف بہکائے اورا کسائے۔ آپ نے حاکشہ سے جماع کرنے والے پرلعنت فرمائی ۔ آپ نے اس خص پرلعنت فرمائی ۔ آپ نے اس خص پرلعنت فرمائی ۔ آپ نے اس خص پرلعنت فرمائی ۔ آپ نے اس

آپ نے ماتعین زکوۃ وصدقہ پرلعت فرمائی آپ نے اس مخفس پرلعت فرمائی جواپئے
آپ کواپ باپ کے علاوہ کمی اور کی طرف منسوب کرے یا کوئی غلام اپنے آپ کواپ کے علاوہ کمی اور کی قرن منسوب کرے یا کوئی غلام اپنے آپ کواپ کے علاوہ کمی اور کی قولیت میں دے دے۔ آپ نے اس مخفس پرلعت فرمائی جو چو پائے کواس کے چہرے پر داغ دے۔ جب معالمہ حاکم کے پاس بہنے جائے تو پھرسفارش کرنے والے اور سفارش قبول کرنے والے پراللہ کی لعنت ہو۔ آپ نے اپنے فاوند کی اجازت کے بغیر اپنے گھر سے جانے والی عورت پرلعت فرمائی۔ آپ نے اس پرلعت فرمائی جواپ فاوند کے بستر سے جانے والی عورت پرلعت فرمائی۔ آپ نے اس پرلعت فرمائی جواختیار ہونے کے الگ رات سرکرے تی کہ وہ پلٹ آئے۔ آپ نے اس محفس پرلعت فرمائی جواختیار ہونے کے باو جود نیکی کا تھم کرنا اور برائی سے روکنا ترک کردے۔ آپ نے تو م لوط کا سائمل کرنے والے اور جس سے یمل کیا جائے پرلعت فرمائی ہے۔ آپ نے شراب نشراب نوش اس کے ساقی اس کے ساقی اس کے بیخے والے اس کے بیخے والے اس کے بیخے والے اس کے بیخے والے اس کے اٹھائے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور جس کے لئے اٹھائی گئی اس کی قیت کھانے والے اور کی والے کی کونٹ فرمائی ہے۔

آپ مَنْ الْمُنْظِمِ فِي عَرِما مِا:

''چیشم کےلوگ ہیں میں نے ان پرلعنت کی اللہ نے ان پرلعنت کی۔اور ہرنبی مجاب

الدعوة موتا ہے اللہ کی قدر کو جھٹلانے والا اللہ کی کتاب میں اضاف کرنے والا جروقوت کے ذریعے تسلط حاصل کرنے والے پرتا کہ وہ اس شخص کوعزت بخشے جس کواللہ نے ذلیل کردیا ہے اور اس شخف کو ذلیل کرنے کی کوشش کرے جس کواللہ نے عزیز بنا دیا ہے۔اللہ کے حرم کو حلال قرار دینے والا اور میری اولا دمیں سے جس کو اللہ نے حرام قرار دیا ہے اس کو حلال سمجھنے والا میری سنت کوترک کرنے والا اپنے پڑوی کی بیوی ے زنا کرنے والے پرلعنت فرمائی مشت زنی کرنے والے پرلعنت فرمائی۔ آپ نے ماں اور اس کی بیٹی سے نکاح کرنے والے پرلعنت فرمائی تھم کے معاطے پر رشوت دینے والے رشوت لینے والے اور ان دونوں کے درمیان کوشش کرنے والے پرلعنت فرمائی۔ آپ نے علم چھیانے والے غلد ذخیرہ کرنے والے اور مسلمان کو تنہا چھوڑ کراس کی مدد نہ کرنے والے پرلعنت فرمائی۔ آپ نے والی وسربرارہ پرلعنت فرمائی جب اس میں رحمت نہ ہو۔ آپ نے کنارہ کشی اختیار کرنے والے مردوں پر لعنت فرمائی جو کہتے ہیں کہ ہم شادی نہیں کریں گے۔ آپ نے ان عورتوں پرلعنت فر مائی جو (عبادت کی خاطر ) شادی نہیں کرتیں' آپ نے جنگل و بیابان میں اسکیے سفر کرنے والے پرلعنت فرمائی مم اللہ سے اس کی اور اس کے رسول مُثَاثِيْرُم کی لعنت ے پناہ جاہتے ہیں۔''

#### قصل:

جان لیجئے کہ پاک دامن مسلمان پرلعنت کرنا مسلمانوں کے اجماع کی روسے حرام ہے۔
مذموم اوصاف کے حال افراد پرلعنت کرنا جائز ہے جیسا کہ اللہ ظالموں پرلعنت کرئے اللہ
کا فروں پرلعنت کرئے اللہ یمبود ونصاری پرلعنت کرے اورای طرح جیسا کہ بیان ہو چکا ہے
بہر حال کی معین شخص کواس کے کسی گناہ سے موصوف ہونے کی وجہ سے لعنت کرنا جیسے یمبودی یا
عیسائی یا ظالم یا زانی یا چور یا سودخور۔ پس ظواہر حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ (لعنت کرنا)
حرام نہیں۔

غزالی "نے اس کی تحریم کی طرف اشارہ کیا ہے سوائے اس مخص کے بارے میں جس کو

م جانے ہوں کہ وہ حالت کفر پر فوت ہوا ہے۔ جیسا کہ ابولہب ابوجهل فرعون ہامان اور ان جسر

انہوں نے فرمایا: کیونکہ لعنت وہ اللہ کی رحمت سے دوری ہے اور ہم نہیں جانتے کہ اس فاسق وکا فرکا خاتمہ کس چیز (عقیدے) پر کیا جائے گا۔

فرمایا: رہےوہ لوگ جن پررسول الله مُنَافِیَظِ نے ان کے تعیین کے ساتھ لعنت فرمائی جیسا کہ آ آپ نے فرمایا:

''اے اللہ! رعل و ذکوان اور عصیہ پرلعنت فر ما' انہوں نے اللہ اور اس کے رسول کی تافر مانی کی۔''

یہ تین عرب قبیلے ہیں 'پس ان پرنام لے کرلعت کرنا جائز ہے۔ اس لئے کہ آپ مُکانیکی ان کی کفر پرموت واقع ہونے کو جان لیا ہو۔ کسی انسان پر بددعا کرنا بھی لعنت کے قریب ہے جتی کہ ظالم کے لئے بددعا کرنا جیسا کہ انسان کہے: اللہ اس کے جسم کوصحت و در تنگی عطانہ فر مائے اور اللہ اے سلامت نہ رکھے اور جو اس کے مشابہ ہو۔ بیسب غدموم ہے۔ اس طرح حیوانات وجمادات پرلعنت کرنا پس بیسب غیموم ہے۔

بعض علاءنے کہا ہے جو مخص کسی ایسے مخص پرلعنت کرے جواس لعنت کا مستحق نہ ہوتو اس نے بیہ کہنے میں جلدی کی الا بیر کہ وہ مستحق نہ ہو۔ •

### نصل:

اے اللہ! ہمارے دلول کوا بے سواد وسرول سے تعلق قائم کرنے سے محفوظ قر مااور ہمیں اس محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

## + (262 ) + (3 كتاب الكبائر ) + (3 كياب الكبائ

توم میں شامل فرما جن سے تو محبت کرتا ہے اور وہ تجھ سے محبت کرتے ہیں۔ ہماری ہمارے والدين اورتمام مسلمانوں كى مغفرت فرما۔

#### نصیحت:

کم زادراه رکھنے والے راستہ بہت دور دراز ہے۔ نقصان دہ چیز کواختیار کرنے اور مفید چیز کوترک کرنے والے! تیرا کیا خیال ہے کہ تھھ پر ہدایت کا معاملہ مخفی ہے۔تم کب تک وقت ضائع کرتے رہو گے حالانکہ وہ حاضر باش ٹکہبان کے ذریعے شارکیا جار ہاہے۔

و أعقب ومعليك شهيد

فبادر ببإحسان وأنبت حميل

فرقب غدياتي وأنت فقيد

مضى أمسك الماضى شهيدًا معدلا

فإن كنت بالأمس اقترفت إساءة

ولا تبق فضل الصالحات إلى غد

إذا ما المنبايا أخطأتك و صادفت حميمك فباعلم أنهبا ستعود '' تیری رات گزر کر ماضی کا حصہ بن گئی لیکن وہ تجھ پر گواہ ہوگی ۔اس کے بعد دن آ گیا

اور وه بھی تجھ پر گواہ ہوگا۔''

''اگرکل تو نے کسی گناہ کا ارتکاب کیا تھا تو پھر نیکی کرنے کی طرف جلدی کراس طرح كرتو قابل تعريف بن جائے۔''

''نیکی کے کاموں کوکل تک کے لئے نہ چھوڑ ممکن ہے کل آئے تو تو نہ ہو۔''

''جب موت نے تحقیم چھوڑ کرتیرے دلی دوست کی جان لے لی تو پھر جان رکھ کہوہ عنقریب پھرآ ئے گی۔''

\*\*

## + (£ 263 عاب الكبائر كيا الكب

# (۴۵)عهر شکنی اور بدعهدی

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَلَا تَفُرَبُوا مَالَ الْمَتِيْمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ آحُسَنُ حَتَّى يَبُلُغَ آشُدَّهُ وَآوْفُوْ بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۞ (بنى اسرائيل: ٣٤)

''اوراقرار پوراکیا کرواوریا در کھو کہ عہد کی باز پرس ہوگی۔''

الزجالج نے فرمایا:

'' ہروہ چیز جس کا اللہ نے تھم فر مایا یا جس چیز سے منع فر مایا وہ عہد ہے۔'' اوراللہ تعالیٰ نے فر مایا:

﴿ لِنَا يُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنُكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفُرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْآ امَنَّا بِافْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنُ قُلُوبُهُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوُا سَمَّعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمَّاعُوْنَ لِقَوْمِ اخِرِيْنَ لَمْ يَأْتُوكَ يَآيَّهَا الَّذِيْنَ امَنُوا آوُفُوا بِالْعُقُوْدِ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَايُرِيْدُهُ ﴾ (المائدة: ١)

"ايمان والو!اپنے اقر ارکو پورا کرو۔"

الواحدیؒ نے فرمایا: ابن عباسؒ نے والبی کی روایت میں فرمایا: ((السعه و ۹)) لینی وہ چیز جس کوقر آن میں حلال قرار دیا گیایا جسے حرام کہا گیا۔جو چیز فرض کی گئی اور جوصد ہے۔

ضحات نے فرمایا: عہود بیرہ ہاں جن پراللہ نے اس امت سے عہد لیا ہے کہ اس نے جو حلال کیا اور جے حرام تھر ایا نے نماز فرض قرار دی اور اسی طرح باقی سارے فرائض کو پورا کریں اور اسی طرح عبو د عہد کی جمع ہے اور العقد جمعنی معقود اور بیروہی ہے جو محکم قرار دیا گیا ہے۔ جو اللہ نے ہم پر فرض کیا ہے اس کو محکم قرار دیا ہے اس کو کسی حال میں بھی توڑنے کا کوئی جارہ نہیں۔
جارہ نہیں۔

مقاتل بن حبان نے فرمایا: ((او فوا بالعقود)) الله نے جس کاتم سے قر آن میں عہدلیا ہے۔اپنی اطاعت کا جوتمہیں تھم دیا کہتم اس کے مطابق عمل کرواوراس کامنع کرنا جس سے اس حق کتاب الکبائر کتاب الکبائر کے جو تہارے اور مشرکین کے درمیان ہے اور وہ جولوگوں کے درمیان عہد ہے۔ واللہ اعلم درمیان عہد ہے۔ واللہ اعلم نی منظیقے نے فرمایا:

"خیار خصلتیں ہیں وہ جس شخص میں ہوں تو وہ خالص منافق ہے۔اور جس میں ان میں سے ایک خصلت ہوتو اس میں نفاق کی ایک خصلت ہوتی کہ وہ اے چھوڑ دے۔ جب بات کرے تو جھوٹ بولے جب اس کے پاس امانت رکھی جائے تو خیانت کرے جب عہد کرے تو عہد شکنی کرے اور جب جھڑا کرے تو گالی گلوچ کے نات کرے یہ بھڑا کرے تو گالی گلوچ کے ۔' آ

اورآ پِمَالِيَّيْمُ نِے فرمایا:

''روز قیامت پر دھوکے باز' بے وفا کے لئے ایک جھنڈا ہوگا اور کہا جائے گا: یہ فلال بن فلاں کی بے و فائی' عہد شکنی ہے۔' 'گ

اوررسول اللهُ مَا يُعْتِمُ فِي فَرِما يا كه اللهُ عز وجل فرما تا ب:

'' تین قتم کے لوگ ہیں جن سے روز قیامت میں جھڑا کروں گا۔ وہ آ دی جس نے مجھے ضامن تھہرایا پھر بے وفائی کی۔ وہ آ دی جس نے مجھے ضامن تھہرایا پھر بے وفائی کی۔ وہ آ دی جس نے کسی آزاد دخص کوفروخت کیا اور اس کی قیمت کھائی اور ایک وہ آ دی جس نے کسی مزدور کوکام پرنگایا'اس سے پورا پورا کام لیالیکن اس کواس کی اجرت نہ دی۔' ﴾

اوررسول الله مَثَلِينَةُ لِم فَي عَرْمايا:

"جس شخص نے اطاعت سے ابنا ہاتھ تھنچ کیا تو وہ قیامت کے دن اللہ سے اس حال میں ملاقات کریے گا کہ اس کے حق میں کوئی جست نہیں ہوگی اور جو محص اس حال میں

<sup>🛈</sup> بخاری (۳٤) مسلم (۵۸)

اس حدیث ہے ثابت ہوا کہ قیامت کے دن انسان کواس کے والد کے نام ہے پکارا جائے گا۔ ہمارے ہاں جوشہور ہے کہانسان کو والدہ کے نام ہے پکارا جائے گا صحیح نہیں۔ واللہ اعلم (مترجم) مسلم (۱۳۷۸)

<sup>🤁</sup> بخاری (۲۲۲۷)

وفات پائے کہاس کی گردن میں بیعت نہ ہوتو وہ جاہلیت کی موت مرتا ہے۔' آ اور رسول الله فالله علی فی اللہ فاللہ اللہ فاللہ فی اللہ فی اللہ

''جوخص یہ پیندکرتا ہے کہ اسے آگ سے بچا کر جنت میں داخل کردیا جائے تواس کی موت اس حال میں آئے کہ وہ اللہ اور یوم آخرت پر ایمان رکھتا ہو وہ لوگوں سے اس طرح پیش آئے جس طرح وہ پیند کرتا ہے کہ لوگ اس سے پیش آئیں۔ جوخص کسی امام کی بیعت کرے اور اس کے ہاتھ میں اپنا ہاتھ دے دے اور اپنے دل کا ثمر (اپنی محبت) اسے دے دے تو وہ مقد ور بھراس کی اطاعت کرے۔ اگر کوئی (دوسرا) مختص آکراس سے جھگڑا کر ہے تواس دوسرے کی گردن ماردو۔'' ﴿

\*\*\*

① مسلم (۱۸۵۱) ۞ مسلم (۱۸٤٤)

## + £ 266 كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر كالمنافر كالمن

## (۲۶) کا بهن ونجومی کی تصدیق کرنا

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَلَا تَقُفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْؤُلُا ٥﴾ (بني اسرائيل: ٣٦)

''اورجس بات کائمہیں علم نہ ہواس کے پیچیے نہ پڑو کیونکہ کان آ نکھاور دل ان سب ہے بازیرس ہوگی۔''

الواحدى نے اللہ تعالى كاس فرمان ﴿ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ﴾ كَانفسريس فرمايا: الكلمى نے فرمايا: جس چيز كے بارے ميں تنہيں علم نه ہووہ نه كہو۔ قادةً نے فرمايا: ايسے نه كہؤ ميں نے سنا اورتم نے سنانہ ہو ميں نے ويكھا جبكة تم نے ويكھا نه ہو ميں جانتا ہوں جبكة تم جانتے نه ہواور اس كامعنى بيہے كہ كى چيز كے بارے ميں لاعلمى سے بات نه كرو۔

إِنَّ السَّمْعَ وَالْبُصَورَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَيْكَ كَانَ عَنْهُ مَسُولُا0) (بنى

اسرائيل: ٣٦)

الوالبی نے ابن عباسؓ ہے روایت کرتے ہوئے فرمایا: اللہ بندوں ہے سوال کرے گا کہ انہوں نے ان کوکہاں اور کیسے استعال کیا تھا۔اس میں اس چیز کود کھیے جس کا دیکھنا حلال نہیں اس چیز کوسننا جس کا سننا حرام ہے اور الیمی چیز کا ارادہ کرنا جو کہ جائز نہیں کے بارے میں زجر وتو پیخ ہے۔ واللہ اعلم

اورالله تعالى نے فرمایا:

﴿ عَلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ آحَدًا ٥ إِلَّا مَنِ ارْتَصٰى مِنْ رَّسُولٍ فَانَّهُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ٥﴾ (الحن: ٢٦ - ٢٧)

''وہ عالَم الغیب ہے اور اپنے غیبی علوم پر کسی کومطلع نہیں کرتا۔ ہاں اپنے کسی ایسے رسول کوجس کو وہ منتخب کر لے۔''

ابن الجوزيُّ نے فرمایا: عالم العیب وہ اللّٰه عز وجل وحدہ لاشریک ہے وہ اپنی باوشاہت میں

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

حران الکبائر کتاب الکبائر کی مطلع نہیں کرتا او گوں میں سے کوئی بھی اس کوئیس جانا البتہ اپنے کسی الیے رسول کوجس کو وہ نتخب کر لے اس کومطلع کر دیتا ہے۔ کیونکہ رسولوں کے صدق پر دلیل ان کاغیب کی خبریں بتانا ہے۔ معنی یہ ہے کہ وہ جس کورسالت کے لئے منتخب کر لیتا ہے اس کوجس قدر چاہتا ہے غیب پر مطلع کر دیتا ہے۔ پس اس میں اس شخص کے لئے منتخب کر لیتا ہے اس کوجس قدر چاہتا ہے غیب پر مطلع کر دیتا ہے۔ پس اس میں اس شخص کے خلاف دلیل ہے جو یہ زعم رکھتا ہے کہ نجوم (ستارے نبوی) غیب پر دلالت کرتے ہیں تو وہ کافر ہے۔ اور رسول اللہ مگا فی غیب ان میں ایک دیتا ہے۔ اور رسول اللہ مگا فی غیب ان کو میں ایک دیتا ہے۔ اور رسول اللہ مگا فی غیب ان کو میں ایک دیتا ہے۔ اور رسول اللہ مگا فی غیب ان کو میں کا خبوم (ستارے نبوی) غیب پر دلالت کرتے ہیں تو وہ کافر

''جو محض کسی نجومی یا کائن کے پاس آئے اور دہ جو کہاں کی تقید بی کرے تو اس نے محمد کا ٹیٹی کی شریعت کا اٹکار کر دیا۔' ①

زید بن خالد جہنی بیان کرتے میں رسول الله مَنَا اَللهُ مَنَا اِللهُ مَاللهُ مَنَا بَارِش کے بعد' ہمیں صبح کی نماز پڑھائی پس جب آپ فارغ ہوئے تو آپ نے لوگوں کی طرف چہرہ مبارک کرتے ہوئے فرمایا:

"كياتم جانتے ہوكہ بھارے رب نے كيا فرمايا ہے؟"

صحابہ نے عرض کیا اللہ اوراس کے رسول بہتر جانتے ہیں۔فر مایا:

''میرے بندوں میں سے سبح کے وقت کچھ بھھ پرایمان لے آئے اور پچھنے کفر کیا پس جس نے کہا:اللہ کے فضل وکرم اوراس کی رحمت سے ہم پر بارش ہوئی ہے تو ہے وہ ہے جو مجھ پرایمان لایا اور کوا کب کا اٹکار کیا اور جس نے کہا ہم پراس وجہ سے اس وجہ سے بارش ہوئی ہے تو اس نے میرے ساتھ کفر کیا اور کوا کب پرایمان لایا۔' ﴿
علاء نے فرمایا:اگر کسی مسلمان نے کہا: ہم پراس وجہ سے اس وجہ سے بارش ہوئی ہے اور وہ

سجھتا ہے کہ''النوء''ہی بارش کا موجد و فاعل اور اسے برسانے والا ہے تو بلا شک وہ کا فرمر تد ہو جاتا ہے اور اس علامت کے جاتا ہے اور اس علامت کے اس علامت کے اس علامت کے اس علامت کے اور اس علامت کے اور اس علامت کے اور اس علامت کے اور اس علامت کے اس ع

ہوتے ہوئے بارش ہوتی ہے لیکن وہ اللہ کے فعل وتخلیق سے نازل ہوتی ہے تو ایسا نظریہ ہو کھنے والے کو کا فرنہیں کہا جائے گا۔اس کی کراہت کے بارے میں اختلاف ہے اور مختار قول یہ ہے کہ

🛈 ابوداؤد (۳۹۰٤) ترمذی (۱۳۵) 🔻 بخاری (۸٤٦) مسلم (۷۱)

حرات الكبائر بيك الكبائر الكبائر

'' جو خص کسی کابمن کے پاس ائے اور وہ جو پچھ کہے بیاس کی تصدیق کرے تو اس کی چالیس روز کی نماز قبول نہیں ہوتی۔'' ①

ام المومین سیده عائشہ رضی اللہ عنہا بیان کرتی ہیں لوگوں نے رسول الله مَالَيْتُوَا ہے کا ہنوں کے بارے میں سوال کیا تو آپ نے فر مایا: ''وہ کچھ بھی نہیں۔'' انہوں نے عرض کیا' اللہ کے رسول! کیا وہ اس طرح اس طرح نہیں کہتا؟ تو رسول الله مَالَيَّةُ الله فر مایا: '' بیکلمہ حق ہے جس کوجن یا دکر لیتا ہے اور وہ اس کو اپنے دوست ساتھی کے کان میں ڈال ویتا ہے اور وہ اس کے ساتھ سو جھوٹ ملادیتا ہے۔''

ام المومنین سیدہ عائشہ رضی اللہ عنہا بیان کرتی ہیں میں نے رسول الله مَنْ اللهُ عَلَیْمُ اللهُ عَلَیْمُ اللهُ عنہا بیان کرتی ہیں میں نے رسول الله مَنْ اللهُ عَلَیْمُ اللهُ عنہا بیات کرتے میں فیصلہ ہونے والے امر کے بارے میں بات کرتے ہیں تو شیطان چوری ہے اس آ داز کوئن لیتا ہے وہ اسے من کرکا ہنوں کی طرف میں بات کردیتا ہے اوروہ اس کے ساتھا پی طرف سے سوجھوٹ ملادیتے ہیں۔' ا

قبصہ بن الی الخارق والتُون بیان کرتے ہیں میں نے رسول الله مَنَّ الْفِیْزُمُ کوفر ماتے ہوئے سنا: العیافة الطیرة اور الطرق جبت ہیں۔''

((السطسرق)) ڈانٹ یعنی پرندے کوڈ انٹنااوروہ اس طمرح کیدہ اس کی اڑان سے انچھی یا بری فال لیتے ہیں اگر وہ اپنی دائیں جانب اڑتے واس کو باعث بارکت وسعادت تصور کرتے ہیں اور اگر بائیں طرف اڑتا تواسے براتصور کرتے 'ابوداؤرؒ نے فرمایا: ((السعیسافة)) کیبر سینج کر فال لینا۔

((الطيرة))" احجمايا براشكون لينا-"

الجوہری نے فرمایا: ((البجبت))ایساکلمہ ہے جس کاصنم کامن ادر جادوگروغیرہ پراطلاق

-2.6%

🛈 مسلم (۲۲۳۰) 🔻 بخاری

ابن عباسٌ بيان كرتے بي رسول الله مَالَيْدَ الله عَلَيْدَ الله مَالَيْدَ الله مَالَيْدَ الله مَالِية

"جس شخص نے علم نجوم کا مجھ حصد حاصل کیا تو اس نے جادو کا حصہ حاصل کیا اور وہ

جس قدر علم نجوم میں برهتا جائے گا'اس قدر جادو میں برهتا جائے گا۔' 🛈

علی بن ابی طالب ؓ نے فرمایا: کا بهن جادوگر ہےاور جادوگر کا فر ہے۔ پس ہم اللہ سے دنیا وآخرت میں عافیت وعصمت کا سوال کرتے ہیں۔

### نفيحت:

الله كے بندو! اپن تلف ہونے سے پہلے اپن سلف كے بارے يس غور وفكر كروا بني قبرول ميں جانے سے پہلے كوچ كى تيارى ميں جانے سے پہلے اپن امور پر نظر وال لوا پن تحويل كونت ہونے سے پہلے كوچ كى تيارى كرلو ساتھى دوست بھائى كہال ہيں؟ ايوان پخت و مضبوط كرنے والا كہال ہے؟ الله كى قتم! وہ وطنوں سے كوچ كر گئے ان كے كفن قبرول ميں ريزہ ريزہ ہوگئے ان كے متنب وآگاہ كرنے والے نے اہل معرفت كوزوردارآ وازيس بي پغام سايا: ﴿ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴾ (الرحمن: والے نے اہل معرفت كوزوردارآ وازيس بي پغام سايا: ﴿ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴾ (الرحمن: والے نے اہل معرفت كوزوردارآ وازيس بي پغام سايا: ﴿ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴾ (الرحمن: والے نے اہل معرفت كوزوردارآ وازيس بي پغام سايا: ﴿ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴾ (الرحمن: والے نے اہل معرفت كوزوردارآ وازيس بي پغام سايا: ﴿ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴾ (الرحمن: والے ہے اہل ہے کہ ''جوكوئى روئے زمين پر ہے فنا ہونے والا ہے۔'

احوال نے انہیں الف پلٹ کردیا وہ راتوں کے ہاتھوں میں کھیلے وہ اولا دواموال سے اخوال نے انہیں الف پلٹ کردیا وہ راتوں کے ہاتھوں میں کھیلے وہ اولا دواموال سے غافل ہوگئے چندراتوں کے بعدان کے احباب نے انہیں بھلا دیا وہ مٹی سے جا طے وہ ابھوالی سے دوری اختیار کر گئے۔اگران میں سے کی کو بولنے کی اجازت دے دی جائے تو وہ یوں کہے:

مسن ر آنا فیلے حدث نفسیہ انسیہ وقف عملی قسرب زوال و صروف المدھر لا یہ قبی لھا ولیما تاتی به صبّم المجبال و صروف المدھر لا یہ قبی لھا ولیما تاتی به صبّم المجبال ربّد رکب قید انسانے واحولنا یشربون المخمر بالماء الزلال والاباریق عملیہم قدمت وعتاق المخیل تر دی بالمحلال

''جو شخص ہمیں دیکھے تو وہ اپنے آپ سے بیان کرے کہ وہ زوال کے کنویں پرمھمرا

"-

<sup>🛈</sup> ابوداؤد (۳۹۰۵)

''حوادث زمانداس پر کچھ رحم نہیں کھا کیں گے اور ابھی اس پر پہاڑوں جیسے مصائب نہیں آئے۔''

'' کچھ مسافروں نے ہمارے آس پاس پڑاؤڈ الا ہے۔وہ صاف ٹھنڈے شیریں پائی کے ساتھ شراب پیتے ہیں۔''

" پیالے اور جام ان پر پیش کئے گئے اصل اور عمدہ نسل کے گھوڑے اپ جمول اوڑھے ہوئے تھے۔"

"انہوں نے بوی عیش وعشرت کے ساتھ زمانے کوآباد کیا۔ان کے زمانے کی روشی و چیک دمک کا ہونا ناممکن نہیں تھا۔"

'' پھروہ زمانے کے ہاتھوں میں کھلونا بن مجئے۔ زمانہ آ دمیوں کے ساتھوائی طرح کرتا ہے۔''

 $\triangle \triangle \triangle$ 

# (۴۷)عورت کااینے خاوند کی اطاعت نہ کرنا

ال*قد تع*الی نے قرمایا: «سره بر م<sup>و</sup> بر<sub>ک</sub>ا و در

﴿ اَلرِّ جَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَصَّلَ اللهُ بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضِ وَبِمَآ اَنْفَقُواْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ فَالصَّلِحَتُ قَنِتْ عَلَى اللهُ وَالْتِيْ تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَ اهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَ اصْرِبُوهُنَّ فَإِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلا تَنْغُواْ عَلَيْهِنَّ سَبِيلاً إِنَّ اللهَ كَانَ عَلِيًّا كَبْيرًا . ﴾ (النساء: ٣٤)

''اُور جن عورتوں کی سرکشی کا تنہیں اندیشہ ہوتو پہلے انہیں نفیحت کرو' اور انہیں بستر خواب پر تنہا چھوڑ وواور (پھر بھی نہ مانیں تو ) انہیں مارواورا گر مان جا ئیں تو پھران کے خلاف کوئی راہ نہ تلاش کرویقین جانو کہ اللہ سب سے بلنداورسب سے بروا ہے۔'' الواحدیؒ نے فرمایا: یہاں ((المنشوز)) کامعنی ہے خاوند کی نافر مانی کرنا اور وہ ہے خلاف ورزی کے ساتھاس (خاوند) پر بلندوغالب ہونا۔

عطاءً نے فرمایا: دہ یہ ہے کہ دہ (عورت)اس (خاوند) کے لئے عطر وخوشبولگائے کیکن اس کواپنے قریب نیآنے دےادروہ اس کی جواطاعت کیا کرتی تھی اسے چھوڑ کرنا فرمانی پراتر آئے۔ ((فیعیظ و ھین))انہیں اللہ کی کتاب کے ذریعے نصیحت کرواوراللہ نے اس کے ذریعے انہیں جس چیز کاعکم دیاہے'وہ ان کو یا دد لاؤ۔

﴿ وَ الْهُجُوُوُ هُنَّ فِی الْمَصَاجِعِ ﴾ ابن عباسٌ نے فرمایا: اس سے مرادیہ ہے کہ دہ بستر پر اس کی طرف پیٹے کردے اور اس سے کلام نہ کرے۔

شععی اورمجاہدرحمہما اللہ نے فرمایا: اس سے مرادیہ ہے کہ وہ اس کو بستر خواب پر تنہا چھوڑ دےاوراس کے ساتھ نہ سوئے۔

((و اضر بو هن۴) انہیں مارولیکن وہ اذبیت تاک نہ ہو۔

ابن عبال في فرمايا: ادب سكھانے كے لئے مارنا 'جيسے گھونسا وغيرہ اور خاوند كے لئے ہے

کتاب الکبائر کتاب الکبائر کے اس آیت میں فدکورہ ترتیب و تکم کے مطابق تلافی کرے۔ کہ وہ اپنی عورت کی نافر مانی کی اس آیت میں فدکورہ ترتیب و تکم کے مطابق تلافی کرے۔ (فان اطعنکم) اگر وہ تمہاری اطاعت کریں اس بارے میں جوان سے مطلوب ہے۔ (فلا تبغوا علیهن) اس بارے میں ابن عباس نے فر مایا: ان پر ناکردہ گنا ہوں کا الزام نہ لگاؤ۔ رسول اللہ مُنافیع ہے فر مایا:

"جب آدى اپنى عورت كواپ بستر پر بلائ اوروه ندآئ توصى بون تك فرشت

اس پرلعنت کرتے رہتے ہیں۔'' 🛈

اور بيالفاظ بهي بين:

''اوروہ (آ دی)اس پرناراضی کے عالم میں رات بسر کر بے قصیح ہونے تک فرشتے اس پرلعنت کرتے ہیں۔''

اور صحیحین کے بیالفاظ بھی ہیں:

''جبعورتاپنے خاوند کی نافر مانی کرتے ہوئے اس کے بستر سے الگ رات بسر کریتو وہ ذات جوآ سمان میں ہےوہ اس پر ناراض ہوجاتی ہے حتیٰ کہ اس کا خاوند اس سے راضی ہوجائے۔'' ਉ

حن بیان کرتے ہیں مجھے اس مخص نے بیان کیا جس نے نبی مَا الْفِظِم سے سنا فر ماتے ہیں:

<sup>🛈</sup> بخاری (۳۲۳۷) 🕜 مسلم (۱٤۳٦)

طرانی نے عبداللہ بن محمد بن عقبل کی روایت سے الا وسط میں روایت کیا ہے۔ ابن خزیمہ اور ابن حبان
 نے اسے اپنی اپنی سی میں روایت کیا ہے اور بیز جبر بن محمد کی روایت سے ہے۔ (الترغیب) ابن عقبل اپنے سوء
حفظ کی وجہ سے مختلف فیہ ہے۔ اس طرح ز جبر بن محمد تمہمی ہے۔

+ (273 عاب الكبائر (273 مع ال ''رُوز قیامت عورت سے سب سے پہلے اس کی نماز اوراس کے خاوند کے متعلق یو چھا جائے گا۔''

حدیث نبوی میں ہے کہرسول الله مُنافِین نے فرمایا:

"جوعورت الله اور يوم آخرت برايمان ركھتى ہاس كے لئے طال نہيں كه وه اينے

خادند کے ہوتے ہوئے اس کی اجازت کے بغیر (نفلی ) روز ہ رکھے اور وہ اس کے گھر

میں اس کی اجازت کے بغیر کسی کو داخل ہونے کی اجازت نہ دے۔'' 🛈

اورآ ي مَنْ اللَّهُ اللَّهُ الله الله

''اگر میں کسی کو خکم دیتا کہ وہ اللہ کے سواکسی کو تجدہ کرے تو میں عورت کو حکم دیتا کہ وہ اینے خاوند کو مجدہ کرے۔'' 🛈

حمین بن مصن ٹائٹ کی چوپھی بیان کرتی ہیں انہوں نے نبی سائٹ کا ایکا سے اپ خاوند کا

تذكره كياتوآپ في مايا: '' دیکھوتم اس سے کس مقام پر ہو' کیونکہ وہی تمہاری جنت اور وہی تمہاری جہنم ہے۔''

عبدالله بن عمر وللتنويميان كرت بين رسول الله مَاليَّيْمُ في فرمايا: "الله اسعورت كي طرف ( نظر رحت ہے ) نہیں دیکھتا جوایئے خاوند کا شکر ادانہیں کرتی ' حالا نکہ وہ اس ہے بے نیاز نہیں

عبدالله بنعمر والنفاع مروى بكرآب فالتواف فرمايا:

"جبعورت اپنے خاوند کے گھرے لگتی ہے تو فرشتے اس پرلعنت بھیجے ہیں کتی کہ

وہ واپس آ جائے یا تو بہ کرلے۔'' 🏵

اوررسول الله مَنْ النَّيْمُ في عَلَى الله عَلَى الله عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ

'' جوعورت اس حال میں وفات یائے کہ اس کا خادنداس سے راضی ہوتو وہ جنت میں

داخل ہوگی۔''@

🕜 ترمذی (۸۵۹) 🕝 نسائی فی عشرة النساء (۲٤۹)

 طبرانی نے حدیث ابن عباس علی سے اسے روایت کیا ہے۔منذری نے اس کے ضعف کی طرف اشارہ کیاہ۔

@ ابن ماجه

www.KitaboSunnat.com

بسعورت پر واجب ہے کہ وہ اپنے خاوند کی رضا مندی طلب کرے اور اس کی ناراضی سے بیچے اور جب وہ اس کے پاس آنا چاہیے تو وہ اس سے دور نہ ہو کیونکہ نبی مُثَاثِیَّا کا فر مان ہے: ''جب آدی اپنی بیوی کو اپنے بستر پر بلائے تو وہ اس کے پاس آجائے خواہ وہ تندور

علماء نے بیان کیا ہے کہ الاید کہ اس کے پاس چیش یا نفاس کا عذر ہو۔

وہ اس حالرت میں اس سے جماع نہ کر جے تی کہ وہ مسل کر لے۔اللہ تعالی کا فر مان ہے:

﴿ وَيَسْنَلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ قُلْ هُوَ أَذًى فَأَعْتَزِلُواَ النِّسَاءَ فِي الْمَحِيْضِ

وَلَا تَقْرَبُو هُنَّ حَتَّى يَطْهُرُنَ فَإِذَا تَطَهَّرُنَ فَأَتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ. ﴾ (البقره: ٢٢٢)

''پس حیض کے دنوں میں عورتوں سے دور ہو اور ان کے پاس نہ جاؤیہاں تک کہوہ یاک ہوجا کیں۔''

یعنی جب تک وہ یاک نہ ہوجائیں'ان سے جماع نہ کرو۔

ابن قتیبہ نے فر مایا: جب ان کوخون آنا بند ہو جائے تو وہ پاک ہو جائیں بینی جب وہ پانی سے غسل کرلیں۔واللہ اعلم

اورجبيها كه نبي مَنْ النُّيْرُمُ كافر مان كزراب:

'' جو شخص حائصہ کے پاس آئے یا عورت سے اس کی پیٹی میں جماع کرے تو اس نے محمد تکافیظ کی شریعت کا انکار کر دیا۔''

اورایک دوسری حدیث میں ہے:

''وہ خص ملعون ہے جو حائضہ سے یاعورت کی بیٹیر میں جماع کرے۔''

نفائ میش کی مثل ہے اور اس کی مدت جالیس روز تک ہے۔ پس عورت کے لئے حلال نہیں کہ وہ اپنے خاوند کی اطاعت کرے جب وہ حیض و نفاس کی حالت میں اس سے جماع کرنے کا ارادہ کرے اس کے علاوہ جو امور ہیں ان میں اس کی اطاعت کرے اورعورت کو جا ہے کہ وہ جان لے کہ وہ خاوند کے لئے مملوک کی طرح ہے وہ اپنے بارے میں اپنے خاوند کے

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

کتاب الکبائر کتاب الکبائر کے اور وہ اس (خاوند) کے حق کو اپنے حق پر مقدم ملک کا اسکان کے حقوق کی مقدم مرکھ وہ نظافت جانے اس کے رشتے داروں کے حقوق پر مقدم رکھ وہ نظافت

کے تمام اسباب کے ساتھ خاوند کی خدمت ومنفعت کے لئے تیار رہے وہ اپنے حسن و جمال کی وجہ سے اس پرفخر نہ کرے اوروہ اس کو بدصور تی کاعیب نہ لگائے اگروہ اس میں ہو۔

الاسمعی بیان کرتے ہیں: میں ایک جنگل میں گیا تو ایک خوبصورت عورت تھی لیکن اس کا خادند بدصورت تھا۔ میں نے اسے کہا: تو نے اسے اپنے لئے کیسے پہند کرلیا کہ تو اس جیسے خفس کو بیوی ہو؟ اس نے کہا: اسے خفس من! شاید کہ اس نے کوئی نیکی کی ہو جو اس کے اور اس کے خالق اللہٰذ کے درمیان ہوتو اس نے مجھے اس کا ثواب بنا دیا ہوا ور شاید کے میں نے کوئی غلطی کی ہوتو اس نے اس کو میرے لئے سز ابنا دیا ہو۔

عائشہؓ بیان کرتی ہیںعورتوں کی جماعت! اگرتم جان لو کہتمہارے خاوندوں کے تم پر جو حقوق ہیں تو تم میں ہےعورت اپنے چبرے کے رخسار سے اپنے خاوند کے پاؤں کی غبار صاف کرتی ۔اور آپ مُلَا لِشِیْم نے فرمایا:

''تمہاری عورتوں میں سے اہل جنت میں سے اور محبت کرنے والی وہ ہے کہ جب وہ کوئی تکلیف دی جاتی ہے تو وہ اپنے خاوند کے پاس آتی ہے تی کہ وہ اپنا ہاتھ اس کے ہاتھ میں رکھ کر کہتی ہے: میں سونہیں سکو گی حتیٰ کہ آپ راضی ہو جائیں ۔''

عورت پریبھی واجب ہے کہ وہ اپنے خاوند ہے بمیشہ حیا کر ہے اس کے سامنے اپنی نظر نجی رکھے۔ اس کے تکم کی اطاعت کر ہے اس کے بات کرتے وقت خاموش رہے اس کے آن پر کھڑی ہوجائے۔ آن تمام چیزوں سے دور رہے جو اس کی ناراضی کا باعث بنیں اس کے باہر نکلتے وقت (الوداع کرنے کے لئے ) اس کے ساتھ کھڑی ہؤاس کی نیند کے وقت اپنے آپ کو اس پر پیش کرے اس کی غیر موجودگی میں اس کے بستر' اس کے مال اور اس کے گھر میں خیانت نہ کرئے فضا کو خوشگوار بنائے منہ کو مسواک کے ذریعے صاف کرتی رہے اور کمتوری

① استقبال کرنے کے لئے کھڑی ہوجائے ویسے تنظیماً کھڑا ہونامنع ہے۔ (مترجم)

+ 276 كتاب الكبائر كالمنافر كالم وخوشبو کا اہتمام کرئے اس کی موجودگی میں ہمیشہ زیب وزینت کا خیال رکھے اور اس کی غیر موجودگی میں اسے ترک کردے اس کے اہل وا قارب کی تکریم وعزت کرے اور اس کی طرف سے ملنے والی قلیل چیز کو بھی کثیر تصور کرے۔

یہاینے خاوند کی اطاعت گزار بیوی کی فضیلت اور نافر مانعورت کے عذاب کی شدت کے بارے میں فصل ہے۔اللہ تعالیٰ ہے ڈرنے والی عورت کو چاہیے کہ وہ اللہ کی اور اپنے خاوند کی اطاعت کے لئے کوشش کرے اور وہ اس کی رضا مندی کے حصول کے لئے اپنی پوری کوشش

وہی اس کی جنت اور وہی اس کی جہنم ہے نبی مَنَافِیْنِ انے فر مایا:

'' جوعورت اس حال میں وفات پائے کہ اس کا خاونداس پر راضی ہوتو وہ جنت میں جائے گی۔''

اور حدیث میں پیجھی ہے:

''جبعورت اپنی یا نجوں نمازیں پڑھے'اپنے ماہ (رمضان) کے روزے رکھے اور ا بنے خاوند کی اطاعت کر رہے تو وہ جنت کے درواز وں میں سے جس میں سے جاہے داخل ہوجائے۔''

اورآ پ مُلَاثِیْرِ کسے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا:

''اینے خاوند کی اطاعت کرنے والی عورت کے لئے 'پرندے ہواؤں میں' محھلیاں یانی میں' فرشتے آ سان میں اور سورج و جا ند' مغفرت طلب کرتے رہتے ہیں جب تک وہ اپنے خاوند کی رضا تلاش کرتی رہتی ہے اور جوعورت اپنے خاوند کی نافر مانی کرتی ہے تواس پراللۂ فرشتوں اورتمام لوگوں کی لعنت برتی ہے۔ اور جوعورت اپنے خاوند کوترش روئی سے دیمھتی ہے تو وہ اللہ کی ناراضی میں رہتی ہے حتیٰ کہوہ اس (خاوند) کو ہنسائے اور اس کوراضی کرے۔اور جوعورت اپنے خاوند کی اجازت کے اوررسول الله مُنْ اللهُ عَلَيْهِ فَي سے مروی ہے كه آپ نے فرمایا:

" چارتم کی عورتی جنتی ہیں اور چارتم کی جہنی ہیں۔ جہاں تک چارجنتی عورتوں کا تعلق ہے تو ان میں ہے ایک وہ پاک دامن عورت ہے جو اللہ اور اپنے خاوند کی اطاعت گزار ہے نیچ جننے والی صبر کرنے والی اور اپنے خاوند کے ساتھ معمولی چیز پر قناعت کرنے والی عیادالی اگر اس کا خاوند غائب ہوتو وہ اپنی جان اور اس کے مالی کی حفاظت کرتی ہے اور جب وہ موجو دہوتو پھر اپنی زبان کو اس سے روکتی ہے اور چوتھی وہ عورت ہے اس کا خاوند فوت ہو جائے اس کے چھوٹے جھوٹے بچے ہوں وہ اپنی اولاد کی خاطر روکے رکھے ان کی اچھی پرورش اور تربیت کرے اور وہ اس اندیشے شادی نہ کرے کہ وہ ضائع ہوجا کیس گے۔"

اور وہ چارفتم کی عورتیں جوجہم ہیں جائیں گ۔ایک وہ عورت جوابے خاوند پر بدزبانی کرتی ہے بینی اپ خاوند پر بدزبانی کرتی ہے زبان ورازی سے مراد ہے بخش گوئی اگراس کا خاونداس سے غائب ہوتو وہ اپ نفس کو نہ بچائے اوراگر وہ موجود ہوتو پھراپی زبان سے اسے تکلیف پہنچائے۔ دوسری عورت وہ ہے جواپ خاوند کوالی تکلیف سے دو چارکر دے جس کی وہ طاقت نہیں رکھا ، تیسری عورت وہ ہے جواپ آپ کومردوں سے نہیں چھپاتی اور وہ بناؤسنگار کر کے اپنے گھر نے گئی ہے۔ اور چوتھی عورت وہ ہے جس کا مقصد صرف کھانا پینا اور سونا ہو۔ وہ نماز کا شوت رکھتی ہے نہ اللہ اور اس کے رسول اور اپنی خاوند کی اطاعت کا پس جب عورت اس صفت کا شوت رکھتی ہے نہ اللہ اور اس کے رسول اور اپنی خاوند کی اطاعت کا پس جب عورت اس صفت سے متصف ہوکرا پنے خاوند کی اجازت کے بغیرا پنے گھر سے نکلتی ہے تو وہ ملعونہ جہنمی ہے اللہ یک ہو ہو اللہ کے حضور تو بہ کرلے۔

اور نبي مَنْ اللَّهُ عِلْمُ لِنَا اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللّ

''میں نے چنم میں جھا تک کردیکھا تو وہاں اکثریت عورتوں کی تھی۔''

اور بیان کی اللۂ اس کے رسول اور ان کے خاوندوں کی قلت اطاعت اور ان کے کثر ت

حرف کتاب الکبائو کی استان کی استان کی استان کی الم کارادہ ترج کی وجہ سے ہورت (گھر سے) باہر جانے کا ارادہ کر حتورت (گھر سے) باہر جانے کا ارادہ کرتو وہ اپنا بہترین لباس زیب تن کرئے بناؤسٹاگر اور حسن جمال کا اہتمام کرے اور پھراپنے ذریعے لوگوں کو فقتے کا شکار کرنے کے لئے باہر نکلے اگر وہ خود کو بچا بھی لیتو لوگ اس نے بیس نیج سکتے۔ اس لئے نی مُنافیظ نے فرمایا:

''عورت پردے کی چیز ہے' پس جب وہ اپنے گھر سے نگلتی ہے تو شیطان اس کولوگوں کی نگاہ میں مزین کر کے دکھا تا ہے۔''

اللہ کی طرف سے عورت کے لئے سب سے بڑی عظمت یہی ہے کہ وہ اپنے گھر میں رہے۔ اور حدیث میں بھی ہے: ''عورت پردے کی چیز ہے اس کو گھر وں میں رکھو۔'' کیونکہ جب عورت راستے کی طرف روانہ ہوتی ہے تو اس کے گھر والے اسے کہتے ہیں کہاں کا ارادہ ہے؟ وہ کہتی ہے: میں کسی مریض کی عیادت کرنے جنازے میں شرکت کرنے جارہی ہوں۔ شیطان اس کے ساتھ ہی رہتا ہے تی کہ وہ اپنے گھر سے نگلتی ہے۔ عورت اپنے گھر میں بیٹھ کراپنے رب کی عبادت کر کے اور اپنے خاوند کی اطاعت کر کے جس قدراللہ کی رضا حاصل کرتی ہے اس قدر کسی اور ذریعے سے حاصل نہیں ہوتی۔

علی نے اپنی اہلیہ فاطمہ ﷺ فرمایا فاطمہ!عورت کے لئے کیا بہتر ہے؟ انہوں نے فرمایا کہ وہ مردوں کو نہ دیکھے اور وہ اسے نہ دیکھیں۔علی فرمایا کرتے تھے: کیا تہہیں حیانہیں آتی کیا تم کو غیرت نہیں آتی؟ تم میں سے کوئی اپنی بیوی کوچھوڑ تاہے وہ مردوں کے درمیان نگلتی ہے وہ انہیں دیکھتی ہے اور دہ اسے دیکھتے ہیں!

عائشہ اور حفصہ رضی اللہ عنہما ایک روز نبی مَثَلَّیْتِاً کے پاس بیٹھی ہوئی تھیں کہ ابن ام مکتوم تشریف لائے 'وہ نابینا آ دمی تھے۔ نبی مَثَلِیْتِا نے فرمایا '' تم اس سے پردہ کرو۔''انہوں نے عرض کیا' اللہ کے رسول! کیا وہ نابینانہیں؟ وہ ہمیں دیکھتا تئے نہ ہمیں پہچانتا ہے تو آپ نے فرمایا: ''کیاتم بھی نابینا ہو' کیاتم اسے دیکھتی نہیں ہو؟''

جس طرح مردکو چاہیے کہ وہ عورتوں ہے اپنی نگا ہیں بیت رکھے ای طرح عورت کو چاہیے کہ وہ مردوں ہے اپنی نگا ہیں نیجی رکھیں جیسا کہ فاطمہ ؓ کے فرمان سے پیۃ چلا جو کہ پہلے بیان ہو

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

حرات کتاب الکبائر کی میں ہے کہ وہ مردوں کو ندد کھے اوروہ اسے نددیکھیں۔ چکا ہے کہ عورت کے لئے جو بہتر ہے وہ بیہ ہے کہ وہ مردوں کو نددیکھے اوروہ اسے نددیکھیں۔ اگر وہ مجبوری کے عالم میں اپنے والدین اور اپنے رشتہ داروں سے ملنے کے لئے جاتا ضروری سمجھے تو پھر وہ بناؤ عظمار کئے بغیر' اپنے گھر کے عام پرانے لباس میں' اپنے فاوند کی اجازت سے جائے چلتے وقت اپنی نظر جھکا کرر کھے' زمین پرنظرر کھے' دائیں بائیں نددیکھے' اگر اس نے بیطرزعمل ندا پنایا تو وہ گناہ گالہ ہوگی۔

دکایت بیان کی جاتی ہے کہ دنیا میں ایک عورت زیب وزیبائش کیا کرتی تھی اور وہ بناؤ مناؤ کایت بیان کی جاتی ہے کہ دنیا میں ایک عورت زیب وزیبائش کیا کرتی تھی اور وہ بناؤ مناؤ کار کے اپنے گھر سے فکلا کرتی تھی وہ فوت ہوگئی تو اس کے اہل خانہ کے کسی فرد نے اس خواب میں دیکھا کہ وہ باریک لباس میں اللہ عز وجل کے حضور پیش کی گئی پھر ہوا چلی تو اس نے اس سے رخ موڑ لیا اور فر مایا: اسے بائمیں طرف والوں کی سی پکڑ سے جہنم کی طرف لے چلؤ کیونکہ وہ دنیا میں بناؤسڈگار کرنے دالیوں میں سے تھی۔

علی بن افی طالب رضی الله عنه بیان کرتے ہیں: میں اور فاطمہ تنی ظافیرا کے پاس کیے تو ہم نے آپ کو بہت زیادہ روتے ہوئے دیکھا' تو میں نے آپ سے عرض کیا الله کے رسول! میرے والدین آپ پر قربان ہوں' کون می چیز آپ کورلار ہی ہے؟ آپ نے فرمایا:

بن ہی جر رات مجھے آ سانوں کی سیر کرائی گئی تو میں نے اپنی امت کی عورتوں کو دعلی جس رات مجھے آ سانوں کی سیر کرائی گئی تو میں نے جوان کے عذاب کی شدت کو دیکھا ہوتے ہوئے دیکھا ہوں میں نے جوان کے عذاب کی شدت کو دیکھا ہوتے ہوئی اس کے حلق میں ڈالا جار ہاتھا' میں نے ایک عورت کود کی خوات کودیکھا کہ اس کے پاؤں اس کے لپتانوں کے ساتھ اور اس کے ہاتھ اس کی پیشانی کے ساتھ بندھے ہوئے ہیں' میں نے ایک عورت کودیکھا کہ اس کا سرخزریکا سر ہااور اس کا بدن گدھے کے بدن جسیا ہے' اس پر لاکھون شم کا عذاب ہے۔ میں نے ایک عورت کو دیکھا کہ اس کا سرخزریکا سر ہے اور اس کا بدن گدھے کے بدن جسیا ہے' اس پر لاکھون شم کا عذاب ہے۔ میں نے ایک عورت کو دیکھا کہ اس کے منہ سے داخل ہو کر اس کی پشت عورت کو کئے کی صورت میں دیکھا' آگ اس کے منہ سے داخل ہو کر اس کی پشت سے نکل رہی تھی اور فرشتے لو ہے گی گرز وں سے اس کے سر پر مار دے ہیے۔'' فاطمہ خاتھا کھڑی ہو کیں اور کہا میر سے صبیب اور میری آ تکھوں کی شنڈک ان لوگوں کے فاطمہ خاتھا کھڑی ہو کیں اور کہا میر سے صبیب اور میری آ تکھوں کی شنڈک ان لوگوں کے فاطمہ خاتھا کھڑی ہو کیں اور کہا میر سے صبیب اور میری آ تکھوں کی شنڈک ان لوگوں کے فاطمہ خاتھا کھڑی ہو کیں اور کہا میر سے صبیب اور میری آ تکھوں کی شنڈک ان لوگوں کے فاطمہ خاتھا کھڑی کو میں اور کہا میر سے صبیب اور میری آ تکھوں کی شنڈک ان لوگوں کے فاطمہ خاتھا کھڑی کے میں اور کہا میر سے صبیب اور میری آ تکھوں کی شنڈک ان لوگوں کے فاطمہ خاتھا کھڑی کے در اس سے اس کے سر پر مار دے تھے۔'

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ  $\cdot$ 

مراكز كتاب الكبائر كالمجافز <u>كالمجافز كالمجافز كالمجافز</u>

كياا عمال تصحى كدان برعذاب مسلط كرديا كميا؟

آپ اَلْ اَلْمُنْ اللهُ ا

''میری پیاری بیٹی! رہی وہ عورت جواب بالوں کے ساتھ معلق تھی' وہ مردوں سے
اپنجایا کرتی تھی' جواپی کرتا تھی' جواپی زبان کے ساتھ معلق تھی' وہ اپ خاوند کواذیت
پہنچایا کرتی تھی' جواپ پیتانوں کے ساتھ معلق تھی وہ اپ خاوند کے بستر کوخراب کیا
کرتی تھی' جس کے پاؤں اس کے پیتانوں کے ساتھ اور اس کے ہاتھ اس کی بیشانی
کے ساتھ بندھے ہوئے تھے اور اس پر سانپ اور بچھو مسلط تھے' وہ جنابت اور چین کے ساتھ بند کو صاف نہیں کیا کرتی تھی اور نماز کا ندان اڑ ایا کرتی تھی' رہی وہ عورت جس کا سر' خزیر کا سر'اس کا بدن گدھے کا سابدن ہوتھا' وہ چغل خور اور جھوٹی تھی' رہی وہ عورت جو کتے کی صورت پرتھی اور آگ اس کے منہ سے داخل ہوکر اس کی پیٹھ سے وہ عورت جو کتے کی صورت پرتھی اور آگ اس کے منہ سے داخل ہوکر اس کی پیٹھ سے نکل رہی تھی وہ احسان جتلانے والی خد کرنے والی تھی۔''

معاذين جبل بيان كرتے بين رسول الله مَالَيْظِ في فرمايا:

''عورت اپنے خاوند کو دنیا میں تکلیف پہنچاتی ہے تو اس کی موٹی موٹی آ تھوں والی بیوی (حور) کہتی ہے اللہ تخفیے تباہ کرئے اسے تکلیف نہ پہنچا۔اے بیٹی!اس عورت کے لئے ہلاکت ہے جواپنے خاوند کی نافر مانی کرتی ہے۔''

نصل:

جب عورت اپنے خاوند کی اطاعت کرنے اور اس کی رضامندی طلب کرنے پر مامور ہے تو خاوند کی اطاعت کرنے اور اس کی رضامندی طلب کرنے پر مامور ہے تو خاوند بھی اس کے ساتھ احسان کرنے اس پر لطف و مہر بانی سے پیش آنے اس کے سوخت کے سان دنفقہ پوشاک ولباس اور حسن معاشرت کا حت ادا کرنے پر مامور ہے۔اللہ تعالیٰ کا فر مان ہے:

﴿وَعَاشِرُوهُمَّنَّ بِالْمَعْرُونِ ﴾ (النساء: ١٩)

"اوران كے ساتھ حسن سلوك سے رہو۔"

حاب الكبائر كا برائر كا برائر كا برائر كا برائر كا برائد برائد كا برائد برائد كا برائد برائد برائد كا برائد برائد برائد برائد كا برائد برائد كا بر

اورآ پ اَلْیَدَ آکافرمان ہے: ((عوان)) یعنی اسرات "عوان عانیة" کی جمع ہاور اس کامعنی ہے" اسیرة" قیدی رسول الله مَالَیْدَ آئے عورت کو مرد کے کلم کے ماتحت رہنے میں قیدی سے تشبید دی ہے۔

اورآ يمَنَّا لِيَّيْتُكُمِ نَے فرمایا:

''تم میں سے بہتر وہ ہے جوتم میں سے اپنی اہلیہ کے ساتھ بہتر ہے۔' () اورایک روایت میں ہے:

گھروں میں آنے کی اجازت نہ دین جن کوتم ناپیند کرتے ہو۔''

''تم میں سے بہتر وہ ہے جوتم میں سے اپنی اہلیہ کے ساتھ زیادہ مہر بان ہے۔''
اور سول الله مُنَّالَّةُ عِنْمُ عُورتوں کے معاملے میں انتہائی مہر بان تھے۔ اور آپ مُنَّالِّةُ عِنْمُ فَر مایا:
''جو شخص اپنی بیوی کے برے اخلاق پر صبر کرے تو اللہ اس کو اس اجر کی مثل اجر عطا
فرما تا ہے جو اس نے ابو ب علیہ السلام کو ان کی مصیبت پر عطا کیا تھا اور جوعورت اپنے فاوند کے برے اخلاق پر صبر کرے تو اللہ اس کو اس اجر کی مثل اجر عطا فرما تا ہے جو اس نے فرعون کی بیوی آسیہ بنت مزاحم کو عطا کیا تھا۔''

روایت کی جاتی ہے کہ ایک آ دمی اپنی بیوی کے خلق کی شکایت کرنے عمر النے عام ایا وہ عمر النے عورت کو عمر النے عمر

🛈 ابر حباد

پس عرر باہر تشریف لائے تو انہوں نے اسے اپنے دروازے سے واپس جاتے ہوئے
درکھا تو اسے آواز دی اور فرمایا: اے آدی! تہاری کیا حاجت ہے؟ اس نے عرض کیا
امیرالموشین! میں پی بیوی کے برے اخلاق اوراس کی جھ پرزبان درازی کی آپ سے شکایت
کرنے آیا تھا، لیکن میں نے آپ کی اہلیہ کو بھی ای طرح سنا تو میں واپس ہو گیا اور میں نے کہا
اگر امیرالموشین کا پی اہلیہ کے ساتھ سے حال ہے تو پھر میرا کیا حال ہے؟ عمر نے فرمایا: میرے
بھائی! میں نے اس کے ان حقوق کی بنا پڑ جو جھ پر جیں اس کو برداشت کیا ہوا ہے؟ وہ میرا کھانا
پیاتی ہے میری روٹی پیاتی ہے میرے کپڑے دھوتی ہے میرے بیچ کو دود دھ بلاتی ہے اور سیسب
پی اس پر واجب نہیں ہے میرا دل اس کی وجہ سے حرام سے بیتا ہے ہیں میں اس لئے اس کو
برداشت کرتا ہوں۔ اس آدمی نے کہا: امیرالموشین! میری بیوی بھی ای طرح ہے ۔ ممر نے فرمایا:
میرے بھائی! تم بھی اسے برداشت کرؤ بیتو تھوڑی سی مدت ہے۔

حکایت بیان کی جاتی ہے کہ کسی نیک صالح آ دمی کا ایک نیک آ دمی اللہ کی خاطر بھائی تھا۔ وہ ہر سال اس کی ملاقات کیا کرتا تھا پس وہ اس کی زیارت و ملاقات کے لئے آیا تو اس نے دِروازے پر دستک دی'اس کی بیوی نے پوچھا کون؟ اس نے جواب دیا: تیرے خاوند کا اللہ کی خاطر بھائی' میں اس کی زیارت کے لئے آیا ہوں۔اس نے کہا: وہ لکڑیاں لینے گیا ہوا ہے' اللہ اسے دالیں نہلائے اسے محفوظ ندر کھئے اس کے ساتھ ایسے ایسے ہوؤ وہ اس کی ندمت کرنے لگی اور وہ اس کے دروازے پر کھڑا تھا کہاتنے میں اس کا بھائی پہاڑ کی جانب ہے آیا' اس نے لکڑیوں کا سَمُ شیر کی چیٹے پررکھا ہوا ہے اور وہ اسے اپنے آ گے آ گے ہا تک رہا ہے۔ پس وہ آیا اپنے بھا کی كوسلام كيا اوراسے خوش آيد يد كها وه گھر ميں داخل ہوالكڑيوں كوداخل كيا اورشيرے كها الله تجھے برکت عطا فرمائے' چلے جاؤ' پھراس نے اپنے بھائی کو گھر میں داخل کیا' جبکہ عورت اپنے حال پر ندمت کئے جار ہی تھی' وہ اپنی زبان چلار ہی تھی اور اس کا خاوندا ہے کوئی جواب نہیں دے رہا تھا۔ اس نے اپنے بھائی کے ساتھ کچھ کھایا پھراہے الوداع کیا اور واپس آ گیا' وہ اس عورت پراینے بھائی کےصبر کے بارے میں متعجب تھا' بیان کرتے ہیں جب دوسرا سال ہوا تو وہ اپنے معمول کے مطابق اپنے بھائی کی زیارت کے لئے آیا ٔ دروازے پر دستک دمی تو اس کی بیوی نے بوچھا . محکمہ دلائلِ وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

+ (£ كتاب الكيائر £ (£ 283 ) + ( دروازے برکون ہے؟ اس نے جواب دیاتمہارے خاوند کا اللہ کے لئے فلاں بھائی۔اس نے کہا خوش آیدید' اہلاٰ وسہلاً تشریف رکھیں' وہ ابھی ان شاءاللہ خیر و عافیت ہے آ جا کیں گے۔ بیان کرتے ہیں اس نے اس کے لطف کلام اور اس کے ادب پر تعجب کیا جب اس کا بھائی آیا تو اس نے اپنی پشت پرلکڑیاں اٹھائی ہوئی تھیں' اس کواس پر بھی بہت تعجب ہوا۔ پس وہ آیا' اس نے اسے سلام کیا' گھر میں داخل ہوا اسے بھی داخل کیا۔عورت ان دونوں کے لئے کھانا لا کی اور کلام لطیف ہےان کے لئے دعا کیں کرنے گئی' پس جب اس نے اس سے جدا ہونے کا ارادہ کیا تو اس نے کہا: میرے بھائی میں جس چیز کے بارے میں یو چھنا حیاہتا ہوں' مجھےاس بارے میں بتاكيس اس نے كها: مير ، يعائى ! كيا يو چصا جا جتے ہو؟ اس نے كها: ميں پہلے سال آيا تو ميس نے بدزبان اورقلت ادب والى عورت كوسنا وه بهت مذمت كرتى تقى اورميس نے آپ كود يكھا كه آپ پہاڑی جانب سے آ رہے ہیں جبکہ ککڑیاں شیر کی پشت پر ہیں اوروہ آپ کے آ گے منحر و تا بع ہے جبكاس سال ميس في عورت كاكلام بهت لطيف ديكها اس في ندمت نبيس كي اور ميس في آب کودیکھا کہ آیا بی کمریرلکڑیاں لاوکر آ رہے ہیں تو سب کیا ہے؟ اس نے جواب دیا میرے بھائی!وہ بدمزاج عورت فوت ہوگئی ہے میں اس کےخلق اور جو پچھاس سے ظاہر ہوتا' اس پرصبر کرتا تھا۔ میں اس کے ساتھ تکلیف میں تھا اور میں نے اس کو ہر داشت کیا ہوا تھا پس تو اللہ نے' میرے اس پرصبر کرنے اور اس کو برداشت کرنے کی وجہ ہے'شیر کومیرے تابع کر دیا تھا'جس کو آپ نے میری لکڑیاں اٹھائے ہوئے دیکھا۔ پس جب وہ فوت ہوگئ تو میں نے اس صالحہ خاتون سے شادی کر لی' میں اس کے ساتھ راحت وسکون سے ہوں' پیں وہ شیر چلا گیا' پس میں اس اطاعت گزارمبارک عورت کے ساتھ میری راحت کی وجہ ہے' لکڑیاں اپنی پشت پراٹھا کرتا

پس ہم اللہ سے درخواست کرتے ہیں کہ وہ اپنے پیندیدہ امور پرصبر عطافر مائے کیونکہ وہ سخی داتا فیاض ہے۔

2

کناب الکانر کی بھی ہوں درہموں اور باقی اشیاء پر (۴۸) کپڑوں دیواروں پھروں درہموں اور باقی اشیاء پر تصویریں بنانا خواہ وہ موم یا آئے یالو ہے یا تا نبے یا اون یا اس کے علاوہ کسی اور چیز سے بنائی گئی ہوں اور انہیں تلف کرنے کا حکم

الله تعالی نے فرمایا:

﴿إِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَ رَسُولَةٌ لَعَنَّهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَ الْاخِرَةِ وَ اَعَدَّلَهُمْ

عَذَابًا مُهِينًاه ﴾ (الاحزاب: ٥٧)

''بیٹک وہ لوگ جواللہ اور اس کے رسول کو ایذا دیتے ہیں اللہ نے ان کو دنیا و آخرت میں ملعون قرار دیا ہے اور ان کے لئے رسوا کن عذاب تیار کررکھاہے۔''

کی میں۔ عکرمہ ؓنے فرمایا:اس سے مرادوہ لوگ ہیں جوتصوریں بناتے ہیں۔

'' جولوگ تصویریں بناتے ہیں' انہیں قیامت کے دن عذاب دیا جائے گا۔ انہیں کہا جائے گا۔ انہیں کہا جائے گا: جوتم نے پیدا کیااس کوزندہ کرو۔'' ①

عائش بیان کرتی میں رسول الله مُنَالِیَّ الله مُنَالِیِّ الله مُنَالِیِّ الله مِن سِن سُل کے درمیان بنے ہوئے چہوترے پرایک پردہ ڈالا ہوا تھا' جس میں مورتیاں تھیں۔ جب رسول الله مُنَالِّیُّ الله مُنا الله مُنَالِّیُّ الله مُنا الله مُنالِیِّ الله مِنارک کارنگ بدل گیا اور فرمایا:

''عائشہ! قیامت کے دن سب سے سخت عذاب ان کو ہوگا جواللہ عزوجل کی تخلیق کے ساتھ مشابہت کرتے ہیں۔'' ⑥

عا کشہرضی اللہ عنہا بیان کرتی ہیں میں نے اسے کاٹ ڈالا اور اس سے دو تکئے بنا گئے۔ ابن عباسؓ بیان کرتے ہیں' میں نے رسول اللہ ٹاکھیٹی کوفر ماتے ہوئے سنا:

<sup>🛈</sup> بخاری (۹۵۱ه) مسلم (۲۱۰۸) 🕜 بخاری (۹۵۶ه) مسلم (۲۱۰۷)

برمصورجہنم میں ہے'وہ (اللہ تعالیٰ) ہرصورت کو جواس نے ( دنیامیں ) بنائی تھی ایک جان دےگا''اوراس کے ساتھ اسے جہنم کی آگ میں عذاب دیا جائے گا۔' ۞

ابن عباس جى بيان كرتے بيل ميں نے رسول الله طافية كوفر ماتے موسے سنا:

''جو شخص دنیا میں کوئی تصویر بنائے'روز قیامت اسے پابند کیا جائے گا کہ وہ اس میں روح ڈالے کیکن وہ بھی بھی اس میں روح نہیں ڈال سکے گا۔''

اورآ پ مُلَاثِينًا ہے مروی ہے کہ آپ نے فر مایا:

''اللهٔ عزوجل فرما تا ہے: اس مخص سے زیادہ ظالم کون ہے جومیر سے خلیق کرنے کی طرح تخلیق کرنے کی طرح تخلیق کرنے کی طرح تخلیق کرنے کی کوشش کرتا ہے' پس وہ ایک دانہ یا ایک جویا ایک ذرہ ہی پیدا کر دکھا ئیں۔' ﴿

اورآ ي مَنْ النَّيْظِ نِهِ فَر مايا:

'' قیامت کے دن آگ ہے ایک گردن نکلے گی تو وہ کہے گی: مجھے تین قتم کے لوگوں پر مامور کیا گیا ہے جا کرتا تھا' ہر جابر مامور کیا گیا ہے' ہراس محض پر جواللہ کے ساتھ کسی اور معبود کی بوجا کیا کرتا تھا' ہر جابر سرکش کے ساتھ اور مصورین کے ساتھ ۔'' 🏵

خطائی نے فرمایا: آپ مُکَاتِّیُمُ کا بیفر مان که' فرشتے اس گھر میں داخل نہیں ہوتے جس میں کتا' تصویراورجنبی ہو۔'' اس سے مرادوہ فرشتے ہیں جورحت و برکت لے کرنازل ہوتے ہیں' سوائے ان فرشتوں کے جو تفاظت پر مامور ہیں' وہ تو جنبی ہویا غیر جنبی سے الگ نہیں ہوئے۔

واسے ہیں رسے بوت سے براہ وہ جنبی ہوجنبی ہوگیااس نے نماز کاوقت ہونے تک عنسل کرنا موخر کردیا بلکہ اس سے مرادوہ جنبی ہے جوشس نہیں کرتا عنسل کرنے کو معمولی سجھتا ہے اور اسے عادت بنالیتا ہے کیونکہ نبی مُنافید علم ان واج مطہرات کے پاس ایک ہی عنسل سے جایا کرتے تھے اور اس میں عنسل کواس کے وجوب کے اول وقت سے موخر کرنا ہے۔

عائش بیان کرتی میں نبی مُنَافِیَّا الموجایا کرتے تھے حالانکہ آپ جنبی ہوتے تھے اور آپ پانی کو ہاتھ بھی نہیں لگاتے تھے۔

🛈 مسلم (۲۱۱۰) 🕜 بخاری (۹۹۳) 🕈 ترمذی

حرات الکبائر کتاب الکبائر کتاب الکبائر کتاب الکبائر کتاب الکبائر کتاب الکبائر کتاب مرادوہ کتا ہے جو کی اور شکار کے لئے ندر کھا گیا ہوئی کن جب اس کی ضرورت بن جائے تو پھر بعض امور میں اس کی ضرورت پڑنے پراے رکھنے میں کوئی حرج نہیں یا پھر گھر کی حفاظت کے لئے اس کی ضرورت ہوتو پھرا ہے رکھنے میں بھی کوئی حرج نہیں ان شاء اللہ اور جہاں تک تصویروں کا تعلق ہوتو روح والی تمام تصویریں اس میں شامل ہیں خواہ وہ نصب کئے ہوئے جسے ہوں یا چھٹوں یا دیواروں پرمنقوش ہوں یا غالیے میں شامل ہیں خواہ وہ نصب کئے ہوئے جسے ہوں یا چھٹوں یا دیواروں پرمنقوش ہوں یا غالیے قالین وغیرہ پر بنائی گئی ہوپس عموی فیصلہ اس کے خلاف تا کہ اللہ التوفیق ہوں یا کہ اللہ التوفیق

جو خص تصویریں تلف کرنے اور انہیں زائل کرنے کی قدرت رکھتا ہوتو اس کے لئے انہیں تلف کرنا واجب ہے۔ حبان بن صین بیان کرتے ہیں علی بن ابی طالبؓ نے مجھے فرمایا: کیا میں تنہیں ایسے کام پرنہ جیجوں جس پر رسول الله مُثَاثِیَّا نے مجھے بھیجا تھا۔ ①

بیرکه برتضور کومثادینااور براونچی قبرکو برابر کردینا۔

۔ پس ہم اللہ ہے اس کے پیندیدہ امور کی تو فیق کا سوال کرتے ہیں۔ کیونکہ وہ تخی دا تا ہے۔

\*\*

(۴۹)مصیبت کے وقت پیٹینا' نوحہ کرنا' کپڑے پھاڑ نا'سر

کے بال مونڈ نا'ا کھاڑ نا اور نتاہی وہر بادی کے الفاظ کہنا

عبدالله بن مسعودٌ بيان كرت بين رسول الله مُلَا يَيْمُ في فرمايا:

'' جُو خُض رخسار پینے' گریبان جاک کرے اور جاہلیت کی می باتیں کرے تو وہ ہم میں ہے نہیں۔'' ①

ابومویٰ اشعریؓ ہے روایت ہے کہ رسول اللہ من اللہ اللہ علیہ کے وقت ) نو حد کرنے والی ٔ بال مونڈ نے والی اور کیٹر ہے بھاڑنے والی ہے بیزاری ولاتعلق کا اظہار فرمایا:

ان تمام امور کی حرمت پرعلاء کا اتفاق ہے۔ اسی طرح بال بکھیرتا' رخسار بیٹین' چہرے کو نو چنا اور تباہی و ہر بادی کے الفاظ کہنا بھی حرام ہے۔ ام عطید رضی اللّٰد عنہا بیان کرتی ہیں رسول اللّٰدِ کَا اَتِّیْکِمُ نے بیعت کے وقت ہم سے عہد لیا تھا کہ ہم نو حذبیں کریں گی۔

ابو ہر رہ میان کرتے ہیں رسول الله مَا الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله

''لوگول میں دوخصلتیں ہیں اور وہ دونوں کفر ہیں: نسب میں طعن کرنا اور میت پر نوحہ کرنا۔'' ﴿

ابوسعید خدری بیان کرتے ہیں ٔ رسول الله مَثَلَّةِ اَللهِ عَلَیْ اِللهُ مَثَلِی اللهِ مَثَلِی اللهِ اللهِ مَثَلِ رمائی۔

ابو ہریرہ بیان کرتے ہیں ابوموی اشعری کو تکلیف ہوئی تو ان پرغثی طاری ہوگی ان کا سر ان کے اہل میں سے کسی عورت کی گود میں تھا۔ وہ زورز ور سے رونے گئے وہ اسے باز رکھنے کی استطاعت نہیں رکھتے ہے لیکن جب افاقہ ہوا تو فرمایا: میں اس سے بیزاری کا اظہار کرتا ہوں جس سے رسول اللہ مُن اللہ عَلَی اللہ عَلَی اللہ میں اللہ

① بخاری (۱۲۹۷) مسلم (۱۰۳) 🏵 مسلم (۲۷)

حواف ومناقب بیان کرتے ہیں عبداللہ بن رواحہ پرغشی طاری تھی تو ان کی بہن ان کے اوصاف ومناقب بیان کرتے ہوئے کہنے گئی وہ ایسے تھے وہ ایسے تھے جب آپ کوافاقہ ہوا تو انہوں نے کہا جم کہ اُن وجھ سے پوچھا گیا ہم اس طرح ہو۔ اس طرح ہو۔ اور رسول اللہ مُن اللّٰ اللّٰ مُن فرمایا:

''میت پر جونو حد کیا جاتا ہے قاس وجہ اے قبر میں عذاب دیا جاتا ہے۔'' ©
ابومویٰ '' بیان کرتے ہیں: جومرنے والا مرتا ہے اور اے رونے والا کھڑا ہو کر کہتا ہے: ہائے سردار! ہائے پہاڑ! وہ ایسا تھا' وہ ایسا تھا اور اس طرح کی با تیں تو اس پر دوفر شتوں کو مقرر کیا جاتا ہے وہ اس کی گردن مارتے ہیں (اور کہتے ہیں) کیا تم ایسے ہی تھے؟ ©

اورآ پِمُلِيَّتُكِمُ نِي فَرِ ما مِا:

''نو حہ کرنے والی جب اپنی موت ہے پہلے تو بہ نہ کرے تو روز قیامت اے اس حال میں کھڑ اکیا جائے گا کہ اس پر تارکول کا کر تا اور خارش زدہ زرہ ہوگی۔'' ®

اورآ پِمُلَاثِيَّا مِنْ اللَّهِ اللَّهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ

'' مجھے دواحمق فاجر آوازوں ہے منع کیا گیا ہے۔ نغمے لہو دلعب اور شیطانی آلات کی آواز اور مصیبت کے وقت چہروں کونو چنے گریبان جپاک کرنے اور شیطانی زورزور ہے رونے کی آواز۔''

حسن بصریؓ نے فر مایا: دوآ وازیں ملعون ہیں: نغمے کے وقت بانسری کی آ واز اور مصیبت کے وقت رونے کی آ واز۔

اوررسول اللهُ مَا لَيْنَا فِي مِنْ اللهِ مَا ما يا:

''ان نو حہ کرنے والیوں کی جہنم میں دوسفیں بنا دی جا کمیں گی' وہ جہنمیوں پر جھونگیں گ جیسے کتے بھو نکتے ہیں۔'' ⑥

اوزائ سے روایت ہے کہ عمر بن خطابؓ نے رونے کی آ وازسیٰ تو آپ اپنے ساتھ

<sup>🛈</sup> بخاری 🕝 مسلم 🗇 ترمذی

صلم (٩٣٤)
 طبراني في الاوسط

موان کے اس ان الکبائر کے آپ انہیں مارنے لگے حتی کہ آپ نوحہ کرنے والی تک پنچ کو اس کے آپ انہیں مارنے لگے حتی کہ آپ نوحہ کرنے والی ہے اس کی آپ نے اس ان مارا کہ آپ کی اور خرایا: اسے مارویہ نوحہ کرنے والی ہے اس کی کوئی حرمت نہیں ' پہتمہارے صدے کی وجہ سے نہیں روتی بلکہ بہتو تمہارے درہم ہورنے کے لئے اس نے آنسو بہاتی ہے۔ بہتمہارے مردول کوان کی قبروں میں اذبت پہنچاتی ہے اور تمہارے زندول کوان کے گھروں میں تکلیف پہنچاتی ہے کیونکہ بیصر سے روکتی ہے حالانکہ اللہ نے اس کا تھم دیا ہے اور جزع فزع و بے صراد ہے میت کے تاس بیان کر کے دونا۔

علماء نے فرمایا: زیادہ رونے کے ساتھ آ واز بلند کرنا حرام ہے جبکہ میت کے محاس بیان کے بغیررونا حرام نہیں۔

ابن عمرٌ سے روایت ہے کہ رسول الله مَنَّاتِیْنِظِ نے عبد الرحمٰن بن عوف سعد بن ابی وقاص اور عبد الله بن مسعود رضی الله عنهم کی معیت میں سعد بن عبادہؓ کی عیادت کی تو رسول الله مَنَّاتِیْنِظُم و نے لگئ جب ساتھیوں نے رسول الله مَنَّاتِیْنِظُ کارونا و یکھا تو وہ بھی رونے لگے۔

تو آپ نے فرمایا: 'کیاتم سنتے نہیں کہ اللہ آنکھوں سے بہنے والے آنسو اور دل کے ممکین ہونے پرعذاب نہیں دیتالیکن اسے اس کی وجہ سے عذاب دیا جائے گایارتم کیا جائے گا۔' آپ نے اپنی زبان کی طرف اشار ہ کیا۔

اسامہ بن زید ہے روایت ہے کہ رسول الله مَلَّ اللَّهِ الله کَاللَّهِ الله کے رسول! الله کے رسول! بیکیا ہے؟ آپ نے فرمایا:

'' بیر حمت ہے جواللہ نے اپنے ہندوں کے دلوں میں پیدا کی ہے اور اللہ اپنے رحم دل ہندوں پر رحم فرما تا ہے۔''

انس ﷺ دروایت ہے کدرسول الله مُکَالِیَّتِهُما پنے بیٹے ابراہیم کے پاس اس وقت پہنچے جب وہ قریب المرگ تھے۔رسول الله مُکَالِیَّتِهُما پنے بیٹے لگے تو عبدالرحمٰن بن عوف نے ان سے عرض کی الله کے رسول! آپ (روتے ہیں) آپ نے فرمایا: '' ابن عوف! بیتورحت ہے۔'' پھر انہوں نے آخری پچکی لی تو آپ نے فرمایا:

+ کتاب الکبائر کی الک

ادر وہ صحیح احادیث کہ میت کواس کے اہل خانہ کی طرف سے اس پر رونے کی وجہ سے عذاب دیا جاتا ہے۔اس کا اطلاق اس کے ظاہر پرنہیں بلکہ بیمو ول ہے۔علاء نے اس کی تاویل میں اختلاف کیا ہے۔ان میں سے جو ظاہر ہے۔ واللہ اعلم' کہ بیاس پرمحمول ہے کہ اس رونے میں اس میت کا کوئی سبب ہو۔ یا تو اس نے ان کواس کی وصیت کی ہویا اس کے علاوہ کوئی اور سبب ہوامام شافعیؒ کے پیرکاروں نے کہا ہے: موت سے پہلے اور اس کے بعد جائز ہے۔لیکن حدیث صحیح کے لحاظ سے پہلے زیادہ صحیح ہے۔

''جبموت واقع ہوجائے تو پھررونانہیں۔''

امام شافعیؒ اوران کے پیرو کاروں نے اس سے دلیل کی ہے کہ موت کے بعد رونا کروہ تنزیمی ہے' کروہ تحریمیٰ نہیں اورانہوں نے ((فیلا تبسکیس بالکیۃ))''رونے والی ندروئے'' حدیث کی کراہت پرتاویل کی ہے۔واللّٰداعلم

#### فصل:

نوحہ کرنے وائی کے لئے بیعذاب اور لعنت اس کئے ہے کہ وہ بے مبری کا تھم دیتی ہے اور صبر سے روکتی ہے جبکہ اللہ اور اس کے رسول نے صبر کرنے اور ثواب کی نیت کرنے کا حکم فرمایا ہے اور انہوں نے بے صبری اور ناراضی کا اظہار کرنے سے منع فرمایا ہے۔ اللہ تعالی نے فرمایا:

﴿ يَهَا آلَيْهَا الَّذِيْنَ اَمَنُو اَ اسْتَعِينُو اَ بِالصَّبْرِ وَ الصَّلُوةِ إِنَّ اللَّهُ مَعَ الصَّابِرِيْنَ ﴾

(البقرة: ۱۵۳)

''ایمان والو! صبر ونمازے مد دحاصل کیا کرؤ بے شک اللہ صبر کرنے والوں کے ساتھ ہے۔''

عطائهٔ نے ابن عباس سے روایت کی ہے: الله فرما تا ہے: میں تمہارے ساتھ ہوں تمہاری

<sup>🛈</sup> بخاری

مد وكرون كالمتهبين تنهانبين جهورُون كالدالله تعالى فرمايا:

(ولنب لو سکم)) لین ہم تمہارے ساتھ آ زمانے والا معاملہ کریں گے حالا تکہ اللہ معاملہ کریں گے حالا تکہ اللہ معاملت کے انجام کو جانتا ہے وہ انجام معلوم کرنے کے لئے آ زمانے کا محتاج نہیں لیکن وہ ان سے آ زمانے والے کا سامعاملہ کرتا ہے لیں جو محض صبر کرتا ہے تو وہ اپنے صبر پراجریا تا ہے اور جو صبر نہیں کرتا تو وہ ثواب کا متحق نہیں کھرتا۔

((بشبی من النحوف و النجوع)) ابن عباسٌ نے فرمایا: یعنی دیمن کے (خوف)اور ''جوع'' سے بھوک اور قحط مراد ہے۔

((ونسقیص مین الاصبوال)) یعنی مال میں خسارے اور نقصان ہے اور مویشیوں کی لاکت ہے۔

> ((و الانفس))موت ُ قُلَّ بَهاری اور برُ هاپے کے ذریعے۔ ((و الشمر ات)) بعن جس طرح پہلے پھل نکلتے تھاب ویسے نہیں نکلتے۔

پھر آیت کا اختیام ٔ صابرین کو بشارت دے کر کیا ہے۔ جو اس پر دلالت کرتا ہے کہ جس نے ان مصائب پرصبر کیا تو اس کے لئے اللہ کی طرف ہے ثواب کا وعدہ ہے۔اللہ تعالیٰ نے

فرمایا: ((و بشیر الصابوین)) پھران کی صفت بیان کی: دردونی مذہ بین در میں میں تربی تعین کی دربی میں کی کئی تنویمنیس

((اللذين اذا اصابتهم مصيبة)) لينى مُدكوره مصائب ميں سے كوئى تنى ورنج بہنچا ہے اور بھلائى يہنچنے كومصيبت نہيں كہا جاتا۔

((قالو ا انا لله)) وه كهتم بين بم الله ك عبيد غلام بين وه جار بساته جوجا بها به كرتا

((و انسا الیه داجعون)) ہلاک وفنا کے ذریعے اللہ کی طرف رجوع کرنے کامعنی ہے۔ تھم کے ذریعے اس اسکیلے کی طرف لوٹنا جبکہ اس نے دنیا میں ایک قوم کوتھم کا اختیار دیا تھا۔ جب بندوں کاتھم زائل ہوگیا تو معاملہ اللہ عزوجل کی طرف لوٹ آیا۔

عا كَثَرُّ بِ روايت بِ كهرسول اللَّمَ ثَالِيَّةُ عَلَم فَي السَّمِ اللَّهِ عَلَيْكُمُ فِي مايا:

"مومن کوکوئی تکلیف بہنچی ہے تو اللہ اس کی وجہ سے اس سے گناہ منا دیتا ہے حتیٰ کہ

**→ (292 ) + (32) + (32) + (32)** 

اگراہے کوئی کا ٹنابھی چبھتاہے۔' 🛈

علقمہ بن مردد بن سابط اپنے والد سے روایت کرتے ہیں۔رسول الله مَالَيْتُوَكِمُ فِي الله مَالِيَّةُ كُلِمُ فَر مايا "جس مخص كوكوئي مصبيت پنچ تو وه اپني مصيبت كوميرى مصيبت كے ساتھ يادكرے كوككہ (ميرى ہیں) توسب سے بردى مصيبت ہے۔ " (ا

اوررسول الله مَا اللهُ عَلَيْمُ فِي أَلَيْ مُعَالِمًا:

''جب بندے کا بچہ فوت ہو جاتا ہے تو اللہ فرشتوں سے کہتا ہے: تم نے میرے بندے کے بچے (کی روح) کو بین اس بندے کے بچے (کی روح) کو بین کیا (تو وہ کیا کہتا تھا؟) وہ عرض کرتے ہیں اس نے تیری حمد بیان کی اور ((انا لله و انا الیه د اجعون)) پڑھا۔اللہ تعالیٰ فرما تا ہے: میرے بندے کیلئے جنت میں ایک گھر تھم کر دواوراس کا تام بیت الحمدر کھ دو۔'' گ اور رسول اللہ مَا اللّٰہ تَا فَر مایا:

''اللہ تعالیٰ فرما تا ہے: جب میں اپنے بندے کی' دنیا میں سے سب سے پہندیدہ اور منتخب چیز کی روح قبض کرتا ہوں اور وہ ثواب کی امید کرتا ہے تو پھر اس کے لئے میرے یاس جو جزا ہے وہ جنت ہے۔'' ©

اورآ بِ مَالِينَا مُنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ مَا مَا يَا:

''اولا د آ دم کی سعادت مندی ہے کہ وہ اللہ کے فیصلے پر راضی ہواور اولا د آ دم کی بد نصیبی ہے کہ وہ اللہ تعالیٰ کے فیصلے پر نا راض ہو۔''

عمر بن خطاب بيان كرتے ہيں:

"جب موت كا فرشته مومن كى روح قبض كرتا بي تو وه درواز بي ير كافر ا بوجاتا به جبكه گھر والے شور وغل كرتے ہيں ان ميں سے كوئى تبابى و بربادى كو آ واز ديتى ہے۔ تو موت كا فرشته كہتا ہے: " يہ جزع فزع كس وجه ہے؟" الله كافتم! ميں نے تو تم ميں سے كى كى عمر كم نہيں كى ميں نے تم ہيں ہے كى كى عمر كم نہيں كى ميں نے تم ہيں ہے كى كى عمر كم نہيں كى ميں نے تم ميں سے كى

مسلم
 طبراني في الكبير

<sup>🕝</sup> ترمذی ابن حبان 🕝 بخاری

**+ (293 ) + (35) + (35) + (35) + (35) + (35)** + (35) + ( پر کوئی ظلم بھی نہیں کیا اگر تمہاری کوئی شکایت اور ناراضی مجھ پر ہےتو اللہ کی قتم! میں تو مامور ہوں'اگر تمہاری میت پر ہے تو وہ مقہور ہے اور اگر تمہارے رب پر ہے تو پھر تم اس کے ساتھ کفر کرتے ہواور میں تو تمہارے پاس آتا ہی رہوں گاحتیٰ کہتم میں سے کسی کوبھی نہیں چھوڑوں گا۔''

رسول اللُّهُ مَثَّاثِينَةً لِمُ نَعْ فِيرِ ماما:

"اس ذات کی قسم! جس کے ہاتھ میں میری جان ہے اگر دواس کی جگدد کھے لیں اور اس کا کلام سن لیں تو وہ اپنی میت سے غافل ہو جائیں اور اپنے بارے رونا شروع کر دی (وه این میت کوجول جا ئیں اور انہیں این فکریٹر جائے )'' • www.KitaboSumai.com

تعزیت کے بارے میں فصل:

عبدالله بن مسعودٌ مِي مَنْ الْفِيرُ إلى روايت كرتے بين آپ نے فرمايا: ''جس نے كسى مصيبت ز دہ ہے تعزیت کی تو اس کے لئے اس کی مثل اجر ہے۔''

ابو ہر روا نی منافیظ سے روایت کرتے ہیں' آپ نے فاطمہ سے فرمایا:''جس نے کسی ایسی عورت ہے'جس کا بچہ کم ہو گیا ہو تعزیت کی تو اسے جنت کی جا در پہنا کی جائے گی۔'' 🛈 عبدالله بن عمرو بن عاص من سے روایت ہے که رسول الله مَالْتُلِمَّا نے فاطمہ رضی الله عنها ہے فر مایا:'' فاطمہ! کس چیز نے تنہیں گھرہے نکالا ہے؟'' انہوں نے کہا: میں اس گھروالوں سے ان کی میت پر رحم کی دعا کرنے اور ان سے تعزیت کرنے آئی تھی۔

عرد بن حزم نبي كَالْتُلِعُ سے روايت كرتے بين آب نے فرمايا:

''جومومن اینے کسی بھائی سے اس کی مصیبت پر تعزیت کرتا ہے تو روز قیامت اللہ

اے عزت کا جوڑا پہنائے گا۔'' 🛈

الله آپ پر رحم فرمائے جان لیجے کہ تعزیت صرکی تلقین کرنا اور ایس باتیں کرنا ہے جس ہے میت دالے توللی ہو۔اس کاغم ہلکا ہواوراس کی مصیبت آسان ہؤاور بیمستحب ہے کیونکہ سے

> 🛈 ابن ماحه 🛈 ترمذی

امر بالمعروف اور نہی عن المنكر پر شتمل ہے اور بیاللہ تعالیٰ کے اس فرمان میں داخل ہے:

((و تعانوا على البرو التقوى)) نيكي اورتقوي من ايك دوسر ـ سے تعاون كرو\_''

اور پیسب سے احسن ہے جس سے تعزیت میں استدلال کیا گیا ہے۔

جان لیجئے کہ تعزیت۔''صبر کرنے کا حکم دیتا ہے۔'' بیدفن سے پہلے اوراس کے بعدمتحب ہے۔امام شافعی " کے پیروکاروں نے کہا: پیمیت کے فوت ہونے سے لے کر دفن کے تین دن بعد تک رہتی ہےاور جارے اصحاب نے کہا ہے: تین دن کے بعد تعزیت کرنا مکروہ ہے کیونکہ تعزیت پریثان دل کوسکون فراہم کرتی ہےاور غالب طور پر دل کوتین دن بعد سکون مل جاتا ہے ً اس لئے اس کے خم کو نیا اور تاز ہنیں کرنا جا ہیں۔جمہورعلاءاور ہمارےاصحاب نے اس طرح کہا

ہمارے اصحاب میں سے ابوالعباس نے کہا: تین دن کے بعد تک بھی تعزیت کرنے میں کوئی حرج نہیں بلکہ بیتو ہمیشہ رہتی ہے خواہ کتنا ہی وقت گزر جائے۔النوویؒ نے فرمایا: مخار مذہب یہی ہے کہ دوصورتوں کے سواتین دن کے بعد تعزیت نہ کی جائے 'یہ استثناء جمارے اصحاب نے کیا ہے۔ اور وہ دوصورتیں میہ ہیں: جب تعزیت کرنے والا یا مصیبت :الا تخص دفن کے وقت موجود نہ ہواوراس کی واپسی تین دن کے بعد ہوئی ہواور تعزیت دفن بے بعد وفن کے پہلے سے افضل ہے کیونکہ اہل میت اس کی جمہیز و تکفین میں مصروف ہوتے ہیں اور اس لئے بھی کہ اس کے وفن کرنے کے بعد اس کی جدائی کی وجہ سے ان کی پریشانی میں اضافہ ہو جاتا ہے بشرطیکهان میں جزع فزع نه دیکھی جائے لیکن اگرایی صورت حال ہوتو پھرتعزیت پہلے بھی کی جاسكتى بتاكه انبين سكون ہو۔ والله اعلم

تعزیت کے لئے بیٹھنا ناپندیدہ امرے یعنی یہ کداہل میت کسی گھرییں جمع ہوں تا کہ جو شخص تعزیت کرنا جاہے وہ ان تک پہنچ سکے تعزیت کے الفاظ مشہور ہیں' اور بہتر الفاظ'جن سے تعزیت کی جائے وہ ہیں جواسامہ بن زیدرضی الله عنهما بیان کرتے ہیں: رسول اللهُ مَا لَيْتُوَا کی کسی بیٹی نے آپ کی طرف قاصد بھیجا تا کہ وہ آپ کو بتائے کہ ان کا بیٹا (آپ علیہ السلام کا نواسہ) 

''ان کے پاس جاؤاور انہیں بتاؤ کہ اللہ کی ملکت ہے جواس نے لے لیا' اوراس کا ہے جواس نے مطاکیا تھا اور ہر چیز کا اس کے ہاں ایک وقت مقرر ہے۔ انہیں تھم دو کے مبرکریں اور ثواب کی امیدر کھیں۔''

النوویؒ نے فرمایا: بیحدیث اسلام کے عظیم قواعد میں سے ہے جو بہت سے اہم اصول دین اس کی فروعات آ داب تمام مصائب پر صبر عم نیماریوں اور ان کے علاوہ کئی اغراض پر مشمل سب

آ پِئُلِیْ اِللَّهِ الله کَالله ما اخذ)) کامعنی یہ ہے کہ تمام عالم الله کی ملکیت ہے۔ اس نے تمہاری تو کوئی چیز نہیں کی ملکہ اس نے تو وہی چیز کی ہے جواس کی تمہارے پاس عاریۃ تھی۔

(ولہ ما اعطی)) اس نے جو چیزتمہیںعطا کی ہے دہ بھی اس کی مکیت سے خارج نہیں' بلکہ وہ اس سجانہ و تعالٰی کی ملکیت ہے وہ اس میں جیسے جا ہے کرتا ہے۔

(و کل شئ عندہ باجل مسمی)) پستم جزع فزع نہ کرو کیونکہ وہ چیز جس کے قبضے میں تھی اس نے اس کی مقرر مدت ختم کر دی اس سے تقدیم و تاخیر محال ہے کیس جب تم نے سے سب کچھ جان لیا تو پھر جومصیبت تم پر آئی ہے اس پرصبر کرواور ثواب کی امیدر کھو۔واللہ اعلم

معاویہ بن ایاس اپ والد سے روایت کر نے بین وہ نی مُنَافِیْنِ کے روایت کرتے بیں کہ آپ نے ایک صحابی کو گم پایا تو آپ نے اس کے بارے میں پوچھا تو صحابہ نے عرض کیا اللہ کے رسول! اس کا بیٹا جو آپ نے ویکھا ہے وہ ہلاک ہوگیا ہے۔ پس نجی مُنَافِیْنِ اس سے مطح تو اس سے اس کے بیٹے کے بارے میں پوچھا تو اس نے آپ کو بتایا کہ وہ تو ہلاک ہوگیا ہے۔ آپ

''اے فلاں! مجھے کون کی چیز زیادہ پسند ہے یہ کہتم اپنی عمر میں اس سے فائدہ اٹھاتے یا کل تم جنت کے جس بھی دروازے پر جاؤتو اسے اپنے سے پہلے وہاں پاؤجو تمہارے لئے اس (دروازے) کو کھولے؟'' اس نے عرض کیا' اللہ کے نبی! وہ مجھ سے پہلے جنت میں چلا جائے اور وہ میرے لئے اس کا دروازہ کھولے تو یہ مجھے زیادہ

نے اس نے تعزیت کی اور پھر فر مایا:

+ (296 عاب الكبائر (296 عليه (296 عليه الكبائر (296 عليه الكبائر (296 عليه الكبائر (296 عليه (296 عليه الكبائر (296 عليه (296 عل

ہندہے۔''

آپ نے فرمایا: '' تمہارے لئے وہی ہے۔'' عرض کیا گیا' اللہ کے رسول! میصرف اس کے لئے خاص ہے یاتمام مسلمانوں کے لئے عام ہے؟ آپ نے فرمایا:

"بلكة تمام سلمانوں كے لئے عام ہے۔"

"صرتو پہلے صدمہ کے وقت ہے۔"

لین صبر تو اچا تک مصیبت کے آنے پر کیا جاتا ہے اور جواس کے بعد ہوتا ہے وہ تو طبعی طور پرتسلی ہوجاتی ہے۔

صحیح مسلم میں ہے۔ ابوطلحہ ڈاٹٹو کا امسلیم رضی اللہ عنہا کے بطن سے پیدا ہونے والا بیٹا فوت ہوگیا۔ تو اس نے اپنے اہل ہے کہا کہ ابوطلحہ کونہیں بتاناحتیٰ کہ میں ہی انہیں بتاؤں گی۔ ابو طلحہ تشریف لائے تو انہوں (امسلیم) نے انہیں کھانا چیش کیا' انہوں نے کھانا کھایا اور پانی وغیرہ پیا۔ پھرام سلیم نے اپنے آپ کونوب آراستہ کیا' اس طرح کے اس سے پہلے انہوں کھی اپنے حرات الكبائر كتاب الكبائر كيا تها پس انهوں نے ان سے تعلق زن وشوقائم كيا۔ جب ام سليم نے اپ كوا سے آ راسة نہيں كيا تها پس انهوں نے ان سے تعلق زن وشوقائم كيا۔ جب ام سليم نے د يكھا كدوہ سير ہو گئے ہيں اوران سے بھی تعلق قائم كرليا ہے تو كہا ابوطلحہ! مجھے بتا كيس كدا كركسى نے گھر والوں سے كوئى چيز عاربية كى ہواور پھروہ گھر والے اپنى اس چيز كا مطالبہ كريں تو كيا ان كو حتى پنچتا ہے كہ وہ ان كوروكيس اور وہ چيز واپس نہ كريں۔ ابوطلحہ نے كہا: نہيں۔ ام سليم رضى الله عنها نے كہا: پھرا ہے بيٹے كے بارے ہيں ثواب كى اميدر كھو۔

رادی بیان کرتے ہیں۔ابوطلحہ تو ناراض ہوگئے اور کہاتم نے مجھے بتایا بی نہیں حتی کہ میں
آلودہ ہوگیا تو پھرتم نے مجھے میرے بیٹے کے متعلق بتایا ہے۔اللہ کی قسم! تم صبر کے بارے میں
مجھ پر غالب نہیں آؤگی۔ پس وہ چلے گئے حتی کہ رسول اللہ طَالَّةُ اللّٰہِ کَا بِس آئے آپ کو پوراواقعہ
بتایا تو رسول اللہ مَا اللّٰہُ عَلَیْ فرمایا ''اللہ تم دونوں کے لئے تمہاری رات میں برکت فرمایے ''
(الحدیث)

صدیث میں ہے: ''کسی کو صبر سے زیادہ بہتر اور زیادہ وسیع عطیہ نہیں دیا گیا۔' علی نے الھدف بن قیس سے فرمایا: اگرتم نے ایمان اور ثواب کی نیت سے صبر کیا (تو ٹھیک) ورنہ پھرتم چو پاؤں کی طرح تسلی حاصل کرو گے (یعنی وقت گزرنے کے ساتھ ساتھ تی تو آ جاتی ہے لیکن صبر کا اجز نہیں ملتا) کسی دانا ہخص نے کسی مصیبت زدہ شخص کو خط لکھا: وہ چیز تو تم سے چلی گئی جس کی وجہ سے تہمیں تکلیف پنچی ہے لیکن وہ چیز جوتم پر چیش ہوئی ہے وہ نہ جانے پائے اور وہ اجر ہے۔
کسی دوسر شے خص نے کہا: عاقل محض ایام مصیبت کے پہلے روز ہی وہی پچھ کرتا ہے جو جابال یا نے دن بعد کرتا ہے۔

میں نے کہا: بیمعلوم ہوگیا کہ دقت گزرنے کے ساتھ ساتھ مصیبت زدہ مخص کوٹسلی ہو جاتی ہے اس لئے شارع نے پہلے صدمے کے دقت صبر کرنے کا حکم فر مایا:

امام شافعی ہُیَنیٰڈ کوخبر پہنچی کہ عبدالرحمٰن بن مہدی ہُینیڈ کا بیٹا فوت ہو گیا ہے اور عبدالرحمٰن نے اس پر بہت زیادہ جزع کی ہے۔تو شافعیؒ نے ان کی طرف پیغام جیعجے ہوئے فر مایا: میرے بھائی!اپ آپ کوٹسلی دوجس طرح تم کسی کوٹسلی دیتے ہواورا پے فعل کوبھی ویسے ہی فہیج جا نوجس طرح تم اپنے علاوہ کسی کے فعل کوفیج جانتے تھے۔ جان لیجئے کہ سب سے بڑی مصیبت راحت و

حرات الکبائر کی ہے تو پھر وہ مصیبت کسی ہوگی کہ یہ دونوں چیزیں گناہ کے سرور کا چلے جانا اور اجر سے محروی ہے تو پھر وہ مصیبت کسی ہوگی کہ یہ دونوں چیزیں گناہ کے ساتھ جمع ہوجا ئیں؟ پس میرے بھائی! اپنا حصہ حاصل کر جبکہ وہ تیرے قریب ہے اس سے پہلے کہ تم اسے طلب کرو اور وہ تم سے دور چلا جائے۔مصائب کے وقت اللہ تعالی تمہیں صبر عطا فرمائے۔ ہمارے اور اپنے لئے صبر کے ذریعے اجر محفوظ کر۔ آپ نے ان الفاظ کے ساتھ اسے خطاکھا:

إنسى معزيك لا أنسى عبلى ثقة من السحياة ولكن سنة الدين في ما المُعَزِّى ولو عاشا إلى حين في ما المُعَزِّى ولو عاشا إلى حين "مين تم ساتع يت كرتا بول أس لي نبيس كرندگى پروثو تى واعتاد م بلكدين كى من "مين تم "

''جس کوتسلی دی جارہی ہے وہ بھی اس کی موت کے بعد باقی رہے گا اور نہ ہی تعزیت کرنے والا باقی رہے گا خواہ وہ کچھمدت زندہ رہ لے۔''

سنی آ دمی نے اپنے کسی بھائی کو اس کے بیٹے کی وفات پر تعزیت کا خط لکھا: امابعد! بیٹا اپنے والد پڑ جوزندہ رہے توغم اور اس کا فتنہ ہے' پس جب وہ اس سے پہلے چلا گیا تو دعا اور رحمت ہے' پس جوفوت ہو گیا اس کے غم اور اس کے فتنے پڑغم نہ کھا اور اللہ تعالیٰ نے اس کی دعا اور رحمت سے عوض میں جو تخفے دیا ہے اس کوضائع نہ کر۔

موی بن مہدی نے ابراہیم بن سلمہ سے فر مایا اور اس کے بیٹے کی اس سے تعزیت کی: کیا حمہیں پیند ہے کہ وہ آز مائش اور فتنہ ہوتا اور اس نے تمہیں غم زدہ کیا جبکہ وہ دعا اور رحمت ہے؟ کسی آ دمی نے کسی آ دمی سے تعزیت کی تو کہا: بے شک جو تیرے لئے آخرت میں اجر ہے وہ اس سے بہتر ہے جو تمہارے لئے دنیا میں سرور وفرحت ہے۔عبداللہ بن عمر سے مروی ہے کہ انہوں نے اپنے بیٹے کو وفن کیا بھر قبر کے پاس بننے تو ان سے کہا گیا' آپ قبر کے پاس ہنتے ہیں؟ انہوں نے فرمایا: میں شیطان کو ذلیل کرنا چاہتا ہوں۔

ا بن جرتے بڑائٹڑنے فرمایا: جو تحض اپنی مصیبت کواجر وثواب سے قبول نہیں کرتا تو دہ ایسے ہی تسلی پا تا ہے جیسے چو پائے تسلی حاصل کرتے ہیں۔ حمیدالاعرج بیان کرتے ہیں میں نے سعید بن

حراث کتاب الکبائر کی است کے بارے میں کہدرہے ہیں اور انہوں نے اس کی طرف جبیر بڑائٹ کو دیکھا کہ وہ اپنے بیٹے کے بارے میں کہدرہے ہیں اور انہوں نے اس کی طرف دیکھا: میں تم میں بہترین دوئ جانتا ہوں 'پوچھا گیا وہ کیا ہے؟ فرمایا موت کے ساتھ میں اس سے ثواب کی امید کرتا ہوں۔

حسن بھریؒ سے مردی ہے: کسی آ دمی نے اپنے بیٹے پڑنم کیا اوراس بارے میں ان سے شکایت کی توحس نے فرمایا: تیرابیٹاتم سے غائب رہا کرتا تھا؟ اس نے کہا: جی ہاں اس کا غائب رہنا اس کے حاضر رہنے سے زیادہ تھا' انہوں نے کہا' اسے غائب بی رہنے دو'وہ تم سے غائب نہیں ہوا' الایہ کہاس میں تمہارے لئے اس سے زیادہ اجر ہے۔اس نے کہا: ابوسعید! آپ نے میرے بیٹے پرمیر نے کم کو ہلکا کردیا۔

عمر بن عبدالعزیز این بیٹے کے پاس اس کی تکلیف میں گئے تو کہا: بیٹیا! اپنے آپ کو کسے پاتے ہو؟ اس نے کہا: میں اپنے آپ کوئی (موت کی حالت) میں پاتا ہوں انہوں نے کہا: بیٹے! بید کہتم میری میزان میں ہو جھے اس سے زیادہ پند ہے کہ میں تیری میزان میں ہوں۔اس نے کہا: ابا جان! آپ کی پند کا ہو جانا' میرے نزدیک میری پند کے ہوجانے سے' جھے زیادہ پندے۔

امام شافعی کابیافوت ہواتوانہوں نے پیشعر پڑھے۔

وما الدهر إلا هكذا فاصطبر له رزية مسال أو فسراق حبيب "
" زمانه تو اى طرح ہے كي اس پرصرك مال كى مصيبت و پريثانى ہو يامجوب كى جدائى۔"
جدائى۔"

عروہ کے پاؤل پرجلد کا زخم ہوگیا تو انہول نے اس کو پنڈلی سے کاٹ دیا کسی نے ان کو پکڑانہیں تھا حالانکہ وہ بوڑھے آ دمی تھے اور انہول نے اس رات کا ورد وظیفہ بھی نہیں چھوڑ البس انہوں نے اتنا کہا: ﴿لقد لقینا من سفو نا ہذا نصبا﴾ (الحهف: ٦٢)

"جم اس سفر میں بہت تھک گئے ہیں۔"

لعمرى ما أهويت كفًى لريبة ولا نقلتنى نحو فاحشة رجلى ولا قادنى سمعى ولا بصرى لها ولادلنى رأيى عليها ولا عقلى

**→ (300 ) + (33) + (33) + (33)** + (33) + (

و اعلم أنسى لم تصب مصيبة من الدهر إلا قد أصابت فتى قبلى "دميرى عمرى قتم إمين في كسى مشكوك كام كي طرف التحديثين بزهايا اورمير عياؤل محمد بيديائي كي طرف لي كرنبين كئية."

"میرے کانوں اور میری آتھوں نے میری اس طرف راہنمائی نہیں کی اور میری رائے اور میری دائے اور میری دائے اور میری مقل نے اس پر مجھے راہ نہیں نگایا۔"

'' میں جانتا ہوں کہ زمانے ہے کوئی مصیبت مجھے پنجی ہو وہ مجھ سے پہلے کسی کو پینچ چکی ہے۔''

اوروہ (عروہ) بیان کرتے ہیں: اے اللہ! اگر تو نے آزمائش سے دو چار کیا ہے تو عافیت بھی تو نے دی ہے اگر تو نے بچھ لیا ہے تو باقی بھی تو نے رکھا ہے تو نے ایک عضولیا ہے تو اعضاء باقی رکھے ہیں تو نے ایک بیٹالیا ہے تو بیٹے باتی چھوڑے ہیں۔

ای رات بوعس قبلے کا ایک تابینا آ دی ولید کے پاس آیا تو اس نے اس سے اس کی آئی موں کے بارے میں پوچھا تو اس نے بتایا: میں نے وادی میں ایک رات بسر کی میر علم میں نہیں تھا کہ کسی عبسی کا مال میر ہے مال سے زیادہ ہو پس رات کے وقت سیلا بآیا تو وہ ایک اونٹ اورا یک بچ کے سوامیر امال اورا اہل وعیال سب کو بہا کر لے گیا۔ اونٹ سر شھا پس وہ بھاگ کھڑا ہوا تو میں نے اس کا پیچھا کیا میں بچ سے تھوڑی بی دور گیا تھا کہ میں نے اس کی بیچھا کیا میں بچ سے تھوڑی بی دور گیا تھا کہ میں نے اس کی آواز سیٰ میں واپس آیا تو بچ کا سراس (اونٹ) کے پیٹ میں تھا پھر میں نے اونٹ کا پیچھا کیا تاکہ میں اسے پکڑوں تو اس نے اپنا پاؤں مجھے مارا جومیر سے چیرے پرلگا اس نے اسے پچل ڈالا اور میری آئی میں اسے کا کہ والی سے نہا ہوا تو ولید نے کہا: اسے عروہ کے پاس لے جاؤ تا کہ اسے پتہ چلے کہ زمین میں اسے بچہ ہے کہ ذمین میں اسے بی جواس سے زیادہ تکلیف اور آ زمائش میں ہیں۔

بیان کیاجاتا ہے کہ جب عثان ڈاٹٹز کو ڈووکوب کیا گیا تو انہوں نے اس حال میں کہخون ان کی داڑھی پر بہدر ہا تھا' دعا کی '' تیر ہے سوا کوئی معبود نہیں' تو پاک ہے' میں ہی ظالموں میں ہے تھا'ا ہے اللہ!ان کے خلاف میں تجھ سے مدد طلب کرتا ہوں اور میں اپنے تمام امور پر تجھ سے

مدوطلب کرتا ہوں اور تو نے جو میری آ زمائش کی ہے اس پر تجھ سے صبر کی درخواست کرتا ہوں۔
المدائن نے فرمایا: میں نے جنگل میں انتہائی نرم و نازک اور حسین ترین خاتون دیکھی تو میں نے کہا: اللہ کی تشم! تم اعتدال وسرور کی وجہ سے اس طرح ہو۔ اس نے کہا: ہرگز نہیں اللہ کی قتم! میں تو غموں کی انتہا ہوں اور میر ہے دامن میں رنج وغم ہیں میں ابھی تمہیں بتاتی ہوں: میرا خاوند تھا اور میر ہے اس سے دو بیٹے تھے۔ ان کے والد نے عیدالانتی کے دن ایک بکری ذبح کی جاس وقت بچھیل رہے تھے ان کے والد نے عیدالانتی کے دن ایک بکری ذبح کی جبداس وقت بچھیل رہے تھے تو ہوئے کی جاس نے کہا: کیا تم چاہتے ہو کہ میں تمہیں بتا وی کہ میر ہو اللہ نے اسے ذبح کی جاس نے کہا: کیا تم چاہتے ہو کہ میں تمہیں والا جب اس نے خون دیکھا تو وہ جزع فزع کرتا پہاڑ کی طرف گیا تو بھیڑ ہے نے اسے ذبح کی اس کے دولا ہے کھالیا۔
اس کا والد اس کی تلاش میں نکلا تو اس کا باہے بھٹک گیا اور وہ پیاسا ہی فوت ہوگیا' اس طرح نمانے نے نہا تا چھوڑ دیا۔ میں نے اسے کہا: آپ کو کسے صبر آیا؟ اس نے کہا: اگر وہ ہمیشہ نمانے نے کہا: اگر وہ ہمیشہ میرے ساتھ رہتا تو میں اس کے لئے ہمیشہ رہتی لیکن وہ ایک زخم تھا جو مندمل ہوگیا۔

ابن عباس بیان کرتے ہیں میں نے رسول اللہ مکا تی ہوئے ہوئے سان میری امت میں ہے۔ جس شخص کے دو چھوٹے بیچ فوت ہوجا کیں تو وہ جنت میں داخل ہوگا۔' تو عا کشہر ضی اللہ عنہا عرض کیا: میرے والدین آپ پر قربان ہوں' جس کا ایک بچ فوت ہوجائے؟ آپ مکا تیکے عنہا عرض کیا: تو آپ کی امت سے جس کا نے فرمایا: ''موفقہ! جس کا ایک بچ فوت ہوا ہو۔'' میں نے عرض کیا: تو آپ کی امت سے جس کا ایک چھوٹا بچ بھی فوت نہ ہوا ہو؟ آپ نے فرمایا: ''میں اپنی امت کا چیش رو ہوں' انہیں مجھ جیسی کیلف نہیں بینچی۔'' ()

ابوعبیدہؓ اپنے والد ہے روایت کرتے ہیں انہوں نے کہا: رسول اللّٰدمُّلَاثِیَّۃُ نے فرمایا:''جس کے تین نابالغ بچے فوت ہوجا کیں تو وہ اس کے لئے جہنم ہے بچاؤ بن جا کیں گے۔''

تو ابو در داءرضی اللہ عنہ نے عرض کیا میرے دو بچے فوت ہوئے ہیں۔ آپ نے فر مایا: اور دوبھی ۔''سید القراء الی بن کعبؓ نے عرض کی ۔میر اا یک بچیفوت ہوا ہے۔ آپ مَلَّ اللَّیُمُّ اِنْ فَر مایا: اورا یک بھی''لیکن وہ تب ہے کہ وہ پہلے صدمے پرصبر کرے۔''

① ترمذی

کتاب الکبائر کی ایرائیم الحربی ایرائیم الحربی کاوس سال کابینا تھا۔اس نے قرآن مجید حفظ کیا اور فقہ وصدیث میں بہت سا تفقہ کیا لیس وہ فوت ہوگیا تو میں ان سے تعزیت کے لئے آیا تو انہوں نے جھے کہا: میں اپنے اس میٹے کی موت کی خواہش رکھتا تھا میں نے کہا: ابواسخی! آپ تو دنیا کے عالم ہیں آپ اس طرح کی بات کرتے ہیں؟ وہ شریف بچیھا' اس نے قرآن مجید حفظ کیا اور فقہ و حدیث میں تفقہ کیا۔انہوں نے کہا: بان میں نے خواب میں دیکھا کہ قیامت قائم ہو چک ہواور گویا کہ بچے ہیں ان کے منظے ہیں دہ لوگوں کا استقبال کرتے ہیں اور انہیں پانی کے منظے ہیں دہ لوگوں کا استقبال کرتے ہیں اور انہیں پانی پلاتے ہیں اور وہ دن بہت شدید گرمی کا دن تھا' وہ کہتے ہیں میں نے ان میں سے ایک سے کہا: اس پانی سے جھے بھی پلاؤ' وہ کہتے ہیں' اس نے میری طرف دیکھا اور جھے کہا: ہم وہ بچے ہیں جو اسلام کی حالت میں فوت ہوئے۔'' اور اپنے باپ چھے چھوڑ آئے' ہم ان کا استبقال کرتے ہیں اسلام کی حالت میں فوت ہوئے۔'' اور اپنے باپ چھے چھوڑ آئے' ہم ان کا استبقال کرتے ہیں اسلام کی حالت میں فوت ہوئے۔'' اور اپنے باپ چھے چھوڑ آئے' ہم ان کا استبقال کرتے ہیں اور انہیں یانی پلاتے ہیں وہ کہتے ہیں میں اس لئے اس کی موت کی تمنا کرتا ہوں۔

ابوحسان بیان کرتے ہیں میں نے ابو ہر برہ ا ہے کہا آپ ہمیں کوئی حدیث سنا کیں جس ے آپ ہمارے فوت شدگان کے متعلق ہمیں خوش کر دیں انہوں نے کہا: ہاں ان کے چھوٹے یجے جنت کے دعامیس (چھوٹے چھوٹے حشرات) ہوں گۓ ان میں سے ایک اپنے والدیا فر مایا اینے والدین سے ملا قات کرے گا وہ اس کے کپڑے یا فر مایا اس کے ہاتھ سے پکڑ کراسے جنت میں لے جائے گا۔ مالک بن دینارٌ بیان کرتے ہیں' میں اپنے پہلے حال میں لہو ولعب اور شراب نوشی میں منہ کے تھا۔ پس میں نے ایک لونڈی خریدی میں اس سے لطف اندوز ہوتا۔''اس نے ایک بیٹی کوجنم دیا میں اس سے بہت زیادہ محبت کرتا تھا، یہاں تک کدوہ چلنے لگی پس جب میں شراب نوثی کے لئے میٹھتا تو وہ آتی اور مجھ کواس رکھیجتی اوراہے میرے سامنے گرادیتی۔ جب وہ دو برس کی ہوئی تو وہ فوت ہوگئی تواس کے رخج وغم نے مجھے دکھی بنادیا' وہ بیان کرتے ہیں کہ جب شعبان کی نصف رات ہوئی تو میں شراب سے مدہوش تھا۔ میں نے خواب میں دیکھا کہ گویا کہ قیامت قائم ہوگئی ہے میں اپنی قبرے نکلا ہوں تو ایک بڑے اژ دھانے میرا پیچھا کیا ہے اور وہ مجھے کھانا جا ہتا ہے'وہ بیان کرتے ہیں میں اس سے فرار ہوتا ہوں تو وہ میرا پیچھا کرتا ہے' میں تیز ہوتا تو وہ بھی میرے پیچھے تیز ہو جاتا ہے میں اس سے خوف زدہ ہوں۔ میں اپنے راستے میں

سفید کپڑوں میں ملبوس ایک ضعیف بزرگ کے باس سے گزرتا ہوں تو میں نے کہا:حضرت! الله ك لئ مجهاس الردهاس بيائيس جوكه مجهد كهانا اور مجهد بلاك كرنا حيابتا ب اس في كبا میرے بیج! میں بوڑھا آ دمی ہوں سی مجھ سے زیادہ طاقت ور ہے اس کا مقابلہ کرنے کی مجھ میں طاقت نہیں لیکن تم سفر جاری رکھواور جلدی کروشایہ کہ اللہ تعالی تنہیں اس سے نجات دے دی وہ بیان کرتے ہیں میں نے اور تیز دوڑ نا شروع کر دیا اور وہ میرے پیچھے ہی ہے میں نے آگ کے طبقات برجها نک کردیکھا'وہ جوش مار رہی تھی' قریب تھا کہ میں اس میں گر جاتا کہا تنے میں کسی نے کہا:تم میرے اہل سے نہیں کی میں دوڑتا ہوا دالی آیا تو اژ دھامیرے پیچھے ہی ہے۔ میں نے ایک روش پہاڑ کو دیکھا اس میں محرامیں ہیں اور اس پر دروازے اور پردے ہیں۔تو اسے میں کہنے والا کہتا ہے اس محتاج کو پکڑلواس سے پہلے کہ اس کا دشمن اسے پکڑ لے۔ دروازے کھول دیج گئے پردے اٹھادیئے گئے اور اس سے جا ندجیسے چہردل دالے بچوں نے مجھے جھا نکا میر می بیٹی بھی ان کے ساتھ تھی۔ جب اس نے مجھے دیکھا تو وہ نور کے ایک پلڑے کی طرف اتری اس نے اپنے دائیں ہاتھ سے اژ دھا کو مارا تو وہ بھا گ کروا پس چلا گیا اور وہ میری گود میں بیٹھ گئ اور كها:ابا جان!

﴿ اَلَمْ يَانِ لِلَّذِيْنَ امَنُوْ آ اَنُ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكُوِ اللَّهِ وَمَا َقُرُّلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَاالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتابَ مِنْ قَبُلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَنِيْرٌ مِّنْهُمْ فَلِيقُونَ ۞ (الحديد: ٦١)

'' کیا ان لوگوں کے لئے جوامیمان لا چکے ہیں' وقت نہیں آیا کہان کے دل اللہ کی یا د اور اس کتاب کے لئے جواللہ برحق کی طرف سے نازل ہوئی ہے جھکیس''

میں نے کہا: پیاری بیٹی! کیاتم قرآن جانتی ہو؟ اس نے کہا: ہم تم سے زیادہ اسے جانتے ہیں۔ میں نے کہا' بیٹی! تم یہاں کیا کرتے ہو؟

اس نے کہا: ہم مسلمانوں کے فوت شدہ بچے ہیں۔ہم روز قیامت تک یہبیں رہیں گے۔ ہم تمہارے آنے کا انتظار کرتے ہیں۔ میں نے کہا: میٹی! بیا ژدھا کیا تھا جو مجھے بھگا رہا تھا اور مجھے ہلاک کرنا چاہتا تھا؟ اس نے کہا: ابا جان! وہ آپ کے برے اعمال تھے جنہیں آپ نے بونے والوں میں سے نہ ہوں۔ وہ بیان کر طاقت نہیں تھی پس آ پاللہ کے حضور تو ہر کر میں اور ہوا کہ کا کہا ہے۔

اللہ کے میں اور موہ آپ کو ہلاک کرنا چاہتا تھا۔ میں نے کہا وہ کمز ور عمر رسیدہ فخض کون تھا جس کو میں نے ویکھا تھا؟ اس نے کہا: وہ آپ کاعمل صالح تھا جس کو آپ نے کمز ور کر دیا تھا جی کہاں میں آپ کے برے مل کا مقابلہ کرنے کی طاقت نہیں تھی پس آپ اللہ کے حضور تو ہر یں اور ہلاک ہونے والوں میں سے نہ ہوں۔ وہ بیان کرتے ہیں' پھر وہ مجھ سے اٹھا کی گئے۔ میں بیدار ہوا تو میں نے اسی وقت اللہ کے حضور تو ہدکی۔

اللہ آپ پر رحم فرمائے! اولا د کی برکت دیکھو جب وہ چھوٹی عمر میں فوت ہوجائیں' خواہ وہ نذکر ہوں یا مونث اور ان کی وجہ سے والدین کو آخرت میں فائدہ ہوگا بشرطیکہ وہ صبر کریں اور ثواب کی امیدرکھیں اور وہ کہیں: ((المحصلہ لللہ انبا لللہ و انبا الیہ د اجعون)) پس اللہ نے اپنے فرمان میں جو دعدہ کیا ہے وہ اسے حاصل کرلیں گے۔

﴿ الَّذِينَ إِذَاۤ اَصَابَتُهُمُ مُّحِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ ﴾ (البقرة)

"جب أنهيس كوكى مصيبت بهنيحق بتووه كهتم بين بهم الله سے لئے بين-"

یعنی ہم اور ہمارے اموال اللہ کے لئے ہیں وہ ہمارے ساتھ جو جا ہے کرسکتا ہے ﴿وَإِنَّا لِلَّٰهِ وَإِنَّاۤ اِلَیْهِ رَاجِعُونَ ﴾ اور ہم اس کی طرف لوشنے والے ہیں ہلاک وفنا کا اقرار۔

توبان بيان كرتے بين رسول الله مَثَالَيْظُ لَهُ فَرمايا:

''بندے کو دومیں ہے کسی ایک خصلت کے باعث کوئی تکلیف بینچتی ہے یا تو کسی گناہ کی وجہ سے کہ اللہ نے اس مصیبت ہی کی وجہ سے اسے بخشا تھا یا کسی درجے کی وجہ ہے کہ اللہ نے اسی مصیبت ہی کی وجہ سے اس کو وہاں تک پہنچانا تھا۔''

سعید بن جبیرٌ فرماتے ہیں:اس امت کومصیت کے وقت ایک ایسا کلمہ عطا کیا گیا ہے جو ان سے پہلے انبیاء کیبیم السلام کوبھی نہیں دیا گیاوہ ہے: ﴿إِنَّا لِلَّٰهِ وَإِنَّا اِلْکَیْهِ وَاجْعُونْنَ ﴾

اگریچلمه انبیاء علیم السلام کودیا جاتا توبید یعقوب علیه السلام کوعطا کیا جاتا جب انہوں نے سکہا تھا۔

﴿ يَلَ سَفَى عَلَى يُوسُفَ ﴾ (يوسف: ٨٤)

" بائے بوسف! افسوں۔"

امسلمه رضى الله عنها بيان كرتى بين بين في نول الله مَنْ الله مَنْ اللهُ مَا اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ وَاللّ "جوفض مصيبت كوفت بيدعا يزهه: ﴿إِنَّا لِللَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ وَاجعُونَ ﴾ الالله!

'' جو حص مصیبت کے وقت بید عا پڑھے: ﴿ إِنَّا لِللَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴾ اے اللّٰد! میری مصیبت میں مجھے اجرعطا فر ما اور مجھے اس سے بہتر بدل عطا فرما۔ تو اللّٰد اس کو

اجرعطافرماتا ہے اوراس کواس ہے بہتر بدل و جاشنین عطافر مادیتا ہے۔''

وہ (امسلمہ ) بیان کرتی ہیں: جب ابوسلمہ ؓ وفات پا گئے تو میں نے کہا: ابوسلمہ سے بہتر کون ہے؟ پھر میں وہ دعا پڑھتی رہی تو اللہ نے مجھے رسول اللّٰہ مَا ﷺ محطا فرما دیئے۔

شعی سے روایت ہے کہ شریح سے فرمایا: مجھے مصیبت پہنچی ہے تو میں اس پر چار مرتبہ اللہ کی حمد بیان کرتا ہوں کہ وہ اس (پیش آمدہ مصیبت) سے بوئی اللہ کی حمد بیان کرتا ہوں کہ وہ اس (پیش آمدہ مصیبت) سے بوئی نہیں میں اس کی حمد بیان کرتا ہوں کہ اس نے مجھے اس پر صبر کرنے کی توفیق عطا فرمائی میں اس کی حمد بیان کرتا ہوں کہ اس نے مجھے ﴿ اِنَّ لِلّٰهِ وَ اِنَّ اللّٰهِ وَ اِنَّ لِلّٰهِ وَ اِنَّ اللّٰهِ وَ اِنْ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ وَاللّٰهُ وَ اللّٰهُ وَاللّٰهُ وَالل

الله تعالى كا فرمان:

﴿ اُولَٰإِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ. ﴾

الله كى طرف سے ' الصلات' سے مرادر حمت و مغفرت ہے۔

﴿ وَ أُولَٰ إِلَىٰ هُمُ الْمُهُتَدُونَ ٥ ﴾ (البقرة / ٢: ١٥٧)

وہلوگ جنہیں ﴿إِنَّا لِللّٰهِ وَإِنَّاۤ اِلَیْهِ رَاجِعُونیۤ﴾ کہنے کی راہنمائی مل گئی اور بیقول بھی ہے کہاس سے مراد جنت اور ثواب کی طرف راہنمائی ہے۔

سعید بن کسیب مربن مطاب سے روایت رہے ہیں ہوں سے روایت اور یہ ہیں اور زائد صلہ بہترین ہے۔ م

﴿ اُولَٰ إِكَ عَلَيْهِمْ صَلَواتٌ مِّنْ رَبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ . ﴾ يددوبدل حق واجب بهترين بيس ـ ﴿ وَ اُولَٰ إِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ لِيَهِمْ ﴾ (البقرة / ۲: ۱۵۷) يدبهترين زائدصله بـاورر با و فض جومصيبت كـوقت تباي وبربادي بكارتا بـايد وشنار پيلتا بـاير كبان جاك كرتا بـيا ← کتاب الکبانر
 بال بھیرتا ہے یا بال مونڈ تا ہے یا اکھاڑتا ہے تو اس پر اللہ تعالیٰ کی طرف سے ناراضی اور لعنت ہے وہ مرد ہویا عورت۔

یہ جمی مروی ہے کہ مصیبت کے وقت ران پر ہاتھ مار نے سے بھی اجر ضائع ہو جاتا ہے۔

یہ جمی مروی ہے کہ جس محف کوکوئی مصیبت پیش آ جائے وہ اس پر کپڑے پھاڑے یارخدار پیٹے یا

گریبان چاک کرے یا بال اکھاڑے تو گویا کہ وہ نیزہ ہے جس کے ذریعے وہ اپ رب سے
لڑائی کرنا چاہتا ہے اور یہ بھی بیان ہو چکا ہے کہ اللہ عزوجل آ کھ کے رونے اور دل کے ممکین

ہونے پرعذا بنہیں دیتالیکن وہ اس وجہ سے یعنی مصیبت زدہ محض کو جواپنی زبان سے میت کے
اوصاف بیان کر کے نوحہ کرتا ہے عذا ب دیتا ہے۔ اور یہ بھی بیان ہو چکا ہے۔ کہ میت پر نوحہ
کرنے کی وجہ سے اس کوعذا ب دیا جاتا ہے۔ جب نوحہ کرنے والی کہتی ہے: ہائے قوت بازو!
ہائے وہ ہددگار! ہائے لباس فراہم کرنے والے! وغیرہ وغیرہ میت کو کھینچا جاتا ہے اور اسے کہا
جاتا ہے: تو اس کا قوت بازو ہے؟ تو اس کا مددگار ہے؟ تو اسے لباس فراہم کرتا ہے اس میں قضا

#### حکایت:

صالح المری نے کہا: میں جمعہ کی رات قبرستان کے درمیان تھا تو میں سوگیا تو اچا تک قبریں پھٹ گئیں مردے ان سے نکل کر حلقے بنا کر بیٹھ گئے ان پر ڈھکی ہوئی طشتریاں اتریں۔ ان میں ایک نوجوان تھا جسے ان میں سے مختلف قسم کا عذا ب دیا جارہا ہے۔ وہ بیان کرتے ہیں میں اس کی طرف بڑھا اور کہا نوجوان! کیا وجہ ہے کہ ان لوگوں میں سے مجھے عذا ب دیا جا رہا ہے؟ اس نے کہا: صالح! مجھے اللہ کی قسم! میں جو تمہیں تھم دوں اس کا پہنچانا تم پر لازم ہے امانت ادا کرنا اور میری اجنبیت پر رحم کرنا شاید کہ اللہ عزوج ل تیرے ہاتھوں میرے لئے کوئی خلاصی کی سبیل بنا دے میری اجنبیت پر وحم کرنا شاید کہ اللہ عزوج ل تیرے ہاتھوں میرے لئے کوئی خلاصی کی سبیل بنا در نے میں جب فوت ہوا تو میری والدہ نے بین اور نوحہ کرنے والی جمع کیں وہ ہرروز مجھ پر بین اور نوحہ کرتی ہیں اور اس وجہ سے مجھے عذا ب دیا جا تا ہے۔ میری والدہ کی بری باتوں کی وجہ سے اور نوحہ کرتی ہیں اور اس وجہ سے مجھے عذا ب دیا جا تا ہے۔ میری والدہ کی بری باتوں کی وجہ سے آگ نے نے مجھے میرے دائیں میرے بائیں میرے بیجھے اور میرے سامنے سے گھرر کھا ہے۔

اللہ اسے میری طرف ہے اچھی جزانہ دے۔ پھروہ رونے لگاحتیٰ کہاں کے رونے کی وجہ ہے میں بھی رونے لگا۔ پھراس نے کہا: صالح! تم اس کے پاس ضرور جاؤوہ فلاں جگہ ہے اس نے مجھے جگہ بتا دی اور اسے کہو: اے ماں! تم اینے بچے کوئس لئے عذاب دیتی ہؤتم نے میری پروش کی اورتم نے مجھے تکلیفوں سے بیایا اور جب میں فوت ہو گیا تو تونے مجھے عذاب میں بھینک دیا۔ اے ماں!اگر تو مجھے دیکھ لے: کہ میری گردن میں طوق ہیں اور میرے یاؤں میں بیڑیاں ہیں اور عذاب کے فرشتے مجھے مارتے اور جھڑ کتے ہیں اگر تو میر ابرا حال دیکھتی تو مجھ پر رحم کرتی اور اگرتم نے نو حداور بین کی بیایٹی موجود ہ حالت ترک نہ کی تو پھراللّٰد میرےاور تیرے درمیان ہوگا جس دن آسان آسان سے بھٹ جائے گااور پوری مخلوق فیصلہ سننے کے لئے جمع ہوجائے گی۔ صالح نے کہا: میں گھبرا کر بیدار ہوا اور میں فجر تک بڑے قلق واضطراب کی حالت میں اینے گھر میں رہا' جب صبح ہوئی تو میں شہر میں گیا اور میرے نز دیک صرف اس نو جوان بیجے کی والدہ کے گھر کی اہمیت تھی' میں نے اس بارے میں راہنمائی لی اور وہاں پہنچا تو دیکھا کہ درواز ہ سیاہ کیا ہوا ہے اور بین کرنے اور نوحہ کرنے والیوں کی آوازیں باہر تک آرہی ہیں۔ میں نے دروازہ کھٹکھٹایا تو ایک بڑھیا باہرآئی اوراس نے کہا: اے تو کیا حیا ہتا ہے؟ میں نے کہا: میں نے اس نو جوان کی والدہ کو ملنا ہے جوفوت ہو گیا ہے۔اس نے کہا:تم نے اسے کیا کہناہے؟ وہ تو اپنے عُم میں مصروف ہے۔ میں نے کہا: اسے میرے پا<sup>س بھیجو'</sup> میرے پاس اس کے <u>بیٹے</u> کا خط ہےوہ اندرگئی اوراہے بتایا۔وہ ماں باہرآئی اس نے سیاہ کپڑے پہن رکھے تھے اور بہت زیادہ رونے اور رخسار پیٹنے کی وجہ سے اس کا چہرہ بھی سیاہ ہو چکا تھا۔اس نے مجھے کہا: تم کون ہو؟ میں نے کہا: میں صالح المری ہوں' میرے ساتھ گزشتہ رات قبرستان میں تیرے بیچے کے ساتھ یہ کچھ بیتا ہے۔ میں نے اسے عذاب میں ویکھا ہے وہ کہتا ہے: میری ماں! تم نے میری پرورش کی مجھے مشکلات سے بیایا اور جب میں فوت ہو گیا تو تم نے مجھے عذاب میں بھینک دیا اورا گرتم نے اپنی ید موجودہ حالت نہ چھوڑی تو پھرجس دن آسان آسان سے پیٹ جائے گا تو اللہ میرے اور تیرے درمیان فیصلہ کرے گا۔ جب اس نے بیسنا تو اس برغثی طاری ہوگئی اور زمین برگریڑی جب اے افاقہ ہوا تو وہ بہت زیادہ روئی اور کہا: میرے بیجے! مجھے پر بڑا شاق گز را' اگر میں تیرا

حال جانتی تو میں بھی ایسے نہ کرتی ' میں اس سے اللہ تعالیٰ کے حضور تو بہ کرتی ہوں پھروہ اندر گئی ' نو حدکرنے والیوں کو باہر نکال دیا' دوسرے کیڑے سینے اور مجھے ایک تھیلی دی جس میں بہت سے درہم تھے اور کہا: صالح! میرے بیچے کی طرف سے انہیں صدقہ کر دو۔ پس میں نے اس کوآ رام و سکون میں چھوڑ ا' اس کو دعا کمیں دیں اور پھر و ہاں ہے جلا آیا' اور میں نے وہ درہم اس کے بیچے کی طرف سے صدقہ کر دیئے جب جمعہ کی دوسری رات آئی تو میں اپنے معمول کے مطابق قبرستان گیا اورسو گیا۔ میں نے اہل قبور کو دیکھا کہ وہ اپنی قبروں سے نکلے اور اپنے معمول کے مطابق بیٹھ گئے اطباق (طشتریاں) ان کے یاس آئیں تب وہ نوجوان مسکرار ہاتھا اور بہت فرحت وسرور میں تھااس کے پاس بھی ایک طشتری آئی تواس نے اس کو پکزلیا۔ جب اس نے مجھے دیکھا تو میرے پاس آیا اور کہا: صالح! اللہ آپ کومیری طرف سے جزائے خیرعطا فرمائے۔ الله نے مجھ سے عذاب ملکا کر دیا ہے اور بیمیری والدہ کے اس کام (نوحہ) کوچھوڑنے کی وجہ سے ہے جووہ کیا کرتی تھی اور آپ نے میری طرف سے جوصدقہ کیا تھاوہ بھی مجھ تک پھنے گیا تھا۔صالح بیان کرتے ہیں' میں نے کہا: پیطشتریاں کیا ہیں؟ تو اس نے کہا: بیزندوں کےاپنے فوت شدگان کے لئےصد قات ٔ قراءت اور دعا کی شکل میں تحا نف ہیں جوہر جمعہ کی رات ان پر نازل ہوتے ہیں اورانہیں کہا جاتا ہے کہ بیفلاں شخص کی طرف سے تمہارے لئے تحفہ ہے۔میری والدہ کے پاس جانا اور اور میری طرف سے اسے سلام کہنا اور سے کہنا: الله میری طرف سے تمہیں جزائے خیرعطا فرمائے اورتم نے میری طرف سے جوصدقہ کیا ہے وہ مجھے پہنچ گیا ہے اورتم بھی عنقریب میرے پاس پہنچنے والی ہو پس تیاری کرو۔صالح کہتے ہیں پھرمیں بیدار ہوااور چندایام کے بعداس نو جوان کی والدہ کے گھر آیا تو دروازے پر ایک میت رکھی ہوئی تھی میں نے کہا یہ کس کی میت ہے؟ انہوں نے کہا: اس نو جوان کی والدہ کی میت ہے۔ میں اس کی نماز جنازہ میں شریک ہوا اور اس کو اس کے بیٹے کے بہلو میں اس قبرستان میں دفن کر دیا گیا۔ میں نے ان دونوں کے لئے دعائے خیر کی اور واپس آ گیا۔

ہم اللہ سے درخواست کرتے ہیں کہ وہ ہمیں مسلمان کی حالت میں فوت کرے ہمیں صالحین کے ساتھ ملائے اور ہمیں حہنم سے بچائے بےشک وہ تنی داتا اور شفیق ومہر بان ہے۔

# (۵۰)ظلم وزیادتی

الله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ إِنَّهَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظُلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْآرُضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ اُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَكِيْمُ ٥ (الشورى: ٢/٤٢)

''الزام تو ان پر ہے جولوگوں پرظلم کرتے ہیں اور ملک میں ناحق فساد پھیلا تے ہیں ۔ ان لوگوں کے لئے دردنا ک عذاب ہے۔''

عیاض بن حاد میان کرتے ہیں نی کا فیکم نے فر مایا

''اللہ نے میری طرف وحی کی ہے کہ تم تواضع اختیار کروحتیٰ کہ کوئی کسی برظلم کرے نہ کوئی کسی برخلم کرے نہ کوئی کسی برفخر کرے۔'' 🛈

اور کسی صحابی کا قول ہے: اگر کوئی پہاڑ کسی پہاڑ پرظلم کرے تو اللہ ان میں سے ظلم وزیادتی کرنے والے کوریز ہ ریز ہ کردے۔

ابوبكر بيان كرتي بي آب تَافَيْتُ لِم فرمايا:

''ظلم وزیادتی اورقطع رحی کےعلاوہ کوئی گناہ اس لائت نہیں کہ اللہ اس کے مرتکب کوونیا میں بھی سزاو ہےاوراس کےعلاوہ اس کوآخرت کے لئے بھی ذخیرہ کروے۔'' جب قارون نے اپنی قوم پرظلم کیا تو اللہ نے اس کوزمین میں دھنسادیا۔اللہ تعالیٰ نے اپنے

فرمان میں اس کا ذکر فرمایا:

﴿ إِنَّ قَارُونَ مِنْ قَوْمٍ مُوسَى فَبَغَى عَلَيْهِمُ وَ الَيْنَهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوا بِالْعُصْبَةِ أُولِى الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمِهِ لَا تَفْرَحُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَوْرِحِيْنَ ٥ وَ ابْتَغِ فِيمَا اللهُ اللَّهُ اللَّارَ الْاحِرَةَ وَلَاتَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّارَ الْاحِرَةَ وَلَاتَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَلَا تَبْع الْفَسَادَ فِي الْارْضِ إِنَّ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى عِلْمٍ عِنْدِى الْارْضِ إِنَّ اللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ٥ قَالَ إِنَّمَا الْوَيْنَةُ عَلَى عِلْمٍ عِنْدِى اوَلَمْ يَعْلَمُ انَّ اللَّهُ لَا يُحِبُ الْمُفْسِدِيْنَ ٥ قَالَ إِنَّمَا الْوَيْنَةُ عَلَى عِلْمٍ عِنْدِى اوَلَمْ يَعْلَمُ انَّ اللَّه

🛈 مسلم(۲۸۲۰)

**→ الكبائر كاب الكبائر كاب الكبائر كاب الكبائر** 

قَدُ اَهُلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُو اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاكْثُرُ جَمُعًا وَلَا يُسْنَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ٥ فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ فِي زِيْنَتِهِ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِينَةٍ قَالَ الَّذِيْنَ الْمُحُومُ وَاللَّهُ عَلَى مَا الْوَتِي قَارُونَ إِنَّهُ لَلُو حَظٍ عَظِيْمٍ ٥ يُرِيدُونَ الْحَيُوةَ الدُّنُو الْمُعَلَّمَ وَيُلَكُمْ ثَوَابُ اللهِ خَيْرٌ لِمَنْ امْنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا اللهِ عَيْرٌ لِمَنْ امْنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا اللهِ عَيْرٌ لِمَنْ امْنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا يُلْهُ مَنَ اللهُ عَلَى اللهِ عَيْرٌ لِمَنْ الْمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا يُعْمَدُ وَنَهُ مِنْ وَنَهُ مِنَ فِنَةٍ وَلَا يَلْهُ مِنَ اللهُ وَمَا كَانَ لَهُ مِنَ فِنَةٍ يَعْمُ وُلِنَا اللهِ وَمِدَادِهِ الْاَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُ مِنَ فِنَةٍ يَعْمُ وَلَا اللهِ وَمَا كَانَ مَنَ الْمُنْتَصِوِيْنَ ﴾ (القصص: ٢٦ – ٨١) يَنْصُرُ وْنَهُ مِنْ دُونِ اللهِ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِوِيْنَ ﴾ (القصص: ٢٦ – ٨١) الله وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِوِيْنَ ﴾ (القصص: ٢٦ – ٨١) الله وَمَا كَانَ مِن اللهُ وَمَا كَانَ مِن الْمُنْتَصِوِيْنَ ﴾ (القصص: ٢٦ – ٨١) الله عَمْ مَنْ دُونِ اللهِ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِولِيْنَ ﴾ (القصص: ٢٦ – ٨١) المُن عَلَيْتِهِ مَا مَنْ الْمُنْ مِنْ مُنْ اللهُ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْ مَنْ مُنْ الْمُنْ مَنْ مُنْ مُنْ اللهُ وَمَا كَانَ مِنْ الْمُنْ مِنْ مُنْ الْمُنْ مِنْ مُنْ اللهُ وَمَا كَانَ مِنْ الْمُنْ مُنْ اللهُ وَمَا كَانَ مِنْ الْمُنْ مِنْ مُنْ اللهُ وَمَا كَانَ مِنْ عَلَى مَا اللهُ اللهُ اللهُ وَمَا كَانَ مُنْ اللهُ وَمِنْ اللهُ اللهُ وَمَا كَانَ مُنْ اللهُ وَمَا كَانَ مُنْ اللهُ وَمُنْ اللهُ وَمُنْ اللهُ وَالْمُ اللّهُ وَمُنْ اللهُ وَمُنْ مُنْ عُلَا مُوالِمُ اللهُ وَالْمُ اللّهُ وَالْمُنْ مُنْ اللهُ وَالْمُنْ اللهُ وَلَا مُنْ مُنْ اللّهُ مُنْ اللهُولُولُ اللهُ اللهُ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ

ابن الجوزیؒ نے فرمایا: قارون کے ظلم کے بارے میں اقوال ہیں: (1) اس نے ایک زانیہ عورت کے لئے انعام مقرر کیا کہ وہ مویٰ علیہ السلام پر اپنے بارے میں تہمت لگائے کیس اس نے ایسے کیا تو مویٰ علیہ السلام نے اس کے اس دعویٰ پرتشم طلب کی تو اس نے قارون کے ساتھ اپنے قصے کے بارے میں آئہیں بتایا اور بیاس کاظلم تھا۔ بیابن عباس کا قول ہے۔

(۲) ضحاك ٌ نے فرمایا: اس نے الله عزوجل کے ساتھ كفر کے ظلم كيا۔

(m) قادهٌ نے فرمایا مطلق *گفر کر کے ظلم کیا۔* 

ن کو با تو اللہ نے ان کی طرف وحی کی موٹی! میری عزت وجلال کی قتم!اگروہ مجھے سے فریاد کرتا تو میں اس کی فریادری کرتا!

ابن عباسؓ نے فرمایا: زمین نے اس کوسب سے کچلی زمین تک دھنسادیا۔ سمرہ بن جندبؓ بیان کرتے ہیں اسے ہرروز قیامت تک دھنسایا جاتا ہے۔ مقاتل نے کہا: جب قارون ہلاک ہوا تو بنی اسرائیل نے کہا: موکی علیہ السلام نے اس کا گھر اور اس کا مال لینے کے لئے اسے ہلاک کرایا ہے۔ پس اللہ نے تین دن بعد اس کواس کے

> گھر اوراس کے مال سمیت دھنسا دیا۔ ا

﴿ فَهَا كَانَ لَهُ مِنَ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهُ مِنُ دُوْنِ اللَّهِ ﴾ يعني وه اس كوالله سے بجاتے۔

﴿ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴾

لعنی اللہ نے اس پر جوعذاب نازل کیا تھااس کوروکنہیں سکتے تھے۔واللہ اعلم

اے اللہ! جب تو نے نظر کرم فرمائی تو میں نے اطاعت اختیار کر لی جب میں نے اپنے آپ کوسپر دکر دیا تو تو نے قبول فرمالیا۔ جب تو نے تو فیق عطا فرمائی تو مجھے رشد وہدایت مل گئی اور جب تو نے تنہا چھوڑ دیا تو میں رخج وغم کا شکار ہوگیا۔

اے اللہ! اپنی معرفت اور ہدایت کے نور سے ہمارے گناہوں کی تاریکی دور کر دے۔ اے اللہ جن پرتونے نظر کرم فر مائی ہے ہمیں ان میں شامل کر لے اور جواس کے سواہے اس سے دورر کھے۔ ہم کو ہمارے والدین اور تمام مسلمانوں کومعاف فرما۔ آمین

2

## مراكبائر 312 <del>مراكبائر 312 مراكبائر 312 مر</del>

## (۵۱)ضعیف مملوک لونڈی بیوی

#### اور چویائے پر دست درازی کرنا

ان لوگوں برظلم کرنا کبیرہ گناہ ہے۔

"اورالله کی عبادت کرواورکسی چیز کواس کاشریک نه بناؤ متم والدین کے ساتھ قرابت دار داروں کے ساتھ نیپیوں کے ساتھ ابت دار ہوں کے ساتھ نیپیوں کے ساتھ ابت دار ہوں یا اجنبی نیاس کے الحصنے بیٹھنے والووں کے ساتھ مسافروں کے ساتھ الونڈی کے ساتھ اور غلاموں کے ساتھ حسن سلوک کے ساتھ چیش آؤ کا در کھو کہ اللہ تکبر کرنے والوں اور چینی کرتا۔"

الواحديٌ في الله تعالى في مان ﴿ وَاعْبُدُ وَاللّهُ وَلَا تُشُو كُوا بِهِ شَيْنًا ﴾ كَانسريس فرمايا: احد بن محد بن ابراجيم الممر جانى في اپني سند سے معاذ بن جبل سے روايت كيا انہوں في فرمايا: ميں نبي كُانَّةُ مُ كَيْ يَحِيدُ كُد هِ يرسوارتها تو آپ في مايا: معاذ! ميں في مَن كيا الله كرسول! ميں حاضر بول آپ في مايا:

''کیاتم جائتے ہواللہ کا بندوں پر کیاحق ہے اور بندوں کا اللہ پر کیاحق ہے؟'' میں نے عرض کیا'اللہ اوراس کے رسول بہتر جانتے ہیں'آپ نے فر مایا: ''اللہ کا بندوں پر بیرحق ہے کہ وہ اس کی عبادت کریں اوراس کے ساتھ کسی کوشر میک نہ بنا کیں' اور بندوں کا اللہ پر بیرحق ہے کہ جوشخص اس کے ساتھ شرک نہ کرے وہ اس کو الكبائر (الكبائر الكبائر الكبائر) الكبائر (الكبائر الكبائر ال

عذاب ندوے۔''

ابن مسعودٌ بیان آکرتے میں ایک اعرابی نبی تَلْ اَلَّهُ کَا حَدمت میں آیا تو اس نے عرض کیا: الله کے نبی! مجھے وصیت فرما کمیں آپ نے فرمایا:

''الله كساتھ كى كوشرىك نەبنانا خواقىمىمىي ئلۇئے ئلائے كرديا جائے ياتىم ميں جلاديا جائے نماز كواس كے وقت سے موخر نه كرنا كيونكه وہ الله كا ذمه ہے اور شراب نه پينا كيونكه دہ ہرشركى جانى ہے۔''

﴿ وَ بِالْوَالِدَيْنِ إِخْسَانًا ﴾ ان دونوں كے ساتھ لطف ومہر بانى سے پیش آنا كہاوزم ركھنا اور انہیں تختی سے جواب نه دینا۔ انہیں گھور كر نه دیكھنا اپنی آواز ان پر بلندنه كرنا كمله ان كے سامنے اس كرح عاجزى كا ظهار كرتا سامنے اس طرح عاجزى كا ظهار كرتا

﴿ وَبِيٰدِى الْقُورُ بِلَى ﴾ قرابت داروں كے ساتھ صلدر كى كرنااوران پررم كرنا۔ ﴿ وَ الْيَتَهٰمَى ﴾ ان پرنرى كرنا انہيں قريب ركھنا اوران كے سر پر پيارسے ہاتھ چھيرنا۔ ﴿ وَ الْمَسْكِيْنِ ﴾ ان پر معمولی ساخر چ كرنا اوراحسن انداز سے ان كوواليس كرنا۔

ر کر المناسوسی پ کسی پ سین کا ایک کا میں ہے۔ ﴿ وَ الْبَحَادِ ذِی الْقُدُ بِلٰی ﴾ یعنی وہ خض جس کی آپ کے اوراس کے مامین قرابت ہوئیس اس کے لئے حق قرابت 'حق ہمسائیگی اور حق اسلام ہے۔

﴿ وَالْبَحَادِ الْمُحُنُبِ ﴾ وہ خض جس کی آپ ہے کوئی قرابت نہ ہوا ہے اجنبی کہا جاتا ہے ، جب وہ پر دلی اپنے اہل وعیال ہے دور ہواور قوم اجانب ادر جنابہ سے مراد دوری ہے۔ عائش ْ

سے روایت ہے کہ نی مَالَیْتُ اللہ فار مایا:

''جریل (علیہ السلام) پڑوی کے بارے میں مجھے تا کید کرتے رہے تی کہ مجھے گمان ہونے لگا کہ دہ اے وارث بنادیں گے۔''

انس بن ما لكُّ بيان كرتے ہيں رسول اللهُ مُثَاثِيَّةِ كِفِ فرمايا:

''روز قیامت پڑوی'پڑوی کے ساتھ معلق ہوجائے گا'اور عرض کرے گا'یارب! تونے میرے اس بھائی کو کشائش عطا کی جبکہ مجھے تنگ حالی عطا کی' میں بھوکا رہتا تھا اور بیہ

﴿ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ ﴾ ابن عبال اور مجابدٌ نے فر مایا: اس سے مراد ہم سفر ہے اس کے لئے حق ہمسائیگی اور حق مصاحب ہے۔

﴿ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ ﴾ يه وه ضعيف ونا توال ہے اس كے ساتھيوں پرواجب ہے كه وہ جہال چاہتا ہے است وہاں چہنے اور ا چاہتا ہے اسے وہاں چہنجا دیں ابن عباسؓ نے فرمایا: وہ راہ گزرہے تم اسے ٹھكانہ فراہم كرواور اسے كھانا كھلا وُحتى كه وہ آپ كے پاس سے كوچ كرجائے۔

﴿ وَمَا مَلَكُتُ إِيْمَانُكُمْ ﴾ اس مرادُملوك بكراس كواچھارز ق ديا جائے اوراس كى خطا دَل سے درگز ركيا جائے۔

﴿ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا لِيَّا ﴾ ابن عبال فرمايا: "مختال" عمراد وه فحص ہے جو اپ آپ کو برا خيال کرتا ہے اور الله کے حقوق ادانہيں کرتا۔ جبکہ ((الف خور)) اس سے مرادوہ فحص ہے جس کواللہ نے ایچ اگرام وانعام سے نواز ہواوردہ اس وجہ سے اللہ کے بندول پر فخر وخرور کرتا ہو۔

ابو ہر رو ایت ہے کدرسول الله منافق فرمایا:

''اس اثناء میں کدایک نوجوان مخص جوتم ہے پہلے تھا' لباس زیب تن کئے ہوئے بڑے فخر وغرور سے اترا تا ہوا چل رہا تھا کدا چا تک زمین نے اسے نگل لیا اور وہ قیامت قائم ہونے تک اس میں دھنتا چلا جائے گا۔''

اسامہ بیان کرتے ہیں میں نے ابن عمر کو بیان کرتے ہوئے سنا کے میں نے رسول اللہ مَنْ اِلْنِیْ کُوفِر ماتے ہوئے سنا:

''جس شخص نے ازراہ تکبراپنا کپڑالٹکایا توروز قیامت اللہ اس کی طرف نہیں دیکھے گا۔'' آ یتمام تفصیل الواحدی نے بیان کی ہے۔

نخاری مسلم

رسول اللَّه تَالِيُّنَا عُلِيمَ بنب اللَّهِ عَلَى عَمِض مِين الله ونياسے تشريف لے جارہے تصوّق آپ نماز قائم كرنے اورمملوك كے ساتھ حسن سلوك كى وصيت فرمارہے تتھے:

''نماز اور اینے غلاموں کے بارے میں اللہ سے ڈرتے رہنا' اللہ سے ڈرتے رہنا' اللہ سے ڈرتے رہنا۔'' 🛈

حدیث میں ہے: 'احچھامزاج رکھنا برکت ہے جبکہ برااخلاق رکھنانحوست ہے۔'' اوررسول اللّٰدِ تَالَیْجِیْمُ نے فر مایا:

''برے اخلاق والافخص جنت میں نہیں جائے گا۔''

ابومسعودٌ بیان کرتے ہیں: میں کوڑے کے ساتھ اپنے غلام کو مارر ہاتھا کہ میں نے اپنے چھھے سے ایک آ وازئی:''ابومسعود! جان لے اللہ تم براس سے زیادہ قدرت رکھتا ہے جتنا کہتم اس غلام پر قدرت رکھتے ہو۔''

وہ بیان کرتے ہیں۔ میں نے عرض کیا'اللہ کے رسول! میں آئندہ اپنے غلام کو بھی بھی نہیں ماروں گا۔ اور ایک روایت میں ہے۔ اللہ کے رسول کا ایک میبت کی وجہ سے میرے ہاتھ سے کوڑا گرگیا' اور ایک درایت میں ہے' میں نے عرض کیا : وہ اللہ کی رضا کے لئے آزاد ہے۔ تو آپ نے فرمانا :

'' سناواً گرتم ایسانه کرتے تو قیامت کے دن آگ شہیں خیلس دیتی۔''

ا بن عمرٌ بيان كرتے ميں رسول الله مَثَاثِيَّ المِن فرمايا:

''جس نے اپنے غلام کواس کے نا کردہ جرم پرسز ادی یا اس کوٹھیٹر مارا تو اس کا کفارہ یہ ہے کہ وہ اس کو آ زاد کرد ہے۔''

حكيم بن حزامٌ بيان كرتے ہيں رسول اللهُ فَكُلْيَّةُ لِنَّهُ فَاللهُ عَلَيْنَةً لِمِنْ فَر مايا:

''الله ان لوگوں کوعذاب دےگا'جولوگوں کو دنیا میں عذاب دیتے ہیں۔''

حدیث میں ہے ''جس شخص نے کسی کو ناحق کوڑے سے مارا' اس سے روز قیامت بدلہ لیا

. \_

<sup>🕽</sup> ابوداؤد' ابن ماجه

# + (£ 316 على الكبائر على الكب

رسول الله مَا لَيْهِ الله مَا يَا مُن كيا كيا عمانهم خادم كس تدردر كررس؟

آپ نے فر مایا: "دن میں ستر مرتبد-" 🛈

ایک دن نی منگافید کم می می می می است میں سواک تھی آپ نے اپنے خادم کو بلایا 'اس نے آنے میں تاخیر کی تو آپ نے اپ خادم کو بلایا 'اس نے آنے میں تاخیر کی تو آپ نے فرمایا: '' اگر قصاص نہ ہوتا تو میں تہ ہیں اس سواک کے ساتھ مارتا۔'' ابو ہریرہ گل ایک سیاہ فام لویڈی تھی انہوں نے ایک دن اس پر کوڑ ااٹھایا تو فرمایا: اگر قصاص نہ ہوتا تو میں تہ ہیں ایسے تھی کے ہاتھ فروخت کروں گا جو مجھے تیری پوری قیت دے گا تو چلی جا 'پس تواللہ کی رضاکی خاطر آزاد ہے۔۔

ایک عورت نی گافتیم کی خدمت میں حاضر ہوئی تو اس نے عرض کیا اللہ کے رسول! میں نے اپنی لوغدی ہے؟
اپنی لوغدی ہے کہا ہے اے زانیہ! آپ نے فرمایا: ''کیا تم نے اس میں کوئی الی چیز دیکھی ہے؟
اس نے کہا نہیں آپ نے فرمایا: ''من لؤہ وروز قیامت تم سے بدلہ لے گ۔' کیں وہ اپنی لوونڈی کے پاس گئی اور اسے کوڑا دے کر کہا: مجھے مار و لوغری نے انکار کیا تو اس نے اسے آزاد کردیا۔ پھر وہ نی کا گافتیم کی خدمت میں حاضر ہوئی تو اس نے آپ کواس کے آزاد کئے جانے کے بارے میں بتایا' تو آپ نے فرمایا: ''امید ہے۔' یعنی امید ہے کہ تہا را اسے آزاد کرنا' تہا را اس پر تہمت لگانے کا کفارہ بن جائے۔

صحیحین میں ہے کہرسول الله مالی الله علی الله علی الله

"جب شخص نے اپنے مملوک پر تہت لگائی 'جبدہ ہوا تو روز قیامت بطور صداس کو کوڑے کہا ہے اگر وہ اس کے کہنے کے مطابق نہ ہوا تو روز قیامت بطور صداس کو کوڑے مارے جا کیں گے۔ "اور حدیث میں ہے" مملوک کے لئے (مالک کے ذمہ) ہے اس کا کھانا اور اس کالباس اور جس کام کی وہ طاقت نہ رکھتا ہوتو اس کا اے ذمہ دار نہ تھہرایا جائے۔"

اور آپ کُائِیْز کو نیائے تشریف لے جاتے وقت صحابہ کرام کو وصیت فر مارہے تھے: ''نماز اورائیے غلاموں کے بارے میں اللہ ہے ڈرتے رہنا' اللہ سے ڈرتے رہنا' جو

ابوداؤد ترمذی

خود کھاتے ہو وہی انہیں کھلا و' جیسا خود پہنو ویسا انہیں پہنا و' ان کے ذیے کوئی ایسا کام نہ لگا وُ جس کی وہ طاقت نہ رکھتے ہؤا گرتم انہیں ( کہیں ایسے کام کا) ذمہ دارتھم ہرادو تو پھران کی مدد کر واور اللہ کی مخلوق کوعذاب نہ دو' اللہ نے تہمیں ان کا مالک بنا دیا ہے ۔ ٹ اوراگروہ جا ہے تو ان کوتمہارا مالک بنا دے۔''

سلمان فاری کے پاس کچھلوگ آئے وہ اس وقت مدائن کے گورنر تھے انہوں نے انہیں اپنے گھر والوں کا آٹا گوندھتے ہوئے پایا تو انہوں نے ان سے کہا: کیا آپ آٹا گوندھنے کے لئے کھر والوں کا آٹا گوندھنے ہم پندنہیں لئے لونڈی نہیں چھوڑتے ؟ آپ نے فرمایا: ہم نے اسے کسی کام کے لئے بھیجا ہے ہم پندنہیں کرتے کہ اس پر دوسرا کام جمع کردیں۔

سلف میں سے کس نے کہا ہے مملوک کو ہر گناہ پرنہ مارو کیکن اس کو یا در کھؤ پھر جب وہ اللہ تعالیٰ کی نافر مانی کر ہے تو پھر اس کو اللہ کی نافر مانی پر مار واور اسے وہ گناہ بھی یا دکراؤجو تیرے اور اس کے درمیان ہیں۔

فصل:

مملوک اور لونڈی کے ساتھ سب سے بڑی بدسلوکی اس کے اور اس کے بچے کے درمیان یااس کے اور اس کے بھائی کے درمیان جدائی ڈالنا ہے۔جیسا کہ نجی تَفَاقِیَّ اُکھی سے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا:

''جس نے کسی والدہ اور اس کے بیچ کے درمیان جدائی ڈالی تو روز قیامت اللہ اس کے اور اس کے چہیتے کے درمیان جدائی ڈال دے گا۔'' ۞

على كرم الله وجهه بيان كرتے ہيں۔رسول الله مَثَّا فَيَنَّمُ نے مجھے دوغلام عطا كئے جو كه دونوں بھائی تنے میں نے ان میں سے ایک کوفر وخت كرديا تورسول الله مَثَّاثِیَّمُ نے فرمایا: ''اسے واپس كرو اسے واپس كرو''

مملوک کونڈی اور چویائے کو بھوکا رکھنا بھی زمرے میں ہے۔

🛈 ترمذی

مراكب الكبائر £ الكبائر £ الكبائر £ الكبائر £ الكبائر £ الكبائر € الكبائر

رسول اللهُ مَا لَيْنَيْكُمُ أَمْرِ مات مِين:

"بندے کے لئے یمی گناہ کافی ہے کہ وہ جس کا مالک ہے اس کی روزی بند کر

رے۔"ن

''ایک عورت کوایک بلی کی وجہ سے عذاب دیا گیا'اس نے اسے باند چر رکھاحتیٰ کہ وہ بھو کی فوت ہوگئ' جب اس نے اسے باند ھر کھاتھا تواس نے خولا آھے کھلایا نہ پلایا'اور نہی اسے چھوڑا کہ وہ حشرات الارض میں سے کچھکھالیتی۔' ۞

اساء بنت الی بکڑسے روایت ہے کہ آپ شکاٹیٹی نے ایک عورت کو آگ میں معلق دیکھا'جبکہ بلی اس کے چبر ہے اوراس کے سینے کونوچ رہی تھی'اوروہ اسے سزادے رہی تھی'جس طرح اس نے اس کودنیا میں باندھ کراور بھوکار کھ کرسزادی تھی'اور میہ باقی حیوانوں کے بارے میں بھی عام ہے۔ اوراسی طرح اگر اس نے اس کی طاقت سے بڑھ کراس پروزن ڈالاتو قیامت کے دن اس سے

ن مسلم ک بخاری مسلم

بدله لياجائ كالصحيحين من ثابت بكرسول الله مَنَا لِيَتِي فَر مايا:

''ایک آ دمی گائے لے کر جار ہاتھا' جب وہ اس پر سوار ہوا تو اس نے اسے مارا' وہ کہنے گی: ہمیں اس مقصد کے لئے پیدائہیں کیا گیا' ہمیں تو تھیتی باڑی کے لئے پیدا کیا گیا سر''

پس بیگائے ہے کہ اللہ تعالیٰ نے اس کو دنیا میں قوت گویائی عطا فر مائی' کہ وہ اپنا دفاع کرے تا کہ اسے تکلیف دی جائے نہ اسے کسی ایسے کام میں استعال کیا جائے جس کے لئے اسے بیدانہیں کیا گیا۔

پس جس نے اے کسی ایسے کام کا مکلّف مھبرایا جس کی اس میں طاقت نہیں یا اسے ناحق مارا پیٹا تو قیامت کے دن اس کی ضرب اور تعذیب کے مطابق اس سے بدلہ لیا جائے گا۔

ابوسلیمان الدارانی نے فرمایا: میں ایک مرتبہ گدھے پرسوار ہوا تو میں نے دویا تین مرتبہ اے مارا تو اس نے اپناسراو پراٹھایا اور میری طرف دیکھ کرکہا: ابوسلیمان! قیامت کے دن اس کا بدلہ ہوگا اگر چا ہوتو کم کرلواورا گرچا ہوتو زیادہ کرلو۔وہ بیان کرتے ہیں: میں نے کہا۔ میں آئندہ کسی چیز کونہیں ماروں گا۔

ابن عمر قریش کے بچوں کے پاس سے گزرے انہوں نے ایک پرندے کو باندہ رکھا تھا اور وہ اس پر تیراندازی کررہ ہے تھے اور انہوں نے اس کے مالک کے لئے اپنے خطا جانے والے تیر کے لئے کچے مقرر کررکھا تھا۔ جب انہوں نے ابن عمر اللہ کا دو یکھا تو وہ تتر بتر ہوگئے۔ پس آپ نے فرمایا 'یہ س نے کیا ہے؟ اللہ تعالی اس شخص پر لعنت فرمائے جس نے یہ کیا ہے کیونکہ رسول اللہ مائی ہے جو کسی جاندار چیز پرنشا نہ بازی کرے۔ اور رسول اللہ مائی ہے جو انہ اللہ تعالی اس فی کرنے کے لئے باندہ لیا جائے۔ خواہ وہ نے جانوروں کو باندہ رکھنے منع فرمایا 'یعنی انہیں قبل کرنے کے لئے باندہ لیا جائے۔ خواہ وہ ان میں سے ہوں جن کو شریعت نے قبل کرنے کا حکم دیا ہے جیسا کہ سانپ 'بچھو' چو ہیا' اور باؤلا کیا۔ انہیں جس بہلی ہی مرتبہ قبل کرنے کا حکم دیا اور انہیں تکلیف پہنچانے نے سے مع فرمایا۔ آپ مائی آئیڈ کے کا فرمان ہے۔

''جبتم قلّ کروتوا چھے طریقے ہے تل کرواور جب تم ذبح کروتوا چھے طریقے ہے ذبح

# + 320 + كتاب الكبائر

کر دانے چاہیے کہ وہ اپنی چھری تیز کرے اور اپنے ذبیحہ کو آرام پنچائے۔'' ① اور ای طرح اے آگ ہے نہ جلائے 'جیسا کہ سیح صدیث میں ثابت ہے کہ رسول اللّٰہ کَا اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ ا

'' میں نے تنہیں تھم دیا تھا کہ فلاں فلاں فلاں فلاں فلاں فلاں فلاں قبیر کے سے جلادینا' لیکن آگ کاعذاب صرف اللہ ہی دے سکتا ہے'اس لئے اگرتم انہیں پاؤتو انہیں قبل کر دینا۔' ﴿ ابن مسعودٌ بیان کرتے ہیں: ہم رسول اللہ مَا اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰمُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰ

اپی حاجت کے لئے تشریف لے گئے ہم نے چڑیا کی مانندایک پرندہ دیکھا'اس کے ساتھ دو بچ بھی تھے ہم نے اس کے بچ کپڑ لئے'وہ پرندہ آیا اور پھڑ پھڑانے لگا۔اتنے میں نی مُنَالِیْکُمْ تشریف لائے۔

تو فر مایا: اس کو اس کے بچے کم کرنے کی وجہ ہے کس نے پریشان کیا ہے؟ اس کواس کے بچے واپس کرو۔''اوررسول الله مُلَّافِیْنِ نے چیونٹیوں کی بل دیکھی جسے ہم نے جلا دیا تھا' تو آپ نے فرمایا:

''اے کس نے جلایا ہے؟'' ہم نے عرض کیا' ہم نے' تو آپ مَنَّ اَثَیْرُانے فرمایا:''رب کے سواکسی کے لائق نہیں کہ وہ آگ کے ذریعے نکلیف پہنچائے۔'' اس میں آگ کے ذریعے قل وتعذیب کی ممانعت ہے حتیٰ کہ جوں اور پسو وغیرہ کے بارے میں بھی یہی تھم ہے۔ فوہ ا

فصل:

حیوانوں کوعبث قل کرنا کمروہ ہے۔ نبی مَنْ اللّٰهِ عَلَیْ اللّسِے مردی ہے کہ آپ نے فرمایا: ''جس نے کسی چڑیا کوعبث قبل کیا تو وہ روز قیامت اللّٰہ کے حضور دعا کرے گی اور عرض کرے گی: میرے رب!اس سے بوچھ کہ اس نے جھے عبث کیوں قبل کیا اور اس نے کسی منفعت کے لئے مجھے قبل نہیں کیا؟'' ﴿

سلم ترمذی
 بخاری
 ابن حمان

پرندے کواس کے بچوں کے ایام میں شکار کرنا مکروہ ہے جیسا کہ اس بارے میں ایک اثر مروی ہے۔ نیز جانورکواس کی ماں کے سامنے ذرج کرنا بھی مکروہ ہے ابراہیم بن ادہمؒ سے مروی ہے کہ انہوں نے فر مایا کسی آ دمی نے ایک بچھڑے کواس کی ماں کے سامنے ذرج کیا تو اللہ نے اس کے ہاتھ کوشل کردیا۔

فصل: مملوک کو آزاد کرنے کی فضیلت کے بارے میں ابو ہر پر اُروایت کرتے ہیں آپ نے فرمایا:

''جس شخص نے کسی مومن شخص کوآ زاد کیا تواللہ اس کے ہرعضو کے بدلے اس (آزاد کرنے والے) کے ہرعضو کو جہنم سے آزاد کردے گا' حتیٰ کہ اس کی شرم گاہ کو اس کی شرم گاہ کو اس کی شرم گاہ کے بدلے آزاد کردے گا۔'' ①

ابواہامہ روایت کرتے ہیں آپ نے فرمایا ''جس مسلمان مخص نے کسی مسلمان مخص کوآ زاد
کیا تو یہ اس کے لئے جہنم سے رہائی کا سبب ہوگا۔ اور اس کا ہر عضواس کے ہر عضوکا بدلہ اور جزا
ہوگی اور جس مسلمان مخص نے دومسلمان عورتیں آزاد کیں تو وہ دونوں اس کے لئے جہنم سے رہائی
کا باعث ہوں گی۔ ان دونوں کے ہر دوعضواس کے عضو کا بدل اور جز ابن جا کیں گے۔ اور جس
مسلمان عورت نے کسی مسلمان عورت کوآزاد کیا تو یہ اس کے لئے جہنم سے رہائی کا باعث ہوگ۔
ادر اس کا ہر عضواس کی جزا بن جائے گا۔ ﴿

ا الله! بمين فلاح يانے والى جماعت اورايينے صالح بندوں ميں شامل فرما۔

☆☆☆

<sup>🛈</sup> بخاری 🕜 ترمذی



#### (۵۲) پر وی کواذیت دینا

''الله کی نتم!وه مومن نبی*س ہوسکتا'الله کی فتم!وه مومن نبیس ہوسکتا۔''* 

عرض کیا گیا' اللہ کے رسول! کون؟ آپ نے فرمایا:''جس کی شرارتوں ہے اس کا پڑوی محفوظ نہ ہو۔''

اورایک روایت میں ہے: '' وہ مخص جنت میں نہیں جائے گا'جس کا پڑوی اس کی شرارتوں مے محفوظ نہ ہو۔'' اور رسول اللّٰهُ مَا اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ کے ہاں سب سے بڑے گناہ کے بارے میں پوچھا گیا تو آ یہ نے تین خصلتوں کا ذکر فرمایا:

'' یہ کتم اللہ کاشریک تھہراؤ حالانکہ اس نے تمہیں پیدا کیا ہے میہ کتم اس اندیشے کے پیش نظرا پنے بچے قبل کر دو کہ وہ تمہارے ساتھ کھائے گا اور میہ کہتم اپنے پڑوی کی بیو ک کے ساتھ زنا کرد۔''

اور حدیث میں ہے: ''جو خص اللہ اور یوم آخرت پرایمان رکھتا ہووہ اپنے پڑوی کواذیت نہ

پہنچائے۔'

اور پڑوی تین طرح کے ہیں: (۱) قریبی رشتے دار مسلمان پڑوی۔اس کے تین حق ہیں' حق ہما گیگی حق اسلام اور حق قرابت (۲) مسلمان پڑوی۔اس کے دو حق ہیں' حق ہمسا کیگی اور حق اسلام (۳) کافر پڑوی۔اس کے لئے ایک حق ہے۔ حق ہمسا کیگی۔

ابن عمرؓ کا ایک میہودی پڑوی تھا'جب آپ بکری ذبح کرتے تو فرماتے: اس میں سے ہمارے میہودی پڑوی کو بھی جھیجو۔

اور مروی ہے کہ فقیر ومختاج پڑوی روز قیامت مال دار پڑوی کے ساتھ معلق ہوگا اور عرض کرے گا: رب جی!اس سے پوچھ کہ اس نے اپنی بھلائی کو جمھ سے کیوں روک رکھا تھا اوراس نے

اینادروازه مجھے کیوں بند کر لیا تھا۔ 🛈

 اصبانی نے حدیث این عمر کے حوالے ہے اسے التر غیب والتر ہیب میں ذکر کیا ہے۔ منذری نے اس کے ضعف کی طرف اشارہ کیا ہے۔ کتاب الکبائر کی و جائے کہ وہ پڑوی کی افیت کو برداشت کرے اور یہ بھی اس کے ساتھ احسان کرنے کے دم سے میں آتا ہے۔ ایک آدی نی مُثَالِّیْنِ کی خدمت میں حاضر ہوا تو اس نے عرض کرنے کے دم سے میں آتا ہے۔ ایک آدی نی مُثَالِیْنِ کی خدمت میں حاضر ہوا تو اس نے عرض کیا اللہ کے رسول! مجھے کیسے پتہ چلے گا کہ میں محسن ہوں؟ آپ نے فرمایا:" اپنے پڑوسیوں سے پہوتا گروہ کہیں کہ تم محسن ہوتو پھر تم محسن ہوتا واراگروہ کہیں کہ تم برے ہوتو پھر تم محسن ہوتا کروہ کہیں کہ تم برے ہوتو پھر تم برے ہو۔"

'' جو محض اپنے بڑوی ہے' اپنے اہل وعیال اور اپنے مال کے اندیشے کے پیش نظر' اپنا درواز ہبند کر لئے تو وہ مومن نہیں ۔ اور وہ مخص بھی مومن نہیں جس کی شرارتوں ہے اس کے بڑوی محفوظ نہیں۔''

اوریبھی مروی ہے کہ اگر آ دمی دس عورتوں سے زنا کرتا ہے توبیا پیٹوی کی بیوی سے زنا کرنا ہے توبیا پیٹوی کی بیوی سے زنا کرنے سے زیادہ ہلکا ( کم گناہ) ہے اور بیر کہ آ دمی دس گھروں کی چوری کرے بیا پیٹر پیٹوی کی چوری کرنے سے زیادہ ہلکا ( کم گناہ) ہے۔

ابوہریرہ میان کرتے ہیں ایک آ دی اپنے پڑوی کی شکایت کرنے رسول الله مُؤَاتِّیُا کی خدمت میں حاضر ہوا آپ نے اسے فر مایا:'' جااور صبر کر۔'' وہ آپ کے پاس دویا تین مرتبہ آیا' پھر آپ نے فر مایا:'' جااور اپناسامان راستے پر رکھ دو۔''

اس نے ایسے ہی کیا کوگ اس کے پاس سے گزرتے اوراس کا حال پوچھتے تو وہ ان کواپنے پردی کے ساتھ معاملات کے بارے میں بتا تا کوہ اس کے پردی پرلعنت بھیجے اور کہتے : اللہ اس کے ساتھ اس طرح اس طرح کرے اور وہ اس کے لئے بددعا کیں کرتے ۔ پس اس کا پڑوی اس کے پاس آیا اور کہا: بھائی! اپنے گھر چلو آ کندہ آپ کوئی ناپہندیدہ حرکت نہیں دیکھیں گے۔

کتاب الکبائر کتاب الکبائر کی جوی کو بلایا اورائے کہا: ذرااس گھر میں داخل کی وفات کا وقت آگیا تو انہوں نے اپنے پڑوی مجوی کو بلایا اورائے کہا: ذرااس گھر میں داخل ہوکر دیکھو کہ اس میں کیا ہے وہ داخل ہوا تو اس نے وہ دراڑ دیکھی جس سے وہ غلاظت نکل کر برتن عب میں گر رہی تھی۔ اس نے کہا: میں یہ کیا دیکھ رہا ہوں؟ ہمل ؓ نے فر مایا 'یہ تو بری طویل مدت سے تیرے گھر سے اس گھر میں گر رہی ہے میں دن کے وقت اسے جمع کرتا ہوں اور دات کے وقت اسے جمع کرتا ہوں اور دات کے وقت اسے جمع کرتا ہوں اور دات کے وقت اسے بھینک آتا ہوں۔ اگر میری موت کا وقت قریب نہ ہوتا اور جمھے اندیشہ ہے کہ میرے علاوہ کی اور میں اس قدر اخلاقی وسعت نہیں ہوگی تو میں تہمیں بھی اس کے متعلق نہ بتا تا۔ اب تم نے جو کرتا ہے وہ کرلؤ مجوی نے کہا: الشخ محتر م! آپ طویل مدت سے میرے ساتھ بتا تا۔ اب تم نے جو کرتا ہے وہ کرلؤ مجوی نے کہا: الشخ محتر م! آپ طویل مدت سے میرے ساتھ اس طرح کا معاملہ کر رہے ہیں اور ایک میں ہوں کہ میں ایپ کفر پر قائم ہوں؟ آپ ہاتھ برحا میں 'پر میں گوائی دیتا ہوں کہ اللہ کے سواکوئی معبود نہیں اور رہے کرجھ (مَنَائِیَّامُ) اللہ کے رسول برحا میں 'پر میں گوائی دیتا ہوں کہ اللہ کے سواکوئی معبود نہیں اور رہے کہ کھر (مَنَائِیَّامُ) اللہ کے رسول بین بھر ہمل و فات یا گئے۔

پس ہم اللہ تعالیٰ سے درخواست کرتے ہیں کہ وہ ہمیں اور تمہیں اچھے اخلاق واعمال اور اقوال کی ہدایت نصیب فرمائے کیونکہ وہ تخی دا تا کرم کرنے والاشفیق ومہربان ہے۔

\*\*\*

### الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر

## (۵۳)مسلمانو ل کواذیت پہنچانا اور انہیں گالی دینا

الله تعالى نے فرمایا:

﴿ وَالَّذِيْنَ يُؤُذُونَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَااكْتَسَبُواْ فَقَدِ احْتَمَلُواْ بُهْنَانًا وَّإِثْمًا مُّبِيْنًا ٥﴾ (الاحزاب : ٥٨)

''اور وہ لوگ جومومن مردوں اور مومن عورتوں کو اس کے بغیر کے وہ کوئی گناہ کریں ایذ اپہنچاتے ہیں'وہ بہتان عظیم اور گناہ بمین کے ارتکاب کا باراٹھاتے ہیں۔'' اوراللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ لِنَا يُتُهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسَى اَنْ يَكُوْنُوا خَيْرًا مِّنْهُمُ وَلَا بِسَآءٌ مِّنْ يَكُونُوا الله يَسْخَرُ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسَى اَنْ يَكُنْ خَيْرًا مِّنْهُنَّ وَلَا تَلْمِزُواۤ اَنْفُسَكُمْ وَلَا بَسَاءٌ عَسَى اَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ وَلَا تَلْمِزُواۤ اَنْفُسَكُمْ وَلَا بَسَاءٌ اللهُ اللّهُ اللهُ ال

"اے ایمان والو! کوئی جماعت کسی دوسری جماعت ہے بنسی نہ کرے ممکن ہے کہ وہ ان سے بہتر ہوں اور نہ عور تیں دوسری عور تول سے بنسی کریں ممکن ہے کہ وہ ان سے بہتر ہوں اور نہ عور تیں مصل طعنہ زنی نہ کر واور نہ ہی ایک دوسرے کا برانا مرکھوا ممان لانے کے بعد (دوسروں کو) برے ناموں سے یاد کرنا بہت براہے۔اور جوکوئی تو بہنہ کرے تو ایسے ہی ظالم ہوتے ہیں۔"

اورالله تعالى فرمايا:

﴿ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ﴾ (الحسرات: ١٢) ''اوركى كابھيدن ٹولؤاورتم كوئى ايك دوسرے كى غيبت ندكيا كرو۔'' اور آيٹ تَالِيُّنْ اِلْهِ فِرمايا:

''روز قیامت اللہ کے نزدیک''منزلت کے لحاظ ہے وہ مخف سب ہے براہوگا جس

عتاب الكبائر الكبائر

کے فتش ہے بچنے کے لئے لوگ اس سے کنارہ کثی کرلیں۔'' 🖸

اورآ پِمَالَیْمُ اِنْ فِر مایا: ''اللہ کے بندو!اللہ نے حرج کومعدوم کر دیا ہےالا یہ کہ کوئی شخص بریس میں مستحدین اللہ کے بندو! اللہ نے میں کے مستحدین اللہ کے اللہ کہ کوئی شخص

ا پنے بھائی کی عزت کے دریے ہوئیں بیدو ہخص ہے جوحرج یا ہلاکت کامستحق تھہرا۔'' ایسے بھائی کی عزت کے دریے ہوئیں بیدو ہخص ہے جوحرج یا ہلاکت کامستحق تھہرا۔''

اور حدیث میں ہے: "مسلمان کی ہر چیز دوسرے مسلمان پر حرام ہے اس کی جان اس کا

ال اوراس كى عزت اس پرحرام ہے۔" 🏵

اورآ پِ مَنَافِينَا مِنَافِينَا مِنَافِينَا مِنَافِينَا مِنَافِينَا مِنَافِينَا مِنَافِينَا مِنْ الله

''مسلمان مسلمان کا بھائی ہے وہ اس برظلم کرتا ہے نہاسے تنہا چھوڑتا ہے اور نہ ہی اسے حقیر جانتا ہے۔ آ دمی کے لئے یہی شرکافی ہے کہ وہ اپنے مسلمان بھائی کو حقیر مارن'' (۲)

اورای میں ہے: "مسلمان کوگالی دینافسق اوراس سے لڑائی جھگڑا کرنا کفر ہے۔"

ابو ہریرہ بیان کرتے ہیں عرض کیا گیا اللہ کے رسول! فلال عورت رات کے وقت تجد پڑھتی ہےاوردن کے وقت روز ہر کھتی ہے لیکن وہ اپنی زبان سے اپنے پڑوسیوں کو تکلیف پہنچاتی

پ م ج م میری کا میں میں کوئی بھلائی نہیں وہ جہنمی ہے۔ 'اور حدیث میں سی بھی ہے۔ ہے۔ آپ نے فر مایا: ''اس میں کوئی بھلائی نہیں' وہ جہنمی ہے۔' اور حدیث میں سی بھی ہے۔

''اپنے فوت شدگان کے محاس بیان کیا کرواور ان کی خطاؤں سے خاموثی اختیار سریں

کرو۔"

اوررسول اللهُ طَأَلَيْظِ فِي فرمايا: ' جس نے سی آ دی کو کا فر کہد کر پکارایا کہا اللہ کے دعمن! جبکہ وہ ایسے نہ ہوتو پھروہ کلمہ ای پرلوٹ آتا ہے۔اور آپ کَالْتَیْظِ نے فرمایا:

''جس رات جھے معراج کرائی گئی تو میں کچھلوگوں کے پاس سے گزراجن کے تا بے کے ناخن سے معراج کرائی گئی تو میں کچھلوگوں کے پاس سے گزراجن کے تا بے کہا: چر میل! یہ کون لوگ ہیں؟ انہوں نے کہا: یہ وہ لوگ ہیں جولوگوں کا گوشت کھاتے تھے اوران کی عز توں پر جملہ کرتے تھے۔'' @

<sup>🛈</sup> بخاری مسلم 🕑 مسلم ترمذی

میلم دلائل وبرابین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

مومنوں جو پاؤں اور حیوانوں کے درمیان فساد پیدا کرنے اور شرانگیزی کے بارے میں ترہیب۔ نی مُنافید کے علیہ سے کہ آپ نے فرمایا: 'شیطان اس سے مایوں ہوگیا ہے کہ جزیرۃ العرب میں نمازی اس کی عبادت کریں کیکن ان کی باہمی شرانگیزی سے مایوں نہیں ہوا۔ ' پس ہروہ خض جو بنی آ دم کے دوا فراد کے درمیان شرانگیزی کرتا ہے اور ان کے مابین الی بات نقل کرتا ہے اور ان کے مابین الی بات نقل کرتا ہے دوران کے مابین الی بات نقل کرتا ہے دوران میں سے کسی کو تکلیف پہنچاتی ہے تو وہ چھل خور شیطان کی جماعت سے ہوا دوروہ سب سے برافخض ہے جیسا کہ نی مُنافید کے فرمایا: ''کیا میں تمہارے برے لوگوں کے بارے میں تمہیں نہ بتاؤں؟' انہوں نے عرض کیا' جی ہاں اللہ کے رسول! ضرور بتا کیں' آپ نے فرمایا: ''تم میں سے بر کوگ وہ ہیں جو چھل خور ہیں' وہ دوستوں کے مابین فساد ڈالتے ہیں اور فرمایا: ''تم میں سے بر کوگ وہ ہیں جو چھل خور ہیں' وہ دوستوں کے مابین فساد ڈالتے ہیں اور نیک لوگوں کے بارے میں مشقت تلاش کرتے ہیں۔' ①

اوررسول الله مَنْ الله عَلَيْ السَّمِي في ابت بكرة بن فرمايا:

'' چغل خور جنت میں نہیں جائے گا۔'' 🎔

'' ووضحص ملعون ہے جوعورت کو اس کے خاوند کے خلاف یا غلام کو اس کے آتا کے خلاف بھڑ کائے۔'' ①

مماس بارے مں اللہ سے پناہ طلب کرتے ہیں۔''

نصل:

لوگول كردميان اصلاح ويل ملاپ كى تزغيب كے بارے يمل الله تعالى نے فرمايا: ﴿ لَا خَيْرَ فِى كَيْنِي مِنْ مَّنْ نَّجُولهُمْ إِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعُرُوفٍ وَمَنْ يَّفْعَلُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ النَّلْهِ فَسَوْقَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴾ (النساء: ١١٤)

''ان لوگوں کی سرگوشیوں میں کوئی بھلائی (کی بات) نہیں ہوتی۔اس مخص کے سواکہ جس نے خیرات دھیان میل ملاپ کی جس نے خیرات دھیے کی یا کوئی نیک کام کرنے کی یالوگوں کے درمیان میل ملاپ کی ترغیب دی ہواور جو محض اللہ کی خوشنو دی کی طلب میں ایسا کام کرے گاتو ہم اسے اجر عظیم عطا کریں ہے۔''

مجابہ فرمایا: یہ آیت لوگوں کے درمیان عام ہے اس میں یہ بتایا گیا ہے کہ لوگ آپی میں جو با تیں کرتے ہیں اور سر گوشیاں کرتے ہیں ان میں کوئی خیر نہیں ہوتی 'ہاں جو خض اعمال خیر بی کر بات کر ہے وہ درست ہے جیسا کہ اللہ تعالی نے فرمایا: ﴿ اللّٰا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ ﴾ ''مگر جو مخض صدقہ کا تھم دے۔' مجرمضاف حذف کر دیا گیا ﴿ اَوْ مَعْدُو وُفٍ ﴾ ابن عباس نے فرمایا: طلاحی اللہ تعالی کی اطاعت کے ذریعے اور کہا جاتا ہے کہ نیکی کے تمام اعمال معروف ہیں۔ کوئکہ عقول ان کا اعتراف کر تیں اور انہیں بہتا نی ہیں اللہ تعالی کا فرمان ﴿ او اصلاح بین اللہ تعالیٰ کا فرمان ﴿ او اصلاح بین الله اس ﴾ ''یالوگوں کے درمیان میل ملاپ کرنے کیلئے۔'' یہوہ چیز ہے جس پر رسول اللہ مُنا اللہ تمام الماس ﴾ ''یالوگوں کے درمیان میل ملاپ کرنے کیلئے۔'' یہوہ چیز ہے جس پر رسول اللہ مُنا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اس کا اعتراف کے درمیان میل ملاپ کرنے کیلئے۔'' یہوہ چیز ہے جس پر رسول اللہ مُنا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کی اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کی اللہ کا اللہ کی اللہ کرنے کیلئے۔'' یہوہ چیز ہے جس پر رسول اللہ مُنا کہ کے اس کا اعتراف کی اس کی کی کہ کا کہ کو اللہ کا اللہ کی کہ کا کہ کی کہ کا کہ کو کہ کیا گوئے کہ کو کہ کو کہ کیا گوئی کی کہ کو کہ کو کہ کے کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کا کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کیا گوئی کو کہ کو کو کہ کی کے کہ کا کہ کو کہ کی کہ کو کو کہ کو

<sup>🛈</sup> ابوداؤد

نے ابوابوب انصاری کورغیب دلائی۔ آپ نے فرمایا:

''کیا میں تہمیں ایسے صدقہ کے بارے میں نہ بتاؤں جو تمہارے لئے سرخ اونٹوں ' سے بہتر ہے۔''

انهول في عرض كيا الله كرسول إضرور بتاكين آب فرمايا:

''تم لوگوں کے درمیان میل ملاپ کرایا کروجبکہ وہ آپس میں فساد پیدا کریں اوران کو

باہم قریب کیا کروجب وہ ہاہم دوریاں پیدا کریں۔'' 🛈

ام حبيبةً نے روایت کیا کہ نبی کا نظیم نے فرمایا '

''ابن آ دم کا پورا کلام اس کے خلاف ہے اس کے حق میں نہیں 'سوائے اس کے جوامر بالمعروف 'نہی عن المئکر یا اللہ کے ذکر کے متعلق ہو۔'' ﴿

مروی ہے کہ کسی آ دمی نے سفیان سے کہا: بیرحدیث کتنی سخت ہے سفیان نے فر مایا: کیا تم نے اللہ تعالیٰ کا بیفر مان نہیں سنا:

﴿ لَا خَيْرَ فِي كَثِيْرٍ مِّنْ مَّنْ نَّجُوالهُمْ إِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ آوُ مَعُرُونٍ ﴾

(النساء: ١١٤)

''ان لوگوں کی سرگوشیوں میں کوئی بھلائی کی بات نہیں ہوتی 'اس فخص کے سوا کہ جس نے صدقہ کرنے ماکوئی نیک کام کرنے کاحکم دیا۔''

پس به بالکل ویسے ہی ہے۔

پھرالند سجانہ وتعالی نے بیتعلیم دی کہ بیا عمال بھی صرف اسے فائدہ پہنچا ئیں گے جوان کے ذریعے سے اللہ تعالیٰ کی رضامندی جا ہتا ہو۔اللہ تعالیٰ نے فر مایا:

﴿ وَمَنْ يَتَفَعَلُ ذَٰلِكَ ابْتِعَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ ٱجُرًّا عَظِيْمًا ﴾

''اور چوخص الله کی خوشنودی میں ایسا کام کرے گا تو ہم اسے اجرعظیم عطا کریں گے۔''

جس کی کوئی حد نہیں ہوگی۔حدیث میں ہے کہ '' وہ مخص کذاب نہیں جولوگوں کے درمیان

میل ملاپ کی بات کرتا ہے وہ بہتر چفلی کھا تا ہے یا بہتر بات کرتا ہے۔ " ا

🕻 بزار'طیرانی 🛈 طیرانی 🕝 بخاری

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

حراب الكبائر على الكبائر الكب

کرنے کے بارے میں۔ سہل بن سعد الساعدیؓ ہے روایت ہے کہ رسول اللّه تَالِیَّیْ کَا کُوفِر بِیْنِی کہ بن عمر و بن عوف کے درمیان کوئی شرواختلاف ہے تو رسول اللّه تَالِیْنِیِّ اپنے چند صحابہ کرام کے ساتھ ان کے درمیان صلح کرانے کے لئے تشریف لے گئے۔

اوررسول اللهُ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِمُ فِي مَا مِا:

''جو خص کسی دو کے درمیان میل ملاپ کرادے تو اللہ اس کے معاملے کی اصلاح فرما و یتا ہے اور وہ جو کلام کرتا ہے اس کے ہر کلمہ کے بدلے میں اس کوغلام آزاد کرنے کے برابر ثو اب عطا کرتا ہے اور جب وہ واپس آتا ہے تو اس کے سابقہ عام گناہ بخش دیئے جاتے ہیں۔' ﴿ وَبِاللّٰہ التو فَیْقَ

۔ اللہ! اپنی مہر بانی ہے ہمارے ساتھ معاملہ فر مانا' اپنی عفو وردگز رہے ہمارا تدارک فر مانا۔اے تمام حم کرنے والوں میں سے زیادہ رحم کرنے والے۔

 $\triangle \triangle \triangle$ 

اصبانی نے اے روایت کیا ہے اور منذری نے اس کے ضعف کی طرف اشارہ کیا ہے۔

<sup>·</sup> معتبالى دلافاعو ي عيلى ي مولى مكولى مكولي مكولي علاق با تتاكَ في سيدي مفت آن لائن مكتب

#### الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر

### (۵۴)اُللہ کے بندوں کواذیت بہجاِنا

### اوران پردست درازی کرنا

الله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَالَّذِيْنَ يُؤُذُونَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَٰتِ بِغَيْرِ مَااكْتَسَبُواْ فَقَدِ احْتَمَلُواْ بُهْتَانًا وَّاثْمًا مُّبِيْنًا ٥﴾ (الاحزاب: ٥٨)

''اوروہ لوگ جومومن مردوں اورمومن عورتوں کواس کے بغیر کہوہ کوئی گناہ کریں ایذ ادیتے ہیں'وہ بہتان عظیم اور گناہ مبین کےار تکاب کا بارا ٹھاتے ہیں۔''

اورالله تعالى في فرمايا:

﴿ وَ اخْفِصُ جَنَا حَكَ لِمَنِ النَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينُ ٥﴾ (الشُعراء: ٢١٥) ''اورمومن جنهول نے تمہاری اتباع کی ہے'ان سے شفقت ومہر بانی سے پیش آؤ۔'' ابو ہر رزہ بیان کرتے ہیں'رسول اللهُ مَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَنْ اللهُ عَالَ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَالَى اللهُ اللهُ عَنْ اللهُ اللهُ عَنْ اللهُ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ اللهُ اللهُ عَنْ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ

''الله تعالیٰ نے فر مایا: جس نے میرے کسی دوست سے دشمن کی تو میرااس سے اعلان جنگ ہے۔'' ①

اورایک روایت میں ہے: 'نیقینا اس نے جنگ میں مجھ سے مبارزت کی' (میرے مقابلے پرآگیا) لینی میں اسے بتا دینا چاہتا ہوں کہ میں اس کا محارب ہوں۔ اور حدیث میں ہے کہ ابوسفیان چندساتھیوں کے ساتھ سلمان صہیب اور بلال رضی اللہ عنہم کے پاس آئے تو انہوں نے کہا: اللہ کی تلواروں نے اللہ کے دخمن سے اپنا حق نہیں لیا' تو ابو بکر ٹے فر مایا: کیاتم یہ بات قریش کے بڑے اور ان کے سردار سے کہ رہے ہو؟ وہ نبی می گائی ایک باس آئے تو انہیں بتایا' آپ می گائی گئی کے باس آئے تو انہیں بتایا' آپ می گائی گئی کے فر مایا: 'ابو بکر! شاید کہ تم نے انہیں ناراض کردیا ہے' تم نے تو اپنے رب کو ناراض کردیا۔' پس ابو بکر! شاید کہ تم انہیں ناراض کردیا ہے' تم ہیں ناراض کردیا ہے' انہوں نے کہا: نہیں؟

الله تمهيں معاف كرے بيارے بھائى!

الله تعالی کے فرمان کے بارے میں:

﴿ وَ اصْبِرُ نَفْسَكَ مَسعَ الَّذِيْنَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاوِةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجُهَةً ﴾ (الكهف: ٢٨)

''اورجولوگ اللہ کی رضا مندی اور خوشنودی کے لئے مجموشام اپنے رب کو جا ہتے ہیں' ان کے ساتھ صبر کئے رہے۔''

اوران آیات میں فقراء کی فضیات ہے اوراس کا سبب نزول یہ ہے کہ آپ پرسب سے پہلے ایمان لانے والے فقراء تھے۔ اوراس طرح ہر نبی جومبعوث کیا گیا اس پرسب سے پہلے ایمان لانے والے فقراء بی تھے۔ رسول الله مُنْ فَقَراء صحابۂ جیسے سلمان صہیب 'بلال اور عمار بن یاسر رضی الله عنهم کے ساتھ بیشا کرتے تھے 'شرکین نے ارادہ کیا کہ وہ آپ سے فقراء کو دور کرنے کا کوئی حیلہ کریں جب انہوں نے سنا کہ رسولوں کی علامت یہ ہے کہ ان کی سب سے دور کرنے کا کوئی حیلہ کریں جب انہوں نے سی مشرکین کے بعض سردار آئے تو انہوں نے کہا محمد (منَّل اَنْ فَقراء کوا ہے پاس سے ہٹاؤ کی کیونکہ ہمارے نفوس نفرت کرتے ہیں کہ آپ انہیں بھا کیونکہ ہمارے نفوس نفرت کرتے ہیں کہ آپ انہیں بھا کیونکہ ہمارے نفوس نفرت کرتے ہیں کہ آپ انہیں بھا کیونکہ ہمارے نفوس نفرت کرتے ہیں کہ آپ انہیں بھا کیونکہ ہمارے نفوس نفرت کرتے ہیں کہ آپ انہیں بھا کیونکہ نمان کے بڑے لوگ آپ بھا کیونکہ نمان کے آٹراف ادران کے بڑے لوگ آپ برایمان لے آئیں گئی سے ہٹادیں تو لوگوں کے اشراف ادران کے بڑے لوگ آپ برایمان لے آئیں گئی گئی نے بیا تیت ناز ل فرمائی۔

﴿ وَلَا تَـطُرُدِ الَّذِيْنَ يَدُعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاوَةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُونَ وَجُهَهُ ﴾

(الانعام: ٢٥)

''اوران لوگوں کواپنے پاس سے دور نہ کیجئے جوشج وشام اپنے رب کو پکارتے ہیں'جس سے صرف اس کی خوشنو دی اور خوثی حیاہتے ہیں۔''

اور جب مشرکین ان کودور کرنے سے مایوس ہو گئے تو انہوں نے کہا: محمد (سَلَیْ اَیُکِیْزُمُ) ایک دن بہارے لئے اور ایک دن ان کے لئے مقرر کر دیں یہ تو اللہ نے بیآیت نازل فرمائی۔ کتاب الکبائر کی کشف کے مع اللّذِینَ یَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاوةِ وَالْعَشِیّ یُرِیْدُونَ وَجَهَهُ وَ الْعَبْدِيّ یُریْدُونَ وَجَهَهُ وَلَا تَعْدُ عَیْنِكَ عَنْهُمْ تُرِیْدُ زِیْنَةَ الْحَیلُوةِ اللَّانِیَا ﴿ (الکهف: ۲۸) ''اور جولوگ اللّه کی رضامندی اور خوشنودی کے لئے صبح وشام اپنے رب کوچاہتے ہیں' آپ ان کے ساتھ صبر کئے رہے' اور دنیوی زندگی کی زیب وزینت کوچاہتے ہوئے ان سے آئکھیں نہ پھیریں۔''

لیعنی آ پ دنیا داروں کی مصاحبت کی خاطر ان ایمان داروں کو دور کریں نہ آ پ کی نظر عنایت ان سے بےزار ہو'اورفر مادیجئے:

﴿ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكُفُرْ. ﴾ (الكهف:

(14

''لیں جوچاہے ایمان لائے اور جوچاہے منگرر ہے۔'' محمد شدال مند سند کی سرک کا مسابقہ میں میں انداز میں میں انداز کا میں انداز کیا ہے۔''

پھراللہ تعالیٰ نے اپنے فرمان کے ذریعے مال داراور فقیرومختاج کی مثال بیان فرمائی۔ در در در در در در در اور میں اور در ایک مال داراور فقیرومختاج کی مثال بیان فرمائی۔

﴿ وَاضْرِبُ لَهُمْ مَّتَكَّا رَّجُلُمِنِ ۗ (الكهف: ٣٢)

﴿ وَاضْرِبُ لَهُمْ مَّثَلَ الْحِيَواةِ الذُّنْيَا ﴾ (الكهف: ٥٥)

''اوران سے دنیا کی زندگی کی مثال بیان کیجئے۔''

پس رسول اللهُ مَنْ لِيَنْ القراء كَ تَعْظيم وَتَكريم كما كرتے تھے۔

جب رسول الله مَنْ اللهُ عَلَيْدَ عَلَم مِن عَلَى طرف جَرَت كى تو انہوں نے آپ كے ساتھ جرت كى

اور وہ محبد کےصفہ (چبوترے) پرالگ تھلگ مقیم تھے'ان کا نام''اصحاب صفہ''رکھ دیا گیا۔اور جو

بھی فقراء میں ہے ہجرت کرتاوہ ان کے ساتھ مل جاتاحتیٰ کہوہ زیادہ ہو گئے ۔رضی اللہ عنہم

ان لوگوں نے اس چیز کامشاہدہ کرلیا تھا جواللہ نے اپنے اولیاء ( دوستوں ) کے لئے احسان بار کیا تھا' اور انہوں نے زنور ایمان سے ایسا دیکر لیانتہا' کس انہیں نے اور نہاں کے دیا ک

ہے تیار کیا تھا'اور انہوں نے نورایمان سےاسے دیکھ لیا تھا' پس انہوں نے اپنے دلوں کو دنیا کی سمی چیز کے ساتھ معلق نہیں کیا تھا۔ بلکہ وہ کہتے تھے: ہم تیری ہی عبادت کرتے ہیں' تیرے ہی

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

vw.KitaboSunnat.com

مور میں ترے ذکر کے ساتھ ہم نعتیں عاصل کرتے اور فرحت محسوں کرتے ہیں ہم تیری مجبت کے میدان میں خوش حال زندگی بسر کرتے اور اپنے معاملات سنوارتے ہیں۔ ہم تیرے مجبت کے میدان میں خوش حال زندگی بسر کرتے اور اپنے معاملات سنوارتے ہیں۔ ہم تیرے لئے ممل کرتے اور محنت کرتے ہیں اور ہم تیری چوکھٹ کو بھی بھی نہیں چھوڑیں گے۔ پس تب اس نے ان کے لئے اپنی راو آسان کردی اور ان کے متعلق اپنے رسول کو خطاب فرمایا:

﴿ وَ لَا تَطُرُدُ وَ الَّذِیْنَ یَدْعُونَ دَرَبَّهُمْ بِالْعَدَاوِةِ ﴾ (الانعام: ۲۰)

''اوران لوگوں کواپنے پاس سے دور نہ سیجئے جو شیخ وشام اپنے رب کو پکارتے ہیں۔'' ''اوران لوگوں کواپنے پاس سے دور نہ سیجئے جو شیخ اسلام اپنے رب کو پکارتے ہیں۔''

اوران و ول ورود کریں جن کی شام اپندرب کے ذکر پر ہوتی ہے اور وہ قتی اس لیعنی آپ ان لوگوں کو دور نہ کریں جن کی شام اپندرب کے ذکر پر ہوتی ہے اور وہ قتی اس کے درواز نے پر کرتے ہیں آپ ان لوگوں کو دور نہ کریں مبحد جن کا ٹھکانہ اور اللہ ان کا مطلوب و مددگار ہے۔ بھوک ان کا کھانا ہے اور بیداری جب لوگ سوجاتے ہیں ان کا سانس ہے فقر وفاقہ ان کا شعار ہے مسکنت وحیاء ان کی چا در ہے انہوں نے اپنے عزم کے گھوڑ ہے اپنے مولی کے درواز نے پر باندھ رکھے ہیں انہوں نے اپنے چرے محرابوں میں اپنی سرگوشی کے لئے کشادہ اور درواز نے پر باندھ رکھے ہیں انہوں نے اپنے چرے محرابوں میں اپنی سرگوشی کے لئے کشادہ اور کھوا رکھے ہیں فقر عام و خاص ہے پس عام اللہ تعالی کی طرف محتاج ہوا دیہ ہر علوق کا وصف ہے۔ مومن ہوخواہ کا فراور یہی اللہ تعالی کے فرمان کا محنی ہے ۔ ایسا المناس انتہ الفقر اعلی اللہ اللہ اللہ کی طرف مجتاج ہو۔ 'جبکہ خاص فقر اللہ کے اولیاء اور اس کے ہاروں کا وصف ہے ان کے ہاتھ و نیا سے خالی ہیں اور ان کا دل و نیا کے تعلق سے خالی ہے اور یہ کیون سے خالی ہیں اور ان کا دل و نیا کے تعلق سے خالی ہے اور یہ کیفیت اللہ عزوجل کے ساتھ تعلق قائم کرنے اس کی طرف اشتیاق رکھے اور اللہ عزوجل کی طرف میں مائل ہونے کی انس وخلوت کی وجہ سے ہے۔

اے اللہ! ہمیں بھی اپنی مناجات کی لذت چکھا دے 'اپنی رضا مندی والی راہوں پر جلا دے 'جو چیز تیری بارگاہ میں حاضر ہونے سے دور کر دے اس کوہم سے لاتعلق کر دے 'تونے اپنے اہل محبت کے لئے جو چیز آسان کی ہے' اسے ہمارے لئے بھی آسان کر دے اور ہمیں' ہمارے والدین اور تمام مسلمانوں کومعاف فرمادے۔

222

## (۵۵) فخر وغروراورگھمنڈ کرتے ہوئے ازار' کپڑے' لباس اور شلوار كواط كانا

الله تعالیٰ نے فر ماما:

﴿ وَلَا تَمُشِ فِي الْآرْضِ مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلٌّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ٥ ﴾ (لقمان: ۱۸)

''اورز مین پراترا کرنه چل الله کسی اترانے والے اور شیخی خورے کو پسنزمیس کرتا۔'' اور نبی تَالَیْنِکُم نے فرمایا: ''ازار کا جوحصہ مخنوں سے بنچے ہے وہ آ گ میں ہے۔'' 🛈 اورآ ي مَالَيْنَا عِمْ لِيَعْمِ فِي اللهِ

. ''اللّٰہاں شخص کی طرف ( نظر رحمت ہے ) نہیں دیکھے گا جس نے اپنا از اراز راہ تکبر تگھسیٹا۔''🛈

ww.KitaboSumat.com

اورآ ب مَنَا لَيْنَا لِمُ اللهِ

'' تین قتم کے لوگ ہیں' اللہ روز قیامت ان سے کلام کرے گا' نہان کی طرف دیکھے گا اورنہ بی انہیں پاک کرے گا'اوران کے لئے در دناک عذاب ہے۔ازاراؤکا نے والا' احسان جمّانے والا اور جھوٹی قشم ہے اپناسودا بیجنے والا۔''

یہ بھی حدیث میں ہے:''ایک آ دمی ایک جوڑازیب تن کئے ہوئے'سر میں کنگھی کئے ہوئے ایے آ پکو بڑاسجھتے ہوئے متکبرانہ حیال سے چلا جار ہاتھا کہا جیا مک زمین نے اے دھنسادیا اور وہ قیامت تک اس میں دھنتا چلا جائے گا۔'' 🏵

اورآ يِمَا لَيْنَا لِلْمُ اللَّهِ عَلَيْنَا لِللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّه

'' جس شخص نے از راہ تکبراینے کیڑے کو گھسیٹا تو روز قیامت اللہ اس کی طرف نہیں وتکھےگا۔''

<sup>🛈</sup> بخاری (۵۷۸۷) 💮 بخاری (۵۷۸۸) مسلم (۲۰۸۷)

<sup>🛈</sup> بخاری (۵۷۸۹) مسلم (۲۰۸۸)

كتاب الكبائر كياب الكبائر كياب الكبائر كياب الكبائر كالمستحدد المستحدد الكبائر كياب الكبائر كالمستحدد المستحدد المستحدد

اورآپ مَلَاثِيَّةِ مِنْ عَلَيْتِهِ مِنْ اللهِ عَلَيْتِهِ مِنْ اللهِ عَلَيْتُهِ مِنْ اللهِ عَلَيْهِ ا

'' کپڑالٹکا نا ازاراور عمامے میں ہے' جس نے از راہ تکبراس سے پچھی گھسیٹا تو روز

قيامت الله اس كى طرف نبيس ديھے گا۔ " 🛈

اورآ پِ مَا كُنْ يَكِم نِے فر مايا:

''مومن کی تہبنداس کی نصف پنڈلی تک ہےاورا گروہ پنڈلی اور مخنوں کے ماہین ہے تو

بھی کوئی حرج نہیں کیکن جو مخنوں سے نیچ ہے تو دوآ گ میں ہے۔ ' ا

اوریہ چیزلباس کے متعلق عام ہے خواہ وہ شلوار ہو' کپڑا ہوڈ جبدودستاریا قباءوشیروانی۔ پس ہم اللّٰہ تعالیٰ سے عافیت طلب کرتے ہیں۔

ابوہریرہ بیان کرتے ہیں' ایک آ دمی اپنا از ارائکائے نماز پڑھ رہا تھا' رسول اللّه تَکَالَیْکُمْ نے اسے فر مایا '' جاؤوضو کرو؟ تو ایک آ دمی نے آپ سے عرض کیا' اللّه کے رسول! آپ نے اسے کس لئے تھم فر مایا ہے کہ وہ وضو کرو؟ چھر پھھ دیر خاموثی اختیار کرنے کے بعد فر مایا '' وہ از ارائکا کرنماز پڑھ رہا تھا' جبکہ اللّه اس محف کی نماز تبول نہیں کرتا جو اپنا از ارائکا تا ہے۔'' ©

اورآ پُمَالَيْظِمُ نِے فرمایا:

'' جس شخص نے از راہ تکبرا پنااز ارائکا یا تو روز قیامت اللہ اس کی طرف نظر رحمت نہیں فر مائے گا۔''

تو ابو بکڑنے عرض کیا'اللہ کے رسول!میراازار ڈھیلا ہوجا تا ہے(لٹک جاتا ہے) جبکہ میں اس کا خیال رکھتا ہوں' تورسول اللہ مَا کُلِیٹِئے نے انہیں فرمایا:''آپان میں سے نہیں جوازار تکبر سے لٹکاتے ہیں۔''©

۔ اےاللہ!ارمم الراحمین!اپنی رحمت ہےا ہے بہترین لطف وکرم سے ہمارے ساتھ معاملہ فریانا۔

<sup>🛈</sup> ابوداؤد (٤٠٩٤) 🕑 ابوداؤد (٤٠٩٣)

<sup>🕏</sup> ابوداؤد (۸۰۸٦) 💮 خاري (۲٦٦٥)

## (۵۲)مردوں کاسونااورریشم پہننا

رسول اللهُ مَنْ اللهُ عَلَيْهِ مِنْ فَر مايا:

'' جس نے دنیا میں رکیٹم پہناوہ اے آخرت میں نہیں پہنے گا۔' 🛈

اورية پ الفيز كام كرمطابق كشكراوران كے علاده سب كے لئے عام ہے۔فرمایا:

''ریشم اورسونا پہننامیری امت کے مردوں پرحرام قرار دیا گیا ہے۔'' 🏵

حذیفہ بن بمان میان کرتے ہیں رسول اللّٰه مَا اللّٰهِ عَلَیْمُ اللّٰہِ عَلَیْمُ اللّٰہِ عَلَیْمُ اللّٰہِ عَلَیْم پینے اوران میں کھانے نیز ریشی کیٹر ااور ریشمین قیمتی کیڑا جس کا تانا باناریشم کا ہوتا ہے پہننے اور

اس پر بیٹھنے ہے ہمیں منع فر مایا۔ ا

پس جو حض مردوں کے لئے رہ میں بہنے کو حلال سمجھوہ کا فرہے۔البتہ آپ تا گائی آئے ان خارش وغیرہ کے مریض اور دخمن سے مقابلہ کرنے والوں کواس کے پہنے کی رعایت دی ہے۔ جہاں تک زینت کے لئے رہ میں پہنے کا تعلق ہے تو یہ مسلمان کے اجماع کے مطابق مردوں پر حرام ہے۔خواہ وہ چونہ ہویا قبطی (مصر کے علاقے کا بنا ہوا رہ ہم) ہویا کوئی ریشی گلزا ہو۔ای طرح جب اکثر حصہ ریشی ہوتو وہ حرام ہے اوراسی طرح سونے کا مردوں کے لئے پہننا حرام ہے خواہ انگوشی ہویا کر پر باندھنے کی مرضع پی ہویا تلوار کا کنارہ وکونا کیس اس کا پہننا حرام ہے نبی منگر نی ہویا تھوں وکونا کیس اس کا پہننا حرام ہے نبی منگر نی آگ کے آدی کے ہاتھ میں سونے کی انگوشی دیکھی تو اس کوا تاردیا اور فرمایا: ''تم میں سے کوئی آگ کے انگارے کا ارادہ کرتا ہے تواسے اپنے ہاتھ میں ڈال لیتا ہے۔''

ای طرح سونے کی کڑھائی کئے ہوئے کپڑے اور چاندی کے تارہے کڑھائی کئے ہوئے کپڑے بھی مردوں پرحرام ہیں۔علاء کا بچے کوریٹم اورسونا پہنانے کے بارے میں اختلاف ہے بعض نے اس میں رخصت دی ہے اور بعض نے آپ ٹائیٹی کے عمومی فرمان جوسونے اور ریٹم کے بارے میں ہے'' کہ یہ دونوں میری امت کے مردوں پرحرام ہیں اوران کی عورتوں کے لئے حلال

<sup>🛈</sup> بخاری (۵۸۳۵) مسلم (۲۰۹۹) 💮 بخاری (۵۸۳۵) مسلم (۲۰۹۸)

<sup>🖱</sup> بخاری (۵۸۳۷)

حراب الكبائر على الكبائر الك

\*\*

### (۵۷)غلام کا بھا گنا

جريرٌ ہے روايت ہے كەرسول اللَّهُ ظَالْتَيْمُ أَنْ فِي أَلِيهُ

''جب غلام بھاگ جائے تواس کی کوئی نماز قبول نہیں ہوتی ۔'' 🛈

اورآ پِمَنَانِيَةِ مِنْ مِنْ اللهِ

"جوغلام بھاگ جائے تواس سے ذمدائھ جاتا ہے۔" (

جريرٌ بيان كرتے بين رسول الله مَنْ اللَّهِ عَلَيْهِ مِنْ مايا:

"تین آدمی ایسے ہیں کہ اللہ ان کی نماز قبول کرتا ہے نہ ان کی کوئی نیکی آسان کی طرف بلند ہوتی ہے۔ بھا گا ہوا غلام حتیٰ کہ وہ اپنے مالک کے پاس واپس آجائے 'وہ عورت جس کا خاونداس سے ناراض ہوتی کہ وہ اس سے راضی ہوجائے 'اور نشے میں مدہوش شخص حتیٰ کہ اس کا نشدا ترجائے۔'' ا

فضاله بن عبيدمرفوعاروايت كرتے ہيں:

'' تین قتم کے لوگ ہیں جن سے پوچھانہیں جائے گا جماعت سے الگ ہونے والا شخص جس نے ایٹ ہام کی نافر مانی کی بھا گا ہوا غلام جو نافر مانی کی موت مرجائے۔ اور وہ عورت جس کا خاوند موجود نہ ہواور وہ اس کی ضرور تیں پوری کرتا ہواور وہ پھر بھی اس کے بعد بناؤسٹگار کرتی ہو۔'' ﴿

لینی اس کے بعدوہ اپنے محاس ظاہر کرتی ہوجس طرح اہل جاہلیت کیا کرتے تھے۔اوران سے مرادوہ لوگ ہیں جوعیسیٰ علیہ السلام اور محمد مثالثہ کے درمیان ہوئے۔

الواحديؓ نے ای طرح ذکر کیا ہے۔

 $^{2}$ 

① مسلم (۷۰) ۞ مسلم (۲۹)

ابن حزیمه (۹۶۰) بیروایت ضعیف ہے۔

بخارى في الادب المفرد

(۵۸) الله عزوجل کے علاوہ کسی اور کے لئے ذبح کرنا

مثال کے طور پرکوئی کے شیطان کے نام سے یاضم کے نام سے یا فلال بزرگ کے نام سے ۔ اللہ تعالی نے فرمایا:

﴿ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ السَّمُ اللَّهِ عَلَيْهِ ﴾ (الانعام: ١٢١)

''اورجس جانور پر( ذیح کرتے وقت )اللّٰد کانا منہیں لیا گیااہے ہرگز نہ کھاؤ۔'' ابن عباسؓ نے فرمایا:اس سے مراد مرداراور گلاگھونٹ کر مرجانے والا جانور ہے۔

﴿ مَا ذبع على النصب ﴾ "جواستمانون پرذن كياجائـ-"

کلبی نے کہا: اس سے مرادایہ جانور ہیں جن پراللہ کا نام نہ لیا جائے یا اللہ تعالیٰ کے سوا کسی اور کے لئے ذریح کئے جائیں۔

عطائہ نے فرمایا: ذبائے سے منع کیا گیا ہے جو قریش اور عرب بنوں پر ذبح کیا کرتے تھے۔ اور اللہ تعالیٰ کا فرمان:

﴿ انه لفسق ﴾ يعنى: اگروه جانورجس پرالله كانا منہيں ليا گيا، مردار سے ہے تووہ فسق ہے يا حق اور دين سے خروج ہے۔

وان الشياطين ليوحون الى اوليائهم ليجادلو كم الين شيطان اپندوستول كوستول كوسوسه داتا ہے اوروہ يكه شركين كوسوسه داتا ہے اوروہ يه كه شركين في مومنون سے مرداركے بارے بين جھڙاكيا۔

ابن عباس بیان کرتے ہیں: شیطان نے انسانوں میں سے اپنے دوستوں کو الہام کیا کہتم ایسی چیز کی کیسے عبادت کرتے ہو کہ وہ جس چیز کو مارتا ہے تم اسے کھاتے نہیں 'اور جس چیز کوتم مارتے ہو (قتل کرتے ہو) تو اسے کھا جاتے ہو؟ تو اللہ تعالیٰ نے بیآ بیت اتاری ﴿وان اطعتمو هم﴾ لینی مردار کو حلال جاننے میں ان کی اطاعت کروگے۔

﴿ انکم لمشر کون ﴾ الرجائے نے فرمایا: اس آیت میں اس پردلیل ہے کہ ہروہ مخض جو اللّٰہ کی حرام کردہ چیز کوحلال قرار دے یا اللّٰہ کی حرام کردہ چیز کوحلال قرار دینو وہ مشرک ہے۔ اگر کہا جائے: تم نے مسلمان ذیجے کو کیسے مباح قرار دیا ہے جب اس نے بھم اللہ بڑھنا ترکر دیا 'جبکہ آ بت تحریم میں نص کی طرح ہے؟

میں نے کہا مفسرین نے اس آیت میں

﴿ ما لم یذکو اسم الله علیه ﴾ کی تفییر میں بتایا که اس سے مرادمردار ہے اور کسی نے اس کومسلمان کے ذیعے جب وہ ہم اللہ پڑھنا ترک کردے برخمول نہیں کیا اور آیت میں اور بھی اشیاء ہیں جواس پردلالت کرتی ہیں کہ آیت مردار کی تحریم میں ہے اور اس سے اللہ کا فرمان ہے۔ ﴿ وَانَّهُ لَفُسْتُ فَى "اور بِقْتَ ہے۔ "جبکہ ہم اللّٰد ترک کرنے والے مسلمان کے ذیعے کو کھانے والافت کا ارتکا بہیں کرتا۔ اور اس سے اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے:

﴿ وان السّياطين ليوحون الى اوليائهم ليجادلو كم ﴾ تمام فسرين كاجماع كمطابق مجاوله ومناظره تو مردارك بارك مين تها بهم اللّدنه پڑھنے والے مسلمان كو ديسے كي بارك مين نبيس ـ اوراس مين الله تعالى كافر مان ہے:

﴿ وان اطعتمو هم انكم لمشوكون ﴾ مشرك مردار كوطال قرار ديني أيس بندكه اس ذيج كوحلال بمجھنے ميں ہے جس پرالله كانام ندليا جائے

ابومنصور نے اپنی سند سے ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا ہے: کسی آوی نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلی نے فرمایا میں جو ذکے کرتے وقت اللہ تعالیٰ کا نام لینا بھول جاتا ہے؟ تو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا در اللہ کا نام ہر سلمان کے منہ یہ ہے ' ①

ابومنصور نے بی اپنی اساد سے ابن عباس رضی اللہ عنہ سے روایت کیا ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: ''اس کا نام اس کو کافی ہے'اورا گر ذئے کرتے وقت اس کا نام لینا بھول جائے تو وہ

بسم الله پڑھےاوراللہ کا ذکر کرے پھر کھا لے'۔ © عمر و بن الی عمر نے اپنی سند سے عائشہ رضی اللہ عنہا سے روایت کیا ہے کہ پچھالوگوں نے

کرانی نے اسے اوسط میں دروایت کیا ہے اس میں مروان بن سالم الغفاری متروک ہے۔ (مجمع الزوائد)
 واقطنی نے اسے روایت کیا ہے۔ اس میں ایک راوی محمد بن سنان صدوق ضعیف الحفظ ہے۔

حض کیا'اللہ کے رسول! کچھاوگ ہمارے پاس گوشت لے کرآتے ہیں لیکن ہمیں پیتنہیں کہاس عرض کیا'اللہ کا نام لیا گیا ہے یا نہیں؟ تو رسول اللہ علیہ وسلم نے فر مایا۔"اس پراللہ کا نام لے لواور کھاؤ''۔واحدی رحمہ اللہ کا ہے تحری کلام ہے۔اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا فر مان گزر چکا ہے: "اللہ کی اس پرلعنت ہو جواللہ کے سواکس اور کے لئے ذیح کرے'۔ ①

☆☆☆

مستدرك حاكم (٦/٤ ٣٥٪

مرا کتاب الکبائر کے میں ہے۔ (۵۹) جانتے ہو جھتے اپنے آپ کواپنے باپ کے علاوہ کسی اور کی طرف منسوب کرنا

معدرضی الله عنديان كرتے بين: رسول الله صلى الله عليه وسلم في قرمايا:

''جس نے اپنے آپ کو باپ کے علاوہ کسی اور کی طرف منسوب کیا حالانکہ وہ جانتا ہے کہ وہ اس کاباپنہیں' تو اس پر جنت حرام ہے۔'' 🛈

ابو ہررے وضی اللہ عنہ بی صلی اللہ علیہ وسلم ہے روایت کرتے ہیں آپ نے فرمایا:

"ا پے آباء سے اعراض نہ کروپس جس نے اپنے باپ سے اعراض کیا تووہ کا فر ہے " اوراس میں میں میں ہے ا

''جس نے اپنے آپ کواپنے باپ کے علاوہ کسی اور کی طرف منسوب کیا تو اس پراللہ کی لعنت ہے' گ

زید بن شریک بیان کرتے ہیں: میں نے علی رضی اللہ عنہ کومنبر پر خطاب فرماتے ہوئے دیکھا' میں نے انہیں فرماتے ہوئے سا: اللہ کی قتم! ہمارے پاس اللہ تعالیٰ کی کتاب کے سواکوئی اور کتاب نہیں جے ہم پڑھتے ہوں' اور جواس صحیفے (رجسر ) میں ہے پس انہوں نے اسے کھولاتو اس میں (زکو ق کے متعلق) اونٹوں کی عمریں اور کچھزخموں (کی دیت) کے بارے میں تفصیل تھی' اور اس میں تھا۔رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

" مدید غیر (پہاڑ) سے تو رتک حرام ہے ہیں جس نے اس میں کوئی بدعت جاری کی یا کسی بدعت جاری کی یا کسی بدعت کے اور روز کسی بدعت کو بناہ دی تو اس پر اللہ فرشتوں اور تمام انسانوں کی لعنت ہے اور روز قیامت اللہ اس ہے کوئی فرض قبول کڑھے گا نیفل اور جس نے اپنے مالکوں کے علاوہ کسی اور جس نے اپنے مالکوں کے علاوہ کسی اور جس نے اپنے مالکوں کے علاوہ کسی اور جس نے اپنے اور تمام مسلمانوں کا ذمہ ایک ہی ہے۔"

<sup>🛈</sup> بخاری (۲۷۲۲) مسلم (۲۳) 💮 بخاری (۲۷۲۸) مسلم (۱۳۷۰)

<sup>🕏</sup> بخاری (۷۳۰۰) مسلم (۱۲۷۰)

ابوذررضی اللہ عنہ سے تہیں جو اپنے آپ کو اپنے باپ کے علاوہ کسی اور کی طرف
''دو چھی ہم میں سے نہیں جو اپنے آپ کو اپنے باپ کے علاوہ کسی اور کی طرف
منسوب کرے حالا نکہ وہ جانتا ہے تو اس نے کفر کیا' جس نے کسی ایسی چیز کا دعوی کیا
جو کہ اس کی نہیں تو وہ ہم میں سے نہیں اور وہ اپنا ٹھکانہ جہنم میں بنالے یا کہا: اے اللہ
کے دشمن! حالا نکہ وہ ایسے نہیں ہے تو بھر وہ کلمہ اس پرلوٹ آتا ہے۔' ①

پس ہم اللہ تعالی سے عفوہ عافیت اور اس کے پندیدہ امور کی تو نین طلب کرتے ہیں کیونکہ
وہ تی داتا ہے۔

\*\*\*

<sup>🛈</sup> بحاری (۳۵۰۸) مسلم (۲۰۱)

### (۲۰)مناظره کٹ حجتی اور ناحق جھکڑنا

الله تعالیٰ نے فرمایا

﴿ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيْوِةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهُ عَلَى مَا فِي قَلْبِه وَهُو آلَدٌ الْبِحَصَامِ ٥ وَإِذَا تَولِّي سَعْى فِي الْآرُضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهُلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسُلَ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ٥ ﴾ (البقره: ٢٠٤/٢، ٢٠٥) الْحَرْثَ وَالنَّسُلَ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ٥ ﴾ (البقره: ٢٠٤/٢، ٢٠٥) من المربعض لوگ ایسے بھی ہیں جن کی باتیں آپ کو دنیوی زندگی کے بارے ہیں نہایت محلی معلوم ہوتی ہیں اور وہ الله کو اپنے خلوص دل پر گواہ بھی کر لیتے ہیں طالانکہ فی الحقیقت وہ جھڑے میں بڑے ہی ہخت ہوتے ہیں اور جب وہ آپ سے الگ ہو جاتے ہیں تو ملک ہیں اس خیال سے سرگری دکھاتے ہیں کہ فساد پھیلا نیس کھیتیوں کو جاتے ہیں اور الله فساد پھیلا نے والوں کو پسند نہیں کرتا ۔ " وہ الفاظ جو قابل ندمت ہیں: کئ جی مناظرہ اور جھڑا۔

جمتہ الاسلام امام غز الی رحمۃ اللہ علیہ نے فر مایا: ' المراءُ' اس سے مرادتہ ہارا کلام میں طعن کرنا ہے' تا کہ اس میں خلل ظاہر کیا جائے اور اس کے قائل کی تحقیر کے سوااس میں کوئی اور غرض نہیں' نیز اس براپنی امتیازی حیثیت خلا ہر کرنا ہے۔

جہاں تک''جدال'' کاتعلق ہے تو یہ ایسے امرے عبارت ہے جو مذاہب کے اظہار اور اس کے ثبات ہے علق رکھتا ہے۔

انہوں نے فرمایا ''اکھوم'' سے مراد کلام میں لجاجت پیدا کرنا ہےتا کہ وہ اس کے ذریعے مال وغیرہ میں سے جواس کامقصود ہے وہ اسے پالے۔ بھی بیشروع میں ہوتا ہے اور بھی بطور اعتراض ہوتا ہے۔ جبکہ ''المراء''صرف بطوراعتراض ہی ہوتا ہے' یہ کلام غزالی ہے۔

النووی رحمة الله نے فرمایا: جان کیجئے کہ جدال بھی حق پر ہوتا ہے اور مبھی باطل پر۔اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَلَا تُجَادِلُوْ اللَّهِ الْكِتْبِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ آخْسَنُ ﴾ (العنكبوت:٢٩) ٤٦/٢٤)

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

الكبائر الكبائ

''اہل کتاب ہے بحث نہ کروگرا پیے طریقے ہے جونہایت عمدہ ہو۔''

﴿وَجَادِلُهُمْ بِالَّتِي هِيَ ٱخْسَنُ﴾ (النحل: ١٢٥/١٦)

''اور ببندیده طریقے ہےان ہے بحث میجے''

اورالله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ وَمَا يَجَادُلُ فِي آيَاتَ اللَّهُ الْاالَّذِينَ كَفُرُوا ﴾ (المؤمن/ ٠٤: ٤) "اورالله كي آيوں ميں ان لوگوں كے سواجو كافر بين كوئي جھكز انہيں كرتا"

انہوں نے فرمایا اگرتو بحث وجدال حق برقائم رہنے اوراسے ثابت کرنے کے لئے ہوتو پھر یہ قابل تعریف ہےاوراگریوٹ کو ہٹانے یا جہالت کی بنیاد پر ہوتو پھر قابل ندمت ہے۔اورای

تفصیل پراس کی اباحت اور مذمت پرنصوص میں واردہ نازل ہوتی ہے۔مجادلہ اور جدال کا ایک ہی معنی ہے۔ان میں سے کسی نے کہا میں نے جھڑے ہے ہے بڑھ کر کوئی ایسی چیز نہیں دیکھی جو دین کو لیے جانے والی' مروت کو کم کرنے والی اور دل کو غافل کرنے والی ہو۔ اگرتم کہو: انسان کو ا پیے حقوق حاصل کرنے کے لئے جھگڑا کر ناضروری ہے تو جواب وہی ہے جوامام غزالی رحمہ اللہ نے جواب دیا: جان لیجئے کہ جس مذمت کی تاکید کی گئی ہے وہ تو اس شخص کے بارے میں ہے جو

المساطل پر جھگڑا کرے اور اسے علم بھی نہ ہوجیسا کہ قاضی کا وکیل ہے کہ وہ پیر جانے بغیر کہ حق کس جانب ہےخصومت پروکالت کرتاہے کیں وہ بلاعلم جھگڑا کرتاہے۔

وہ شخص بھی ندمت میں داخل ہے جوا پناحق طلب کرتا ہے وہ اس لئے کہ وہ ضرورت کے مطابق اس خصومت پراقتصار نہیں کرتا بلکہ و ہاہے مقابل پر ناحق جھگڑا کر کے کذب بیانی کر کے اور ایذا بہنچا کرغلبہ حاصل کرنے کی کوشش کرتا ہے۔ اسی طرح وہ شخص جواینے جھگڑے میں تکلیف دہ کلمات استعال کرتا ہے ٔ حالانکہ حصول حق کے لئے ان کی کوئی ضرورت نہیں ہوتی 'اور

ای طرح و چخص جس کومخض عناو جھگڑ ہے پر ابھار تا ہے تا کہ وہ اپنے مقابل کوشکست دے سکے اور اے دبا سے تو پیطرزعمل بھی مذموم ہے۔ جہاں تک اس مظلوم کا تعلق ہے جواپنی دلیل کوشرعی

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

طریقے ہے' جھگزازیادتی کئے بغیراور منادوایذاء کا قصد کئے بغیر' تقویت پہنچا تا ہے تو بیعل حرام

مرین رسین اگراس کا کوئی مل نکلتا ہوتو اس کوترک کرنا زیادہ بہتر ہے کیونکہ جھڑے کے وقت نہیں ۔ لیکن اگراس کا کوئی مل نکلتا ہوتو اس کوترک کرنا زیادہ بہتر ہے کیونکہ جھڑے کے وقت زبان کو صداعتدال پر رکھنامشکل ہوتا ہے جبکہ جھڑا اسینے میں کینہ بھر دیتا ہے اور غصے کو بھڑ کا تا ہے۔ جب غصہ بھڑک اسطے تو ان دونوں کے درمیان حقد و کینہ پیدا ہوجا تا ہے تی کہ ان میں سے ہرایک دوسرے کی تکلیف پر خوش ہوتا ہے اور اس کی مسرت پر مملکہ دوسرے کی تکلیف پر خوش ہوتا ہے اور اس کی عزت پر حملے کرنے کے لئے اپنی زبان کو کھلی چھٹی دے دیتا ہے ۔ پس جو خص جھڑ اکرتا ہے اسے ان آفات کا سامنا کرنا پڑتا ہے ۔ اور ان میں سے سب ہے کم آفت دل کامشغول ہوتا ہے تی کہ وہ اگر اپنی مارن کی حالت میں ہوت بھی اس کا دل اور خیال لڑائی جھڑ ہے میں مشغول و معلق رہتا ہے اور اس کا حال استقامت پر قائم نہیں رہتا ۔ خصومت مثرک کی ابتدا ہے اور جدال و بحث ومباحث کا جمومت کا دروازہ نہ کی حال ہے ۔ بس انسان کو چاہئے کی انتہائی ضرورت کے سوا اپنے لئے خصومت کا دروازہ نہ کھولے ۔

ابن عباس رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: '' تیرے گناہ گار ہونے کے لئے یہی کافی ہے کہ تو جھگڑ اکر تارہے۔'' ① علی رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں:''خصومت و جھگڑے میں کئی ایک ہلا کمتیں اور نتا ہیاں

> ہیں۔ فصل:

ابو ہریرہ درضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں رسول اللہ تعالیٰ کی) ناراضی میں رہتا ہے حتی 
''جو بلاعلم کسی خصومت میں جھڑا کرے تو وہ (اللہ تعالیٰ کی) ناراضی میں رہتا ہے حتی 
کدوہ اس سے دستبر دار ہوجاتے ۔ ﴿
ابوا مامہ رضی اللہ عنہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں آپ نے فرمایا:
''کوئی قوم ہدایت یا فتہ ہونے کے بعد گمراہ نہیں ہوتی الایہ کدوہ بحث ومباحثے پراتر

<sup>🛈</sup> ترمذي

<sup>©</sup> ابن ابی الدیااوراصبهانی نے الترغیب میں اسے روایت کیا ہے۔ اس میں ابویجیٰ ہے۔ جمہور علاء نے اسے صغیف قرار دیا ہے۔ (العراقی )

**→ (348 کتاب الکبائر کتاب الکبائر کتاب الکبائر** (348 کتاب الکبائر کت

آ ئے''۔ 🛈

پھرآ پ نے بہآ بت تلاوت فرما گی:

﴿ مَا ضَوَبُوْهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ﴾ (الزحرف: ٥٨/٤٣)

" محض آپ سے جھڑا کرنے کے لئے باتیں کرتے ہیں "

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

'' مجھے تمہارے بارے میں عالم کی لغزش اور قرآن مجید کے بارے میں منافق کے جھٹر اکرنے کا' بہت اندیشہ ہے جبکہ دنیا تو تمہاری گردنیں اتاردے گی۔' ﴿

اور نبی صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

" قرآن مجيد ميں جھگزا کرنا کفر ہے' 🏵

فصل:

لفظوں کے ہیر پھیر سبح ومقفع باتوں اور زور بیان سے کلام میں تبدیلی پیدا کرنا مکروہ ہے۔ جبیبا کہ ضبح الکلام لوگوں کی عادت ہے۔ پس بیسب پچھ تکلیف مذموم کے زمرے میں آتا ہے۔ بلکہ اپنے مخاطب سے اس انداز میں بات کی جائے کہ وہ آسانی سے اسے مجھ سکے اور بیکلام اس کے لئے قبل نہ ہو۔

عبدالله بن عمرو بن عاص رضی الله عنهما سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا:

''یقیناً الله اس مخص کو پیندنہیں کرتا جو بردا زبان دراز ہوتو باتوں کواس طرح کیلیٹے (چپڑ چپڑ باتیں کرے) جیسے گائے (گھاس کوجلد جلد) لپیٹتی ہے''۔ © جابر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

- ① یزید بن الی زیاد نے مجاہد عن ابن عمر کی سند سے روایت کیا ہے۔مصنف نے ''السغر ک' میں کہا ہے کہ لفظ یروی کے ساتھ معلق ہے۔طبر انی میں حدیث معاذ سے اس کا شاہد ہے۔ اس میں عبد انکیم بن مصور متروک ہے۔
  - ضبرانی فی الکبیر (۲۰/۲۰ ۱۳۹ ) بیروایت ضعیف ہے۔
    - 🖰 ابوداؤد (٤٦٠٣) 🕲 . ترمذی

"روز قیامت تم میں سے وہ خص مجھے زیادہ محبوب اور میرے زیادہ قریب ہوگا جس کا تم میں سے اخلاق اچھا ہوگا۔ اور تم سے سب سے زیادہ قابل نفرت اور میری مجلس سے سب سے زیادہ دور وہ لوگ ہوں گے جو زیادہ باتیں کرنے والے لوگوں پر زبان درازی کرنے والے اور مشکیر ہیں۔"

جان لیجئے کہ خطبوں اور مواعظ میں الفاظ کی تحسین مذمت کے زمرے میں نہیں آتی بشرطیکہ اس میں افراط واغراب نہ ہو بلکہ اس سے دلوں کو اللہ تعالیٰ کی اطاعت پر ابھار نامقصود ہو۔اور لفظ کی تحسین کا جواس میں اثر ہے وہ ظاہر ہے۔واللہ اعلم۔

\*\*\*

+ ﴿ عَابِ الْكِبَائِرِ ﴾ ﴿ فَيْهِ الْمُعَالِّينِ الْكِبَائِرِ ﴾ ﴿ فَيْهِ عَلَيْهِ الْمُعَالِّينِ الْكِبَائِرِ • ﴿ فَيْهِ الْكِبَائِرِ الْكِبائِرِ الْكِبائِرِ

## (٦١) ضرورت ہے زائد پانی کورو کنا

اورالله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ قُلُ اَرَءَ يُتُمْ إِنْ اَصْبَحَ مَآ وَ كُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّا تِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴾ (الملك/٢٠: ٣٠)

'' کہدد یجئے کہ تمہارے استعال کا پانی خشک ہوکر نیچے چلا جائے تو کون ہے جو تمہیں (ایسا) شیریں یانی لاکردے۔''

نبی مَنْ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ ال اور آپ مَنْ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالَّمُ اللَّهُ اللّ اللَّهُ اللَّ

ریروں) کی مدین مردیہ ہور کی سے بات ہاں بہتر ہوئی ہیں ہے۔ ''اور ایک وہ آ دمی جس نے اپنی ضرورت سے بچا ہوا پانی روک لیا' تو الله فرمائے گا آج میں تم سے اپنا فضل روک لیتا ہوں جیسا کہتم نے اپنی ضرورت سے بچا ہوا پانی

روک لیا تھا' جسے تیرے ہاتھوں نے نہیں بنایا تھا۔''ہم

<sup>🛈</sup> بخاری (۲۳۵٤) مسلم (۱۵۹۲) 🕥 احمد (۱۷۹/۲)

<sup>🕏</sup> بخاری (۲۳۵۸) مسلم (۱۰۸) 💮 بخاری (۲۳۸۹)

### الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر

### (٦٢) نايتول ميس كى كرنا

' الله تعالیٰ نے فرمایا پ

﴿ وَيُلُّ لِّلْمُ طُفِّفِينَ ﴾ (التطفيف: ١/٨٣)

'' کم دینے والوں کے لئے ہلا کت وتباہی ہے''

یعنی جولوگوں کونقصان پہنچاتے ہیں اور ناپ تول میں ان کے حقوق میں کمی کرتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ ٱلَّذِيْنَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوُفُونَ ﴾ (التطفيف: ٢/٨٣)

''جولوگوں ہےناپ کرلیں تو پورالیں'' بعد

یعنی ان سے اپنے حقوق بورے کیتے ہیں۔

الزجاج رحمہ اللہ نے فر مایا: اس کامعنی ہے کہ جب لوگوں سے ناپ کر لیتے ہیں تو ان سے بورا بورا لیتے ہیں اس طرح جب وزن کر کے لیتے ہیں 'اگر چہ' جب وزن کر کے لیتے ہیں' کا ذکر نہیں کیا' کیونکہ ناپ اور وزن انہی دو کے ذریعے خرید و فروخت ہوتی ہے'نا پاجا تا ہے اور وزن

کیا جاتا ہے۔ لیس ان میں سے ایک دوسرے پرولالت کرتا ہے۔

﴿ وَإِذَا كَالُو ۚ هُمْ أَوْ وَّزَنُوهُمْ يُخْسَرُونَ ﴾ (التطفيف: ٣/٨٣)

''اور جب ان کوناپ کریا تول کر دیں تو کم کر دیں' نعنی وہ ناپ تول میں کی کرتے

-U

السدی رحمہ اللہ نے فرمایا: جب رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم مدینہ تشریف لائے تو وہاں ابو جہینہ نامی ایک خص تھا'اس کے پاس دو پیانے تھے۔ ایک لینے کے لئے اور دوسرا دینے کے لئے' تو اللہ تعالیٰ نے بیآیت نازل فرمائی:

> ا بن عباس رضی الله عنه بیان کرتے ہیں رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فر مایا: '' پانچ' پانچ کے بدلے میں ہیں۔' صحابہ نے عرض کیا' الله کے رسول! وہ کیا ہیں؟ آپ نے فر مایا:

کتاب الکبائر کی ہے۔ تو اللہ ان کے دشمنوں کوان پر مسلط کر دیتا ہے۔ جب وہ اللہ کی شریعت کے مطابق فیصلے نہیں کرتے تو اللہ ان میں فقر دیجا ہی مطابق فیصلے نہیں کرتے تو اللہ ان میں فقر دیجا ہی عام کر دیتا ہے۔ جب ان میں مختاجی پھیل جاتی ہے تو اللہ ان میں طاعون ( یعنی کثر ت موت ) نازل کر دیتا ہے۔ جب وہ ناپ میں کمی کرتے ہیں تو نبا تات اور کھیتیاں نہیں اگتیں اور وہاں قرط سالی آ جاتی ہے اور جب وہ زکو ہ نہیں دیے تو وہاں بارش نہیں ہوتی۔ ' ① وہاں قرط سالی آ جاتی ہے اور جب وہ زکو ہ نہیں دیے تو وہاں بارش نہیں ہوتی۔ ' ①

''کیا پہلوگ اس بات پریفتین نہیں رکھتے کہ انہیں (قبروں نے )الٹایا جائے گا'' الزجاج رحمہ اللہ نے فرمایا: اس کامعنی یہ ہے کہ اگر ان کویفتین ہوتا کہوہ قبروں سے اٹھائے جا کیں گے تو پھروہ ناپ تول میں کمی نہ کرتے۔

﴿ ليوم عظيم ﴾ "ايك بزيون مين" لعنى قيامت كون-

﴿ يوم يقوم الناس ﴾ ''جس دن تمام لوگ كھڑے ہوں گے''انٹی قبروں ہے۔

﴿ لَوْبِ الْعَالَمِينَ ﴾ ''پروردگارعالم كےسامنے''لعنی اس كے تکم اور جزاءوحساب كے لئے'اوروہ اس كے حضور فيصلہ ہوجانے كے لئے كھڑے ہوں گے۔

مالک بن دینارہ روایت ہے انہوں نے کہا: میرا پڑوی میرے پاس آیا جب کہاں کی موت قریب آیا جب کہاں کی موت قریب آیا جب کہاں گی موت قریب آیا جب کہاں گئی موت قریب آیا جب کہا۔ ابویکی ایمیرے پاس دو پیانے تھے میں ایک سے لیتا تھا اور دوسرے سے دیا کرتا تھا۔

مالک بن دینارنے کہا: میں کھڑا ہوکرا یک پیانے کو دوسرے پر مارنے لگا' تو اس نے کہا: ابو یجیٰ! جب ایک کو دوسرے پر مارا جاتا ہے تو معالمے کی تنگینی اور بڑھ جاتی ہے پس وہ اس حالت میں فوت ہوگیا۔

﴿ الْمُصِطَّفُفَ ﴾ وہ خض جوناپ تول میں تھوڑی ہی کمی کرتا ہے کیونکہ وہ معمولی ہی چیز ہی چوری کرسکتا ہے اور یہ چوری 'خیانت اور اکل حرام کی مثل ہے۔ پھر اللّٰہ تعالیٰ نے ایسا کرنے

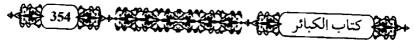
🛈 طبراني في الكبير

+ كتاب الكبائر كي المجائر كي المجائز كي المج والے ئے ' ویل' ' کاوعدہ کیا ہے۔'' ویل' ' ہے مرادعذاب کی شدت ہے۔ یہ بھی کہا گیا ہے کہوہ جہنم میں ایک وادی ہے اگر دنیا کے پہاڑ اس میں ڈال دیے جا کمیں تو وہ بھی اس کی شدت حرارت سے پکھل جا کیں۔سلف میں ہے کسی نے کہا ہے: میں ہرنا پنے یا دزن کرنے والے کےخلاف جہنم کی گواہی دیتا ہوں' کیونکہ اس ( کمی کرنے ) ہے صرف دہی پچ سکتا ہے جس کواللہ بچائے 'اور ان میں سے کی نے کہا: میں ایک مریض کے پاس گیا جس پرموت کا عالم طاری تھا میں اے کلمہ شہادت کی تلقین کرنے لگا'لیکن اس کی زبان نہیں چل رہی تھی۔ جب اے افاقہ ہوا تو میں نے اس سے یو چھا: میرے بھائی! کیا ماجراہے کہ میں تنہیں کلمہ شہادت کی تلقین کررہا تھا 'جبکہ تمہاری زبان اے ادا نہی کرتی تھی؟ اس نے کہا: میرے بھائی! تر از و کا کا نٹا میری زبان پر ہے جو مجھے اسے پڑھے نہیں دیتا۔ میں نے اسے کہا: اللہ کی شم! کیا تم وزن کم دیتے تھے؟ اس نے کہا: نہیں ' الله کی شم! کیکن میں نے کچھ مدت تک اپنے تر از وکی کار کر دگی کے درست ہونے کو چیک نہیں کیا تھا۔ پس بیاں شخص کا حال ہے جسے اپنے تر از وکی کارکر دگی کے درست ہونے کا عتبار اور یقین نہیں' تواس شخص کا کیا حال ہوگا جووز ن میں کمی کرتا ہے؟

نافع بیان کرتے ہیں ابن عمر رضی اللہ عنہمابا کع کے پاس سے گزرتے تو فرماتے:
اللہ سے ڈرو ناپ تول پورا کرو کیونکہ کم دینے والوں کو کھڑا کیا جائے گاحتی کہ پسیندان
کے نصف کا نوں تک پہنچا ہوگا ای طرح تاجر جب بیچنا ہے تو گز کھنچے کرر کھتا ہے اور
جب خریدتا ہے تواسے ڈھیلار کھتا ہے۔

اورسلف میں سے کسی نے کہا اس شخص کے لئے ہلا کت و تباہی ہے جوایک دانے کے وض مجدوہ کم دیتا ہے جنت کا سودا کر لیتا ہے جس کا عرض آ سانوں اور زمین کے برابر ہے اوراس شخص کے لئے بھی افسوس ہے جوایک دانے کے عوض جے وہ زیادہ لے لیتا ہے ''ویل' ہلاکت و تباہی خرید لیتا ہے ۔''ویل ' ہلاکت و تباہی خرید لیتا ہے ۔ پس ہم اللہ تعالی سے ہم آ زمائش ومصیبت سے عفوو عافیت طلب کرتے ہیں ' کیونکہ وہ تی داتا ہے ۔

☆☆☆



# (۲۳)اللہ کی تدبیر سے بے خوف ہوجانا

الله تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ حَتَّى إِذَا فَوِحُوْ الِمَآ أُوْ تُوْا اَخَذُنْهُمْ بَغْتَةً ﴾ (الانعام: ٤٤/٦) ''حتی که جب وه ان چیزول پرخوشیال منانے گئے جوانہیں کمی تقیس تو ہم نے ان کو اچا تک پکڑلیا۔''

. یعنی ہمارے عذاب نے ان کو پکڑ لیا'جہاں سے انہیں شعور بھی نہیں تھا۔

حسن بھری رحمۃ اللہ نے فرمایا: اللہ تعالی نے جس شخص کوخوشحالی عطا کی اوراس نے خیال نہیں کیا اس کے ساتھ خفیہ تدبیر ہے تو اس کی کوئی رائے نہیں؟ اور جس کو تنگ حالی میں مبتلا کرویا گیا اور اس نے نہیں سمجھا کہ اسے خوشحالی دی جائے گی تو اس کی بھی کوئی رائے نہیں۔ پھر انہوں نے بہتر سے تلاوت کیا:

﴿ حَتَّى إِذَا فَوِحُوْ ابِمَا أُوْ تُوْا اَخَذُنْهُمْ بَغْتَةً ﴾ (الانعام: ٤٤/٦) ''حتى كه جب وه ان چيزول پرخوشيال منانے كلے جوانہيں لمى تھيں تو ہم نے ان كو اچا تك پكڑليا' پھروه نااميد ہوكرره گئے۔''

اور فرمایا: رب کعبہ کی شم!اس قوم سے خفیہ تدبیر ہوگئ ان کی ضروریات انہیں دے دی گئیں' پھرانہیں پکڑلیا گیا۔

عقبه بن عامرض الله عنه سے روایت ہے که رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

د جبتم الله کو بندے کی من پند چیز عطا کرتا ہواد یکھؤ جبکہ وہ (بندہ) اپنی معصیت پر
قائم ہوتو یہ اس کی طرف سے استدراج (وصیل) ہے ' ( پھر آپ نے پڑھا:
﴿ فَلَمَّ الله وَ الله مَا ذُكِّرُ وُ اِلله فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبُوابَ كُلِّ هَنَى عَرَّ الله عَلَى إِذَا فَرَحُو الله الله عَلَيْهِمْ أَبُوابَ كُلِّ هَنَى عَلَيْهِمْ أَبُوابَ كُلِّ هَنَى عَلَيْهِمْ أَبُوابَ كُلِّ هَنَى إِذَا فَرَحُو الله عَلَيْهِمْ أَبُوابَ كُلِّ هَنَى عَلَيْهِمْ أَبُوابَ كُلِّ هَنَى إِذَا الله عَلَى الله عَلَيْهِمْ أَبُوابَ كُلِّ هَنَى إِذَا الله عَلَيْهِمْ الله وَ الله عَلَيْهِمْ الله وَالله عَلَيْهِمْ الله وَ الله عَلَيْهِمْ اللهُ وَاللهُ عَلَيْهِمْ اللهُ وَاللهُ اللهُ عَلَيْهِمْ اللهُ وَاللهُ اللهُ عَلَيْهِمْ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ عَلَيْهِمْ اللهُ وَاللهُ اللهُ عَلَيْهِمْ اللهُ وَاللهُ اللهُ عَلَيْهُمْ اللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللّهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهُمْ اللهُ وَاللهُ اللهُ عَلَيْهُمْ اللهُ وَاللهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللهُ عَلَيْهِمْ اللهُ وَاللّهُ اللهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ مَا مُعَلّمُ اللهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَالَهُ وَاللّهُ وَاللّهُ

<sup>•</sup> طبرانی نے اپنے اشیخ ولید بن عباس المصری سے الاوسط میں روایت کیا ہے جبکہ وہ ضعیف ہے۔ (مجمع الزوائد)

خرمنقول میں ہے: کہ جب ابلیس سے خفیہ تدبیر کا گئی جبکہ وہ فرشتوں میں سے تھا۔ ① تو جبرائیل اور میکا ئیل رونے گئے۔ تو اللہ عزوجل نے ان دونوں سے پوچھا: تہمیں کیا ہواتم کیوں روتے ہو؟ انہوں نے عرض کیا: پر دردگار! ہم تیری خفیہ تدبیر سے بے خوف نہیں ہوتے۔ تو اللہ تعالی نے فرمایا: ''اسی طرح ہوجانا' میری خفیہ تدبیر سے بے خوف نہ ہونا'' اور نبی صلی اللہ علیہ وسلم اکثریہ دعا پڑھاکرتے تھے:

((یَا مُقَلِّبَ الْقَلُوْبِ فَبِّتُ قُلُوْبَنَا عَلَی دِیْنِكَ))

"دول کوالٹ بلٹ کرنے والے! ہمارے دلول کواپنے دین پر ٹابت رکھنا۔"
عرض کیا گیا اللہ کے رسول! کیا آپ کو ہمارے بارے میں اندیشہ ہے؟ تو رسول اللہ صلی
اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

'' دل رحمان کی انگلیول میں ہے دوانگلیوں کے درمیان ہیں' وہ جیسے چاہتا ہے انہیں الٹ پلٹ کرتا ہے۔'' ﴿ صحیح حدیث میں ہے کہ:

"آ دمی اہل جنت کے سے عمل کرتا رہتا ہے حتی کہ اس کے اور اس (جنت) کے

اسورة الكهف كى آيت نمبره ٥ ميں ہے۔ (كان من الحن) ' دو جنول ميں سے تھا اس سے ثابت ہوا كدوه فرشتنيس بلكہ جن تھا۔ اللہ اعلم ۔ (مترجم)

<sup>🛈</sup> ترمذی

درمیان ایک ماتھ کا فاصلہ رہ جاتا ہے تو کتاب (کھت) اس پر سبقت لے جاتی ہے تو وہ جہنمیوں والاعمل کرتا ہے تو وہ اس (جہنم) میں داخل ہوجا تا ہے۔'' 🛈

اور سہیل بن سعد الساعدی رضی اللہ عنہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں آپ

نے فرمایا:

'' می جہنیوں والے ممل کرتا رہتا ہے حالانکہ وہ اہل جنت میں سے ہوتا ہے ٔ اور آ دمی اہل جنت والے عمل کرتار ہتا ہے حالانکہ وہ جہنیوں میں سے ہوتا ہے۔اعمال کا دارومدارتوخاتے برہے۔ " 🛈

الله تعالى نے اپنى كتاب عزيز ميں بلعام كاقصه بيان كيا ہے كماس سے علم ومعرفت كے بعد ایمان سلب کرلیا گیا'ای طرح عبادت گزار برصیص بھی کفریرفوت ہوا۔مروی ہے کہ مصریب ایک آ دمی تھا'اس نے اذان ونماز کے لئے مسجد کے ساتھ تعلق قائم کر رکھا تھا۔عبادت کی چیک دمک اوراطاعت کے انواراس پرواضح تھے۔وہ حسب معمول اذان دینے کے لئے مینار پر چڑھا' مینار کے نیچے ذمی نصرانی کا گھر تھا'اس نے گھر میں جھا نکا تو گھر کے مالک کی خوبصورت بٹی کو دیکھا۔ پس وہ اس کے فتنے کا شکار ہو گیا'اذان چھوڑ دی' اس کے پاس آ گیا' اس نے اسے کہا: تجھے کیا ضرورت ہے اورتم کیا جائے ہو؟ اس نے کہا: میں تمہیں جا ہتا ہوں۔ لڑکی نے جواب دیا: میں مشکوک کام اور تہمت کے معاملے میں تیری بات قبول نہیں کروں گی۔اس نے اسے کہا: میں تم ے شادی کروں گا۔لڑکی نے اے کہا'تم مسلمان ہواس لئے میراوالد تمہارے ساتھ میری شادی نہیں کرےگا۔اس نے کہا میں عیسائی بن جاتا ہوں لڑکی نے کہاا گرتم میرکر گزرے تو میں بھی کر لوں گی۔ پس اس دن کے دوران جب وہ گھر کی حجیت پر چڑھا تو گر کر مرگیا۔ پس وہ اینے دین میں کامیاب ہوا نہ اس اوکی ہے فائدہ اٹھایا۔ پس ہم اللہ ہے اس کی خفیہ تدبیر اور سوء عاقبت اور سؤ خاتمہ سے پناہ جا ہے ہیں۔

سالم عبداللہ ہے روایت کرتے ہیں۔رسول الله صلی الله علیہ وسلم زیادہ تر ان الفاظ کے

ساتھ حلف اٹھایا کرتے تھے:

((يَا مُقَلِّبُ الْقَلُوْبِ))

'' دلول کوالٹ پلٹ کرنے والے کی قتم!''

اس کامعنی ہے دہان کو قبول ور دادرارادہ د کراہت اوراس کےعلادہ اوصاف کے اختلاف ما کی فقار سے بھی نامہ تند بھیر ہو ہوں میں شات ال نافیان

پڑہوا کی رفتار سے بھی زیادہ تیز پھیرتا ہے۔اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ﴿ مَا عُلَاثُ مِنْ آ مَنْ اللّٰہَ ہَا ہُورِ اللّٰ مِنْ اللّٰہِ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ اللّٰ

﴿ وَاعْلَمُوْ آ أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ قَلْبِهِ ﴾ (الانفال: ٢٤/٨)

"جان لو کہ اللہ آ دمی اور اس کے دل کے درمیان حائل (مطلع) رہتا ہے"

مجاہدر حمداللہ نے فرمایا: اس کامعنی ہے کہ وہ آ دمی اور اس کی عقل کے درمیان حائل ہو جاتا ہے۔ حتی کہ وہ آ دمی نہیں جانتا کہ اس کے ہاتھ کیا کررہے ہیں۔

﴿إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكُولِي لِمَنْ كَانَ لَهُ قُلْبٌ ﴾ (ق/ ٥٠ ٣٧)

'' بے شک اس میں ایسے مخف کے لئے قبیحت ہے جس کے پاس دل ہو''۔

لینی عقل ہو۔الطمری رحمۃ اللہ نے اختیار کیا ہے کہ بیاللہ تعالیٰ کی طرف سے خبر دینا ہے۔

وہ بندوں کے دلوں کا ان کی نسبت زیادہ مالک ہے اور بیر کدا گروہ چاہے تو وہ ان (بندوں) کے اور ان کے دلوں کے مابین حائل ہو جاتا ہے حتی کہ انسان اللہ عزوجل کی مشیت کے بغیر پھی ہی نہیں جانسان اللہ عزوجل کی مشیت کے بغیر پھی ہی نہیں مول اللہ عَلَیْ اللّٰہِ اللّ

((يا مقلب القلوب ثبت قلبي على طاعتك))

'' دلول کوالٹ پلٹ کرنے والے!میرے دل کواپنی اطاعت پر ثابت رکھنا''

تو میں نے عرض کیا'اللہ کے رسول! آپ اکثر یہی دعا کرتے رہتے ہیں کیا آپ اندیشہ ۔

ر کھتے ہیں؟ آپ نے فرمایا:

''عائشہ! میں کیے بےخوف ہوجاؤں جبکہ بندوں کے دل رحمان کی انگلیوں میں سے دو انگلیوں کے مابین ہیں' وہ جیسے چاہتا ہے انہیں الٹ پلیٹ کرتا ہے۔ جب وہ کسی بندے کے دل کوالٹ پلٹ کرنا جاہتا ہے تو وہ اسے الٹ پلٹ کر دیتا ہے''

پس جب ہدایت معردف ہےاوراستقامت اس کی مشیت پرموقوف ہےاور عاقبت پوشیدہ اور (اس کا)ارادہ غالب ہے تو پھراپنے ایمان وعمل ٔ اپنی صلاۃ دصوم اور قربت پیدا کرنے والے اپ تمام اعمال اگر چدوہ تیر کسب ہے ہوں پر فخر نہ کر' کیونکہ وہ تیرے رب کی تخلیق اوراس کا تچھ پروائی نصل ہے بس جب بھی تم نے اس کے ذریعے نخر کیا تو تم اپ علاوہ کی اور کے متاع پر فخر کرو گئے بسااوقات وہ اسے تھھ سے سلب بھی کرسکتا ہے تو پھر تمہاراول گدھے کے پیٹ سے بھی زیادہ فخر کرو گئے بسااوقات وہ اسے تھھ سے سلب بھی کرسکتا ہے تو پھر تمہاراول گدھے کے پیٹ سے بھی زیادہ فخر و بھلائی سے خالی ہوجاتا ہے۔

کتنے ہی باغ ہیں کہ شام ہوتی ہے توان کے پھول جوبن پر تھے۔ چاشت کا وقت ہوا توان کے پھول جوبن پر تھے۔ چاشت کا وقت ہوا توان کے پھول خشک چورا ہو گئے۔ وہ اسلیے کہ جب آندھی آئی تواس نے سب پچھ تباہ کر دیا۔ ای طرح وہ بندہ شام کرتا ہے تواس کا دل اللہ کی اطاعت سے روثن اور سلامت ہوتا ہے۔ جبکہ شبح ہوتی ہے تو وہ اللہ کی معصیت سے تاریک اور بیار ہوتا ہے 'بیالعزیز العظیم کی تقدیر ہے۔

ابن آدم! اقلام تجھ پر جاری ہیں اور تو غفلت میں جانتانہیں' ابن آدم! گانے بجانے اور تانت نیز منزلوں اور گھروں کوچھوڑ اور اس گھر میں سبقت کرنا چھوڑ حتی کہ تو دیکھے لے گا کہ تیرے معالمے میں اقد ارنے کیا کیا۔

ر مع بیان کرتے ہیں: امام شافعی رحمہ الله تعالی سے پوچھا گیا: 1

① کتاب کے معروف شخوں میں کمیرہ گناہ نمبر ۲۳ کے آخر مین اور کمیرہ گناہ نمبر ۲۳ کے شروع میں نقص ہے۔ اوریہ نقص باقی رہے گاحتی کہ ہمیں کوئی ایسانسخدل جائے جس میں اس نقص کا پینہ چل جائے اور اسے کمل کر لیا جائے۔ معلوم رہے کہ ہمنے بہت ہے تھی نننے ویکھے ہیں 'لیکن ہم یقص قبیں پاسکے۔

حل کتاب الکبائر کے ہیری جزااور ثواب کے بارے میں نہیں ساتھا؟ تو وہ عرض کرے اطاعت کرنے والے کے لئے میری جزااور ثواب کے بارے میں نہیں ساتھا؟ تو وہ عرض کرے گا'رب جی کیوں نہیں 'ضرور ساتھا۔ پھراللہ تعالی فرمائے گا۔ میرے بندے تو نے میری نافر مانی کا، میرے بندے! آج تیرا کی؟ تو وہ عرض کرے گا۔ میرے بندے! آج تیرا میرے متعلق کیا گمان ہے؟ وہ عرض کرے گا۔ میرے رب! یہ کہ تو مجھے معاف فرمادے تواللہ تعالی فرمائے گا۔ میرے بندے! کیا تجھے یقین ہے کہ میں تجھے معاف کر دوں گا؟ وہ عرض کرے گا۔ میرے پروردگار! جی ہاں' کیونکہ تو نے جھے معصیت پر دیکھا۔ اور تو نے میری پردہ پوٹی کی نیان میرے پروردگار! جی ہاں' کیونکہ تو نے جھے معصیت پر دیکھا۔ اور تو نے میری پردہ پوٹی کی نیان کیا: تو اللہ عز وجل فرمائے گا۔ میں نے تجھ سے درگز رکیا' تجھے بخش دیا اور اور تیرے گمان کو پختہ اور ثابت کر دیا۔ اپنی کتاب (نامہ اعمال) اپنے دائیں ہاتھ میں تھام کو اس میں جو بھی گوئی نیکی تھی میں نے تہمیں معاف کر دیا' اور میں تخی دا تا میں ہو بھی گاہ تھا 'وہ میں نے تہمیں معاف کر دیا' اور میں تخی دا تا

ہمارے معبود! اگر بخشش سے تیری محبت نہ ہوتی تو تو گنا ہوں کے ساتھ تیری طرف پیش قدمی کرنے والے کومہلت نددیتا۔اوراگر تیرا درگز راور تیرافضل وکرم نہ ہوتا پھر تو دلوں کوسکون نہ دیتا۔

''اے اللہ! تو یقیناً معاف کرنے والا ہے معاف کرنے کو پہند کرتا ہے ہی ہمیں بھی معاف فرمادے۔''

اے اللہ! ہماری طرف نظر رضاہے دکھی ہمیں مخلص لوگوں کے دیوان میں ٹاہت رکھ۔ ہمیں اہل جفاکے دیوان سے بچا۔

اے اللہ! ہماری آرزوؤں کوامید کے ساتھ قابت کردئ تمام احوال سے ہمارے اعمال کو بہتر بنا دیے تیری رضا تک پینچنے والے ہمارے راستے آسان کردئ ہماری پیشانیاں نیک اعمال کی طرف نگادئ ہمیں دنیا و آخرت میں بھلائی عطافر ما اور ہمیں آگ کے عذاب سے بچا۔

☆☆☆

+ (£ كتاب الكبائر كيا الكبائ

## (۲۴) کسی عذر کے بغیر جماعت جھوڑ کرا کیلے نماز پڑھنا

عبدالله بن مسعود رضی الله عند سے روایت ہے کہ نبی صلی الله علیہ وسلم نے جماعت سے پیچھے رہ جانے والے لوگوں سے فر مایا:

جماعت سے پیچھےرہ جانے والے مردوں پران کے گھروں کوجلادوں۔'' 🛈

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''لوگ باجماعت نمازیں نہ پڑھنے سے باز آ جائیں یا پھراللدان کے دلوں پر مہر لگا

دےگا' پھروہ غافلین میں ہے ہوجا کیں گے۔'' 🏵

اورآ ب صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

''جِسُّخُصْ نے تین جمعے انہیں معمولی جانتے ہوئے چھوڑ دیئے تواللہ اس کے دل پر مہر لگادیتا ہے۔'' 🏵

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

"جَسْخُصْ نے كسى عذر وضرركے بغير جمعه چھوڑ ديا تو وه ديوان ميں منافق لكھ ديا جاتا

بُوه مثايا جاتا ہے نہ تبديل کيا جاتا ہے۔''

عفصه رضى الله عنهما بيان كرتى مين رسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

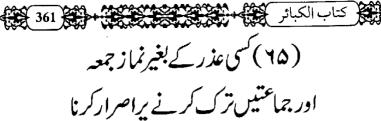
"جمعه كے لئے جانا ہر بالغ شخص پرواجب ہے"

پس ہم الله تعالیٰ سے اس کے ببندیدہ امور کے بارے میں سوال کرتے ہیں کیونکہ وہ تی

دا تا فیاض ہے۔

 $\triangle \triangle \triangle$ 

🛈 مسلم 🕝 مسلم 🕈 ابوداؤر نسائی



للدتعالیٰ نے فرمایا:

﴿ يَوُمَ يُكُشَفُ عَنْ سَاقٍ وَ يُدُعَوُنَ إِلَى الشُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ٥ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ط وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ اِلَى الشُّجُوْدِ وَهُمْ سَلِمُوْنَ ٥ ﴾ (القلم ٦٨/ ٤٢ - ٤٣)

''جس دن پنڈل سے پردہ اٹھادیا جائے گا ادرلوگوں کو تجدہ کی طرف بلایا جائے گا'تو یہ لوگ تجدہ نہ کرسکیں گے۔ان کی آئکھیں جھکی ہوں گی ادران پر ذلت چھائی ہوگی' ادر اس سے پہلے (دنیا میں) ان کو تجدہ کی طرف بلایا جاتا تھا حالانکہ دہ اس وقت اچھے خاصے تھے۔''

کعب الاحبار نے فرمایا: بیآیت جماعتوں کے ساتھ نماز پڑھنے سے پیچھے رہ جانے والوں کے بارے میں نازل ہو کی ہے۔

ا مام التابعین سعید بن المسیب رحمه الله نے فر مایا: وہ لوگ ((حیبی علمی الصلوة)) ((حیسی علم الفلاح)) ساکرتے تھے کیکن جواب نہیں دیتے تھے (نماز پڑھنے نہیں آتے تھے) حالانکہ وہ تندرست وصحت مند ہوتے تھے۔

ابو ہر پرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:
''اس ذات کی قتم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! میں نے ارادہ کیا کہ لکڑیاں
اکٹھی کرنے کا حکم دوں' پھر میں نماز کا حکم دوں تو اس کے لئے اذان دی جائے' پھر میں
ایک آ دی کولوگوں کی امامت کرانے کا حکم دوں' اور پھر میں ان لوگوں کے پیچھے جاؤں
جو جماعت کے ساتھ نماز پڑھے نہیں آتے تو میں ان پران کے گھروں کو آگ سے جلا دوں۔' ()

<sup>🛈</sup> بخاری'مسلم

حتاب الكبائر

ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ ہی بیان کرتے ہیں آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا

'' میں نے ارادہ کیا کہ میں نو جوانوں کو حکم دوں کہ وہ میرے لئے لکڑیوں کا ایک گھا لائیں پھر میں ان لوگوں کے پاس جاؤں جو کس علت کے بغیر گھروں میں نماز پڑھتے ہیں' تو میں ان کوجلا دوں۔''

اس میں اس میں اور اس سے پہلے جو آیت بیان ہوئی ہے اس میں اس مین کے لئے سخت وعید ہے جو کسی عذر کے بغیر باجماعت نماز ادانہیں کرتا۔ ابن عباس رضی اللہ عنہما بیان کرتے ہیں ' رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''جو خص اذان سے اور کوئی عذراہے باجماعت نماز اداکرنے سے مانع نہ ہوتواس نے جونماز (گھریں) اداکی ہے وہ قبول نہیں ہوتی''

عرض کیا گیا' اللہ کے رسول!عذرہے کیا مراوہ؟ آپ نے فرمایا'' خوف یا مرض'' ابن عباس رضی اللہ عنہما ہے روایت ہے کہ ان سے اس مخص کے بارے میں پوچھا گیا جو دن کے وقت روز ہ رکھتا ہے اور رات کو تہجد پڑھتا ہے'لیکن وہ باجماعت نماز اواکرتا ہے نہ جمعہٰ تو انہوں نے فرمایا: اگر شیخص فوت ہوجائے تو وہ جہنمی ہے۔ ①

صیح مسلم میں ہے کہ ایک نابینا شخص نبی سلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا تو اس نے عرض کیا' اللہ کے رسول! میرے پاس کوئی ایسا شخص نہیں جو مجھے متجد تک پہنچا دے' تو کیا میرے لئے کوئی رخصت ہے کہ میں اپنے گھر میں نماز پڑھلوں؟ آپ نے اسے رخصت دے دی۔ لیکن جب وہ جانے لگا تو آپ نے اسے بلایا اور فرمایا'' کیا تم نماز کی اذان سنتے ہو؟''اس نے عرض کیا جب وہ جانے لگا تو آپ نے اسے بلایا اور فرمایا'' کیا تم نماز کی اذان سنتے ہو؟''اس نے عرض کیا جی ہاں' آپ نے فرمایا'' کی مرمجد میں آؤ''

ابوداؤد کی روایت میں ہے کہ ابن ام مکتوم رضی اللہ عنہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں آئے اور عرض کیا' اللہ کے رسول! مدینہ میں بہت سے زہر لیے جانور اور در ندے ہیں' جبکہ میں نابینا مخص ہوں' تو کیا میر ہے لئے کوئی رخصت ہے کہ میں اپنے گھر میں نماز پڑھلوں؟ تو نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے انہیں فر مایا' ' تم ' حجی علی الصلوٰ ق' اور حی علی الفلاح'' سنتے ہو؟'' انہوں نے عرض

کیا'جی ہاں'آپ نے فرمایا'' پھرنماز پڑھنے یہیں آؤ''

اورایک روایت میں ہے کہ انہوں نے عرض کیا: اللہ کے رسول! میں نابینا شخص ہوں گھر بہت دور ہے اور کوئی مجھے لانے والابھی نہیں تو کیا میرے لئے کوئی رخصت ہے؟

آ پ صلی الله علیه وسلم کے فرمان ((فحبی هلا))کامعنی ہے یعنی آ وُاور آ گے بڑھو۔ ایس عالی ضربالا عند الدیک تنظیم میں اللہ علم منا فرمان میں سلم نافر الدی

ابن عباس رضی الله عنهمابیان کرتے ہیں رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فر مایا: ''جو شخص اذان سے اور اس کے جانے میں کوئی عذر مانع نہ ہو ( اور وہ گھر پر نماز پڑھ

لے) تواس کی نماز نہیں ہوتی ۔''

عرض کیا گیااللہ کے رسول!عذر کیا ہے؟ آپ نے فرمایا'' خوف یا مرض'' نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''الله كى تين قتم كے لوگوں پرلعنت ہواكيد و في خض جولوگوں كى امامت كرائے جبكه وه است ناپند كرتے ہوں ايك وه عورت جورات بسر كردے جبكه اس كا خاونداس پر ناراض ہوا اور ايك و فخض جو''جي على الصلوٰ ق''جي على الفلاح'' سنے اور پھروہ نماز

ابوہریرہ رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں: ابن آ دم کے کا نوں میں پچھلا ہواسیسہ بھر دیا جائے تو بیاس کے لئے بہتر ہے کہ وہ'' حیی علی الصلوٰ ق'''' حیی علی الفلاح'' سنے اور پھرنماز پڑھنے نہ ہے۔ پر''

علی بن ابی طالب رضی الله عنه نے فر مایا: مسجد کے پڑوی کی نماز صرف مسجد ہی ہیں ہوتی ہے۔عرض کیا گیا' مسجد کاپڑوی کون ہے؟ فر مایا: جواذ ان سنتا ہے۔ آپ نے پیجی فر مایا: ''جو شخص اذ ان سنے اور پھر بلا عذر نماز پڑھنے نہ آئے تو اس کی نماز اس کے سر سے تجاوز نہیں کرتی۔''

ابن مسعود رضی الله عنه نے فرمایا: جو محض بیہ پیند کرتا ہے کہ وہ کل (روز قیامت) اللہ سے مسلمان کی حیثیت سے ملاقات کرے تو وہ ان پانچوں نماز دں کی جہاں سے ان کے لئے او ان دی جائے عفاظت کریے کی بدایت کی دی جائے عفاظت کریے کی کیکہ اللہ تعالی نے تمہارے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے لئے بدایت کی

سنن مقرر ومشروع کیں اور یہ ہدایت کی سنن میں سے ہیں۔اوراگرتم اپنے گھروں میں نمازیں پڑھنے لگوجس طرح نمازے پیچھےرہ جانے والا شیخص اپنے گھر میں نماز پڑھتا ہے تو تم نے اپنی کی سنت کوچھوڑ دیا تو تم گراہ ہو جاؤ گے۔اور ہم دیکھتے تھے کہ اس سے صرف و ہخض پیچھے رہتا تھا جس کا منافق ہونا معلوم تھایا وہ مریض تھا۔اور ایسے بھی تھا کہ آدمی کو دو آدمیوں کے سہارے لایا جاتا تی کہ اس کوصف میں کھڑا کر دیا جاتا۔ یعنی وہ اس کی فضیلت پرحرص و کوشش کرتے ہوئے اور اس کوترک کرنے کے گناہ پر خوف کرتے ہوئے اور اس کوترک کرنے کے گناہ پر خوف کرتے ہوئے اور اس کوترک کرنے کے گناہ پر خوف کرتے ہوئے اور اس کوترک کرنے کے گناہ پر خوف کرتے ہوئے اور اس کوترک کرنے کے گناہ پر خوف کرتے ہوئے این دوآ دمیوں کا سہار الیتا تھا۔

فصل:

باجماعت نماز بڑھنے کی بہت فضیلت ہے جیسا کہ اللہ تعالیٰ کے اس فرمان کی تفسیر میں

<u>-</u>

﴿ وَلَقَدُ كَتَبُنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكُوِ اَنَّ الْآرُضَ يَوِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴾ (الانبياء: ١٠٥/٢١)

''اورالبتہ ہم نے نصیحت کرنے کے بعد زبور میں لکھ دیا ہے کہ زمین کے دارث میرے نیک بندے ہیں''

نیک بندوں سے مراد وہ لوگ ہیں جو پانچوں نمازیں با جماعت ادا کرتے ہیں۔اوراللہ تعالیٰ کے فرمان:

﴿وَنَكُتُبُ مَا قَدَّمُوا وَالْتَارَهُمْ. ﴾ (يسين/ ٣٦: ١٢)

''اوروہ جو کچھآ گے بھیجتے ہیں اور جو کچھ چیچے چھوڑ جاتے ہیں'ہم اس کولکھ لیتے ہیں'' اس سے مراد ان کے قدم ہیں جو نماز کے لئے جاتے وقت اٹھتے ہیں۔ہم انہیں لکھ لیتے ہیں ابو ہریرہ رضی اللّٰدعنہ ہے روایت ہے کہ رسول اللّٰدصلی اللّٰدعلیہ وسلم نے فرمایا:

''جو خض اپنے گھر میں وضوکر نے بھر اللہ کے فرائض میں ہے کسی فریضے کی ادائیگی کے لئے اللہ کے گھروں میں ہے کسی گھر کی طرف چلے تو اس کے جواشے والے قدم ہیں'

حتاب الكبائر كالم

ان میں ہے ایک قدم اس کی خطام ٹاتا ہے اور دوسرا درجہ بلند کرتا ہے۔ پھر جب وہ نماز پڑھی تھی، پڑھ لیتا ہے تو وہ جب تک اپنی اس جگہ پر ببیٹار ہتا ہے جہاں اس نے نماز پڑھی تھی، اور جب تک وہ اس دوران تکلیف پہنچائے نہ اس اثناء میں اس کا وضو ٹوٹے تو فرشتے اس کے لئے دعا کمیں کرتے ہیں:

"ا الله! اس كو بخش د اے الله! اس پر رحم فرما" "

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

'' کیا میں تنہیں ایساعمل نہ بتاؤں جس کے کرنے سے اللہ خطائیں معاف کرتا ہے اور یہ درجات بلند کرتا ہے اور یہ درجات بلند کرتا ہے ہوں آئیں' درجات بلند کرتا ہے؟''انہوں نے عرض کیا کیوں نہیں' اللہ کے رسول! ضرور َ بتا کیں' آب نے فرمایا:

''نا گواری کے باوجودا چھی طرح مکمل وضو کرنا' مساجد کی طرف زیادہ چل کر جانا اور نماز کے بعددوسری نماز کا انتظار کرنا' پس بیر باط ہے' پس بیر باط ہے۔'' ﴿ ''الرباط'' کامعنی سرحد پر مقیم ہونا ہے۔

\$ **\$** \$

# 4 366 3

### (۲۲) وصیت میں ایذ ارسانی

الله تعالیٰ نے فر مایا

﴿ مِنْ مَ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوْصلي بِهَا أَوْ دَيْنِ لا غَيْرَ مُضَاّتٍ ﴾ (النساء: ٤/ ١٢) ''(يه) تقسيم مرنے والے کی وصیت اوراس کے قرض کی ادائیگی کے بعد عمل میں لائی جائے بشرطیکہ وہ (میت کے حقد ارول کو) نقصان نہ پہنچائے۔''

یعنی اس وصیت سے وارثوں کو نقصان نہ پہنچہ وہ اس طرح کہ وہ ایسے قرض کی وصیت کرے جو کہ اس کے ذمہ نہ ہواس کا مقصد صرف وارثوں کو نقصان پہنچانا ہوتو اللہ نے اس سے منع کیا ہے۔ اور اللہ تعالی نے فر مایا:

وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ ط وَاللَّهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴾ (النساء/٤: ٢١)
" يوالله كى طرف سي حكم بودرالله جائے والا برد بار بے "

ابن عباس رضی الله عنه نے فر مایا: جواس نے میراث میں اپنے فرائض میں سے حلال قرار

دياً ہے وہ مراد ہے۔ ﴿ وَمَنْ يُتُطِعِ اللّٰهِ وَرَسُولَةَ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجُرى مِنْ تَحِتُهَا الْآنُهِرُ خَلِدِيْنَ

﴿ وَسَ يَضِعُ اللَّهِ وَرَسُونَهُ يَدْحِمُهُ جَنِبُ لَجَرِى مِنْ لَعِحْهَا الْهُ لَهُ حَدِدُينَ فِيْهَا وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ٥ وَمَنْ يَنَعُصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهُ وَ \* وَمِنَا عَلَيْهِ مِنْ وَمِنْ مِنَا مِنْ مِنْ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَ

يُذُخِلُهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ ثُهِيْنٌ ﴾ ٥ (النسآء: ١٣ - ١٤)

﴿ وَمَنْ يُنطِعِ اللَّهِ وَرَسُولَهُ ﴾ '' جَوْحُص الله اوراس كے رسول كى اطاعت كرے گا' 'لينى مواريث كے بارے ميں۔

﴿ يُدُخِلُهُ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحِتْهَا الْآنْهارُ خَلِدِيْنَ فِيْهَا وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ٥ وَمَنْ يَعْص اللّهَ وَرَسُولَةً﴾

''اللہ اے ایسے باغات میں داخل کرے گا جن کے نیچے نہریں جاری ہوں گی'وہ اس راحت وخوشی میں ہمیشہ رہیں گے اور بیہ بڑی ہی کامیا بی ہے۔اور جو اللہ اور اس کے رسول کی نافر مانی کرے گا''۔ www.KitaboSunnat.com

مجاہدر حمد اللہ نے فر مایا: اللہ تعالی نے مواریث میں جوفرض کیا ہے اس بارے میں نافر مانی کرے گا عکر مدابن عباس رضی اللہ عند سے بیان کرتے ہیں جوفض اللہ کی تقسیم پر راضی نہ ہواور اللہ تعالی نے جوفر مادیا ہے اس سے تجاوز کرے تو ﴿ ید خله فادا ﴾ اس کو آگ میں داخل کرے گا۔ الکلمی نے فر مایا: یعنی وہ مواریث میں اللہ تعالی کی تقسیم کا انکار کرتا ہے اور اس کی حدود سے تجاوز کرتا ہے اور اس کی حدود سے تجاوز کرتا ہے اور اسے حلال سمجھتا ہے۔

﴿ يُدُخِلُهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴾

''اس کوآگ میں داخل کرےگا'وہ اس میں بمیشہ رہے گا اور اس کے لئے رسواکن عذاب سے''

ابو ہر ررہ رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''آ دمی اورعورت ساٹھ سال تک اللہ کی اطاعت والے کام کرتے رہتے ہیں' لیکن جب ان کی موت کا وقت آ پنچا ہے تو وہ وصیت کرنے میں نقصان پنچا دیتے ہیں تو ان کے لئے جہنم واجب ہوجاتی ہے۔' ①

پھر ابو ہر میرہ رضی اللہ عنہ نے آیت تلاوت فر مالی:

﴿ مِنْ مِ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْطِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَاّرٍ ﴾ (النساء/٤: ١٢) ''(يقسيم)مرنے والے کی وصیت اور اس کے قرض کی ادائیگی کے بعد عمل میں لائی جائے بشرطیکہ وہ (میت کے حقد ارول کو) نقصان نہ پہنچائے''

اورآ ب سلى الله عليه وسلم سے مروى ہے كمآب نے فرمايا:

'' جو خص وارث کی میراث لےاڑے تو اللہ اس کی جنت سے میراث ختم کردیتا ہے'' اور آ پ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

"الله في مرحقد اركواس كاحق دے ديا ہے ايس وارث كيليے كوئى وصيت نہيں \_ " 🏵

<sup>🛈</sup> ابوداؤد

 <sup>(</sup>رزنی) اے عمرؤ بن خارجہ نے روایت کیا ہے۔ اس کی سند میں اساعیل بن عیاش ہے اور اس کی روایت شامیوں سے نہ ہوتو اس میں ضعف ہوتا ہے۔

الكبائر كتاب الكبائر كتاب الكبائر

### (۲۷)بری تدبیراور دهو که دبی

اللهُ عزوجل نے فرمایا:

﴿ وَ لَا يَعِمْنُ الْمَكُو السَّيِّ ءُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ﴾ (الفاطر: ٣٥/٣٥) 
"اور برى تدبير كرنے والے كى تدبير اى پرلوٹ كر پڑتى ہے"

اور نبی صلی الله علیه وسلم نے فر مایا:

"بری تدبیرادردهو کددی جنم میں ہے۔" 🛈

اورآ پ صلی الله علیه وسلم نے فر مایا.

'' دھو کہ باز' بخیل اوراحسان جتانے والا جنت میں داخل نہیں ہوگا۔''

الله تعالى نے منافقین كاذ كركرتے ہوئے فرمایا:

﴿يُخْدِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ﴾ (النساء: ٢/٤)

'' وہ اللّٰد کوکو دھو کہ دے رہے ہیں۔ حالا نکہ اللّٰد نے ان کو دھو کے میں ڈال رکھا ہے۔''

الواحدي رحمة الله نے فرمایا: ان سے ان کے دھوکے کی وجہ سے دھوکے کا معاملہ کیا جائے

گا۔اوروہاںطرح کہانہیں نوردیا جائے گا جس طرح مومنوں کونورعطا کیا جائے گا'پس جب وہ بل صراط پرچلیں گے توان کا نور بجھا دیا جائے گااوروہ اندھیرے میں رہ جا کیں گے۔

اورآ پ صلى الله عليه وسلم نے ايك حديث ميں فرمايا:

''جہنمی پانچ قتم کے ہیں' اوران میں سے ایک آ دمی کا ذکر کیا جوضیح وشام تیرے اہل

اور تیرے مال کے بارے میں تجھے دھوکد دیتا ہے۔' ﴿

#### $\triangle \triangle \triangle$

٠ مسلم

البزارنے حدیث ابو ہریرہ سے روایت کیا ہے۔ اس میں عبداللہ بن ابی حمید راوی ہے جس کے ضعف پر
 اجماع ہے۔ (مجمع الزوائد)

### (۲۸)مسلمانوں کی جاسوسی کرنااوران کےراز بتانا

حاطب بن انی بلتعہ رضی اللہ عنہ کی حدیث میں ہے کہ عمر رضی اللہ عنہ نے ان کے قعل پر انہیں قتل کرنے کا ارادہ کیا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کے بدر میں شریک ہونے کی وجہ سے انہیں قتل کرنے سے عمر رضی اللہ عنہ کومنع فر مادیا۔ ①

جبان کی جاسوی کرنے پراسلام واہل اسلام پرقل یا قیدیا ڈاکہ یا اس طرح کی کسی چیز کی صورت میں کمزوری مرتب ہوتی 'ہوتو یہائی زمرے میں آتا ہے جس نے زمین میں فساد پھیلانے کی کوشش کی اور کھیتی وسل کو ہلاک کیا تو اس کا قبل کرنامتعین ہوگیا اور اس پرعذاب ثابت ہوگیا پس ہم اللہ تعالی سے عفووعا فیت کا سوال کرتے ہیں۔

ہر جاسوں ضروری طور پر جانتا ہے کہ جب چٹل خوری بڑے محرکات میں سنے ہے تو جاسوں کی چٹل خوری کرنا اکبرواعظم ہے۔

ہم اس بارے میں اللہ سے پناہ طلب کرتے ہیں ادر ہم عفود عافیت کا سوال کرتے ہیں' کیونکہ وہ باریک بین باخبر مخی داتا ہے۔

**☆☆☆** 

<sup>(</sup>۲٤٩٤) مسلم (۲٤٩٤)

### 

### (۲۹٬۰۷۹) صحابه رضوان الله عليهم اجمعين

اوراولیاءاللدر حمهم الله الله میں سے سی کو گالی دینا

صعیعین میں ثابت ہے کہرسول الله صلی الله علیه وسلم فرمایا:

الله تعالى فرما تاہے:

'' جس نے میر نے کسی دوست سے دشمنی کی تو میں اس سے اعلان جنگ کرتا ہوں۔'' اور آ پ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''میرے صحابہ کوگالی نہ دو 'بس اس ذات کی شم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! اگرتم میں سے کوئی احد پہاڑ کے برابر سوناخرچ کرے تو دہ ان میں سے کسی کے مد ( تقریباً ۰۰ سے گرام ) یا اس کے نصف (خرج کرنے ) کوئیس پہنچ سکتا۔''

اورآ پ سلی الله علیه وسلم نے فرمایا:

''میرے صحابہ کے بارے میں اللہ سے ڈرتے رہنا' میرے بعد انہیں نشا نہ نہ بنالینا' پس جس نے ان سے محبت کی تو اس نے میری محبت کے باعث ان سے محبت کی' اور جس نے ان سے بغض رکھا تو اس نے مجھ سے بغض رکھنے کے عبث ان سے بغض رکھا۔ جس نے انہیں تکلیف پہنچا کی تو اس نے مجھے تکلیف پہنچا کی' جس نے مجھے تکلیف پہنچا کی تو اس نے اللہ کو تکلیف پہنچا کی اور جس نے اللہ کو تکلیف پہنچا کی تو عقریب اللہ اسے پکڑ لے گا۔' ()

پس اس اور اس طرح کی احادیث میں اس شخص کی حالت کا بیان ہے جس نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد انہیں نشانہ بنایا' ان کو گائی دی ان پر افتر آبا ندھا' ان کے عیوب بیان کئے' ان کی تکفیر کی اور ان کی مخالفت کی جسارت کی آپ مُنْ اللّٰهِ کَا اُور ان کی مخالفت کی جسارت کی آپ مُنْ اللّٰهُ کا فرمان: ((الله الله )) بیکلمہ انتباہ ہے' جس طرح آگاہ کرنے اور بچاؤ افتریار کرنے کا کہنے والا کہنا ہے: آگ آگ بیعن آگ سے بچو۔

((فمن احبهم فبحبى احبهم ومن ابغضهم فبحبى ابغضهم))

پس یان کے فضائل ومنا قب کی وجہ ہے۔ کیونکہ صحابہ کی محبت اس لئے ہے کہ انہوں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہے مصاحبت کی سعادت حاصل کی انہوں نے آپ کی لفرت کی آپ پر ایمان لائے آپ کو تقویت پہنچائی اپنے اموال اوراپی جانوں ہے آپ سے ہمدردی و خیر خواہی کی ۔ پس جس شخص نے ان ہے مجبت کی تو گویاس نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم ہے محبت کی تو گویاس نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم ہے محبت کی تو پس نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابہ ہے محبت آپ کی محبت کا عنوان ہے۔ اور ان سے بغض رکھنا آپ کی محبت کا عنوان ہے۔ اور ان سے بغض رکھنا آپ کی محبت کا عنوان ہے۔ اور ان سے بغض رکھنا آپ کی محبت کی مدیث میں ہے۔

''انصارے محبت کرناایمان کا حصہ ہےاوران سے بغض رکھنا نفاق کا حصہ ہے۔''

وہ اس مرتبہ پر اس لئے فائز ہوئے کہ انہوں نے اسلام قبول کرنے میں سبقت کی اور رسول اللہ علیہ وسلم کے سامنے اللہ کے دشمنوں سے جہاد کیا۔

اسی طرح علی رضی اللہ عندے بحبت کرنا ایمان کا حصد ہے اور ان سے بغض رکھنا نفاق کا حصد ہے۔ جو خص صحابہ رضی اللہ عنہ م کے احوال ان کے اخلاق و کردار رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی حیات مبارکہ میں اور ان کی وفات کے بعد ان کے آثار کے بارے میں جو انہوں نے ایمان لانے میں مسابقت کی کفارے جہاد کیا وین کی نشروا شاعت کی شعار اسلام کے اظہار اللہ اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے کلے کو بلند کرنے اور اس کے فرائض اور اس کی سنن کی تعلیم میں جانے والی مساعی پرغور وفکر اور تد بر کرتا ہے تو وہ ان کے فضائل پیچان لیتا ہے اور ان کا اعتراف کر الیتا ہے اور اگر وہ نہ ہوتے تو ہمارے پاس دین کی اصلی پیچی نے فروع اور نہ بی ہم فرائض وسنن میں سنت جانے نے فرض اور نہ بی ہم احاد یث واخبار کے بارے میں پیچی جو انتے ۔ پس جو خص ان میں سنت جانے نے فرض اور نہ بی ہم احاد یث واخبار کے بارے میں پیچی جانے ۔ پس جو خص ان کے بارے میں طعن کرے یا آئیس برا بھلا کے تو وہ دین سے نکل جاتا ہے اور مسلمانوں کی ملت سے الگ ہو جاتا ہے۔ کیونکہ بیط عن تب بی ہوتا ہے جب ان کے برا ہونے کا عقیدہ ہوان کے

ارے میں حقد و کینہ چھپار کھا ہوا ور اللہ تعالی نے اپنی کتاب میں جوان کی ثناء و تعریف بیان کی ہارے میں حقد و کینہ چھپار کھا ہوا ور اللہ تعالی نے اپنی کتاب میں جوان کی ثناء و تعریف بیان کی ہار سول اللہ سلی اللہ علیہ و سلم نے جوان کی تعریف کی ہاں کا نیز ان کے فضائل و مناقب اور ان کی محبت کا انکار ہے اور اس لئے کہ وہ احادیث و روایات کے بہترین پہندیدہ وسائل میں طعن کرنا اصل میں طعن کرنے کے متر ادف ہے۔ ناقل کو حقیر جانا منقول کو حقیر جانا منقول کو حقیر جانا اور ای اور وہ من خاق زندیقیت اور الحاد سے محفوظ ہوا ور اس بارے میں جوا حادیث و آثار منقول ہیں وہ تیرے لئے کافی ہیں۔ جیسا کہ نی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

''اللہ نے مجھے پیند فرمایا اور میرے لئے صحابہ کو پیند فرمایا' اور ان میں سے میرے وزراء وانصار اور از دواجی رشتہ دار بنائے' پس جوشخص انہیں گالی دی تو اس پر اللہ' فرشتوں اور تمام انسانوں کی لعنت ہے۔اللہ قیامت کے دن اس کانفل قبول کرےگا نہ فرض'' ①

انس بن ما لک رضی الله بیان کرتے ہیں رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے صحابہ میں سے پچھ لوگوں نے کہا: ہمیں گالی دی جاتی ہے۔تو رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا:

'' جو خص میر ے صحابہ وگالی دے اس پراللہ'فرشتوں اور تمام انسانوں کی لعنت ہے''
انس بن ما لک رضی اللہ عند ہی بیان کرتے ہیں 'رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا ۔ ''اللہ نے جھے پہند کیا' میرے لئے میر صحابہ و پہند کیا اور میر ہے ساتھی' بھائی' اور
از دوا بی رشتے دار بنایا' عنقریب ان کے بعد پچھلوگ آئیں گئے وہ ان کے عیوب
بیان کریں گے اور ان کی تنقیص کریں گئے' پس ان کے ساتھ کھاؤند ان کے ساتھ پوئ
ان کے ساتھ نکاح کروندان کی نماز جنازہ پڑھواور نہ ہی ان کے ساتھ فماز پڑھو۔'' ﴿
ابن معود رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں' رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

"جب میرے صحابہ کاذکر کیا جائے تو (اپنی زبانوں کو) روک لؤجب ستاروں کاذکر کیا

٠ مجمع الزوائد\_

<sup>🕑</sup> عقیلی نے الضعفاء میں نقل کیا ہے عن انس فی منتخب کنز العمال

+ (373 عاب الكبائر عليه الكبائر عليه الكبائر عليه الكبائر عليه الكبائر عليه الكبائر ا

جائے تو روک لواور جب نقدیر کا ذکر کیا جائے تو روک لو'' علاء بیان کرتے ہیں: اس کامعنی ہے کہ مخلوق کی تقدیر کے راز کی تحقیق تفتیش ہے زبانوں کو

روك لينا-اوروه ليعني زبانول كوروك لينا الله تعالى كي عمم كسامن تسليم وايمان كي علامت

ہ۔

اسی طرح ستارے ہیں بحق مخص کا بیعقیدہ ہو کہ اللہ عزوجل کے ارادے کے علاوہ بیہ ہی امورکا نئات پراٹر انداز ہوتے ہیں تو وہ مشرک ہے اوراسی طرح جو مخص رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابہ کی کسی طرح بھی فدمت کرے ان کی خامیاں تلاش کرے ان کے عیوب بیان کرے اور ان کوتا ہیوں کو ان کی طرف منسوب کرے تو وہ منافق ہے۔ بلکہ ہر مسلمان پر اللہ اوراس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی محبت واجب ہے۔ آپ کی لائی ہوئی شریعت کی محبت اس محف کی محبت جو آپ کی آل آپ کی اصحاب آپ کی از واج مطہرات آپ کی اولا دُآپ کے غلاموں اور خادموں کی محبت اور جو محف ان سے محبت کرتا ہے مطہرات آپ کی اولا دُآپ کے غلاموں اور خادموں کی محبت اور جو محف ان سے محبت کرتا ہے اس کی محبت اور جو محف ان سے محبت کرتا ہے اس کی محبت اور جو محف ان سے محبت کرتا ہے اس کی محبت اور جو محف ان سے محبت کرتا ہے اس کی محبت اور جو محف ان سے بعض رکھتا ہے اس سے بعض رکھنا ہم مسلمان پر واجب ہے کیونکہ ایس کی محبت اور جو محف ان سے مضبوط کنڈ اللہ کی خاطر محبت کرتا اور اللہ کی خاطر بعض رکھنا ہے۔

الیوب ختیانی نے فرمایا جس مخص نے ابو بکر رضی اللہ عنہ سے محبت کی تو اس نے دین کی حدود قائم کیں 'جس نے عمر رضی اللہ سے محبت کی تو اس نے عراق سے محبت کی تو اس نے کی تو اس نے اللہ کے نور سے روشی حاصل کی 'جس نے علی رضی اللہ عنہ سے محبت کی تو اس نے ایک مضبوط حلقے (کڑے 'سہارے) کو تھا م لیا اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابہ کے بارے میں خیر و بھلائی کا عقیدہ اور ال کے متعلق حسن ظن رکھنے والا نفاق سے بری ہے۔

فصل:

جہاں تک صحابہ کرام کے منا قب وفضائل کاتعلق ہے تو وہ بیان سے کہیں زیادہ ہیں علاء سنہ کا جماع ہے کہ تمام صحابہ کرام سے وہ دس صحابہ سب سے افضل ہے جن کے جنتی ہونے کی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے گواہی دی 'اوران دس میں سے افضل: ابو بکر' عمر بن خطاب' پھرعثان بن عفان اور پرعلی بن ابی طالب رضی الله مهنم اجمعین بین اس بارے میں صرف مبتدع منافق اور خبیث فخص ہی شک کرسکتا ہے۔ خبیث مخض ہی شک کرسکتا ہے۔

نبی اکرم مَلَّاتَیْنِ نے مرباض بن ساریہ ڈاٹٹو کی حدیث میں تصریح کی جب آپ نے فرمایا: ''تم پرمیر می سنت لازم ہے اور میرے بعد ہدایت یا فتہ خلفاء راشدین کی سنت اس کو داڑھوں کے ساتھ (مضوطی ہے) کپڑلؤاور بدعات سے بچو''

خلفاء داشدین سے مراد: ابو بکر عمر عثان اور علی رضی الله عنهم اجمعین بیں۔ اور الله تعالی نے ابو بکر رضی الله عنہ کے فضائل میں قرآن مجید میں آیات نازل فرمائی بیں الله تعالی نے فرمایا:
﴿ وَ لَا يَا أَتَ لِل اُولُوا اللّٰهَ صَٰ لِ مِنْ كُمْ وَ السَّعَةِ أَنْ يُنْوُتُو آ اُولِي الْقُولِيلِي مِنْ كُمْ وَ السَّعَةِ أَنْ يُنُوتُو آ اُولِي الْقُولِيلِي مِنْ كُمْ وَ السَّعَةِ أَنْ يُنُوتُو آ اُولِي الْقُولِيلِي مِنْ كُمْ وَ السَّعَةِ أَنْ يُنُوتُو آ اُولِي الْقُولِيلِي الله وَ ١٧٢٢٤)

''اورتم میں سے وہ اوگ جوصا حب نظل ہیں وہ کہیں رشتہ داروں اور مساکین کو پچھنہ دینے کی قتم نہ کھالیں۔''

۔۔۔۔ اوراس میں کوئی اختلاف نہیں کہ بیان کے بارے میں ہے پس آپ کی صفت فضل کے ساتھ ہے۔رضوان اللہ علیہ۔اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

﴿ ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْهُمَا فِي الْغَارِ ﴾ (التوبه: ٤٠/٩)

'' دومیں ہے آیک آپ تھے جب کہ وہ دونوں غارمیں تھے۔''

اس میں بھی کوئی اختلاف نہیں کہ بیآیت بھی آپو بکر صدیق رضی اللہ عند کے بارے میں ہے۔ ان کی مصاحبت کی گواہی رب تعالی نے دی ہے ان کؤسکینت کی بشارت دی اور دومیں سے ایک'' کہدکران کی خولی بیان کی ۔ جیسا کے عمر بن خطاب رضی اللہ عند کہا کرتے تھے:

"دومیں سے آیک ہے کون افضل ہوسکتا ہے اللہ ان دونوں کا تیسراہے؟"

اورالله تعالی نے فرمایا:

﴿ وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَيْكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ٥ ﴾ (الزمر:

(٣٣/٣٩

''اور جو مجف پیغام لا یا اور جنہوں نے اس کی تصدیق کی یہی لوگ متی ہیں''

محکمہ دلائل وبراہین سے مزین متنوع ومنفرد کتب پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

جعفرصادق رحمة الله عليه نفر مايا: اس ميس كوئى اختلاف نبيس كه جوذات پيغام لے كرآئى وہ رسول الله صلى الله عليه وسلم بين أورجس نے اس كى تقعد يق كى وہ ابو بكر صديق رضى الله عنه بين ان كے بارے ميں اس سے زيادہ كون منقبت فضيلت زيادہ بلغ بوسكتى ہے؟

رضى الله عنهم اجمعين: وصلى الله على سيدنا محمد سيد المرسلين وامام المتقين وعلى آله وصحبه اجمعين.

کتاب کے مولف امام الذہبی رحمۃ اللہ نے سر کبیرہ گنا ہوں کی نشاعدی کی ہے۔اللہ تعالی ان مذکورہ اور ان کے علاوہ دیگر گنا ہوں سے بچنے اور نیک اعمال کرنے کی تو فیق عطافر مائے۔ لا حَوْلَ وَلَا قُوَّةً إِلَّا بِاللَّهِ.

اللہ تعالیٰ اس کتاب کواردوزبان میں پیش کرنے کی حقیری کوشش کو قبول فرمائے اوراسے مؤلف ٔ مترجم' ناشراورد گیرمسلمانوں کے لئے صدقہ جاریہ بنائے آبین یارب العالمین۔ رَبَّنَا مَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ط

### www.KitaboSunnat.com

ابوانس محمد سر درگو ہر ابو بکر ٹاؤن کھٹریاں خاص قصور ۱۸ ذوالحج ۱۳۲۳ ھ ۱۰ فروری ۲۰۰۴ء النگاء

| LIBRARY                             |          |
|-------------------------------------|----------|
| Lahore<br>Islamic                   | Book No. |
| Unibersity                          |          |
| 91-Baper Block, Garden Yeem, Lahore |          |

تمت بالخير





